

पवतिर स्मृति
माउंट अथोस के एल्डर पैसयिस
शब्द

खंड IV पारिवारिक जीवन

वर्षिय-सूची:

पूर्वोक्ति.....	4
जीवन के मोड़ पर युवा.....	7
परिवारिक जीवन और संन्यास जीवन दोनों ही धन्य हैं।.....	7
युवाओं की अपनी चुनी हुई राह पर नकिलने को लेकर चिंताएँ.....	8
हमें युवाओं को उनके बुलावे का अनुसरण करने में मदद करनी चाहिए।.....	9
जीवन में एक मार्ग चुनना.....	10
युवा अध्ययन और अपने चुने हुए मार्ग पर आरंभ करना.....	12
अपने चुने हुए मार्ग पर सही ढंग से आगे बढ़ने के लिए मुख्य पूर्वआवश्यकता आध्यात्मिक जीवन है।.....	14
भाग 1. एक मजबूत परिवार कैसे बनाएं.....	16
अध्याय 1. एक सामंजस्यपूर्ण परिवार पर.....	16
वैवाहिक जीवन की एक अच्छी शुरुआत.....	16
द्वितीय सामंजस्य चरित्र के अंतर में नहिंति है.....	17
पति-पत्नी के बीच सम्मान.....	18
पति-पत्नी के बीच प्रेम.....	19
अध्याय 2. धैर्य कैसे एक परिवार को बखिरने से बचाता है.....	21
धैर्य व्यक्तियों को दैवीय कृपा से परिपूर्ण कर देता है।.....	22
एक वफादार पत्नी.....	24
टूटे हुए घरों के बच्चे.....	25
वैवाहिक जीवन में 'सही' और 'गलत'.....	26
भाग 2. माता-पिता और उनकी ज़िम्मेदारियाँ.....	28
अध्याय 1. बच्चों के जन्म पर.....	28
संत जोआचिम और एनी — सबसे नस्वार्थ विवाहिता जोड़ा.....	28
वैवाहिक जीवन में पवित्रता.....	29
बच्चों के जन्म के संबंध में ईश्वर की इच्छा के बारे में मानवीय तर्क.....	30
गर्भधारण में कठिनाइयाँ.....	32
वैवाहिक बांझपन.....	33
बड़े परिवार.....	35
गर्भपात एक भयानक पाप है.....	36
अध्याय 2. बच्चों के पालन-पोषण में माँ की भूमिका.....	38
एक माँ का प्रेम.....	38
बच्चों के अभाव के प्रति सही दृष्टिकोण.....	39
एक माँ की सहनशीलता.....	40
गर्भावस्था और स्तनपान.....	41
एक कामकाजी माँ.....	41
गृहस्थी के कर्तव्य और एक माँ का आध्यात्मिक जीवन.....	42
अध्याय 3. अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए माता-पिता की ज़िम्मेदारी.....	44

माता-पति को अपने बच्चों को ईश्वर के सुपुर्द करना चाहिए	45
बच्चों का आध्यात्मिक पुनरुत्थान	46
माता-पति का उदाहरण	46
अपने माता-पति के घर में बच्चों पर कोमलता और प्रेम की वर्षा होनी चाहिए।	47
बच्चे अपने माता-पति के कारण कैसे दुखी होते हैं	48
बच्चों पर वातावरण का प्रभाव	50
भाई-बहनों के बीच प्रेम	51
कंपनियों का बच्चों पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है	51
सही रास्ते से भटक गए बच्चों की मदद करना	52
बच्चे को कब डांटे और कब उसकी प्रशंसा करें	53
बच्चों के सर्वोत्तम हितों में जबरदस्ती नहीं है	54
अविवेकी, अत्यधिक माता-पति का प्रेम	56
एक संपत्ति का वितरण	57
भाग 3. बच्चे और उनकी ज़िम्मेदारियाँ	58
अध्याय 1. बच्चों, उनकी खुशियाँ और उनकी कठिनाइयों पर	58
शिशु अवस्था	58
एक संरक्षक देवदूत छोटे बच्चों की देखभाल करता है	59
पवित्र बपतिस्मा	60
अनाथ बच्चे	62
जब तक बच्चे एक निश्चित उम्र तक नहीं पहुँच जाते, उन्हें नियंत्रण में रखना चाहिए।	63
स्कूल में बच्चों को सामना करने वाली चुनौतियाँ	64
अध्याय 2. बच्चों का अपने माता-पति और बड़ों के प्रति सम्मान और प्रेम	65
बच्चों का अपने माता-पति और बड़ों के प्रति सम्मान	65
एक बार जब बच्चों ने अपना परिवार बसा लिया, तो वे अपने माता-पति से प्यार कैसे बनाए रख सकते हैं?	67
बुढ़ापा वनिम्रता लाता है।	68
बुजुर्गों की देखभाल का पुरस्कार	69
एक अभिभावक का आशीर्वाद	71
भाग 4. आध्यात्मिक जीवन	71
अध्याय 1. परिवार के भीतर आध्यात्मिक जीवन	72
जितना अधिक कोई व्यक्ति शिकायत करता है, उतना ही अधिक वह स्वयं को नष्ट करता है	72
आइए हम ईश्वर को अपने जीवन का मार्गदर्शन करने दें	73
दूसरों के प्रति सहानुभूति परिवार की मदद करती है।	74
परिवार में सदगुणों का संवर्धन	75
परिवार में प्रार्थना	77
विविध जोड़ों का आध्यात्मिक जीवन	77
बच्चे और आध्यात्मिक जीवन	79
परिवार और दोस्तों के साथ संबंध	80
त्योहारों के मौसम में प्रलोभन	81
अध्याय 2. काम और आध्यात्मिक जीवन	82
मेहनत एक आशीर्वाद है	82
कैरियर चुनना	83
काम से प्रेम	84
प्रत्येक व्यक्ति को उस उपहार का आध्यात्मिक उपयोग करना चाहिए जो उसे दिया गया है।	85
काम और मानसिक चिंता	86
श्रम का पवित्रीकरण	87
एक पेशा किसी व्यक्ति को व्यक्ति नहीं बनाता	87
अध्याय 3. दैनिक जीवन में संयम	89
तपस्या के माध्यम से, एक व्यक्ति निश्चय स्वर्गदूतों के समान बन जाता है	89
बच्चों के लिए उपवास	91
जिज्ञासा से एक पोस्ट	92
हल्के पेट का आनंद	94
भाग 5. जीवन में हम जिन परीक्षाओं का सामना करते हैं	95
अध्याय 1. "मैं आग और पानी से गुज़रा हूँ..."	95

परीक्षणों के क्रॉस.....	96
परीक्षण लोगों को होश में आने में मदद करते हैं	96
जब हम दर्द में होते हैं, तो मसीह हमसे मलिते हैं।	97
"क्योंकि प्रभु उसी को अनुशासति करता है जसि वह प्रेम करता है..."	98
ईश्वर लोगों द्वारा सहन की जाने वाली पीड़ा से व्यथित है।	99
दुख के समय, ईश्वर लोगों को सचची सांतवना देता है।	99
ईश्वर की अनुमति से परीक्षाएँ और दुख	100
ईश्वर के प्रेम के प्रतिकृतघनता	102
हमारे अपने छोटे-छोटे परीक्षण और हमारे करीब लोगों द्वारा सामना किए गए बड़े परीक्षण	103
लोगों द्वारा हमें दी जाने वाली दुख	104
अध्याय 2. बीमारी पर	104
बीमारियाँ लोगों की मदद करती हैं	104
बीमारी के लिए दैवीय दंड	105
दर्द के सामने धैर्य	107
दर्द के प्रतदृष्टिकोण	108
दूसरे के दर्द में सहभागी होना	110
रोगी देखभाल	111
बीमारों के दुख और ईश्वर में विश्वास	113
बीमार बच्चे	114
एक बीमार व्यक्तिके ठीक होने के लिए कुछ बलदान देना पड़ता है।	115
बीमारों के लिए एक प्रार्थना	116
अध्याय 3. इस तथ्य पर कि शारीरिक विकलांगता ईश्वर की एक कृपा है	117
शारीरिक विकलांगता के प्रतिसही दृष्टिकोण	117
चोट पहुँचाने के लिए दैवीय दंड	119
बौद्धिक अक्षमताओं वाले बच्चे	120
मानसिक बीमारियाँ	121
अपने बच्चों की विकलांगताओं के प्रतभिमाता-पति का सही दृष्टिकोण	122
अध्याय 4. आध्यात्मिक नियमों पर	123
आध्यात्मिक नियम कैसे काम करते हैं	123
ईश्वर के कुलीन बच्चे	124
आध्यात्मिक नियम और ईश्वर का प्रेम	125
भाग 6. मृत्यु और परलोक	127
अध्याय 1. मृत्यु के प्रतहिमारा दृष्टिकोण	127
मृत्यु	127
अगर तुम मरना चाहते हो, तो तुम नहीं मरते	129
मरणासन्न	130
आत्महत्या	132
अध्याय 2. "उन लोगों की तरह शोक मत करो जिनके पास कोई आशा नहीं है"	134
बच्चों की मृत्यु	134
शोकसंतप्तों के लिए सांतवना	135
मौत — केवल कुछ वर्षों का वयिग	137
अध्याय 3. मृत्यु के बाद का जीवन	138
दंडति प्रस्थान	138
स्वर्गवासियों के लिए प्रार्थनाएँ और स्मृति सभाएँ	138
स्वर्गीय की स्मृति को संजोने का सर्वोत्तम तरीका	141
ईश्वर के समक्ष धार्मिकों की नर्भीकता	141
आने वाला न्याय का दिन	142
आने वाली ज़िंदगी	143

प्रवोक्ति

चौथा खंड धन्य वृद्ध पैसियों के 'वचन' के प्रकाशन को जारी रखता है। यह पुस्तक परिवार पर वृद्ध की शक्तिओं को एकत्रित करती है और हमारे समय में परिवारों को प्रभावित करने वाले संकट के परिणामस्वरूप लोगों को होने वाली परीक्षाओं को प्रस्तुत करती है। एल्डर ने कहा कि उन्हें जो अधिकांश पत्र मिले, वे उन लोगों से थे जो अपने पारिवारिक जीवन में समस्याओं का सामना कर रहे थे, और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन समस्याओं का कारण लोगों का ईश्वर से अलगाव और उनका स्वार्थपरक होना था। उन्होंने कहा, "पहले के दिनों में, जीवन अधिक शांतपूर्ण था और लोग धैर्य दिखाते थे। लेकिन आज, आप जैसी भी व्यक्ति से मिलते हैं, वह एक लाइटर की तरह है: [चिंगारी उगलता है और] एक भी शब्द बरदाश्त नहीं कर सकता। और तलाक अपने आप हो जाता है।"

बहुत कम उम्र में ही चर्च के महान परिवार में इसके समर्पित सदस्यों में से एक के रूप में शामिल होने के बाद, एल्डर ने महसूस किया कि वह अब अपने छोटे [पार्थिव] परिवार का हिस्सा नहीं रहा। द्रव्य प्रेम प्राप्त करके, वह ईश्वर का पुत्र बन गया और इसलिए — सभी लोगों को अपने भाई-बहनों के रूप में मानते हुए — सभी से 'मसीह के प्रेम में' प्रेम करता था (Phil. 1:8)। 'जब मैं किसी वृद्ध पुरुष को देखता हूँ, बुजुर्ग हमें बताते थे, 'तो मैं अपने आप से कहता हूँ कि वह मेरा पिता है। जब मैं किसी वृद्ध महिला को देखता हूँ, तो मैं कहता हूँ कि वह मेरी माँ है। जब मैं किसी बच्चे से मिलता हूँ, तो मैं उसे अपने छोटे भतीजे के रूप में देखता हूँ। मैं सभी से प्रेम करता हूँ। मैं कुछ लोगों के लिए खुश होता हूँ, और दूसरों के लिए दुखी होता हूँ। क्या आप इस मानसिक स्थिति से परिचित हैं?' फिर भी, एल्डर स्वयं, हर विशिष्ट मामले में, हर व्यक्ति के लिए एक पुत्र, एक भाई, एक पिता या एक दादा बन गए। इस सच्चे प्रेम ने एल्डर के करीब आने वालों को बेहतर बनने में मदद की और, परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने के बाद, उसी के अनुरूप जीने में मदद की। मसीह की देह के एक सदस्य के रूप में, एल्डर न केवल अपने पारिवारिक जीवन में कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों के लिए दुख के साथ प्रार्थना करते थे, बल्कि उनके अनुरोधों का जवाब देते हुए — अपने शब्दों से उनकी मदद भी करते थे। उन्होंने लोगों की पारिवारिक जीवन के सबसे संवेदनशील मुद्दों में भी मदद की, इस तथ्य के बावजूद कि एक भिक्षु के रूप में, उन्होंने स्वयं एक तपस्वी जीवन जिया था।

प्रलोभन की आग में परखे और बीमारी की कड़ाही में तपे, जसिने 1947 से लेकर 1994 में उनकी मृत्यु तक उन्हें विभिन्न रूपों में पीड़ित किया, एल्डर ने प्रत्येक पीड़ित आत्मा के प्रतिक्रिया महसूस की और दर्द में पड़े लोगों के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। उन्होंने अपने स्वास्थ्य का ध्यान केवल उतना ही रखा जतिना स्वयं की देखभाल और उनके पास आने वालों की मदद के लिए आवश्यक था। उनका मानना था कि यदि कोई अन्य बीमार लोगों के लिए प्रार्थना करता है, अपनी पीड़ा की परवाह किए बिना, तो यह ईश्वर को करुणा से प्रेरित करता है और वह ऐसी प्रार्थना सुनता है। हालाँकि, एल्डर ने बीमार लोगों को पहले अपनी ही चकित्सा के लिए मानवीय रूप से सब कुछ करने की सलाह दी, और जो मानव शक्ति से परे है उसे ईश्वर पर छोड़ देने की। साथ ही, उन्होंने लोगों के विश्वास को मजबूत किया ताकि वे ईश्वर में आशा के साथ अपनी बीमारी का सामना कर सकें, यह कभी न भूलते हुए कि हमारे संपूर्ण सांसारिक जीवन में हम सभी 'अजनबी और यात्री' हैं (देखें 1 पत्र 2:11), और शाश्वत जीवन के लिए तैयारी कर सकें।

यह खंड हमारे आर्चपास्टर, उनकी उत्कृष्टता का सांद्रण के मेट्रोपॉलिटन निकोडेमस के आशीर्वाद से प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक में एक परिचयात्मक अध्याय और छह भाग हैं। कई प्रश्न एबेस और हमारी कन्वेंट की कुछ बहनों ने एल्डर से पूछे थे। एल्डर ने हमें आशीर्वाद दिया कि हम अपनी आध्यात्मिक सहायता की चाह रखने वाले लोगों को एक आध्यात्मिक पिता के पास भेज सकें; हालाँकि, अक्सर एबेस या वरिष्ठ बहनों में से किसी के साथ बातचीत में, लोग अपनी पीड़ा से अभिभूत होकर अपने दर्द का वर्णन करते हैं और सलाह मांगते हैं। कभी-कभी, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमने किसी विशेष गंभीर या जटिल प्रश्न का सही उत्तर दिया है, हम वृद्ध से पूछते थे, और वे हमें किसी विशेष समस्या को

ईश्वर के प्रति भक्तपूरण तरीके से कैसे हल करना है, यह बताते थे। हालाँकि, एल्डर स्वयं, सामान्य मठवासी सभाओं के दौरान और बहनों के साथ नज़ी बातचीत में—हमारे मठवासी समुदाय के जीवन की किसी घटना या हमारे द्वारा पूछे गए किसी प्रश्न का बहाना बनाकर—अक्सर व्यापक दुनिया में ईसाइयों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों के बारे में बात करते थे। वह ऐसा इसलिए करते थे ताकि हम दुनिया के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करें। इसके अलावा, एल्डर उन पतिओं या माताओं के जीवन से उदाहरण देते थे, जिनके पास भक्तिपूर्ण को मलिन करने वाली अनुकूल आध्यात्मिक परिस्थितियाँ नहीं थीं, फिर भी उन्होंने पवित्र जीवन जिया। इस तरह, फादर पैसियोस ने हमें बड़ी लगन से प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया। महानुभाव के कुछ उत्तर उनके पत्रों के अंशों से समृद्ध हैं, जो हमें उन पुरोहितों और धर्मनिरपेक्ष गृहस्थों द्वारा सौंपे गए थे, जिनमें ये पत्र लिखे गए थे।

यह खंड 'जीवन के चौराहे पर युवा' नामक एक परिचयात्मक अध्याय से शुरू होता है, जिसका उद्देश्य उन युवा पुरुषों और महिलाओं की मदद करना है जो जीवन में कौन सा मार्ग चुनें, इस बारे में अनिश्चित हैं। यह अध्याय इस बात पर जोर देता है कि हमारे चर्च द्वारा निर्धारित दोनों मार्ग—पारिवारिक जीवन और मठवासी जीवन—धन्य हैं। युवाओं को अपनी बुलावा, अपनी शक्तियों और अपने प्रेम के अनुसार एक मार्ग चुनना चाहिए। उन्हें ऐसा किसी के 'धकेलने' के बिना, बल्कि ईश्वर में विश्वास के साथ करना चाहिए। युवाओं के लिए एक पवित्र और आध्यात्मिक जीवन उनके चुने हुए मार्ग—चाहे वह संन्यासी जीवन हो या पारिवारिक जीवन—पर उनकी सफलता के लिए मौलिक पूर्वापेक्षा है।

इस पुस्तक के छह भागों में से पहला भाग उस नींव को स्थापित करता है जिस पर परिवार का निर्माण होता है: पति-पत्नी के बीच का उत्कृष्ट, उदार प्रेम और सम्मान। विपत्तियों के समय धैर्य, प्रार्थना के साथ मिलकर, परिवार को टूटने से बचाता है।

दूसरा भाग माता-पिता के अपने बच्चों को सही ढंग से पालने-पोसने के कर्तव्यों और ज़िम्मेदारियों से संबंधित है, जिसमें विशेष रूप से माता-पिता के उदाहरण—यह 'मौन शिक्षा' जो वे अपने बच्चों को देते हैं—और परिवार में माँ की भूमिका पर जोर दिया गया है। एल्डर यह भी जोर देते हैं कि माता-पिता की कोमलता और अपने बच्चों के प्रति प्रेम उनके प्राकृतिक और स्वस्थ विकास के लिए मूलभूत पूर्वापेक्षाएँ हैं।

इस खंड का तीसरा भाग बच्चों को समर्पित है। इसमें उनकी खुशियों और कठिनाइयों के साथ-साथ माता-पिता के प्रति उनके कर्तव्यों पर चर्चा की गई है। बचपन में ही नहीं बल्कि वयस्कता में भी माता-पिता के प्रति बच्चों का सम्मान और प्रेम यह सुनिश्चित करने की कुंजी है कि उन्हें ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो।

चौथे भाग में परिवार के भीतर आध्यात्मिक जीवन के संबंध में एल्डर की सरल और व्यावहारिक सलाह शामिल है। यह सलाह बच्चों और माता-पिता को अपनी दैनिकी जीवन में सुसमाचार का पालन करने में मदद करती है — चाहे वे घर पर हों या काम पर। एल्डर इस बात पर भी जोर देते हैं कि किसी व्यक्ति का काम उसे नरित मानसिक कष्ट नहीं देना चाहिए, बल्कि उसकी आध्यात्मिक वृद्धि में योगदान देना चाहिए।

पाँचवाँ खंड लोगों को अपने जीवन में आने वाली विभिन्न परीक्षाओं को समर्पित है। एल्डर इस [महान] सांत्वना और शक्ति पर जोर देते हैं जो ईश्वर लोगों को प्रदान करते हैं यदि वे अपनी ओर भेजी गई परीक्षाओं को केवल सहन नहीं करते, बल्कि उनके लिए ईश्वर का धन्यवाद भी करते हैं। बीमारी, विकलांगता और बदनामी उस व्यक्ति के लिए आशीर्वाद हैं जसिने जीवन के गहरे अर्थ को समझ लिया है। इन कष्टों के माध्यम से, एक व्यक्ति या तो अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है या अपने लिए स्वर्गीय पुरस्कार अर्जित करता है।

अंत में, छठे खंड में मृत्यु को सही दृष्टिकोण से देखने और उसकी तैयारी करने के बारे में वृद्ध के प्रश्नों के उत्तर शामिल हैं। एल्डर बताते हैं कि प्रियजनों के निधन पर शोक मनाने वालों के लिए सच्चा सांत्वना क्या है, और वे इस बात पर जोर देते हैं कि उनकी आत्मा की शांति के लिए आयोजित स्मृतिसभाएँ,

प्रार्थना और दान मृतकों की कतिनी सहायता करते हैं। सरल और जीवंत शब्दों में, एल्डर भविष्य के न्याय दविस और अनंत जीवन की एक तस्वीर पेश करते हैं।

इस खंड में संकलित एल्डर की शक्ति, एक ओर, उन सामान्य लोगों की मदद कर सकती हैं जो अपने आध्यात्मिक जीवन में संघर्ष कर रहे हैं, ताकि वे अपने 'नेक काम' को बड़ी नष्टि के साथ जारी रख सकें (देखें 1 तीमथियुस 6:12)। दूसरी ओर, ये उन लोगों के अंतरात्मा को जगा सकते हैं जो ईश्वर से दूर होकर कष्ट भोग रहे हैं, उनमें चर्च के सचेत सदस्य बनने की इच्छा जगाते हुए और अपने परिवार के छोटे समुदाय में आध्यात्मिक जीवन द्वारा लाई गई शांति में आनंदित होने के लिए प्रेरित करते हैं। साथ ही, एल्डर इस बात पर जोर देते हैं कि विवाह में ईश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करना अनिवार्य है, जो 'भार नहीं है' (1 यूहन्ना 5:3)। उदाहरण के लिए, यदि कोई एक जीवनसाथी अपनी इच्छा का बलदान करता है और दूसरे की आज्ञा मानता है, तो वह प्रेम के कारण ऐसा करता है और इसलिए उसे दबे हुए होने का अनुभव नहीं होता, बल्कि उसे मधुर सात्वता का अनुभव होता है।

यह हो सकता है कि आज के समाज के 'ढीले कानूनों' का आदी आधुनिक व्यक्ति के लिए, एल्डर पैसियुस के कुछ विचार चरम और अव्यवहारिक लगें। हालाँकि, सुसमाचार की रोशनी में एल्डर के शब्दों की जाँच करने पर, पाठक इस बात से आश्चर्य हो जाएगा कि वे इसके सटीक और बर्ना समझौते वाले अभिव्यक्ति हैं। जसि चीज के लिए वृद्ध हमेशा प्रयास करते हैं, वह मसीह में पूर्णता है। हालाँकि, उनकी ईश्वर-प्रेरित चरवाहा-देखभाल मानवीय कमजोरियों के प्रति धैर्यवान है और पादरक्षि अर्थव्यवस्था⁽¹⁾ का सहज रूप से उपयोग करती है, बर्ना कभी पाप के साथ समझौता किए। अतीत के उदाहरणों के माध्यम से, एल्डर आधुनिक लोगों को यह समझने में मदद करते हैं कि ईश्वर जीवित ईश्वर है और 'सभी में सभी कार्य करते हैं' (1 कुरिन्थियों 12:6)। वे न केवल आने वाले जीवन में पुरस्कार देने वाले के रूप में कार्य करते हैं, बल्कि इस वर्तमान जीवन में भी — एक स्नेही, प्रेममय पिता के रूप में कार्य करते हैं। हालाँकि, एक व्यक्ति को अपनी सद्भावना का प्रदर्शन करना चाहिए और अपना छोटा सा प्रयास करना चाहिए। थोड़ी सी कोशिश करने पर हमें बहुत कुछ मिलता है। किसी व्यक्ति के लिए यह छोटा सा प्रयास करना आवश्यक है—ताकि वह ईश्वर को अपने जीवन में प्रचुर दवि सहायता के साथ 'हस्तक्षेप करने का अधिकार' दे सके।

हम उन लोगों का धन्यवाद करना चाहेंगे जिन्होंने इस खंड की पांडुलिपि को प्रकाशन से पहले पढ़कर सम्मानपूर्वक अपनी टिप्पणियाँ दीं और पुस्तक को बेहतर बनाने में मदद की।

हमारी प्रबल आशा है कि एल्डर के वचन उन परिवारों की सहायता करेंगे—जो, विशेष रूप से हमारे समय में, ईश्वर की आज्ञाओं की उपेक्षा या उल्लंघन के कारण कष्ट झेल रहे हैं—ताकि वे ऑर्थोडॉक्स चर्च की गोद में अपना सच्चा उद्देश्य पा सकें, और माता-पिता तथा बच्चे इसी जीवन में स्वर्ग में जीना आरंभ कर सकें। आमीन।

१६ सितंबर २००२

पवित्र महान शहीद यूफेमिया की स्मृति

*संत जॉन द एपोस्टल और इवेंजेलिस्ट के मठ की अधिष्ठात्री, धर्मशास्त्री, ससिटर फलिथेआ,
मसीह में अपनी बहनों के साथ*

माता-पिता, जो संसार में बच्चों को लाते हैं और उन्हें भौतिक शरीर प्रदान करते हैं, उन्हें यथासंभव उनके आध्यात्मिक पुनर्जन्म को पोषित करना चाहिए। जो कुछ भी माता-पिता स्वयं अपने बच्चों के लिए नहीं कर पाते, उसे उन्हें बाद में अपने शिक्षकों के सुपुर्द कर देना चाहिए। इसीलिए हमारी चर्च 'माता-पिता और

¹ ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र में, 'इकॉनोमी' शब्द असाधारण मामलों में पवित्र कैनों के सटीक अर्थ से उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग में विचलन को संदर्भित करता है। चर्च ईश्वर की अकथनीय सहनशीलता और मानवजाति के प्रति प्रेम की प्रतीति में ओइकोनोमिया का प्रयोग करती है, और इसके प्रयोग का उद्देश्य मानवजाति का आध्यात्मिक लाभ और मोक्ष है। (इसके बाद, यूनानी संपादकों के नोट्स संदर्भ के बिना दिए गए हैं।)

शिक्षकों के लिए प्रार्थना करती है। हालांकि, सांसारिक पतिओं के अतिरिक्त आध्यात्मिक पति भी होते हैं। आध्यात्मिक पति लोगों के आध्यात्मिक पुनर्जन्म के लिए परिश्रम करते हैं और बच्चों के पालन-पोषण में अधिक प्रभावी योगदान देते हैं।

जीवन के मोड़ पर युवा

परिवारिक जीवन और संन्यास जीवन दोनों ही धन्य हैं।

— जेरोंडा, उन युवा पुरुषों और महिलाओं से हम क्या कहें जो पूछते हैं कि क्या संन्यास जीवन पारिवारिक जीवन से श्रेष्ठ है?

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें उन्हें यह समझने में मदद करनी चाहिए कि एक व्यक्ति का उद्देश्य क्या है और जीवन का अर्थ क्या है। फिर हमें युवाओं को यह समझाना चाहिए कि हमारे चर्च द्वारा निर्धारित दोनों मार्ग धन्य हैं, क्योंकि यदि जो लोग इन्हें चुनते हैं वे ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं, तो दोनों मार्ग स्वर्ग तक ले जा सकते हैं। आइए मान लें कि दो लोग तीर्थयात्रा पर निकलते हैं। एक अच्छी-खासी चली हुई सड़क पर चलता है, दूसरा एक पगडंडी पर। हालांकि, दोनों यात्रियों का गंतव्य एक ही है। ईश्वर पहले में आनंदित होता है और दूसरे में प्रसन्न। स्थिति भी समस्याग्रस्त होगी जब पगडंडी पर चलने वाला अपने मन में मुख्य सड़क पर चलने वाले की नदि करने लगे, या इसके विपरीत।

संन्यास जीवन पर विचार कर रहे उन युवाओं के लिए यह जानना अच्छा है कि एक भिक्षु का आह्वान अत्यंत महान है। एक भिक्षु का आह्वान एक देवदूत बनने का है। "आने वाले जीवन में, स्वर्ग में, हम देवदूतों की तरह जाएंगे," मसीह ने सद्की से कहा।² इसलिए कुछ बहुत धार्मिक युवक और युवतियाँ भिक्षु बन जाते हैं और पृथ्वी पर रहते हुए ही दिव्य जीवन जीने लगते हैं।

हालांकि, यह मान लेना सही नहीं है कि मिठ में प्रवेश करने वाले सभी लोग केवल इसलिए मोक्ष प्राप्त कर लेंगे कि वे भिक्षु बन गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर के समक्ष यह उत्तर देना होगा कि क्या उसने अपने द्वारा चुने गए जीवन को पवित्र बनाया है। हर जीवन में प्रेम आवश्यक है। ईश्वर सफलता या असफलता के लिए पूर्वनिर्धारित लोगों को नहीं बनाता। जिनमें प्रेम की कमी होती है, वे अपने आप में फल-फूल नहीं सकते—चाहे वे कोई भी मार्ग चुनें। जबकि एक प्रेममय व्यक्ति जहाँ भी हो, फल-फूलता है, क्योंकि दिव्य कृपा उसके साथ रहती है। कुछ परिवार वाले बहुत पुण्यपूर्वक जीवन जीते हैं और पवित्र हो जाते हैं। यदि परिवार का मुखिया ईश्वर से प्रेम करता है, यदि वह दिव्य कृपा की ओर आकर्षित होता है, तो वह आध्यात्मिक रूप से बहुत उन्नत कर सकता है। इसके अलावा, ऐसा व्यक्ति अपने बच्चों में सद्गुणों का संचार करता है, एक अच्छा परिवार बनाता है और ईश्वर से दोगुना पुरस्कार प्राप्त करता है।

इसलिए, प्रत्येक युवक को निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए: भक्ति और आंतरिक कलह के बिना प्रयास करना—ताकि वह अपने चुने हुए जीवन को पवित्र कर सके। क्या वह विवाह करना चाहता है? तो उसे विवाह कर लेना चाहिए, लेकिन उसे परिवार का एक अच्छा मुखिया बनने और एक पवित्र जीवन जीने के लिए पूरी लगन से प्रयास करना चाहिए। क्या वह संन्यास की शपथ लेना चाहता है? उसे संन्यास जीवन में प्रवेश करना चाहिए, लेकिन उसे एक अच्छे संन्यासी बनने के लिए पूरी लगन से प्रयास करना चाहिए। उसे अपनी शक्तियों का आकलन करना चाहिए, विचार करना चाहिए कि वह किस प्रकार का जीवन जी सकता है, और अपने नष्टिकर्षों के अनुसार, उसने जो मार्ग चुना है, उस पर चलना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि एक युवती को यह एहसास होता है कि उसमें एक नन बनने की ताकत नहीं है, तो उसे विनम्रता से ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए: 'हे मेरे ईश्वर, मैं एक कमजोर व्यक्ति हूँ और एक नन के रूप में नहीं रह सकती। मुझे एक पुरुष भेजो जो मेरी मदद करे [ताकि हम विवाह कर सकें], ताकि मैं एक अच्छा परिवार बना

² मत्ती 22:30 देखें।

सकूँ और एक पवतिर तथा आध्यात्मिक जीवन जी सकूँ।' ऐसे में, ईश्वर उसे कभी अकेला नहीं छोड़ेगा। यदि विवाह करने और एक अच्छा परिवार बसाने के बाद, वह सुसमाचार के अनुसार जीवन जीती है, तो ईश्वर उससे और कुछ नहीं मांगेगा।

बेशक, कुछ ऐसे युवा भी हैं जिनसे ईश्वर अधिक अपेक्षा नहीं रखते। हालाँकि, प्रेम के कारण वे स्वयं पर कई कठिन कार्यों का भार उठा लेते हैं और संन्यासी जीवन चुनकर, उनसे अपेक्षा से भी अधिक उन्हें अर्पित करते हैं। ऐसे लोगों को दोहरा मुकुट पहनाया जाता है। अर्थात्, यदि कोई व्यक्ति परिवारिक जीवन की स्वाभाविक प्रवृत्ति रखते हुए भी, महान प्रेम के कारण सब कुछ त्यागकर संन्यास मार्ग पर चलना चाहता है, तो यह देखकर ईश्वर की महान करुणा जागृत होती है। हालाँकि, ऐसे व्यक्ति को यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरतनी चाहिए कि उसके उद्देश्य अत्यंत शुद्ध हों: उसे अहंकार से प्रेरित होकर कार्य नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति इस शर्त को पूरा करता है, तो ईश्वर उनकी सभी कठिनाइयों को दूर कर देंगे।

युवाओं की अपनी चुनी हुई राह पर नकिलने को लेकर चिंताएँ

— जेरोंडा, यदि कोई युवक या युवती अपने विवाह या मठ-जीवन में प्रवेश को लेकर चिंतित है, तो क्या यह उनके विश्वास के कारण है?

— हमेशा नहीं। युवा लोग अक्सर इस बात की चिंता करते हैं कि वे अपने चुने हुए मार्ग पर कैसे सबसे अच्छी तरह से आरंभ करें और उसका अनुसरण करें, साथ ही हमेशा ईश्वर के निकट कैसे रहें। यह [आध्यात्मिक] स्वास्थ्य का संकेत है। यदि कोई युवक अपने चुने हुए मार्ग पर चलने के बारे में नहीं सोचता या चिंतित नहीं होता है, तो यह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह दर्शाता है कि वह एक उदासीन व्यक्ति है, और परिणामस्वरूप, वह स्वाभाविक रूप से सफल नहीं होगा। हालाँकि, इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि विवाह या संन्यास को लेकर चिंता अत्यधिक न हो जाए, क्योंकि शैतान इस चिंता को विकृत करने, इसे मानसिक कष्ट में बदलने और युवकों व युवतियों के मन को नरित भ्रम की स्थिति में रखने का प्रयास करता है।

शांत बिनाए रखने के लिए, युवाओं को स्वयं को ईश्वर के हवाले कर देना चाहिए। क्योंकि प्रेम दयालु ईश्वर, एक कोमल पिता की तरह, वहाँ कार्य करता है जहाँ हम मानवीय दृष्टि से कुछ भी नहीं कर सकते। युवाओं को यह नरिणय लेने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए कि उन्हें कौन सा मार्ग चुनना है। मैं कुछ ऐसे युवाओं को जानता हूँ जो बहुत ज्यादा चिंता करते हैं और अपनी सभी समस्याओं को एक साथ सुलझाने की कोशिश करते हैं। अंततः वे भ्रमति हो जाते हैं और अपनी पढ़ाई छोड़ देते हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने की जरूरत होती है, फिर भी वे परिवार शुरू करने या किसी मठ में जाने को लेकर अत्यधिक चिंता करते हैं। परिणामस्वरूप, वे अपनी पढ़ाई में पछिड़ जाते हैं और और भी अधिक भ्रमति हो जाते हैं। आप एक साथ सब कुछ नहीं कर सकते, और इस तरह समस्याओं का समाधान नहीं होता। अपनी मदद करने के लिए, उन्हें खुद को ठीक से व्यवस्थित करना होगा और सब कुछ क्रम में लाना होगा। सबसे पहले, उन्हें एक डगिरी हासिल करनी होगी, फिर नौकरी ढूँढनी होगी (युवा पुरुषों को अपनी सैन्य सेवा भी पूरी करनी होगी)। और केवल उसके बाद, जब वे परपिक्व हो जाएं, तो वे कोई नरिणय ले सकते हैं और ईश्वर की मदद से, या तो शादी करके एक अच्छा परिवार बसा सकते हैं, या, यदि उन्होंने संन्यासी जीवन चुना है, तो अपनी पसंद के मठ में प्रवेश कर सकते हैं।

इसलिए मैं उन युवाओं को, जो पढ़ाई कर रहे हैं और जिनके मन में ऐसी चिंताएँ हैं, अपनी पढ़ाई जारी रखने की सलाह दूँगा, क्योंकि उन्होंने अभी तक यह परपिक्व नरिणय नहीं लिया है कि कौन सा मार्ग चुनना है। मैं उन्हें सलाह देता हूँ कि वे अंततः जो भी नरिणय उनके भीतर परपिक्व हो और जिससे वे सहज महसूस करें, उसे स्वीकार कर लें। यदि उनका स्वभाव अच्छा है, तो ईश्वर की कृपा से जैसे-जैसे वे यह समझेंगे कि

उन्हें कैसे जीवन जीना चाहिए—चाहे विवाह में, ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए या किसी मठ में—तो उन्हें मन की शांति मिलेगी।

हमें युवाओं को उनके बुलावे का अनुसरण करने में मदद करनी चाहिए।

प्रत्येक व्यक्तिकी अपनी पुकार होती है। दयालु ईश्वर ने मानव जातिको स्वतंत्र होने के लिए बनाया है। ईश्वर महान है: वह मानवीय स्वतंत्रता का सम्मान करता है और प्रत्येक व्यक्तिको उस मार्ग का अनुसरण करने की अनुमति देता है जो उनके हृदय के सबसे निकट है। ईश्वर सभी को सैन्य अनुशासन के नियमों के अनुसार एक ही कतार में नहीं खड़ा करता। अतः युवा लोग ईश्वर की स्वतंत्रता के आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वतंत्र रहें। यद्यपि किसी और द्वारा चुनी गई जीवन शैली की नकल करने की कोशिश करते हैं, तो इससे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा। जीवन में मार्ग चुनते समय, व्यक्तिको किसी भी बाहरी प्रभाव के अधीन नहीं होना चाहिए।

माता-पिता, आध्यात्मिक गुरु और शिक्षक, बनी युवाओं पर दबाव डालें या उन पर नज़र बनाए रखें, उन्हें एक ऐसा जीवन चुनने में मदद करनी चाहिए जो उनके अनुकूल हो और वे अपनी पुकार का अनुसरण कर सकें। जीवन में कौन सा मार्ग अपनाना है, यह निर्णय स्वयं युवाओं को लेना चाहिए। हम बाकी लोग केवल अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं। हमारा एकमात्र अधिकार युवा आत्माओं को अपना रास्ता खोजने में मदद करना है।

कभी-कभी, जब मैं उन युवाओं से बात करता हूँ जो जीवन में एक रास्ता चुनने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं, तो मैं देख पाता हूँ कि तिराजू किस ओर झुक रही है, लेकिन मैं उन्हें नहीं बताता, ताकि उनकी अपनी पसंद को प्रभावित न करूँ। मैं बस एक ही काम करने की कोशिश करता हूँ: उन्हें, जहाँ तक संभव हो, सही मार्ग और आंतरिक शांति खोजने में मदद करना। जो कुछ भी उन्हें आकर्षित करता है, मैं उसमें से हानिकारक सभी चीजों को हटाने और जो अच्छा और पवित्र है उसे बनाए रखने की कोशिश करता हूँ, ताकि वे इस जीवन में परमेश्वर के साथ आनंदपूर्वक जी सकें, और अनंत जीवन में और भी अधिक आनंदित हो सकें। मैं आपसे ईमानदारी से कहता हूँ: मेरा कोई भी युवक जो भी जीवन चुने, मैं हर हाल में प्रसन्न रहूँगा। मैं उसकी आत्मा के उद्धार के लिए समान रूप से परवाह करूँगा — बशर्ते कि वह मसीह के साथ हो और कलीसिया के भीतर जीवन जिए। मैं खुद को उसका भाई महसूस करूँगा, क्योंकि ऐसा व्यक्ति हमारी माता कलीसिया की संतान है।

बेशक, मैं उन युवाओं के लिए विशेष रूप से प्रसन्न हूँ जो संन्यास मार्ग पर नकिल रहे हैं। क्योंकि जो व्यक्ति इस दैवीय जीवनशैली का अनुसरण करता है, वह वास्तव में बुद्धिमान है, क्योंकि विह शैतान की फंदा में नहीं फँसता, जहाँ दुनिया को काँटे पर चारा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। हालाँकि, सभी को एक ही श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। आखिरकार, मसीह, सभी लोगों को भारी बोझ उठाने के लिए मजबूर नहीं करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने सभी को संन्यासी बनने का आज्ञा नहीं दी, भले ही संन्यास पूर्णता का मार्ग है। इसलिए, जब सुसमाचार में उस जवान ने मसीह से पूछा कि विह कैसे बचाया जा सकता है,³ मसीह ने उसे उत्तर दिया: 'आज्ञाओं का पालन करो।'⁴ जब उस जवान ने मसीह से कहा कि विह आज्ञाओं का पालन करता है और पूछा: 'मुझ में और क्या कमी है?'⁵ — मसीह ने उत्तर दिया: "एक बात है जो तुमने अभी तक नहीं की है: यदि तुम सदिध होना चाहते हो, तो जाओ, जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसे बेच दो... और आओ और मेरा अनुसरण करो..."⁶ दूसरे शब्दों में, मसीह ने उस व्यक्ति से पूर्णता के बारे में बात की, यह देखकर कि उसका चरित्र अच्छा था, लेकिन उन्होंने लोगों को [पूर्णता की ओर] जबरदस्ती नहीं खींचा। न ही मसीह ने

³ देखें मत्ती 19:16; मरकुस 10:17 और लूका 18:18।

⁴ मत्ती 19:17। देखें मार्क 10:19 और लूका 18:20 भी।

⁵ मत्ती 19:20।

⁶ मरकुस 10:21।

⁷ मत्ती 19:21 और लूका 18:22.

संन्यासवाद सखाया, क्योंकि ऐसा करने से उन्होंने लोगों के हृदयों में आग लगा दी होती, और संभव है कि कई लोग जलदबाजी में संन्यासी बन गए होते, जो बुराई की ओर ले जाता। मसीह ने केवल एक परंपूर्ण जीवन की चगिरी प्रज्वलति की, और जब समय उचित था, तब संन्यासवाद उभरा।

इसी तरह, हमें दूसरों को जबरदस्ती करने का कोई अधिकार नहीं है। हमें केवल स्वयं को बाध्य करने का अधिकार है, लेकिन यह भी वविक के साथ किया जाना चाहिए। आज तक, मैंने किसी भी युवक से सीधे-सीधे नहीं कहा है: 'शादी कर लो' या 'किसी मठ में चले जाओ।' अगर कोई मुझसे पूछता है कि उन्हें कौन सा मार्ग चुनना चाहिए, तो मैं जवाब देता हूँ: 'जैसा आपका दिल आपको कहे, वैसा ही करें, जब तक आप मसीह के साथ हैं।' और अगर कोई युवक मुझसे कहता है कि सांसारिक जीवन उसे पसंद नहीं है, तो मैं उससे मठ-जीवन के बारे में बात करता हूँ— ताकि वह अपना रास्ता खुद खोज सके।

जीवन में एक मार्ग चुनना

साल तेजी से बीत जाते हैं। एक युवा के लिए यह बेहतर है कि वह चौराहे पर बहुत देर तक अनिश्चित रूप से न ठहरे। उसे अपनी बुलावा और प्रेम के अनुसार अपना क्रूस—दो रास्तों में से एक—चुनना चाहिए और मसीह में अपना भरोसा रखकर उसका अनुसरण करना चाहिए। यदि वह उनके पुनरुत्थान के आनंद में आनंदित होना चाहता है, तो उसे क्रूस तक मसीह का अनुसरण करना चाहिए। पारिवारिक जीवन और मठवासी जीवन दोनों में अपनी-अपनी कड़वाहट होती है, लेकिन यदि कोई व्यक्ति ईश्वर के साथ जीता है, तो यह कड़वाहट मधुर यीशु द्वारा मीठी हो जाती है।

एक बार जब आप तीस की उम्र पार कर लेते हैं, तो जीवन में कोई राह चुनना अब सीधा-सादा नहीं रह जाता। और जतिने अधिक वर्ष कोई व्यक्ति जीता है, उतनी ही अधिक कठिनाइयों का उसे सामना करना पड़ता है। किसी युवा के लिए अपने चुने हुए जीवन—चाहे वह विवाह हो या संन्यास—में ढल जाना आसान होता है। आखिरकार, एक व्यक्ति हर चीज का आकलन करता है और उसे सामान्य समझ के दायरे में रखकर परखता है। उनका चरित्र पहले से ही तय हो चुका होता है, जैसे कंकरीट की ढली हुई संरचना — इसे बदलना आसान नहीं है। बस देखिए: जो लोग कम उम्र में पारिवारिक या संन्यासी जीवन के मार्ग पर निकलते हैं, वे बुढ़ापे तक एक बचकाना सादगी बनाए रखते हैं। मैं एक ऐसे दंपति को जानता था जो कम उम्र में ही शादी कर चुके थे। पत्नी हर बात में अपने पति जैसी ही थी — बोलने के ढंग और व्यवहार दोनों में। क्योंकि उन्होंने कम उम्र में शादी की थी, इसलिए उनमें से एक ने दूसरे की सभी आदतें अपना लीं: बोलने और व्यवहार दोनों में। लेकिन उनके लिए एक-दूसरे के साथ तालमेल बठाना भी आसान था [उन लोगों की तुलना में जो जीवन में बाद में शादी करते हैं]।

"या तो जब तुम जवान हो तब शादी कर लो, या जब तुम जवान हो तब पर्दा धारण कर लो," जैसा कि कहावत है। एक युवती के लिए पच्चीस वर्ष की आयु पूरी होने से पहले अपने जीवन का मार्ग तय करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पच्चीस वर्ष की आयु के बाद विवाह करना या संन्यास ग्रहण करना उतना आसान नहीं रहता, क्योंकि एक युवती दूसरे की इच्छा के आगे झुकने के बारे में सोचने लगती है। जतिनी अधिक उम्र की होती है, उतनी ही अधिक मनमौजी और चंचल प्रवृत्तियाँ उसमें विकसित होती जाती हैं। और आखिर ऐसी किसी को चाहिए ही क्या? और अगर साल बीत गए हों, तो वह अब परिवार बसाने के लिए शादी नहीं करना चाहती, बल्कि मुख्य रूप से किसी की सुरक्षा और देखभाल में रहना चाहती है।

यह देखा गया है कि यदि कोई युवक या युवती लगातार शादी को 'बाद में' के लिए टालता रहता है, तो जैसे ही साल बीत जाते हैं, वह साथी की तलाश करता है लेकिन उसे कोई नहीं मिलता। अपनी जवानी में उन्होंने खुद के लिए चुना था, लेकिन अब साल बीत चुके हैं, और दूसरे उनके लिए चुन रहे हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि परिवार शुरू करते समय थोड़ी लापरवाही कभी-कभी जरूरी होती है। आपको कुछ तुच्छ बातों पर आँखें मूंदनी पड़ती हैं, क्योंकि चीजें कभी भी ठीक वैसी नहीं होतीं जैसी हम चाहते हैं।

एक दिन बारिश होने लगी, और पानी पहाड़ी नदी के बहाव में बहने लगा। दो आदमी कनारे पर खड़े थे; उन्हें दूसरी ओर जाना था। एक बहुत चतुर था, जबकि दूसरा थोड़ा मूर्ख था। "बारिश रुक जाएगी," चतुर ने सोचा, "पानी घट जाएगा, और तब मैं दूसरी कनारे तक पार कर सकूँगा।" लेकिन मूर्ख ने इंतजार नहीं किया — वह पानी में कूद पड़ा और नदी पार कर गया। बेशक, उसके कपड़े गीले हो गए, लेकिन वह अपनी मंजिल पर पहुँचने में कामयाब रहा। और बारिश, रुकने के बजाय, और ज़ोर-ज़ोर से बरसने लगी। धारा उग्र हो गई और नदी उफानने लगी। और अंत में, वह चतुर व्यक्ति अपनी ही कनारे पर खड़ा रहा — क्योंकि अब नदी पार करना बहुत खतरनाक हो गया था।

कुछ लोग अहंकार और स्वार्थ से भरे होते हैं, और इसलिए ईश्वर उनकी मदद नहीं करता। कुछ लड़के साल दर साल माउंट अथोस आते हैं, मेरे कालीवा में आकर मुझसे पूछते हैं: 'ईश्वर मुझसे क्या चाहता है, फादर?' कोई सोच सकता है कि ईश्वर को उनकी जरूरत है! वे न तो भिक्षु बने हैं और न ही उन्होंने परिवार शुरू किया है। आप सोच सकते हैं कि वे सोने से बने हैं और किसी तरह के प्रबलति कंकरीट के ढाँचे में — सिर्फ लोहे के एक टुकड़े की तरह — उपयोग किए जाने से डरते हैं! और फिर कुछ ऐसे भी हैं जो मुझसे पूछते हैं: 'जेरोन्डा, मुझे क्या करना चाहिए: भिक्षु बनूँ या शादी करूँ? बताइए, मेरी क्या पुकार है?' 'और आप खुद क्या चाहते हैं?' मैं पूछता हूँ। 'शादी भी करना है,' वे जवाब देते हैं, 'और भिक्षु भी बनना है।' दूसरे शब्दों में, वे दोनों चाहते हैं! लेकिन अगर मैं उन्हें अपनी राय बता दूँ कि उदाहरण के लिए, उनका बुलावा पारिवारिक जीवन का है और वे शादी कर लेते हैं, फिर भी पारिवारिक जीवन उन्हें पसंद नहीं आता, तो बाद में वे मेरे पास आएँगे और अपनी शिकायतें व्यक्त करेंगे: 'आपने मुझे यह रास्ता चुनने के लिए कहा था, और अब मैं दुखी हूँ!'

— जेरोन्डा, ऐसा कुछ कैसे हो सकता है?

— खैर, मान लीजिए कि एक युवक का बुलावा पारिवारिक जीवन है, फिर भी वह संन्यासी जीवन पर भी विचार कर रहा है। यदि शादी के बाद, वह लापरवाह हो जाता है और एक अच्छा परिवार बनाने में विफल रहता है, और ऐसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जिनमें वह अध्यात्मिक तरीके से नहीं बल्कि सांसारिक तरीके से नपिताता है, तो दुष्ट एक नेगेटिव विचारों का तूफान उसके खिलाफ खड़ा कर देगा। शत्रु उससे कहेगा, "तुम्हारा बुलावा तो संन्यास जीवन के लिए था। लेकिन चूँकि तुमने विवाह कर लिया है, इसलिए तुम्हें यही मिलना चाहिए।" दूसरे शब्दों में, शत्रु ऐसे व्यक्ति को दिन-रात चैन से नहीं रहने देगा।

और कुछ लोग तो खुद भी नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं। कुछ साल पहले, एक युवती यहाँ आई और मुझसे कहने लगी: "जेरोन्डा, मैं तय नहीं कर पा रही कि जीवन में कौन सा मार्ग चुनूँ। मैं शादी करना चाहती हूँ, लेकिन मैं नन बनने के बारे में भी सोच रही हूँ।" "मैं क्या करूँ?" "ध्यान से देखो," मैंने उत्तर दिया, "तुम्हें व्यक्तिगत रूप से कौन सा मार्ग अधिक आकर्षक लगता है, और उसी को चुन लो।" "मुझे नहीं पता..." उसने कहा। "कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं विवाह की ओर अधिक झुक रही हूँ। मैं आपसे विनती करती हूँ, जेरोन्डा, कृपया आप स्वयं बताएं कि मुझे क्या करना चाहिए।" "खैर," मैंने उसे सलाह दी, "चूँकि तुम देखती हो कि तुम विवाह की ओर अधिक झुकाव रखती हो, तो तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम शादी कर लो, और ईश्वर तुम्हारी ज़िंदगी को संभाल लेंगे।" "आपकी कृपा से, जेरोन्डा," उसने जवाब दिया, "मैं बिल्कुल यही करूँगी।" और आज वह मुझसे मिलने फिर से आई। "जेरोन्डा," उसने कहा, "मैं शादीशुदा हो गई हूँ। एक नाविक से। एक अच्छा आदमी है, भगवान का शुक्र है, मैं उसके खिलाफ एक भी बात नहीं कह सकती। लेकिन मैं बहुत कष्ट झेल रही हूँ। क्या यह यातना नहीं है: छह महीने हम साथ रहते हैं, छह महीने अलग रहते हैं। जैसे ही वह समुद्र के लिए रवाना होता है, मैं उसे आधे साल तक नहीं देखती।" "धन्य आत्मा!" मैंने उत्तर दिया। "क्या तुमने ही मुझसे नहीं कहा था कि विवाहिक जीवन और संन्यासी जीवन दोनों तुम्हारे हृदय के करीब थे? खैर, तो यह लो: अब तुम्हारे पास दोनों हैं। फिर, तुम उस तरीके के लिए ईश्वर की स्तुति क्यों नहीं करती, जिस तरह उन्होंने तुम्हारा जीवन व्यवस्थित किया है?"

— गेरोन्डा, आजकल हम मुश्किल समय से गुज़र रहे हैं, इसीलिए कुछ युवा परिवार शुरू करने में हचिकचि रहे हैं।

— नहीं, प्रश्न को इस तरह रखना सही नहीं है। यदि उनमें मसीह में विश्वास है, तो उन्हें डरने की कोई बात नहीं। और उत्पीड़न के वर्षों का क्या? क्या वे आसान थे? फिर भी क्या मसीही उन दानों विवाह नहीं करते थे और परिवार नहीं बसाते थे? [इसके विपरीत —] हमारे चर्च में कतिने संत हैं जिन्होंने अपने बच्चों और जीवनसाथियों के साथ शहादत पाई!

युवा अध्ययन और अपने चुने हुए मार्ग पर आरंभ करना

— जेरोंडा, कई युवा पुरुष और महिलाएँ, यह तय नहीं कर पाते कि जीवन में कौन सा मार्ग चुनें, इसलिए वे अपनी पढ़ाई में ठीक से मन नहीं लगा पाते। यह सवाल उन्हें लगातार परेशान करता रहता है, और वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते।

— जब किसी युवा को इस तरह की समस्याएँ होती हैं, तो मैं उनसे कहता हूँ: 'क्या तुमने कभी वे बड़े, आधुनिक कोल्ड स्टोर देखे हैं? खैर, तुम यह करो: अपनी समस्याओं को ऐसे ही किसी फ्रिज में रख दो, और उन्हें तब तक वहीं रहने दो जब तक तुम अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर लेते। मैं यह नहीं कह रहा कि तुम्हें अपनी परेशानियों के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचना चाहिए। नहीं — बस अपनी पढ़ाई पूरी होने तक सब कुछ फ्रिज में रख दो। अगर तुम अभी अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दोगे, तो तुम्हारे दोस्त, जब वे अपनी पढ़ाई खत्म कर लेंगे, जीवन में अपनी जगह बना लेंगे और स्थिर हो जाएंगे, तो बाद में वे अपनी माला जपते हुए प्रार्थना करेंगे कि तुम भी जीवन में अपनी जगह पा लो।' युवाओं को बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि ऐसी बेचैनी दुश्मन की एक चाल है, जिसका उपयोग वह उन्हें भ्रमति करने और उनका ध्यान भटकाने के लिए करता है।

— गेरोन्डा, मैंने एक युवती को सलाह दी: 'अगर तुम शादी करने का सोच रही हो, तो तुम्हारे पढ़ाई करने का कोई फायदा नहीं है।'

— लेकिन जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती, तुम उससे क्या करवाना चाहते हो? मठाई बेचाएँ? उसके लिए बेहतर होगा कि वह कोई डिग्री पूरी करे या कोई हुनर सीखे, क्योंकि अगर उसके जीवन में कुछ अप्रत्याशति हो जाता है, तो उसने जो ज्ञान या पेशा सीखा है, वह काम आ सकता है। एक लड़की ने मुझसे एक बार कहा: 'मैं नन बनने के बारे में सोच रही हूँ, लेकिन मेरा मन बार-बार बदल जाता है।' मैंने पूछा, 'तुम किस कक्षा में हो?' उसने जवाब दिया, 'मैं माध्यमिक विद्यालय के दूसरे वर्ष में हूँ', लेकिन मैं पढ़ाई जारी नहीं रखना चाहती।' मैंने कहा, 'तुम पढ़ाई नहीं करना चाहती?' 'तो मैं तुम्हारे पतिजी से कहूँगा कि वे तुम्हारे लिए कुछ बकरियाँ, एक भेड़िया और एक बांसुरी खरीद लें। कुत्ता झुंड की रखवाली करेगा, और तुम बांसुरी बजाओगी और उनका ख्याल रखोगी। खैर, यह कैसा रहेगा? सुनो, यह करते हैं कि देखते हैं कि तुम विश्वविद्यालय की डिग्री ले सकती हो या कोई व्यावहारिक हुनर सीख सकती हो।' उसने जवाब दिया, 'तो फिर, गेरोन्डा, जब तक मैं यह तय नहीं कर लेती कि मुझे कॉन्वेंट में जाना है या शादी करनी है, तब तक मैं नवाइशियाट की उम्मीदवार के रूप में कॉन्वेंट में रहूँगी, ताकि मैं वनिमरता की कला सीख सकूँ।' "खैर, जहाँ तक उस कला की बात है," मैंने जवाब दिया, "तुम उसे घर पर ही सीख सकती हो — अगर तुम खुशी-खुशी वही स्वीकार कर लो जो तुम्हारा परिवार तुमसे कहे। तो चलिए ऐसा करते हैं: पहले तुम स्कूल खत्म करोगी, फिर विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा दोगी, और जब तुम स्नातक हो जाओगी, तो हम देखेंगे कि तुम्हें आगे क्या करना चाहिए।" "पाँच साल, गेरोन्डा, क्या यह थोड़ा ज्यादा लंबा नहीं है?" उसने जवाब दिया। "हाँ है," मैंने कहा, "लेकिन हम और क्या कर सकते हैं, जब तक कि तुमने कोई अंतिम फैसला नहीं लिया है?" "क्या यह मेरी ही गलती है, मेरे अनिर्णय के कारण?" उसने पूछा। "नहीं," मैंने कहा, "लेकिन तुम्हारा [आध्यात्मिक] तराजू अभी तक किसी भी एक तरफ नहीं झुका है।"

⁸ रूसी माध्यमिक विद्यालय के ग्यारहवें वर्ष के समकक्ष। — अनुवादक की टिप्पणी।

ऐसे मामलों में, हमें युवाओं को सचेत रहने और समय को व्यर्थ न गंवाने की सलाह देनी चाहिए। पढ़ाई के दौरान, उन्हें यथासंभव आध्यात्मिक जीवन जीना चाहिए, अपनी डगिरी (जो आवश्यक है) जल्द से जल्द प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, और फरि ईश्वर सब कुछ ठीक कर देगा। पढ़ाई के दौरान, उन्हें एक अच्छे आध्यात्मिक पति को खोजना चाहिए जो मठ या पारिवारिक जीवन के प्रतिसितही उत्साह से बचने और नरिशा में न पड़ने में मदद करे। उन्हें अपनी पढ़ाई पूरी होने तक धैर्य बनाए रखना चाहिए।

अपनी शिक्षा पूरी कर लेने और परपिक्व वयस्क बन जाने के बाद, वे किसी भी जीवन-शैली को अपनाने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित होंगे। तब उन्हें यह नरिणय लेना चाहिए कि जीवन में कौन सा मार्ग अपनाना है और ईश्वर की महिमा के लिए जो भी वे सर्वोत्तम समझें, वही करना चाहिए।

आज दुनिया ऐसी स्थिति में पहुँच चुकी है कि लोग अपने जीवन पथ के बारे में जतिनी परपिक्वता से नरिणय लेते हैं, उतना ही बेहतर होता है। क्या आप जानते हैं कि किस प्रकार की अप्रिय परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं? व्यक्ति को बहुत सावधान रहना चाहिए और अपरपिक्व नरिणय लेने से बचना चाहिए — विशेषकर यदि वह उत्साह के प्रतीकत्व हो और आसानी से बहक जाए।

— गेरोन्डा, कुछ युवा लोग अपना स्कूल का काम इसलिए नहीं करते क्योंकि वे आध्यात्मिक पठन और प्रार्थना को प्राथमिकता देते हैं।

— नहीं, पाठ शुरू करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा बनाए रखने के लिए, उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ पवित्र पतिओं में से किसी एक की पुस्तक का एक अंश पढ़ने, कुछ प्रार्थनाएँ करने और कुछ प्रणाम करने दें। और जब उन्हें बहुत अधिक अध्ययन और पढ़ाई करनी हो, तो वे ब्रेक ले सकते हैं और उस समय यीशु की प्रार्थना का जाप कर सकते हैं या चर्च का भजन गा सकते हैं। आखिरकार, अगर वे पढ़ाई के दौरान [किसी उच्च] आध्यात्मिक अभ्यास में संलग्न होना चाहते हैं — जैसा वे बाद में अपना सकते हैं — तो, पाठों और पढ़ाई पर अपना मन लगाए हुए, वे इस आध्यात्मिक अभ्यास को ठीक से करने में असमर्थ होंगे और अपनी पढ़ाई भी नहीं कर पाएंगे। अंत में, वे कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे। जबकि, अपने पाठों को पढ़ने और अध्ययन करने से, वे जल्दी से अपनी डगिरी प्राप्त कर लेंगे और उसके बाद अपनी मर्जी से कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हो जाएंगे। जब मैं कुछ दिनों के लिए अस्पताल में था⁹, तो मैंने अपनी माला, अपनी नमाज़ और अपना उपवास एक तरफ रख दिया: मैंने जो कुछ भी उन्होंने दिया, वह खा लिया। मैंने खुद से कहा, "अभी, मुझे डॉक्टरों की थोड़ी मदद करनी है, ताकि वे बदले में, मुझे ठीक होने में मदद कर सकें। और फिर मैं जो चाहूँगा, करूँगा।"

कुछ लड़के मेरे पास आते हैं और शिकायत करते हैं कि उनके माता-पिता उन पर बहुत दबाव डाल रहे हैं, उन्हें होमवर्क करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। अगर मैं भी इन बच्चों पर लगातार नजर बनाए रखता, तो इससे उन्हें कोई फायदा नहीं होता। उन्हें यह समझाने के लिए कि उन्हें अपनी पढ़ाई की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, मैं उन्हें अपने साथियों के उदाहरण देता हूँ जिन्होंने पढ़ाई की परवाह नहीं की और जिनकी ज़िंदगी बाद में बगिड़ गई, साथ ही उन लोगों के भी जो पढ़ाई में मेहनत करते थे और इसलिए सफल हुए। मुझे एक ऐसा ही मामला याद है: दो लड़के पड़ोसी शहर में पले-बढ़े। एक, जो बहुत तेज-तर्रार था, अपने पाठों को आसानी से समझ जाता था; प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय में, उसने लगातार शीर्ष अंक हासिल किए। दूसरा उतना होशियार नहीं था, और उसे पहले वाले के बराबर बने रहने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। जब वे उच्च माध्यमिक कक्षाओं में पहुँचे, तो शीर्ष छात्र ने पढ़ाई का केवल एक साल पूरा किया; वह खराब संगत में पड़ गया, स्कूल छोड़ दिया और अंततः उसे किसी कारखाने में सफाईकर्मी की नौकरी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह पहले से ही शादीशुदा था, उसके दो बच्चे थे और वह गुज़ारा करने के लिए संघर्ष कर रहा था। इस बीच, उसका पड़ोसी लॉ स्कूल से स्नातक हुआ, फिर यूरोप में पढ़ाई करने गया और व्यवसाय में डगिरी हासिल की। एक दिन, उस कारखाने में जहाँ पूर्व शीर्ष छात्र सफाईकर्मी के रूप में काम करता था, वे एक नए प्रबंधक की प्रतीक्षा कर रहे थे। सब कहते थे कि वह बहुत पढ़ा-लिखा था। जब नया प्रबंधक

⁹ 1966 में, एल्डर अस्पताल में थे, जहाँ उनकी ब्रोंकएक्टिसिस से पीड़ित होने के कारण फेफड़ों की सर्जरी हुई।

आया, तो सफ़ाईकर्मी ने उसे तुरंत अपने पूर्व सहपाठी के रूप में पहचान लिया। सफ़ाईकर्मी नरिशा से इतना भर गया था कि उसने कई बार आत्महत्या का प्रयास किया। किसी ने उसे पवित्र पहाड़ पर आकर मुझसे मिलने की सलाह दी। जब वह मुझे अपनी ज़िंदगी के बारे में बता रहा था, तो उसके मुँह से अचानक निकल गया: "ज़रा उस नकिम्मे को देखो—वह मेरा मैनेजर बन गया है!" अरे यार, मैंने उसे खूब डाँटा! मैंने कहा, "अरे, तुम," "तुम तो ऐसे-वैसे हो!" लेकिन तुम उससे भी ऊँचा उठ सकते थे! तुम खुद अच्छी ज़िंदगी जीते, तुम्हारे बच्चों को किसी चीज़ की कमी न होती, और तुम अच्छे काम करते! क्या यह काफी नहीं है कि तुम्हारे परिवार को तुम्हारी वजह से तकलीफ़ हो रही है? अब तुम अपनी जान भी लेना चाहते हो, ताकि उन्हें हमेशा के लिए ख़तम कर दो और अपने बच्चों को अनाथ छोड़ दो? मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस नहीं है, क्योंकि अब तुम अपनी ही मूर्खता की कीमत चुका रहे हो, लेकिन मुझे तुम्हारे बच्चों के लिए अफ़सोस है। क्या तुम समझते हो? देखते हैं कि तुम धैर्य रख सकते हो या नहीं, और मुझे लगता है, ईश्वर की मदद से, नया मैनेजर तुम्हारे साथ भी अच्छा व्यवहार करेगा। हो सकता है कि वह तुम्हें किसी दूसरे पद पर, पहले से बेहतर पद पर, स्थानांतरित कर दे। और अगर आपको इस कंपनी में काम करना पसंद नहीं आता है, तो कोई दूसरी नौकरी ढूँढ़ लीजिए; इसे उस हद तक न जाने दीजिए जहाँ आपके बच्चे बेसहारा रह जाएँ।" इसके बाद, वह किसी तरह होश में आ गया।

तो यह पता चलता है कि अगर छात्र पढ़ाई के दौरान पूरी लगन से मेहनत करते हैं, तो भले ही वे थोड़े थक जाएँ, लेकिन उनका कोई भी मॉड्यूल अधूरा नहीं रहेगा, वे जल्दी स्नातक हो जाएँगे, और बाद में उन्हें किसी भी बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। मैंने देखा है कि पढ़ाई के दौरान विभिन्न विषयों में पीछे रह जाने वाले छात्र विश्वविद्यालय से स्नातक होने और नौकरी पाने के बाद भी किसी न किसी से करजदार बने रहते हैं, और उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

— गेरोंडा, यदि कोई युवक उच्च शिक्षा संस्थान में पढ़ाई करते समय किसी युवती से मिलता है और यह रश्मिता विवाह तक जा सकता है, तो क्या उसके पढ़ाई पूरी करने से पहले शादी करने का कोई मतलब है?

— मुझे लगता है कि यह रश्मिता चाहे कतिना भी सुखद और अच्छा क्यों न हो, यह उसकी पढ़ाई में बाधा बनेगा। अगर कोई छात्र शादी कर लेता है, तो ऐसी शादी उसकी पत्नी और उसके बच्चों दोनों के लिए दुख का कारण बनेगी — भले ही उसकी चुनी हुई साथी जीवन की सबसे अच्छी साथी ही क्यों न निकले। ऐसे युवक के लिए बेहतर है कि वह अपनी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा को शिक्षा प्राप्त करने और विश्वविद्यालय से स्नातक होने पर केंद्रित करे, बना खुद पर ज्यादा बोझ डाले। और फिर उसे अपनी नज़ी ज़िंदगी को खुद संभालने दें। आखिरकार, अगर उसकी ऊर्जा बखिरी रहेगी, तो वह लगातार मानसिक और शारीरिक थकान की स्थिति में रहेगा।

अपने चुने हुए मार्ग पर सही ढंग से आगे बढ़ने के लिए मुख्य पूर्व आवश्यकता आध्यात्मिक जीवन है।

— जेरोंडा, क्या आपको वह युवती याद है जिसने आपको बताया था कि वह मठवासी जीवन पर विचार कर रही थी? उसने मुझे बताया कि उसकी एक सहपाठी ने उससे बार-बार पूछना शुरू कर दिया था कि वह सनिमा क्यों नहीं जाती या लड़कों के साथ बाहर क्यों नहीं जाती। उसे उसे क्या कहना चाहिए था?

— मुझे उससे कहना चाहिए था: 'मेरा अपना भाई भी मुझसे ऐसे सवाल नहीं पूछता! क्या तुम सच में मुझसे इस बारे में पूछने जा रहे हो?'

— कुछ दिन बाद, वह फिर से विश्वविद्यालय के पास उससे टकरा गया और उसके कंधे को पकड़ लिया। उसने बस कहा, 'हाय' — और तुरंत अंदर चली गई।

— नहीं, उसने बहुत बुरा बर्ताव किया! उस स्थिति में, उसे उसका सामना करना चाहिए था। उसने ऐसा बर्ताव किया कि उसे यह अहसास हो गया होगा कि उसे वास्तव में उसका व्यवहार पसंद है, इसलिए वह ऐसा फिर से करेगा। वह इस समय एक काफी नाजुक उम्र में है, और इसलिए अगर वह जवान लड़कों के साथ घुलने-मिलने लगेगी, तो उससे उसे कोई फायदा नहीं होगा। न ही उसे उनकी मदद करने के बहाने उनसे बात

करने की ज़रूरत है। अगर, किसी अच्छे, सभ्य युवक से मिलने के बाद, वह शादी करने का फैसला करती है, तो उसे अपने माता-पिता को बताना चाहिए। वे यह आकलन करेंगे कि क्या उस युवक में एक अच्छा परिवार बसाने के लिए ज़रूरी गुण हैं। लेकिन फलिहाल, जब तक उसने जीवन में कोई रास्ता तय नहीं कर लिया है, तब तक युवकों से बात करना उसके हित में नहीं है, क्योंकि इससे उसका ध्यान भटक जाएगा और वह अपनी मानसिक शांति खो देगी। इस मामले में लापरवाह दुर्भाग्यपूर्ण युवक और युवतियाँ खुद को एक बहुत ही अस्थिर स्थिति में पाते हैं, जो लगातार बेचैन रहते हैं और जिनमें शांति नहीं मिल पाती। चिता और बेचैनी उनके चेहरों पर साफ झलकती है और उनकी आँखों में परलोकस्थिति होती है।

एक महिला का किसी पुरुष के प्रति आकर्षण, और इसके विपरीत, मानव स्वभाव का हिस्सा है। लेकिन इस युवती से कहें कि अभी वह समय नहीं है। उसे अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने दें। जो युवा पुरुष और महिलाएं, छोटी उम्र से ही, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण को पालते हैं, वे सही क्षण के आने का इंतजार किए बिना ही 'बटन दबा देते हैं'। और फिर, जब सही समय आता है, तो उनका 'बटन' पहले ही दबाया जा चुका होता है और वे उस आनंद का अनुभव नहीं कर पाते, क्योंकि उन्होंने इसका अनुभव पहले — गलत समय पर — कर लिया होता है। जबकि वे युवा जो इस मामले में अपने प्रति सचेत रहते हैं, सही समय का इंतजार करने के बाद, और भी अधिक आनंदित होते हैं, और जब तक वह समय नहीं आता, वे शांत से रहते हैं। उन माताओं को देखिए जिन्होंने विवाह से पहले पवित्रता का पालन किया। वे कई चिताओं के बोझ के बावजूद, शांति में रहती हैं।

मैं हमेशा इस बात पर जोर देता हूँ कि विवाह से पहले एक युवा को यथासंभव आध्यात्मिक जीवन जीने और अपनी पवित्रता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, जो उन्हें दोहरा कल्याण सुनिश्चित करती है। आध्यात्मिक जीवन पारिवारिक जीवन और संन्यासी जीवन दोनों के लिए मूलभूत पूरवापेक्षा है। आज की दुनिया गेहूँ बोए गए खेत की तरह है। गेहूँ पर बालियाँ बनने लगी थीं, लेकिन सूखे खेत में घुस आए और सब कुछ रौंद डाला और खोद डाला। और अब यह खेत ऐसा दखिता है: जुताई की गई घास, मट्टी, कीचड़ में रौंदी गई गेहूँ की बालियाँ, और केवल कनारों पर ही यहाँ-वहाँ कुछ अनछुई बालियाँ खड़ी हैं।

जिस व्यक्ति ने अपनी युवावस्था में जितना अधिक आध्यात्मिक अभ्यास किया होगा, बाद में जीवन में चाहे वह कोई भी मार्ग चुने, उसके लिए उतना ही आसान होगा। जितना बेहतर वे खुद को सुसज्जित कर लेंगे और लड़ाई के लिए तैयारी करेंगे, गोलियाँ पास से गुजर रही हों और चारों ओर बम फट रहे हों, तब लड़ाई के दौरान उनके लिए उतना ही आसान होगा। जब तक कोई युवती यह नरिणय नहीं ले लेती कि वह नन बनेगी या एक दयालु और अच्छी माँ, तब तक उसे पवित्र जीवन जीना चाहिए। अतः फलिहाल, उसे यथासंभव अपने अध्ययन के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित करने का प्रयास करना चाहिए।

यदविह जो कुछ देखती और सुनती है, उसके प्रति सचेत रहे, और यदविह बुरे विचारों को दूर कर दे, तो अंततः उसे स्वयं को शुद्ध करने के लिए कम ही पड़ेगा, बनसिबत इसके कि वह लापरवाह हो। या एक युवक, जब वह उदाहरण के लिए एक सुंदर लड़की से मिलता है, तो उसे अच्छे विचारों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। उसे उसे किसी संत की जीवित प्रतिमा के रूप में देखना चाहिए। और यदविह किसी अनैतिक चरित्र वाली लड़की से मिलता है, तो उसे उसे अपनी ही बहन के रूप में देखना चाहिए। हम सभी आदम की संतानें हैं। उसे उस पर दया करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे वह दुखी होगा यदि उसकी अपनी बहन ऐसी स्थिति में पड़ जाए।

— जेरोंडा, फिर भी आज विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में युवा कई तरह के प्रलोभनों का सामना करते हैं।

— एक को ऐसे युवाओं से मतिरता करनी चाहिए जो आध्यात्मिक जीवन जीते हों, ताकि वे एक-दूसरे की मदद कर सकें और आध्यात्मिक वातावरण में बने रहें। नरिशाजनक तस्वीर पेश करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं कई ऐसे युवाओं को जानता हूँ जो विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं और पवित्र जीवन जी रहे हैं। वे यह अपने थोड़े से प्रयास और ईश्वर की महान सहायता से हासिल करते हैं।

भाग 1. एक मजबूत परिवार कैसे बनाएं

पति-पितृनी को, जहाँ तक संभव हो, प्रेम की सद्गुण को विकसित करना चाहिए, ताकि दोनों हमेशा एक के रूप में एकजुट रहें, और ताकि तीसरा—हमारे प्रियतम मसीह—हमेशा उनके साथ वास करे।

अध्याय 1. एक सामंजस्यपूर्ण परिवार पर

वैवाहिक जीवन की एक अच्छी शुरुआत

— गैरोन्डा, एक युवक जिसने वैवाहिक जीवन शुरू करने का निर्णय लिया था, ने मुझसे पूछा कि इसे सबसे अच्छी तरह से कैसे शुरू किया जाए।

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, किसी को एक अच्छी युवती को खोजने की कोशिश करनी चाहिए जो उसका दिल जीत ले। क्योंकि हर किसी का दिल अपने तरीके से लोगों की ओर आकर्षित होता है। कुछ को एक व्यक्तिके प्रति लगाव महसूस होता है, दूसरों को दूसरे के प्रति किसी को एक ऐसी दुल्हन नहीं देखनी चाहिए जो अमीर और सुंदर हो, बल्कि सबसे बढ़कर एक ऐसी देखनी चाहिए जो सरल और विनम्र हो। दूसरे शब्दों में, भावी पत्नी की बाहरी सुंदरता पर नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक सुंदरता पर अधिक ध्यान देना चाहिए। यदि वह युवती भरोसेमंद है, यदि उसमें साहस है — हालांकि एक महिला के चरित्र के लिए जितना आवश्यक है उससे अधिक नहीं — तो यह उसके भावी पति को सभी कठिनाइयों में उसके साथ पूर्ण पारस्परिक समझ तक पहुंचने और संघर्ष के सरिर्द से बचने में बहुत मदद करेगा। यदि इसके अलावा, उसमें ईश्वर का भय और विनम्रता भी हो, तो वे हाथ पकड़कर इस दुनिया की उथल-पुथल भरी नदी के दूसरी किनारे तक पहुँच सकते हैं।

यदि कोई युवक किसी विशेष युवती को अपनी भावी दुल्हन के रूप में गंभीरता से विचार कर रहा है, तो मुझे लगता है कि उसके लिए सबसे अच्छा होगा कि वह पहले अपने किसी करीबी के माध्यम से उसके माता-पिता को इस बारे में सूचित करे। तब उसे व्यक्तिगत रूप से उसके माता-पिता और स्वयं उस युवती से अपने इरादों के बारे में बात करनी चाहिए। इसके बाद, जब उनकी सगाई हो जाए — और यह सबसे अच्छा है कि सगाई और शादी के बीच का समय बहुत लंबा न हो — तो उसे अपनी मंगेतर को अपनी बहन के रूप में मानना चाहिए और उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। यदि विर और वधू दोनों, प्रेम से और अपनी पूरी शक्ति से, विवाह तक अपनी कुंवारी अवस्था बनाए रखने का प्रयास करें, तो विवाह संस्कार में, जब पुरोहित उन पर मुकुट रखता है, तो उन्हें ईश्वर की कृपा प्रचुर मात्रा में प्राप्त होगी। क्योंकि, जैसा कि संत जॉन क्रॉसोस्टोम कहते हैं, विवाह संस्कार के मुकुट कामुक सुख पर वज्र के प्रतीक हैं।¹⁰

इसके बाद, पति-पितृनी को यथासंभव प्रेम की सद्गुण को विकसित करना चाहिए, ताकि वे दोनों हमेशा एक के रूप में एकजुट रहें और तीसरा—हमारे प्रियतम मसीह—उनके साथ वास करे। बेशक, शुरुआत में, जब तक नवविवाहितों का वैवाहिक जीवन सामान्य लय में नहीं आ जाता और वे एक-दूसरे को ठीक से नहीं जान

¹⁰ "नवविवाहितों के सरों पर वज्र का प्रतीक मालाएँ पहनाई जाती हैं — कि बिना किसी पराजय के वे वैवाहिक जीवन में प्रवेश करते हैं, कि वे सुख से पराजित नहीं होते।" सेंट जॉन क्रॉसोस्टोम। टमिथी को लखी पहली पत्रिका पर भाष्य, होमीली 9। पीजी 62, कॉलम 546।

लेते, तब तक उन्हें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यह किसी भी प्रयास की शुरुआत में होता है। कुछ दिनों पहले, मैंने एक छोटे पक्षी को देखा। वह पहली बार अपने लिए भोजन खोजने के लिए घोंसले से बाहर उड़ा था। बेचारा छोटा पक्षी कीट पकड़ना नहीं जानता था और जमीन के पास उड़ते हुए, अंततः किसी कीट को पकड़ने से पहले पूरे एक घंटे तक उड़ता रहा। उस छोटे पक्षी को देखते हुए, मैंने इस तथ्य पर विचार किया कि कुछ भी नया शुरू करना कभी आसान नहीं होता। एक विश्वविद्यालय स्नातक, अपनी डिग्री प्राप्त करने और काम शुरू करने के बाद, शुरुआत में कठिनाइयों का अनुभव करता है। एक मठ में नवप्रवेशी को भी अपने मठजीवन की शुरुआत में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। और एक नवविवाहित युवक को भी शुरुआत में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

— गेरोन्डा, क्या यह स्वीकार्य है कि दिलहन दूल्हे से बड़ी हो?

— चर्च में ऐसा कोई नियम नहीं है जो कहे कि यदि कोई युवती अपने मंगेतर से दो, तीन या पाँच साल बड़ी हो, तो वे शादी नहीं कर सकते।

दिव्य सामंजस्य चरित्र के अंतर में नहिती है

एक दिन, एक आदमी मेरी झोपड़ी में आया और शिकायत करने लगा कि वह अपनी पत्नी के साथ लगातार होने वाली असहमति के कारण बहुत परेशान था। हालांकि, मुझे एहसास हुआ कि उनके बीच वास्तव में कुछ भी गंभीर नहीं था। इस आदमी की अपनी 'गांठें' और 'उभार' हैं, और उसकी पत्नी की भी, इसीलिए वे एक-दूसरे से नहीं मल पाते। [दोनों को] थोड़ी 'प्लानिंग' की जरूरत है। दो बना तराशे हुए तख्ते लें। एक में एक जगह गांठ है, दूसरे में दूसरी जगह। और अगर आप उन्हें जैसे हैं, बना घसिं हुए, वैसे ही जोड़ना चाहें, तो उनके बीच एक खाली जगह रह जाएगी। हालांकि, अगर आप पहली तख्ती को एक जगह थोड़ा घसिते हैं और दूसरी को दूसरी जगह, तो वे तुरंत एक-दूसरे में फिट हो जाएँगी। आपको बस दोनों के लिए एक ही घिसाई यंत्र का उपयोग करना है।¹¹

"मैं अपनी पत्नी से मेल नहीं खा पाता!" कुछ पति मुझसे शिकायत करते हैं। "हमारे स्वभाव बिल्कुल अलग हैं! वह बिल्कुल अलग तरह की प्रवृत्तियों की व्यक्त है। ईश्वर ऐसी बेतुकी बातों को कैसे अनुमति दे सकते हैं? क्या वे ऐसा प्रबंध नहीं कर सकते थे कि जीवनसाथियों के स्वभाव एक जैसे हों, ताकि वे एक आध्यात्मिक जीवन जी सकें?" "क्या आपको एहसास नहीं है," मैं जवाब देता हूँ, "कि दिव्य सामंजस्य चरित्र के इन मतभेदों में ही नहिती है? अलग-अलग चरित्र सामंजस्य में एक साथ आते हैं। बस कल्पना कीजिए कि अगर आपका और आपकी पत्नी का चरित्र बिल्कुल एक जैसा होता! ईश्वर न करे! कल्पना कीजिए कि क्या होगा अगर, उदाहरण के लिए, आप और आपकी पत्नी दोनों ही जल्दी नाराज़ हो जाने वाले होते। आप अपने घर में एक भी पत्थर नहीं छोड़ते! और अगर दोनों जीवनसाथियों का स्वभाव समान रूप से कोमल और नम्र होता तो? आप तो खड़े-खड़े सो ही रहे होते! अगर न तो आप और न ही आपकी पत्नी सरदियों में बर्फ माँगने के लिए राजी होते — तो बेशक, आप एक-दूसरे के साथ अच्छी तरह से रहते, लेकिन आप दोनों नरक जैसी पीड़ा में पड़ जाते। और अगर आप दोनों ही फ़जूलखर्ची होते तो? क्या आप घर चला पाते? आप अपनी दौलत बर्बाद कर देते, और आपके बच्चे बेसहारा रह जाते।"

अगर एक मुश्किल, ज़िद्दी आदमी को ऐसी पत्नी मिले जो उसके बराबर हो—ऐसी जो चाहे आप कुछ भी कहें, अपना काम अपनी ही तरह से करेगी—तो, बेशक, वे एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त होंगे। क्या ऐसा नहीं है? हालांकि, एक साथ रहने के सिर्फ एक दिन बाद ही, वे एक-दूसरे के गले पड़ जाएँगे! इसीलिए देखो कि ईश्वर कैसे सब कुछ व्यवस्थित करता है: वह यह सुनिश्चित करता है कि एक अच्छा, दयालु व्यक्ति किसी भटकने वाले से विवाह करे, ताकि उस भटकने वाले को मदद मिल सके, बशर्ते वह मूल रूप से अच्छा स्वभाव का हो और अपनी जवानी में बुराई ने उसे भटका दिया हो।

¹¹ एल्डर, विवाहित जोड़ों के साथ आध्यात्मिक पति के कार्य का उल्लेख कर रहे हैं। यह कार्य तब प्रभावी सिद्ध होता है जब पति और पत्नी का एक ही आध्यात्मिक पति हो; अर्थात्, उनकी 'गांठें' और 'उभार' एक ही 'रंदा' से समतल हो जाते हैं।

जीवनसाथियों के व्यक्तित्व में थोड़ा सा अंतर एक सामंजस्यपूर्ण परिवार बनाने में मदद करता है, क्योंकि एक जीवनसाथी दूसरे की कमी को पूरा करता है। एक कार को दोनों पैडल की आवश्यकता होती है: आगे बढ़ने के लिए एक्सेलेरेटर और समय पर रुकने के लिए ब्रेक। अगर किसी कार में सिर्फ एक ब्रेक होता, तो वह अपनी जगह से हलती भी नहीं, और अगर सिर्फ एक एक्सेलेरेटर होता, तो वह रुक ही नहीं पाती। 'तुम दोनों एक ही तरंग पर हो,' मैंने एक विवाहिता जोड़े से कहा, 'और इसलिए तुम एक-दूसरे के लिए उपयुक्त नहीं हो!' ये दोनों लोग बहुत संवेदनशील थे। अगर घर में कुछ भी हो जाता, तो वे दोनों लगाम छोड़कर विलाप करने लगते। पति विलाप करता, 'ओह, हम पर क्या आफत आ गई है!' पत्नी सिसिकती, 'ओह, यह कतिना कड़वा दुख है!' दूसरे शब्दों में, एक जीवनसाथी दूसरे को और भी गहरे नरिश में डूबने में 'मदद' करता है! पति अपनी पत्नी का मनोबल नहीं बढ़ा सकता और उससे नहीं कह सकता: 'एक मिनट रुको, हमारे साथ जो हुआ है वह वास्तव में इतना गंभीर नहीं है।' मैंने यह कई परिवारों में देखा है।

अलग-अलग व्यक्तित्वों के साथ, एक विवाहिता जोड़ा अपने बच्चों की परवरिश के मामले में अधिक हासिल कर सकता है। एक साथी उन्हें थोड़ा कसकर नियंत्रित करेगा, जबकि दूसरा कहेगा, 'चलो, बच्चों को थोड़ी आजादी दो।' यदि पति और पत्नी दोनों अपने बच्चों पर बहुत ज्यादा सख्ती बरतते हैं, तो वे उनसे दूर हो जाएंगे। लेकिन अगर दोनों उन्हें मनमानी करने की छूट दे दें, तो वे अपने बच्चों को खो देंगे। हालांकि, अगर माँ और पति की व्यक्तित्व अलग-अलग हों, तो उनके बच्चे संतुलन पा लेंगे।

मेरा मतलब यह है कि [एक परिवार में] सब कुछ आवश्यक है। बेशक, जीवनसाथियों को अपनी-अपनी व्यक्तिगत प्रकृति के मामले में चरम पर नहीं जाना चाहिए, लेकिन उनमें से प्रत्येक को अपनी-अपनी प्रकृति के अनुरूप एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप कुछ बहुत मीठा खाते हैं, तो आपको कुछ नमकीन खाने का मन करेगा। जब आप अंगूर खा-खाकर तृप्त हो जाएँ, तो मीठास को कम करने के लिए आप उसके बाद पनीर का एक टुकड़ा खाना चाहेंगे। बगीचे की हरी सब्जियाँ: अगर वे बहुत कड़वी हों, तो वे खाने योग्य नहीं होतीं; लेकिन अगर सब्जियों में कड़वाहट या खट्टापन की हल्की सी झलक हो, तो वे स्वादपिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक दोनों होती हैं। लेकिन अगर खट्टे स्वभाव का कोई व्यक्ति यह कहना शुरू कर दे कि बाकी सभी को भी उतना ही खट्टा हो जाना चाहिए, और कड़वे स्वभाव वाला कोई व्यक्ति सभी को कड़वा होने के लिए प्रेरित करे, जबकि तीसरा—नमकीन स्वभाव वाला—इस बात पर जोर दे कि सभी को नमकीन हो जाना चाहिए, तो वे कभी भी आपसी समझ पर नहीं पहुँच पाएंगे।

पति-पत्नी के बीच सम्मान

ईश्वर ने बुद्धिमानी से सब कुछ व्यवस्थित किया है। उन्होंने पुरुषों को कुछ विशेष गुण दिए हैं और महिलाओं को कुछ अन्य। उन्होंने पुरुषों को साहस दिया है ताकि वे कठिन परिस्थितियों से निकलने का रास्ता खोज सकें और महिलाएं उनका पालन करें। क्योंकि यदि ईश्वर ने महिलाओं को वही साहस दिया होता, तो परिवार एक साथ नहीं रह पाता।

एपरिस में¹², लोग एक ऐसी महिला के बारे में कहानियाँ सुनाते थे जो पूरे क्षेत्र में दहशत फैलाती थी! वह लंबी सफेद कमीज़ पहनती थी और हमेशा अपनी कमर में एक यातागन छिपाए रखती थी।¹³ डाकू लोग अपने छापों पर भी उसे साथ ले जाते थे! बस कल्पना कीजिए: अपराधियों के गरिह में एक महिला! एक बार वह अपने गाँव से कुछ घंटे की पैदल दूरी पर स्थित एक दूरदराज के गाँव गई, ताकि वहाँ से एक युवा वलाचियाई लड़के को लाकर अपनी बेटी से उसका विवाह करा सके। जब उस लड़के ने वरिध करना शुरू किया, तो उसने उसे दबा लिया, कंधों पर लादकर अपने गाँव वापस खींच लाई! हालांकि, ऐसे मामले नियम का अपवाद हैं। महिलाओं को सेना में भरती करने और उनसे एक महिला कंपनी बनाने की कोशिश करें। फरिस्काउट की

¹² एपरिस – पश्चिमी ग्रीस का एक क्षेत्र। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹³ यातागन एक बड़ी, घुमावदार तुरकी कटार है। – अनुवादक की टिप्पणी।

वर्दी में दर्जन भर कशिरों को लें और उन्हें दूर से उन महिला योद्धाओं के सामने आने के लिए कहें। पूरी कंपनी एक ही पल में भाग खड़ी होगी! वे सोचेंगे कि दुश्मन हमला कर रहा है!

पवतिर शास्त्र कहता है, "पति पत्नी का सरि है।"¹⁴ दूसरे शब्दों में, ईश्वर ने यह निर्धारित किया है कि पति को अपनी पत्नी पर अधिकार प्राप्त हो। पत्नी का पति पर अधिकार ईश्वर का अपमान है। ईश्वर ने पहले आदम को बनाया, जिसने अपनी पत्नी के बारे में कहा: "यह अब मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे मांस में से मांस है।"¹⁵ सुसमाचार कहता है कि पत्नी को अपने पति से डरना चाहिए — अर्थात् उसे उसका सम्मान करना चाहिए। और पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए।¹⁶ सम्मान में प्रेम होता है। प्रेम में सम्मान होता है। जसि मैं प्रेम करता हूँ, मैं उसका सम्मान भी करता हूँ। जसि मैं सम्मान करता हूँ, मैं उससे प्रेम भी करता हूँ। दूसरे शब्दों में, प्रेम और सम्मान अलग-अलग चीजें नहीं हैं। वे एक ही हैं।

हालाँकि, लोग इस द्रव्य सामंजस्य से मुंह मोड़ लेते हैं और सुसमाचार के शब्दों का अर्थ समझने में असफल रहते हैं। इस प्रकार, एक पति सुसमाचार की गलत व्याख्या करते हुए अपनी पत्नी से कहता है: 'तुम्हें मुझसे डरना चाहिए!' कतिना अजीब आदमी है—अगर वह तुमसे डरती होती, तो वह सबसे पहले तुम्हारे साथ शादी ही नहीं करती! और कुछ महिलाओं की अपनी राय है: 'पत्नी को पति से डरना ही क्यों चाहिए? नहीं, मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकती।' यह किस तरह का धर्म है? भेदभाव!" लेकिन देखिए पवतिर शास्त्र क्या कहते हैं: "यहोवा का भय ज्ञान की आरम्भ है।"¹⁷ ईश्वर का भय ईश्वर के प्रति श्रद्धा, भक्ति, आध्यात्मिक वनिम्रता है। यह भय आपको श्रद्धापूर्ण वसिम्य की ओर ले जाता है; यह कुछ पवतिर है।

जसि पुरुष समानता की कुछ महिलाएँ आकांक्षा करती हैं, वह केवल एक हद तक ही उचित ठहराई जा सकती है। आज महिलाएँ पुरुषों के साथ समान स्तर पर काम करती हैं और मतदान करती हैं। परिणामस्वरूप, उनमें एक प्रकार की अस्वास्थ्यकर मानसिकता घर कर गई है और वे मानती हैं कि वे पुरुषों के बराबर हैं [हर मामले में]। बेशक, पुरुषों और महिलाओं की आत्मा एक जैसी है। लेकिन अगर पति अपनी पत्नी से प्यार नहीं करता, और पत्नी अपने पति का सम्मान नहीं करती, तो परिवार में कलह उत्पन्न हो जाती है। पुराने दिनों में, पत्नी का अपने पति का वरिष्ठ करना पूरी तरह से अस्वीकार्य माना जाता था। लेकिन अब एक बेबाक, अभद्र भावना हावी हो गई है। वे दनि कतिने अद्भुत थे! मैं एक विवाहित जोड़े को जानता था। पति एक कद-काठी से छोटा, साधारण-सी आकृति वाला व्यक्ति था, जबकि पत्नी लंबी, वीरतापूर्ण कद-काठी वाली थी! वह अकेले ही आसानी से एक गाड़ी से सौ मन अनाज उतार सकती थी! एक बार, एक मजदूर—जो खुद भी एक हट्टा-कट्टा लड़का था—उसके पास आकर छेड़ने लगा, और उसने, उसे पकड़कर, एक माचिस की तीली की तरह कई मीटर दूर फेंक दिया! लेकिन काश आप उस आज्ञाकारिता को देख पाते जो इस महिला ने अपने पति के प्रति दिखाई, कि कैसे उसने उनका सम्मान किया! इसी तरह एक परिवार मजबूत और अटूट बनता है। अन्यथा, वह टूट नहीं रह सकता।

पति-पत्नी के बीच प्रेम

— तो फिर, माँ, क्या आपने दमितिरी को, जो शादी कर रहा है, बधाई संदेश लिखा है?

— हाँ, लिखा है, गेरोन्डा।

— मुझे वह पोस्टकार्ड दे दो, और मैं उसमें अपने कुछ शब्द जोड़ दूँगा: 'मसीह और परमेश्वर की अति पवतिर माता आपके साथ हों! दमितिरी, मैं तुम्हें अपनी यह आशीर्वाद देता हूँ कि तुम सारी दुनिया से लड़ लो, सविनय मरियम के! और मरियम को भी यही आशीर्वाद: सभी से लड़ लो, पर मुझसे नहीं!' देखते हैं कि वे समझते हैं कि मेरा क्या मतलब है। एक आदमी ने मुझसे पूछा: 'गेरोन्डा, पति और पत्नी को सबसे ज्यादा

¹⁴ एफ़ि. 5:23.

¹⁵ उत्पत्ति 2:23.

¹⁶ देखें एफ़ि. 5:33।

¹⁷ नीतिविचन 1:7.

क्या बांधता है?' 'कृतज्ञता,' मैंने जवाब दिया। एक व्यक्ति दूसरे से उस चीज़ के लिए प्यार करता है जो दूसरा उसे देता है। एक पत्नी अपने पति को विश्वास, भक्ति और आज्ञाकारिता देती है। एक पति अपनी पत्नी को यह आश्वासन देता है कि वह उसकी सुरक्षा और देखभाल में है। एक पत्नी घर की मालिकानि होती है, लेकिन उसकी मुख्य सेविका भी। एक पति घर का मुखिया होता है, लेकिन वह इसका बोझ उठाने वाला भी होता है।

पति और पत्नी को एक-दूसरे के प्रति शुद्ध प्रेम रखना चाहिए — ताकि वे एक-दूसरे में पारस्परिक सांत्वना पा सकें और अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों को पूरा कर सकें। सद्भाव में जीने के लिए, उन्हें सबसे पहले अपने जीवन को प्रेम पर आधारित करना चाहिए — वह अनमोल प्रेम जो आध्यात्मिक गरमा और आत्म-बलदान से युक्त होता है, न कि झूठे, सांसारिक, कामुक प्रेम से। जहाँ प्रेम और आत्म-बलदान मौजूद होते हैं, वहाँ एक व्यक्ति हमेशा खुद को दूसरे की जगह रखता है, उसे समझता है, और उसके दर्द को महसूस करता है। और अपने पड़ोसी का अपने दुखी हृदय में स्वागत करके, एक व्यक्ति मिसीह का अपने हृदय में स्वागत करता है, जो बदले में उसे अपनी अकथनीय आनन्द से भर देते हैं।

जब एक जीवनसाथी दूसरे से प्रेम करता है, तब चाहे वे अलग ही क्यों न हों — यदि परिस्थितियाँ ऐसा माँगे — तब भी वे निकट ही रहेंगे, क्योंकि मिसीह के प्रेम में कोई दूरी नहीं होती। हालाँकि, ईश्वर न करे, यदि जीवनसाथियों के बीच प्रेम नहीं है, तो भले ही वे एक-दूसरे के बगल में खड़े हों, वे वास्तव में बहुत दूर हो सकते हैं। इसलिए, प्रत्येक जीवनसाथी को अपने पूरे जीवन में एक-दूसरे के लिए अपने प्रेम को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, और उनके लिए स्वयं को बलदान करना चाहिए।

शारीरिक प्रेम सांसारिक लोगों को बाहरी रूप से एक साथ रखता है, लेकिन केवल तब तक जब तक उनके पास [ऐसे शारीरिक प्रेम के लिए आवश्यक] सांसारिक गुण होते हैं। जब ये सांसारिक गुण खो जाते हैं, तो शारीरिक प्रेम लोगों को अलग कर देता है, और वे वनिश की ओर सरक जाते हैं। लेकिन जब पति-पत्नी के बीच सच्चा, कीमती आध्यात्मिक प्रेम होता है, तो यदि उनमें से कोई एक सांसारिक गुण खो भी दे, तो यह न केवल उन्हें अलग नहीं कर पाएगा, बल्कि उन्हें और भी दृढ़ता से एक कर देगा। यदि केवल कामुक प्रेम ही है, तो एक पत्नी, यह जानने पर कि उदाहरण के लिए, उसके जीवनसाथी ने किसी दूसरी महिला को देखा है, उसके आँखों में सल्फ्यूरिक एसिड छड़िक देगी और उसे अंधा कर देगी। लेकिन अगर वह उससे शुद्ध प्रेम करती है, तो उसे उसके लिए और भी अधिक पीड़ा होती है और, संवेदनशीलता और देखभाल के साथ, वह उसे सही रास्ते पर वापस लाने की कोशिश करती है। इस तरह, ईश्वर की कृपा मिलती है।

एक दिन, यूनानी मूल के एक अमेरिकी डॉक्टर मेरे कालीवा में मिलने आए। मैंने देखा कि उनका रंग गोरा था, इसलिए मैंने वविकपूर्ण ढंग से उनके जीवन के बारे में पूछा। "फादर," उन्होंने मुझसे कहा। "मैं एक ऑर्थोडॉक्स ईसाई हूँ, लेकिन हाल तक मैं उपवास नहीं करता था, और चर्च भी बहुत कम जाता था। एक रात, जब मैं अपने कमरे में घुटने टेककर प्रार्थना कर रहा था, मैंने ईश्वर से एक महत्वपूर्ण मामले में मदद करने का आग्रह किया, और कमरा एक प्रकार की मधुर रोशनी से भर गया। यह काफी लंबे समय तक चला: मैंने उस प्रकाश के सवि कुछ नहीं देखा, और अपने भीतर एक अकथनीय शांति का अनुभव किया।" मैं यह सुनकर चकित रह गया, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि इस व्यक्ति को अकल्पित प्रकाश का दर्शन हुआ था। इसलिए मैंने उससे इस घटना से पहले क्या हुआ था, यह बताने के लिए कहा। "फादर," उसने कहना शुरू किया, "मैं एक विवाहित व्यक्ति हूँ और मेरे तीन बच्चे हैं। हमारी वैवाहिक जीवन की शुरुआत अच्छी थी। हालाँकि, बाद में, मेरी पत्नी में घर और बच्चों की देखभाल करने का धैर्य नहीं रहा, और उसने मुझसे पूछना शुरू कर दिया कि क्या हम उसके दोस्तों के साथ मौज-मस्ती के लिए बाहर जा सकते हैं। मैं उसके आगे झुक गया। कुछ समय बीता, और उसने घोषणा कर दी कि वह अपनी सहेलियों के साथ अकेले बाहर जाना चाहती है। मैंने वह भी बर्दाश्त कर लिया, और बच्चों की देखभाल खुद की। उसके बाद, वह मेरे साथ छुट्टियाँ मनाने नहीं जाना चाहती थी, और उसने मुझसे पैसे माँगने शुरू कर दिए ताकि वह अकेले छुट्टियाँ मनाने जा सके। फिर उसने मुझसे उसके लिए एक अलग फ्लैट करिए पर लेने को कहा। मैंने उस बात को भी मान लिया।

लेकनि वह अपने आशकियों को उस फ्लैट में लाती थी। इस पूरे समय, मैंने वभिन्न तरीकों से — सलाह और समझाने के माध्यम से — उसकी मदद करने की कोशिश की, ताकि हमारे बच्चों की खातिर उसका दिल बदल जाए। लेकिन वह किसी भी सलाह को नहीं मानती थी। अंत में, मुझसे एक बड़ी रकम लेने के बाद, वह गायब हो गई। मैंने उसकी तलाश की, जहाँ भी हो सका उसके बारे में पूछा - लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; मैं तो उसके सुराग तक भी खो चुका था। और फिर एक दिन मुझे बताया गया कि वह यहाँ, ग्रीस आ गई है, और उसने एक भ्रष्ट अड्डे पर खुद को बेचने शुरू कर दिया है। उसके इस दयनीय पतन के दुख का वर्णन करना असंभव है, जसिने मुझे घेर लिया था। अपने दुख में, मैं घुटनों के बल गिर पड़ा और प्रार्थना करने लगा: 'हे मेरे ईश्वर,' मैंने वनिती की, 'मुझे उसे खोजने में मदद करो, और मैं यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा कि वह अपनी आत्मा को नष्ट न करे। मैं उस हालत को देख नहीं सकता जसिमें वह पहुँच गई है।' और फिर वह प्रकाश मुझ पर छा गया और मेरा हृदय शांति से भर गया।" — "भाई!" मैंने उससे कहा। "ईश्वर ने तुम्हारा धैर्य, तुम्हारी दया, तुम्हारे प्रेम को देखा, और तुम्हें यह सातवना दी।"

इसीलिए मैं कहता हूँ कि आम लोग ही हमें जज करेंगे। क्या आप समझते हैं? अमेरिका में कहीं एक डॉक्टर, जसिकी पत्नी ऐसी है, ऐसी परिस्थितियों और ऐसे सामाजिक दायरे में — और फिर भी देखिए वह कसि हालत में पहुँच गया है!

अध्याय 2. धैर्य कैसे एक परिवार को बखिरने से बचाता है

— आपकी बहन कैसी है? क्या वह अपने पतन के साथ ठीक है?

— जेरोंडा, मैंने अफवाहें सुनी हैं कि उनके यहाँ सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। लेकिन वह इसे बर्दाश्त कर लेती है, और जब जरूरत होती है, तो वह अकेले ही बोझ उठा लेती है।

— बस यही होता है। अगर दो बैलों की जोड़ी जोत दी जाए और उनमें से एक कमजोर या आलसी हो, तो दूसरा जानवर ज्यादा जोर लगाता है और एक तरह से पहले वाले को अपने पीछे खींच लेता है। देखिए: वे आम लोग हैं, फिर भी वे खुद को सुधारने के लिए काम कर रहे हैं। और यहाँ आप सब फिर भी राजकुमारी की तरह व्यवहार कर रहे हैं! बस एक ऐसी माँ की कल्पना कीजिए जिनके चार बच्चे हों: एक मानसिक रूप से विकलांग है, दूसरा मानसिक रूप से बीमार है, तीसरा थैलेसेमिया से पीड़ित है,¹⁸ और चौथा रात में पता नहीं कहाँ भटक जाता है, जबकि उस गरीब महिला का पति भी उसे प्रताड़ित कर रहा है। सोचो, उसे कतिनी सब बातें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं! इतना कि अगर वह अपनी पूरी ताकत से चिल्ला भी दे, तो भी वह अपने दर्द के बारे में किसी को नहीं बता सकती, क्योंकि परिवार के भीतर होने वाली कुछ बातें घर के बाहर चर्चा नहीं की जा सकती। उदाहरण के लिए, उसका पति पूरी तरह से अलग जदिगी जी सकता है, और उस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता। उस बेचारी महिला के पास करिया देने के लिए पैसे भी नहीं हैं; वे उसे उसके घर से बेदखल करना चाहते हैं। उसे काम की तलाश करने, खुद को वभिन्न खतरों में डालने, और आपसे यह पूछने के लिए मजबूर होना पड़ता है: "कृपया प्रार्थना करें कि मैं कम से कम इन खतरों से बची रहूँ।"

या शायद उसका पति शराब पीता है, काम नहीं करता, और वह अकेले काम करने के लिए मजबूर है — उदाहरण के लिए ऊँची इमारतों की सीढ़ियाँ साफ करने के लिए। जबकि उसका पति अपना समय पबों में बिताता है, आधी रात के बाद नशे में घर आता है, उसे पीटता है, उससे पैसे की मांग करता है, या खुद उसके नयिकताओं के पास जाकर उसकी कमाई छीन लेता है। ओह, यह कतिना यातना है!

¹⁸ थैलेसेमिया एक आनुवंशिक हेमोलिटिक एनीमिया है, जसिमें ग्लोबिन प्रोटीन का संश्लेषण बाधित होता है, और यह भूमध्यसागरीय देशों में आम है। इस स्थिति के कारण क्रमिक एनीमिया, यकृत और प्लीहा का बढ़ना, पीलिया आदि होता है। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

कुछ महिलाओं के मामले में सब कुछ बलिकूल स्पष्ट होता है — उनके कुछ पाप होते हैं, और इस तरह पीड़ा सहकर वे उनका प्रायश्चित्त कर रही होती हैं। लेकिन कुछ और भी हैं — जनिके ऐसे कोई पाप नहीं होते। बाद वाली महिलाओं को अपनी सहन की गई पीड़ा का न्यायसंगत प्रतफल मिलेगा। मैं एक माँ को जानती हूँ। बचपन में वह एक परी जैसी थी! परिवार की सबसे दयालु आत्मा, सबसे शांत बच्ची। और उसे आखिरकार कसि भयानक उपद्रवी से शादी करनी पड़ी! उसके परिवार को कैसे धोखा दिया गया! उसने एक शराबी से शादी की, जो बचपन से ही कुख्यात उपद्रवी था। उसके पति शराब पीते थे, और उसने भी यह बुरी आदत अपना ली। और अब यह बेचारी महिला झुकी हुई पीठ के साथ दूसरों के घरों में हड्डी-पसली एक करने तक काम करती है, जबकि उसका पति उसे पीटता है और चाकू की धमकी देता है। उसने कतिनी बार चलिलाया है: 'मैं तुम्हें चाकू मारकर जान से मार डालूँगा!' और वह इस बात से डरती है कि वह सच में ऐसा कर सकता है! वह सचमुच की यातना झेल रही है! और फिर भी उसके चार बच्चे हैं। इस गरीब महिला के अपने परिवार वालों ने तो यहाँ तक सलाह दी कि वह तलाक ले ले, लेकिन वह उनसे कहती है: 'मुझे लगता है कि मैं थोड़ा और सह लूँगी।' और वह सहन करती भी है। क्या आप इसे समझ सकते हैं? इस महिला ने न तो 'पतेरिका' पढ़ी है और न ही संतों के जीवन, और फिर भी वह सहन करती है! 'ठीक है,' मैंने एक बार उससे कहा। 'लेकिन आपके बच्चों का क्या? वे यह सब देखते हैं और हस्तक्षेप नहीं करते?' 'वे अभी सिर्फ पंद्रह या सोलह साल के हैं,' उसने जवाब दिया। 'पहले उन्हें अपनी सैन्य सेवा पूरी करने दो, और जब वे वापस आएँगे, तो वे अपने पति को जमकर डाँटेंगे!' दूसरे शब्दों में, जब तक वे अपनी सैन्य सेवा पूरी नहीं कर लेते, तब तक उसे पटिई सहनी पड़ेगी!

धैर्य व्यक्तिको दैवीय कृपा से परिपूर्ण कर देता है।

— गेर्रोना, किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति जो चड़िचड़ा या उत्तेजित हो, हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए?

— धैर्य से।

— लेकिन अगर मुझमें धैर्य ही नहीं है तो?

— हमें जाकर कुछ खरीद लेना चाहिए! यह सुपरमार्केट में मिलता है!... देखिए, अगर कोई गुस्से से आग-बबूला हो, तो आप उनसे कुछ भी कहें, कोई फरक नहीं पड़ेगा। ऐसे समय में चुप रहना और यीशु की प्रार्थना करना सबसे अच्छा होता है। प्रार्थना उन्हें शांत कर देगी, और फिर आप उनसे आपसी सहमति पर पहुँच सकते हैं। सोचिए, जब समुद्र में उफान हो तो मछुआरे भी मछली पकड़ने नहीं जाते। वे धैर्यपूर्वक मौसम के बेहतर होने का इंतजार करते हैं।

— गेर्रोन्डा, आप लोगों की अधीरता को कैसे समझाते हैं?

— यह इसलिए है क्योंकि उनके भीतर बहुत... शांति है! ईश्वर ने लोगों की मुक्ति उनके धैर्य पर निर्भर कर दी है। 'लेकिन जो अंत तक टिकेगा, वह उद्धार पाएगा' (19), सुसमाचार कहता है। ईश्वर लोगों को कठिनाइयाँ और विभिन्न परीक्षाएँ देता है ताकि वे धैर्य में नपुण हो सकें।

धैर्य प्रेम से शुरू होता है। किसी के प्रति धैर्य रखने के लिए, आपको उनकी पीड़ा का अनुभव करना चाहिए। "धैर्य परिवार को विनाश से बचाता है। मैंने जंगली जानवरों को भेड़ों की तरह कोमल होते देखा है। यदि आप ईश्वर में विश्वास रखते हैं, तो सभी समस्याएँ सुचारू रूप से और आध्यात्मिक रूप से हल हो जाती हैं। एक बार, जब मैं स्टोमयिन मठ में रह रहा था, तो मुझे कोनटिसा में एक महिला से मुलाकात हुई²⁰ जिसका चेहरा दमक रहा था। वह पाँच बच्चों की माँ थी। मुझे बाद में उसकी याद आई। उसका पति एक बढ़ई था और अक्सर मेरे गुरु के साथ काम करता था।²¹ अगर ग्राहक इस आदमी से थोड़ी सी भी टपिपणी करते, उदाहरण

¹⁹ मत्ती 10:22.

²⁰ कोनटिसा — पश्चिमी ग्रीस का एक छोटा शहर। एल्डर ने अपना बचपन और जवानी वहीं बितائی। 1958–1960 में, धन्य एल्डर पैसियोस कोनटिसा के पास स्थित स्टोमयिन मठ में एक भिक्षु के रूप में रहे। — अनुवादक की टपिपणी।

²¹ अपनी युवावस्था में, एल्डर पैसियोस ने बढ़ई का काम सीखा।

के लिए: 'मास्टर यानसि, शायद हम इसे इस तरह कर सकते हैं?' — तो वह बलिकुल आग-बबूला हो जाता। 'क्या तुम मुझे सखिने की कोशिश कर रहे हो, क्या?।' वह चलिता, अपने औजार तोड़ता, उन्हें एक कोने में फेंकता और गुस्से में नकिल जाता। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कविह अपने घर में क्या कर रहा होगा, जब वह दूसरों के घरों में भी सब कुछ तोड़-फोड़ रहा था! इस आदमी के साथ एक दिन भी बतिना असंभव था, फरि भी उसकी पत्नी सालों से उसके साथ रह रही थी। हर दिन वह यातना सहती थी, फरि भी वह सब कुछ बड़ी दयालुता से नपिताती थी और धैर्य से सब कुछ सहन करती थी। मैं जानती थी कि उनके घर में क्या चल रहा है, इसलिए जब भी मैं उससे मिलती, मैं पूछती: 'शरी यानसि कैसे हैं? क्या वे काम कर रहे हैं?' 'अरे,' वह जवाब देती, 'कभी वे काम करते हैं, और कभी बस थोड़ी देर के लिए बैठ जाते हैं।' 'और आप कैसी हैं?' मैं फरि पूछती। वह जवाब देती, 'बहुत अच्छा, फादर!' और वह यह दलि की गहराई से कहती थी। उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि उसका पति अपने औजार तोड़ रहा था — और वे भी महंगे औजार! — जिससे वह बेचारी महिला अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए दूसरों के घरों में काम करने के लिए मजबूर हो गई थी। देखिए, उसने कतिने धैर्य, कतिनी दया और उदारता से सब कुछ सहन किया! उसने उस पर जरा भी दोष नहीं लगाया! इसीलिए ईश्वर ने उसे अनुग्रह से भर दिया, और उसका चेहरा दमक उठा। वह पाँच बच्चों का पालन-पोषण करने में सफल रही, उन्हें पाला, और वे पाँचों बहुत अच्छे इंसान बने।

— जेरोंडा, उसने अपने पति की रक्षा कैसे की?

— एक दयालु वचिर के साथ। "आखरिकार, वह मेरा पति है," उसने सोचा। "ठीक है, तो उसे मुझे थोड़ा डाँटने दो। शायद, अगर मैं उसकी जगह होती, तो मैं भी बलिकुल वैसा ही व्यवहार करती।" इस महिला ने सुसमाचार को अपने जीवन में उतारा, और इसीलिए ईश्वर ने उस पर अपनी दिव्य कृपा बरसाई। और अगर सांसारिक लोग भी इसे सहन कर सकते हैं और कृपा से भर सकते हैं, तो हम, संन्यासियों के रूप में, जिनके पास आध्यात्मिक जीवन के लिए हर अवसर है, हमें कतिनी अधिक सहनशीलता दिखानी चाहिए!

जहाँ तक मैं देख पाता हूँ, सबसे बड़े घोटाले — न केवल परिवारों में, बल्कि राष्ट्रों के जीवन में भी — तुच्छ बातों से उत्पन्न होते हैं। परिवार के भीतर, एक जीवनसाथी को दूसरे के सामने स्वयं को नम्र करना पड़ता है; उन्हें न केवल अपने साथी के गुणों का अनुकरण करना चाहिए, बल्कि उनकी वचिर्ताओं को भी सहन करना चाहिए। इस तथ्य पर चिंतन करना कमिशीह ने हमारे पापों के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया, और यह कविह—नरिदोष होते हुए भी—हम सभी—अरबों लोगों को—सहन करते हैं, जबकि हम, दूसरों की वचिर्ताओं से पीड़ित होकर, अपने ही पापों की कीमत चुका रहे हैं, इस प्रकार की परस्थितियों का सामना करने में बहुत मदद करता है। सदैव-सत्कार्य करने वाले ईश्वर ने व्यवस्था इस प्रकार बनाई है कि जब किसी व्यक्ति के पास कोई गुण होता है, तो वे दूसरों की मदद करते हैं, और जब उनमें कोई कमी होती है, तो वे दूसरों के सामने स्वयं को नम्र करते हैं। आखरिकार, हर किसी के पास अपने-अपने गुण होते हैं। हालाँकि, हर किसी के पास अपनी-अपनी कमियाँ भी होती हैं, और हमें उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

मैंने एक आदमी को अच्छी-खासी डाँट लगाई! तुम्हें देखना चाहिए कि उसकी पत्नी कतिनी आज्ञाकारी है, जबकि वह कई कषमताओं और प्रतभिओं से संपन्न है। उसकी तुलना में, वह उसकी पत्नी के सामने एक छोटे बच्चे की तरह है। और इस प्रकार यह महिला, अपने पति की आज्ञा मानकर, लगातार दैवीय कृपा प्राप्त करती है और उसे अपने आध्यात्मिक खाते में जोड़ती है, जबकि उसका पति, अपनी स्वार्थपरता के कारण, लगातार दैवीय कृपा को अपने से दूर भगाता है और अधिक से अधिक खाली होता जाता है। और अंत में, कौन वजियी होगा? देखिए: पूरा रहस्य वनिम्रता में नहिता है। यही तो नीव है। आज्ञाकारिता, वनिम्रता। लेकिन अगर यह आदमी अपनी कमजोरी को स्वीकार कर ले और ईश्वर से मदद मांगे, तो दैवीय कृपा उस पर भी आएगी।

एक वफादार पत्नी

— जेरोंडा, एक महिला ने मुझसे सलाह मांगी है कि उसे क्या करना चाहिए। उसके पति ने उसे छोड़ दिया है, उनका बच्चा भी साथ ले गया है और अब वह दो अन्य महिलाओं के साथ संबंध में है।

— उसे कहो कि वह यथासंभव धैर्य रखे, प्रार्थना करे और उसके साथ दयालु व्यवहार करे। उसे इंतजार करने दो और विवाह समाप्त करने वाली वह न बने। एक ऐसा पुरुष था जो अपनी पत्नी को तरिस्कार से देखता था, उसे पीटता और बुरा व्यवहार करता था, फिर भी उसने सब कुछ धैर्य और दया से सहन किया जब तक कि वह अपेक्षाकृत कम उम्र में नहीं मर गई। जब उसकी मृत्यु के कई वर्षों बाद उसकी अस्थियाँ निकाली गईं, तो सभी ने एक मधुर सुगंध महसूस की।²² उपस्थिति लोग चकित रह गए। देखिए: इस महिला ने सब कुछ धैर्यपूर्वक सहन किया, और इसी कारण मृत्यु के बाद उसे न्याय मिला।

एक और ऐसा ही मामला था। एक युवा पुरुष जो सांसारिक जीवन जीता था, उसे एक ऐसी युवती के लिए भावनाएँ होने लगीं जो आध्यात्मिक जीवन जीती थी। इस आशा में कि वह भी उसकी भावनाओं का जवाब देगी, उसने भी आध्यात्मिक जीवन जीने और चर्च करने की कोशिश की। उन्होंने शादी कर ली। लेकिन जैसे-जैसे साल बीतते गए, वह अपने पुराने सांसारिक तरीकों पर लौट आया। उनके पहले से ही बड़े बच्चे थे — सबसे बड़ा विश्वविद्यालय में था, एक बेटी सकिस्थ फॉर्म कॉलेज में थी, और दूसरी माध्यमिक विद्यालय में थी। फिर भी, सब कुछ होने के बावजूद, इस आदमी ने एक व्यभिचारी जीवन जीना जारी रखा। वह बहुत सारा पैसा कमाता था, लेकिन उसका लगभग सारा पैसा अपनी विलासी जीवन शैली पर खर्च कर देता था। उसकी दुर्भाग्यपूर्ण पत्नी की मतिव्ययति ने उनके घर को टूटने से बचाया; अपनी सलाह से, उसने बच्चों को सही रास्ते पर बनाए रखने में मदद की। उसने उनके पति की नंदा नहीं की, ताकि बिच्चे उनके प्रति नफरत न पालें या भावनात्मक आघात से न जूझें, और न ही वे उनके द्वारा अपनाए गए जीवन शैली की ओर आकर्षित हों। जब उसका पति रात में देर से घर आता था, तो उसके लिए बच्चों के सामने उसके लिए बहाने बनाना अपेक्षाकृत आसान था: वह कह देती कि उसे बहुत काम करना था। लेकिन वह क्या कहे जब, दनि दहाड़े, वह अपनी रखैल के साथ घर आ जाता था? क्या आप जानते हैं कि यह ईश्वर-भयभीत आदमी क्या कर रहा था? हालांकि वह आदमी कहलाने के भी लायक नहीं था, क्योंकि उसमें इंसानियत का कोई एहसास नहीं था। वह अपनी पत्नी को विभिन्न व्यंजन ऑर्डर करने के लिए फोन करता था, फिर भी दनि के दौरान वह अपनी किसी रखैल के साथ दोपहर के खाने पर आ जाता था। वह बेचारी माँ, अपने बच्चों को अशुद्ध विचारों से बचाने की इच्छा से, उनका गर्मजोशी से स्वागत करती थी। वह इस स्थिति को इस तरह पेश करती थी मानो उसके पति की रखैल उसकी दोस्त हो, और उसका पति अपनी 'दोस्त' को कार से लेने उसके घर आ गया हो और उसे उनसे मिलने ले आया हो। वह बच्चों को उनका होमवर्क करने के लिए दूसरे कमरे में भेज देती थी ताकि वे कोई अश्लील दृश्य न देखें, क्योंकि उसके पति बिच्चों की परवाह किए बिना, उनके सामने भी अश्लील व्यवहार करने से नहीं हचिकचाते थे। यह सलिसला दनि-प्रतदिनि चलता रहा। वह अक्सर किसी नई रखैल के साथ आ जाता था। यह हद तक हो गया कि बिच्चे उससे पूछने लगे: 'मम्मी, आपके कतिने दोस्त हैं?' वह जवाब देती: 'ओह, वे तो बस पुराने परिचित हैं!' इसके अलावा, उसका पति उसके साथ नौकरानी जैसा—या उससे भी बदतर व्यवहार करता था। वह उसके साथ बहुत क्रूरता और अमानवीयता से पेश आता था। ज़रा सोचिए कि इस महिला को हर दनि दो दरदों की सेवा करनी पड़ती थी जो उसके घर पर शर्म लाते थे, जबकि वह लगातार अपने बच्चों के मन में अच्छे विचार डालती रहती थी! और फिर भी वह यह उम्मीद नहीं कर सकती थी कि यह दुख कभी खत्म होगा, ताकि वह खुद से कह सके: 'मैं थोड़ा और सह लूंगी,' और उसी में सांतवना ढूँढ सके। यह दुस्वप्न कई वर्षों तक चलता रहा। हालाँकि, चूँकि इस दुखी आदमी ने खुद पर शैतान को बहुत अधिक शक्ति दे दी थी, वह भयानक दैवीय प्रभावों का शिकार होने लगा। वह एक पागल

²² ग्रीस में, मृतक के अवशेषों को मृत्यु के तीन से चार साल बाद कब्र से निकाल लिया जाता है, धोया जाता है और विशेष दफन कक्षों में रखा जाता है। यदि शरीर क्षयित नहीं हुआ है, तो इसे कब्र में फिर से दफनाया जाता है और दविंगत की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थनाओं को तीव्र कर दिया जाता है। — अनुवादक की टिप्पणी

की तरह व्यवहार करने लगा, अपना नियंत्रण खो बैठा और हर किसी और हर चीज़ को दोष देने लगा। और फिर एक दिन, कामुक जुनून के नशे में धुत, वह अपनी कार से तेज़ी से जा रहा था और एक खाई में जा गिरा। कार चकनाचूर हो गई, और उसे खुद को बहुत गंभीर चोटें आईं। उसे अस्पताल ले जाया गया, और डॉक्टरों ने अपनी पूरी कोशिश करने के बाद, उसे घर भेज दिया। वह लंगड़ा हो गया था। उसकी एक भी रखैल उससे मलिन नहीं आई, क्योंकि अब उसके पास ज्यादा पैसा नहीं था, और उसका चेहरा विकृत हो गया था। हालाँकि, उसकी दयालु पत्नी ने उसके दुष्ट अतीत की कोई बात याद दिलाए बिना, पूरी नष्टि से उसकी देखभाल की। वह गहराई से हलि गया था, और इसने उसे आध्यात्मिक रूप से बदल दिया। उसने सच्चे मन से पश्चाताप किया, एक पादरी को अपने पास भेजने के लिए कहा, पाप-स्वीकृति के लिए गया, कई वर्षों तक एक ईसाई जीवन जिया, आंतरिक शांति प्राप्त की, और प्रभु में नधिन कर गया। उसकी मृत्यु के बाद, उसके सबसे बड़े बेटे ने व्यवसाय में उसकी जगह ले ली और परिवार का भरण-पोषण किया। उस आदमी के बच्चे बड़ी सद्भाव से रहते थे, क्योंकि उन्हें अपनी माँ के अच्छे सदिधांत वरिसत में मल्लि थे। यह महिला एक वीर माँ थी। अपने परिवार को बखिरने से बचाने और अपने बच्चों को गहरे दुख से बचाने के लिए, उसने स्वयं उनका कड़वा प्याला पिया। उसने परिवार को बखिरने से बचाया, अपने पति को बचाया, और स्वर्ग में अपना पुरस्कार अर्जति किया। ईश्वर इस महिला को स्वर्ग में सर्वोत्तम स्थान प्रदान करेंगे।

टूटे हुए घरों के बच्चे

— जेरोंडा, यदि परिवार में पति, किसी प्रकार की वासना के वश में होकर, अपना दोष स्वीकार करता है, उसका इकरार करता है, लेकिन इस वासना के प्रभाव में बना रहता है और अपनी पत्नी से कहता है: 'मैं तुम्हें और बच्चों को दुख दे रहा हूँ। बेहतर होगा कि मैं चला जाऊँ और तुमसे दूर रहकर तुम्हें पैसे भेजता रहूँ, ताकि तुम कष्ट न सहो,' तो उसकी पत्नी को क्या करना चाहिए?

— अगर पति सचमुच वही कहता है जो वह कहता है, तो यह दर्शाता है कि वह प्रेम से परिपूर्ण है, और उसकी पत्नी को धैर्य रखना चाहिए। हालाँकि, बेहतर होगा कि वह जो सुनती है उस पर तुरंत विश्वास न करे। उसे मामले में और गहराई से देखने दें। आखिरकार, कभी-कभी ऐसा होता है कि पति, दिखावे में नेकता दिखाते हुए, कहता है, 'मैं तुम्हें परेशान न करने के लिए जा रहा हूँ,' जबकि असल में वह इसलिए जाना चाहता है क्योंकि वह किसी दूसरी महिला के साथ जुड़ गया है।

विविह, आज हम जसि स्थिति में हैं, उसने अपना अर्थ खो दिया है। परिवार बिना किसी स्पष्ट कारण के बखिर रहे हैं। कुछ दिन पहले, एक आदमी जो पूरी तरह से भ्रमति था, मेरे कलवि पर मुझसे मलिन आया। पहले, उसने एक रखैल से दो बच्चे किए। फिर वह उसे छोड़कर दूसरी के पास चला गया। उसने एक बच्चा दिया, और उसने उससे तलाक ले लिया। उसके बाद उसने तीसरी बार शादी की। उसकी तीसरी पत्नी भी तलाकशुदा थी और उसके भी तीन बच्चे थे: दो उसकी पहली शादी से और एक बिना शादी के हुआ था। इस महिला से उसके और दो बच्चे हुए। "एक मिनट रुकिए, एक मिनट रुकिए," मैंने यह सब सुनते हुए उसे बीच में टोक दिया। "तो, इन सभी बच्चों की कतिनी माताएँ हैं, और कतिने पति?"

और इस प्रकार ये दुर्भाग्यपूर्ण बच्चे मर जाते हैं। उनमें से जो विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं और उन पर आई विपत्ति से उत्पन्न पीड़ा को सहन नहीं कर पाते, वे नरिशा में डूब जाते हैं, जबकि कुछ तो अपनी जान भी ले लेते हैं। अन्य लोग अपने दर्द को सुन्न करने के लिए शराब का सहारा लेते हैं। कुछ अन्य नशे की ओर मुड़ जाते हैं। और वे इन सबके लिए पैसा कहाँ से लाते हैं? हेरोइन की सबसे छोटी खुराक की कीमत चार हजार ड्रैक्मा होती है। एक बड़ी खुराक की कीमत छह या सात हजार होती है।²³

ऐसे हैं पछिली पीढ़ी के लापरवाह, अनुशासनाहीन बच्चे। बाकी का क्या होगा—वे छोटे बच्चे जिनके माता-पति ने स्वचालित तलाक कानून के तहत तलाक ले लिया है? इस गर्मी में कतिने नशेड़ी युवा मेरे कालीवा से गुज़रे हैं! इन बेचारों में से अधिकांश टूटे हुए घरों के बच्चे हैं। एक सत्ताइस साल का लड़का नरिशा में है

²³ 1990 में दिया गया। 4,000 ग्रीक ड्रैक्मा — लगभग 12 अमेरिकी डॉलर। — अनुवादक की टिप्पणी।

और मदद की भीख मांग रहा है! और आप जानते हैं, टूटे हुए घरों के बच्चों को दूर से ही पहचाना जा सकता है। मैं अपने कालीवा के पास एक बेंच पर ट्रकशि डिलीट का एक जार रखता हूँ। और जब ये युवा लोग आते हैं, तो वे जार से ट्रकशि डिलीट का एक टुकड़ा निकालकर खाने लगते हैं; फरि, जब वे मुझे कालीवा से बरामदे पर आते हुए देखते हैं, तो मठाई खत्म होने से पहले ही, वे तुरंत मुझे चूमने के लिए दौड़ पड़ते हैं। उनके हाथ ट्रकी डलाइट की पसी हुई चीनी से पूरी तरह ढके होते हैं, और वे मुझे चपिचपि कर देते हैं! ये बच्चे प्यार और स्नेह से वंचित हैं। उनके लिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके माता-पिता हैं या नहीं। चाहे उनका पति घर आए, जाए, उनके साथ रहे या न रहे — इन बेचारों के लिए कुछ भी नहीं बदलता।

वैवाहिक जीवन में 'सही' और 'गलत'

मैंने देखा है कि कुछ आध्यात्मिक पति उन पतनियों से कहते हैं जो अपनी पतनियों से असहमत हैं: 'धैर्य रखो; यह वह क्रूस है जिसे तुम्हें उठाना है। तुम क्या कर सकते हो? ईश्वर आपको इस धैर्य के लिए पुरस्कृत करेगा।' फरि पतनियाँ इन आध्यात्मिक पतियों के पास जाती हैं, और वे उन्हें वही बात कहते हैं: "धैर्य रखो, धैर्य रखो, ताकि तुम ईश्वर से अपना पुरस्कार प्राप्त कर सको।" दूसरे शब्दों में, दोनों में से कोई भी दोषी हो सकता है, और फरि भी आध्यात्मिक पति दोनों से धैर्य रखने का आग्रह करते हैं। या शायद जीवनसाथियों में से एक की गलती है, और कंफेसर उससे कहता है: 'धैर्य रखें, धैर्य रखें।' इस तरह, परिवार में अशांति के लिए दोषी जीवनसाथी यह सोचकर अपने मन को सुकून देता है कि विह कथति तौर पर दूसरे जीवनसाथी को सहन कर रहा है, जबकि वास्तव में वह उसे दनि-रात सताता रहता है।

एक दनि, एक आदमी मेरी झोपड़ी पर आया और शकियत करने लगा कि उसे अपनी पत्नी के साथ बहुत मुश्किल हो रही थी। उनका विवाह तलाक की कगार पर था। न तो वह और न ही उसकी पत्नी एक-दूसरे से मलिना चाहती थीं। वे दोनों शक्तिशाली थे और उनके दो बच्चे थे। वे कभी घर पर नहीं खाते थे: स्कूल के बाद, पति रात के खाने के लिए एक रेस्तरां में जाता, जबकि उसकी पत्नी दूसरे में। जहाँ तक बच्चों का सवाल है, वे उनके लिए कुछ सैंडविच खरीद लेते थे, और बेचारे बच्चे, जब उनके माता-पिता घर आते, तो यह देखने के लिए उनकी जेब और बैग टटोलते थे कि माँ और पतिजी खाने के लिए क्या लाए हैं! यह बच्चों के लिए एक वास्तविक कष्ट था! इन सबके अलावा, यह आदमी चर्च में गाता था; हालाँकि, उसकी पत्नी उस चर्च में नहीं जाती थी जहाँ वह गाता था—वह एक अलग चर्च में जाती थी। उनकी आपसी दुश्मनी की तीव्रता ऐसी थी! "मैं क्या करूँ, फादर," उसने मुझसे कहा, "मैं एक भारी सूली उठाए हुए हूँ। एक बहुत ही भारी सूली। हर दनि हमारे घर में हंगामेदार बहस होती है।" मैंने उससे पूछा, "क्या तुम अपने पादरी से मलिकर अपनी पाप-स्वीकृति कराई है?" "हाँ," उसने जवाब दिया, "मैंने कराई है। मेरे पादरी ने मुझसे कहा: 'सहन करो, सहन करो। तुम एक भारी सूली उठाए हुए हो।'" "तो फरि," मैंने उस समय उससे कहा, "चलो देखते हैं कि भारी सूली कौन उठा रहा है। शुरुआत से शुरू करते हैं। जब आपकी शादी हुई थी, तब भी आप इस तरह बहस करते थे?" "नहीं," उसने जवाब दिया। "हम आठ साल तक बहुत खुशी से साथ रहे। मैं अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था! मैं उसकी ईश्वर से भी ज्यादा इज्जत करता था! फरि वह एक अलग ही इंसान बन गई! उसने अपनी बड़बड़ाहट, अपनी छोटी-छोटी बातों पर आपत्त जिताने, अपनी अजीबोगरीब आदतों से मुझे सताना शुरू कर दिया..." क्या आप यकीन कर सकते हैं! वह ईश्वर से भी ज्यादा उसका आदर करता था! "तो फरि," मैंने कहा, "यहाँ आओ, मेरे प्यारे साथी! तो, आप अपनी पत्नी का ईश्वर से भी ज्यादा आदर करते थे? तो अब इस बात का दोषी कौन है कि तुम इस हालत में पहुँच गए हो: तुम या वह? तुम्हारी ही वजह से ईश्वर ने अपनी कृपा तुम्हारी पत्नी से वापस ले ली है।" फरि मैंने उससे पूछा: "और अब तुम क्या करने का इरादा रखते हो?" "सबसे ज्यादा संभावना है कि हमारा तलाक हो जाएगा," उसने कहा। "शायद," मैंने पूछा, "क्या आपका कोई अफेयर भी चल रहा है?" "हाँ," उसने जवाब दिया, "मैं किसी दूसरी महिला के साथ भाग जाने के बारे में सोच रहा हूँ।" "होश में आओ!" मैंने कहा। "खुद को संभालो! क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि इन सबके लिए पूरी तरह से तुम ही दोषी हो? सबसे पहले, आपको ईश्वर से अपनी पत्नी का उनसे अधिक सम्मान करने के लिए क्षमा माँगनी चाहिए। फरि अपनी पत्नी के पास जाओ और उससे क्षमा माँगो। उससे कहो: 'मुझे माफ़ कर

दो। यह मेरी ही गलती है कहिमारा रशिता इस हालत में पहुँच गया है, और हमारे बच्चे अब कष्ट झेल रहे हैं।' फरि जाओ और अपने पापों का प्रायश्चित्त करो — और अपनी पत्नी से पत्नी के रूप में प्रेम करते हुए, ईश्वर को ईश्वर के रूप में सम्मान दो। और तुम देखोगे कसिब कुछ तुम्हारे लिए ठीक हो जाएगा।" मेरी इस सख्त बात ने उस पर अच्छा असर किया। वह रोने लगा और वादा किया कि वह मेरी सलाह मानेगा। कुछ ही समय बाद, वह फरि से मुझसे मिलने आया, इस बार आनंद से भरकर: "धन्यवाद, फादर, आपने हमारे परिवार को बचा लिया है। हमारे लिए सब कुछ अद्भुत है: मेरे लिए और मेरी पत्नी के लिए, और हमारे बच्चों के लिए।" देखिए, यह कैसा है? हर चीज़ के लिए पूरी तरह से उसकी ही गलती है, फरि भी वह सोचता है कि वह एक बहुत भारी क्रूस उठाए हुए है।

और कभी भी उन महिलाओं के लिए बहाने न बनाएं जो अपने पतियों की शिकायत करने आपके मठ में आती हैं। ऐसे मामलों में, मैं न तो पतियों के लिए और न ही पत्नियों के लिए कोई बहाना बनाता हूँ। इसके विपरीत: मैं उन दोनों को ही बातों पर विचार करने के लिए मजबूर करता हूँ। उदाहरण के लिए, कोई महिला शिकायत करना शुरू कर सकती है: 'मेरा पति शराब पीता है, रात में देर से घर आता है, गाली-गलौज करता है...' 'सुनो,' मैं उसे सलाह देता हूँ, 'जब वह रात में नशे में घर आए, तो उसके प्रतियोगिता रहो। अगर आप उसे खसियाए हुए चेहरे से स्वागत करें और ताने कसना शुरू कर दें: 'इतनी देर से क्यों आए?', 'इस समय घर कैसे आ सकते हो?', 'तुम आखिर कब सुधरोगे?', 'यह कड़वी पीड़ा आखिर है क्या?', 'यह एक-दो दिन से भी ज्यादा समय से चल रहा है!', 'और मैं यह सब और कतिनी देर तक सहूँ?' — तब शैतान उसके कान में फुसफुसाएगा: 'क्या तुम बिल्कुल पागल हो गए हो, जो तुम इस मूर्ख को छोड़ ही नहीं पा रहे हो? क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम जाकर किसी और के साथ थोड़ी मौज-मस्ती करो?' दूसरे शब्दों में, हो सकता है कि तुम सही हो, लेकिन शैतान उसे दूसरी तरफ से फुसला लेगा। लेकिन अगर आप उसके साथ दयालुता से पेश आते हैं, थोड़ा और धैर्य रखते हैं और अपनी शिकायतें उसके सामने व्यक्त किए बिना प्रार्थना करते हैं, तो आपसे थोड़ी गर्माहट और रोशनी देखकर, वह अपने व्यवहार पर विचार करेगा और अपनी आदतें सुधार लेगा।"

और फरि पता जाता है और अपनी वही पुरानी बातें दोहराने लगता है: "मेरी पत्नी मुझसे चपिकी रहती है, अपनी बड़बड़ाहट से मुझे पागल कर रही है..." "ओह, तुम," मैं कहती हूँ, "तुम शर्मिदा आदमी! तुम्हारे बच्चे और तुम्हारी लंबे समय से कष्ट झेल रही पत्नी आधी रात तक तुम्हारा बेसबरी से इंतज़ार करते हैं, और तुम नशे में लड़खड़ाते हुए घर आते हो और गालियाँ बकने लगते हो!" शर्म करो! क्या तुमने सिर्फ अपने परिवार को सताना ही शादी करने का मकसद बनाया था?"

लेकिन कभी-कभी पति और पत्नी दोनों ही सही हो सकते हैं। एक बार तीर्थयात्रियों का एक समूह मुझसे मिलने आया, और मैं उन्हें बता रहा था कि मिक्रियानसि कतिने पवित्र पुरुष थे।²⁴ वे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की पवित्रता के लिए विख्यात थे। यह सुनकर मेरे एक श्रोता ने कूदकर चिल्लाया: 'तुम हमिमत मत करना कि मिक्रियानसि को भी संत बना दो!' 'क्यों,' मैंने कहा, 'मैं हमिमत नहीं करता?' 'क्योंकि,' उसने जवाब दिया, 'वह अपनी पत्नी को पीटा करता था।' "सुनो," मैंने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनके और उनकी पत्नी के बीच क्या हुआ करता था। जब भी मिक्रियानीस के पास एक पैसा बचता और कोई बच्चों वाली वधिवा उसके पास आती, वह उसे वह पैसा दे देता। उसकी गरीब पत्नी बड़बड़ाती और उससे झगड़ने लगती। 'लेकिन तुम्हारे,' वह उससे कहती, 'अपने बच्चे हैं। तुमने पैसे उसे क्यों दिए?' इस पर, वह उसे थप्पड़ मारता और कहता: 'तुम्हारे पास एक पति है जो तुम्हारा ख्याल रखेगा। लेकिन इस गरीब औरत का कोई पति नहीं है। उसकी देखभाल कौन करेगा?' तो मक्रीआनसि और उसकी पत्नी दोनों सही थे।"

²⁴ इओआनसि मक्रीयानसि (1797-1864) — मेजर-जनरल, हेलेस के राष्ट्रीय नायक। ग्रीक क्रांति (1821-1830) के दौरान तुर्कों के खिलाफ सबसे अधिक आत्म-बलिदान करने वाले योद्धाओं में से एक। क्रांति और मुक्ति के संघर्ष पर *मेमोयरस* के लेखक। आई. मक्रीयानसि का जीवन ईश्वर, अपने पड़ोसी और अपनी मातृभूमि के प्रति आत्म-बलिदानी ईसाई प्रेम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

इसके अलावा, यदि दंपति में से कोई एक आध्यात्मिक जीवन जीता है, तो, भले ही वह सही हो, उसे सही होने का 'कोई अधिकार नहीं' है। क्योंकि, एक आध्यात्मिक व्यक्तिके रूप में, उसे अन्याय को आध्यात्मिक रूप से देखना चाहिए। यानी, उसे हर चीज को उस तरह से देखना चाहिए जैसा द्रव्य न्याय चाहता है। उसे वह करने का प्रयास करना चाहिए जिससे दूसरे को शांति मिले। आखिरकार, अगर कोई कमजोरी के कारण गलती करता है, तो उसके पीछे कुछ विशेष परिस्थितियाँ होती हैं। हालाँकि, दूसरा व्यक्ति — जो बेहतर आध्यात्मिक स्थिति में है और पहले वाले के साथ समझदारी से पेश नहीं आता, न ही उसका साथ देता है — वह उससे कहीं ज्यादा पाप करता है। यदि आध्यात्मिक लोग भी हर चीज को सांसारिक तरीके से — सांसारिक, मानवीय न्याय के दृष्टिकोण से — नपिटते हैं, तो इसका परिणाम क्या होगा? इसका परिणाम यह होगा कि वे लगातार सांसारिक अदालतों के चक्कर लगाते रहेंगे। यही वह कारण है जिससे लोग पीड़ित होते हैं।

भाग 2. माता-पति और उनकी जम्मेदारियाँ

"माता-पति, जो संसार में बच्चों को लाते हैं और उन्हें शरीर प्रदान करते हैं, उन्हें यथासंभव उनके आध्यात्मिक पुनर्जन्म को पोषित करना चाहिए।"

अध्याय 1. बच्चों के जन्म पर

संत जोआचिम और एनी — सबसे नस्वार्थ विवाहित जोड़ा

— गेर्रोना, कृपया हमें संत एनी और संत जोआचिम, जो किगॉड-पेरेंट्स हैं, के बारे में कुछ बताएं। आपने एक बार पहले उनका उल्लेख किया था...

— बचपन से ही मैंने पवित्र गोद लेने वालों का अत्यंत सम्मान किया है। जब मैं संन्यास जीवन में प्रवेश किया, तब मैंने अपना नाम जोआचिम रखने का अनुरोध किया था। हम उन पर कतिने ऋणी हैं! संत जोआचिम और अन्ना अब तक के सबसे नस्वार्थ विवाहित दंपति थे। वे सांसारिक बुद्धि से पूरी तरह मुक्त थे।

यही वह तरीका है जिससे ईश्वर ने मानवजाति की रचना की। और उन्होंने चाहा कि लोग उसी तरह जन्म लें — बनिा वासना के। लेकिन पतन के बाद, वासना पुरुष और महिला के बीच संबंध में प्रवेश कर गई। और जैसे ही एक भावहीन विवाहित जोड़ा प्रकट हुआ — जैसा ईश्वर ने मनुष्य को बनाया था और जैसा मानव जन्म उनकी योजना के अनुसार होना था — वैसे ही परमेश्वर की अतिपवित्र माता का जन्म हुआ: यह शुद्ध सृष्टि, जिससे बाद में मसीह ने अवतार लिया। मुझे ऐसा लगता है कि यदि संत जोआचिम और अन्ना जैसे एक शुद्ध और पवित्र विवाहित जोड़े का पृथ्वी पर पहले आगमन हुआ होता, तो मसीह पृथ्वी पर और भी जल्दी आ गए होते।

रोमन कैथोलिक भ्रान्ति में पड़ते हैं। दिखावटी रूप से धर्मपरायणता के कारण, वे मानते हैं कि ईश्वर की माता जन्मजात मूल पाप से मुक्त थीं। जबकि वह मूल पाप से मुक्त नहीं थीं और ठीक उसी प्रकार जन्मीं

जैसे ईश्वर ने सृष्टि के बाद मनुष्यों के जन्म की योजना बनाई थी। वह सर्व-पवत्रि थी,²⁵ क्योंकि उनका गर्भाधान यौन संबंध के बिना हुआ था। पवत्रि माता-पिता ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें एक संतान प्रदान करें। और इस प्रार्थना के बाद, वे [पति-पितृनी के रूप में] एक साथ आए — न कि कामुक वासना से, बल्कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता से। मुझे इस बात का विश्वास तब हुआ जब मैंने सनाई पर्वत पर एक चमत्कारक घटना का अनुभव किया।²⁶

वैवाहिक जीवन में पवत्रिता

ईश्वर ने "सब कुछ बहुत अच्छा बनाया।"²⁷ पुरुषों को महिलाओं के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है, और महिलाओं को पुरुषों के प्रति यदि यह आकर्षण न होता, तो कोई भी कभी परिवार शुरू करने का निर्णय नहीं लेता। लोग उन कठिनाइयों के बारे में सोचते कि पारिवारिक जीवन में बाद में उन्हें क्या-क्या चुनौतियाँ झेलनी पड़ेंगी, जैसे कि बिच्चों की परवरिश और अन्य पारिवारिक मामलों से जुड़ी परेशानियाँ, और इसलिए वे शादी करने की हिम्मत भी नहीं करते।

प्रथम मनुष्यों के पतन के बाद, कुछ लोगों के पास पाँच प्रतश्चित सांसारिक बुद्धि हो सकती है, दूसरों के पास दस, तीस, और इसी तरह। लेकिन आज ऐसे लोग कहाँ मिलेंगे जिनकी सांसारिक बुद्धि केवल पाँच प्रतश्चित ही हो — अर्थात् शुद्ध, पवत्रि बुद्धि वाले लोग! तथापि, जैसा भी हो, ईश्वर ने सभी लोगों को निरल्पितता प्राप्त करने का अवसर दिया है — यदि वे प्रेम की मेहनत करें।

वैवाहिक मार्ग चुनने से विवाहितों को यह भूलने का बहाना नहीं मिलता कि एक व्यक्ति केवल देह ही नहीं, बल्कि आत्मा भी है। इसे भूलना नहीं चाहिए और स्वयं [और अपनी वासनाओं] को बेकाबू होने देना नहीं चाहिए।²⁸ पति-पितृनी को शरीर को आत्मा के अधीन करने के लिए मिलकर प्रयास करना चाहिए। यदि

²⁵ परमेश्वर की अतिपवत्रि माता की गर्भधारण और जन्म प्राकृतिक थे, कुंवारी नहीं। 'वह सर्व-शुद्ध थी' क्योंकि, जैसा कि सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस अपनी 'हमारी अतिपवत्रि माता, परमेश्वर की माता और सदा-कुंवारी मरियम के जन्म पर उपदेश' में लिखते हैं, उनका गर्भधारण 'पवत्रितापूर्वक' हुआ था। फरि भी उन्होंने स्वयं, अपने तपस्या के प्रयासों के माध्यम से, अपने माता-पिता से प्राप्त पवत्रिता को कई गुना बढ़ा दिया, और "हर अनावश्यक और आत्मा-वनाशकारी विचार को मन में लाने से पहले ही अस्वीकार कर दिया" (देखें PG 96, 669 A, 676 B)।

²⁶ 1962 से 1964 तक, एल्डर पैसयिस ने माउंट सनाई पर संतो एपिस्टिमिया और गैलाक्शियन के तपस्वी समुदाय में एक भिक्षु के रूप में जीवन व्यतीत किया। उन्होंने हमें उस चमत्कारक घटना का स्वरूप नहीं बताया जिसका उन्होंने उल्लेख किया था।

²⁷ तुलना करें उत्पत्ति 1:31।

²⁸ अपने एक पत्र में, एल्डर पैसयिस वैवाहिक संबंधों के बारे में निम्नलिखित लिखते हैं: "आप मुझसे विवाहित पुरोहितों और सामान्य लोगों के वैवाहिक संबंधों के बारे में पूछते हैं। पवत्रि पतिओं ने यह स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया है कि इन संबंधों को कैसे संरचित किया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि वैवाहिक संबंध एक ऐसा विषय है जिसे स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता, क्योंकि सभी लोग एक ही ढाँचे के अनुसार नहीं जी सकते। पतिओं ने वैवाहिक संबंधों के प्रश्न को प्रत्येक व्यक्ति के विविध, प्रेम, आध्यात्मिक संवेदनशीलता और शक्ति पर छोड़ दिया है। इसे और स्पष्ट करने के लिए, मैं धार्मिक जीवन जीने वालों—विवाहित पुरोहितों और सामान्य लोगों—के जीवन से उदाहरण दूंगा। ये लोग अभी जीवित हैं, और मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्होंने परिवार शुरू करने के बाद, वैवाहिक अंतरंगता में संलग्न होकर एक, दो या तीन बच्चे किए, जिसके बाद उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया है। कुछ अन्य बच्चे पैदा करने के उद्देश्य से साल में एक बार वैवाहिक संबंध बनाते हैं, जबकि बाकी समय भाई-बहन की तरह रहते हैं। फरि कुछ अन्य उपवास के दौरान वैवाहिक संबंधों से परहेज करते हैं, और फरि बाद में उन्हें फरि से शुरू कर देते हैं। एक चौथा समूह तो इतना भी नहीं कर पाता। ऐसे विवाहित जोड़े हैं जो सप्ताह के बीच में संबंध बनाते हैं, ताकि वे पवत्रि भोज से पहले तीन दिनों और उसके बाद तीन दिनों तक पवत्रिता की अवस्था में रह सकें। कुछ अन्य इस में भी ठोकर खाते हैं। इसलिए, जब मसीह अपने पुनरुत्थान के बाद प्रेरितों के पास आए, और उन्हें पापों को क्षमा करने का अधिकार देने के बाद, उन्होंने सबसे पहले उनसे कहा: 'जैसे पति ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ... पवत्रि आत्मा ग्रहण करो: जिनके पाप तुम क्षमा करोगे, वे क्षमा किए हुए होंगे; और जिनके पाप तुम बनाए रखोगे, वे रखे हुए होंगे।' उद्देश्य यह है कि हर कोई अपनी आध्यात्मिक शक्त के अनुसार विविध और प्रेम के साथ प्रयास करे। बेशक, शुरुआत में युवावस्था एक बाधा है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, शरीर कमजोर हो जाता है और आत्मा हावी हो सकती है। और जब ऐसा होता है, तो विवाहित लोग भी दिव्य आनंद का थोड़ा-सा स्वाद चखने लगते हैं। वे स्वाभाविक रूप से सांसारिक सुखों से मुंह मोड़ लेते हैं, जिन्हें वे अब पूरी तरह से तुच्छ समझते हैं। इस प्रकार, विवाह में रहने वाले लोग, एक तरह से, शुद्ध हो जाते हैं और, एक सौम्य, सौम्य, घुमावदार पथ पर चढ़ते हुए, स्वर्ग पहुँचते हैं। जबकि सिन्यासी सीधे ऊपर चढ़कर—लंबवत, चट्टानों पर चढ़कर स्वर्ग पहुँचते हैं। आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वैवाहिक संबंधों का मुद्दा केवल आपकी समस्या नहीं है, और इस मामले को अपने दम पर नियंत्रित करने का आपका कोई अधिकार नहीं है, बल्कि, जैसा कि प्रेरित पौलुस लिखते हैं: 'आपसी सहमत से'। फरि भी जब जीवनसाथी इस [संयम] को 'आपसी सहमत से' अपनाते हैं, तब भी सावधानी बरतने की आवश्यकता

आध्यात्मिक पति के मार्गदर्शन में पति-पत्नी आध्यात्मिक रूप से जीने का प्रयास करते हैं, तो वे धीरे-धीरे उच्चतर आनंद—आध्यात्मिक, द्रव्य आनंद—का अनुभव करने लगेंगे। वे अब और कामुक सुखों की तलाश नहीं करेंगे। पति-पत्नी को आत्म-संयम का अभ्यास करना अनिवार्य है ताकि वे अपने बच्चों को कामुक वासना न सौंपें। यदा माता-पति बहुत कामुक वचारों वाले हों, तो उनके बच्चे में भी छोटी उम्र से ही इसी तरह की प्रवृत्तियाँ होंगी। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बिच्चा अपने माता-पति से इन कामुक वचारों को वरिसत में पाता है। शुरुआत में, माता-पति से वरिसत में मिली सभी वासनाओं की तरह, कामुक सोच भी सौम्य और कोमल होती है, जैसे एक युवा बच्चा बूटी जो डंक नहीं मारती, और आप उसकी पत्तियों को आसानी से छू सकते हैं। लेकिन जैसे-जैसे यह बढ़ता है, इसके पत्ते चुभने लगते हैं। कामुक बुद्धि के साथ भी ऐसा ही है—शुरुआत में इसे एक अच्छे, वविकी आध्यात्मिक पति द्वारा ठीक किया जा सकता है। हालाँकि, यदि कामुक बुद्धि को कम उम्र में समाप्त नहीं किया जाता है, तो जब आप वयस्कता में पहुँचते हैं, तो ऐसा करना कोई आसान काम नहीं होगा।

बच्चों के जन्म के संबंध में ईश्वर की इच्छा के बारे में मानवीय तर्क

मेरे पास आने वाले दंपति अक्सर संतान होने को लेकर अपनी चिंताएँ साझा करते हैं और मेरी राय पूछते हैं। कुछ जोड़े एक या दो बच्चे चाहते हैं, जबकि अन्य एक बड़ा परिवार चाहते हैं। हालाँकि, यह बेहतर है कि वे संतान होने के मामले को ईश्वर पर छोड़ दें। जोड़ों को अपना जीवन दैवी व्यवस्था के भरोसे छोड़ देना चाहिए और अपनी योजनाएँ नहीं बनानी चाहिए। उन्हें विश्वास रखना चाहिए कि ईश्वर, जो आकाश के पक्षियों की भी परवाह करता है, उनके बच्चों की तो और भी अधिक देखभाल करेगा। मुझे एक नावकि याद है जो अठारह साल की उम्र में शादी कर ली थी। वह खुद गरीब था, और उसने एक गरीब परिवार की लड़की से शादी की। उन्होंने किसी तरह का तहखाना करिए पर लिया था और वहीं समिटकर रहते थे। उसकी पत्नी की भी कम वेतन वाली नौकरी थी, और वे बहुत मतिव्ययति से रहते थे। बस कल्पना कीजिए: मेज के बजाय, उनके पास एक आड़ू का डब्बा था, जिससे उन्होंने किसी तरह खरीद लिया था! फिर उनके बच्चे हुए। उनका पालन-पोषण करने के लिए, वे किसी तरह गुजारा करते थे। और फिर भी, धीरे-धीरे, वे अमीर हो गए और अच्छी ज़िंदगी जीने लगे।

ऐसे विवाहित जोड़े हैं जो सबसे पहले अपनी सभी अन्य समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करते हैं और तभी बच्चे करने के बारे में सोचते हैं। ऐसे लोग ईश्वर का बलिकुल भी ध्यान नहीं रखते। दूसरी ओर कुछ जोड़े कहते हैं: "आजकल जीवन आसान नहीं है। चलो सरिफ एक ही बच्चा रख लेते हैं—वही काफी होगा। एक बच्चे को पालना भी तो कतिना मुश्किल है!" और इस तरह वे और बच्चे नहीं करते। ये लोग यह नहीं

होती है। मजबूत जीवनसाथी को खुद को कमजोर जीवनसाथी की जगह रखना चाहिए। अक्सर ऐसा होता है कि एक साथी दूसरे को नाराज़ न करने के लिए संयम करने पर सहमत हो जाता है, लेकिन अंदर ही अंदर पीड़ा सहता है। यह सबसे अधिक उन महिलाओं के साथ होता है, जिनमें कुछ हद तक ईश्वर का भय है, फिर भी वे देह के लालच के आगे हार जाती हैं। अक्सर, वविक की कमी के कारण, कुछ धार्मिक पति, अपनी पत्नियों की सहमति के शब्द सुनकर, अक्लमंदी से काम न लेकर लंबे समय तक वैवाहिक संबंधों से दूर रहते हैं। ऐसे मामलों में, पत्नियाँ पीड़ित होती हैं और नर्वस ब्रेकडाउन जैसी स्थितियों में राहत पाती हैं। पति सोचते हैं कि उनकी पत्नियाँ सदाचार में उत्कृष्ट हो गई हैं और अधिक संयम से जीवन जीना चाहती हैं, इसलिए वे लंबे अंतराल के बाद ही अंतरंग संबंध बनाते हैं। फिर पत्नियाँ प्रलोभनों का सामना करने लगती हैं और किसी ओर की तलाश करने लगती हैं। जब वे पाप में पड़ती हैं, तो उन्हें अंतरात्मा का क्लेश सताने लगता है, जबकि उनके पति, यह देखकर कि उनकी पत्नियाँ [वैवाहिक संबंधों की ओर] झुकती नहीं हैं, और भी अधिक पवित्र जीवन जीने की कोशिश करते हैं। वे सोचते हैं कि उनकी पत्नियों ने आध्यात्मिक प्रगति की है और वे शारीरिक संबंधों की इच्छा नहीं रखती हैं। बेशक, इस सब का कारण महिला स्वार्थपरता में निहित है—जो समझ में आता है—और उस ईर्ष्या में भी जो एक महिला तब महसूस करती है जब वह खुद को कमतर पाती है। यह देखकर कि उसका पति एक आध्यात्मिक जीवन जीना चाहता है, पत्नी उससे आगे निकलने की चाहत में खुद को हद तक धकेलने लगती है। मेरी कृपा करें कि मैं अपने विषय से हटकर बात कर रहा हूँ, क्योंकि एक भिक्षु का काम उसकी माला है, ऐसे विषय नहीं। लेकिन, आपको दुखी न करने के लिए, मुझे इस बारे में थोड़ा लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा (जिसके बारे में मुझे केवल दूर से पता है), कि दुनिया में हमारे भाई-बहनों को क्या सताता है और दुश्मन को [उनके खिलाफ] काम करने का अवसर देता है। यह बहुत महत्व रखता है कि क्या जीवनसाथी स्वभाव और प्रवृत्ति में समान हैं। जब एक जीवनसाथी सौम्य होता है और दूसरा जीवंत और ऊर्जावान होता है, तो मजबूत व्यक्तियों को कमजोर व्यक्तियों के लिए खुद को बलदान करना चाहिए। और धीरे-धीरे, मजबूत वाले की मदद से, कमजोर वाला स्वस्थ हो जाएगा। और फिर, स्वस्थ होकर, दोनों को आगे बढ़ना चाहिए।" (फादर डी. तात्सजि की पुस्तक से। द एल्डर पैसियोस। कोनटिसा, 1995। पृ. 176-178।)

समझते कइस तरह सोचकर, ईश्वर पर भरोसा कएि बना, वे कतिनी बड़ी पाप कर रहे हैं। ईश्वर 'दयालु' है। अगर वह देखता है कदिंपत अब बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर सकते, तो उनके लिए बच्चों को देना बंद करना आसान है।

कई लोग शादी करने के लिए उत्सुक रहते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कबिच्चों को जन्म देना और उन्हें ईसाई धर्म में पाला-पोसा करना ही [वैवाहिक जीवन का] उद्देश्य होना चाहिए। लोग खुद को झंझट में नहीं डालना चाहते इसलिए वे अधिक बच्चे नहीं चाहते, फरि भी वे अपने फ्लैट में कुत्ते और बल्लियाँ रखते हैं। मुझे बताया गया है कआजकल अमेरिका में कुत्तों के बजाय लोग अपने घरों में सूअरों के बहुत महंगे नस्ल के बच्चों⁽²⁹⁾ को रखते हैं। ये सूअर के बच्चे छोटे ही रहते हैं; ये और बड़े नहीं होते। इन्हें खास तौर पर इतना छोटा पाला गया है कइन्हें फ्लैट में रखा जा सके। लोग बच्चे नहीं चाहते क्योंकि उन्हें नहलाना और उनकी देखभाल करना एक झंझट है। लेकिन क्या उन्हें सूअरों के बच्चों को नहीं धोना पड़ता? एक कुत्ता, ठीक है — कम से कम वह एक गार्ड कुत्ते के रूप में काम करता है। लेकिन घर में सूअर रखना! क्या भयानक विचार है! जब मैं ऑस्ट्रेलिया में,³⁰ था, तो मैंने कुत्तों और बल्लियों के लिए एक 'सेवान्वित गृह' देखा। वहाँ एक पालतू जानवरों का कब्रस्तान भी था! यह सब एक ऐसी स्थितिकी ओर बढ़ रहा है जहाँ लोग चूहों को पालेंगे और बल्लियों को खलाने के लिए उन्हें टनि में बंद कर देंगे, और खरगोशों को पालेंगे और कुत्तों को खलाने के लिए उन्हें टनि में बंद कर देंगे! और ठीक उसी समय, दूसरे लोग भूख से मर रहे होंगे। और जरा सोचिए: अगर कोई कुत्ते को मारता है, तो यह काफी संभव है कउसे किसी इंसान को मारने से भी ज्यादा कीमत चुकानी पड़े (बेशक, यह इस बात पर भी निर्भर करता है ककुत्ता कसिका था)। हम कसि दौर में आ गए हैं!.. आजकल एक इंसान की कीमत एक कुत्ते से भी कम है। मैं यह देखकर हैरान हूँ ककुछ आध्यात्मिक पति क्या कहते हैं। एक बार, कुछ तीर्थयात्री मेरी कुटिया पर आए और मुझसे पूछा: 'गेरोना, क्या सेंट जॉन क्रसिस्टम ने कहीं लिखा है कविवाहित जोड़ों को बच्चे नहीं होने चाहिए?' 'तुम आखिर कह क्या रहे हो?' मैंने हैरानी से पूछा। 'ऐसी बात आपको कहाँ से सुनने को मिली?' 'खैर,' उन्होंने कहा, 'फादर अमुक ने हमें बताया था।' जब मैं इस पादरी से मिला, तो मैंने उनसे पूछा: ' , क्या आपने सच में ऐसा कहा था?' 'हाँ,' उन्होंने जवाब दिया। "आपने यह आखिर पढ़ा कहाँ?" — "संत जॉन क्राइसोस्टोम ने अपनी 'वरजनिटि' पर होमीली में इसका उल्लेख किया है," उन्होंने जवाब दिया। "सुनिए," मैंने उनसे कहा। "मैंने संत जॉन क्राइसोस्टोम में ऐसा कुछ नहीं पढ़ा है, लेकिन संत ऐसी बातें कभी नहीं कह सकते। उनका मतलब कुछ और ही होगा। कतिब लाओ ताकमैं देख सकूँ कउसमें क्या लिखा है।" उसने कतिब लाकर मुझे वह अंश दिखाया। मैंने पढ़ना शुरू किया और देखा कसंत ने नमिनलखित लिखा था: "आजकल, जनसंख्या बढ़ गई है, और आपके पास भी कुंवारी अवस्था में रहने का अवसर है: यह अतीत जैसा नहीं है, जब लोगों को अपने वंशज पीछे छोड़ने पड़ते थे।"³¹ दूसरे शब्दों में, संत यह नहीं कहते, 'बच्चे न करें।' लेकिन इस पादरी ने अपनी ही राय पर जोर दिया। एक पादरी जसिका धर्मशास्त्र में शक्ति है, फरि भी ऐसी बकवास कर रहा है! वह खुद को पढ़ा-लिखा दिखाना चाहता है, यह दिखाना चाहता है कविह जॉन क्रसिस्टोम की धर्मशास्त्रीय वरिसत का वदिवान है, ताकलोग उसे एक अच्छे आध्यात्मिक पति के रूप में मानें। क्या आपको एहसास है कइस तरह की विकृत व्याख्याओं से उन लोगों को कतिना नुकसान होता है जो अपने मन को शांत करना चाहते हैं?

जगत के मानदंडों के अनुसार जीने वाले कई लोगों के लिए आज परिवार का कोई अर्थ नहीं रह गया है। परिणामस्वरूप, ऐसे लोग या तो विवाह नहीं करते, या विवाह करने के बाद संतान से बचते हैं, या गर्भपात के माध्यम से अपनी संतान को मार देते हैं, इस प्रकार अपनी ही वंशावली का नाश करते हैं। दूसरे शब्दों में, लोगों को नष्ट करने वाला ईश्वर नहीं है — लोग स्वयं अपना नाश करते हैं। जबकपिरमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाले विश्वासी दविय अनुग्रह प्राप्त करते हैं, क्योंकि पिरमेश्वर, कह सकते हैं, उन कठनि

²⁹ नवंबर 1990 में दिया गया।

³⁰ 1977 में, चर्च के निमित्त पर, एल्डर ने वहाँ रहने वाले ऑर्थोडॉक्स ग्रीकों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया।

³¹ देखें *सेंट जॉन क्राइसोस्टोम* ऑन वरजनिटि, 17, पीजी 48, 546।

समयों में उनकी मदद करने के लिए बाध्य हैं, जिनका हम वर्तमान में अनुभव कर रहे हैं। हम ऐसे ईसाइयों को देखते हैं जिनके परिवार हैं और वे अपने बच्चों को ईश्वर के भय में पालते हैं, चाहे ईश्वर उन्हें कतिने भी बच्चे दे। और [ऐसे माता-पिता के] सभी बच्चे संतुलित और प्रसन्न रहते हैं। ये बच्चे ईश्वर का आशीर्वाद हैं। वे बड़े होकर अच्छे, मेहनती लोग बनते हैं। हम बार-बार पूछते रहते हैं, 'दुनिया का क्या होगा?' — फरि भी, हम एक ही समय में देखते हैं कि कैसे ईश्वर की कृपा से, एक अच्छी पीढ़ी अब मजबूत हो रही है और परपिक्व हो रही है। शैतान सब कुछ नष्ट करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन दयालु ईश्वर भी कार्यरत हैं। वह हमारे लोगों को पृथ्वी की सतह से गायब नहीं होने देंगे।

गर्भधारण में कठिनाइयाँ

— गेरोना, यदकि कोई गैर-ऑर्थोडॉक्स महिला नसितान है, तो क्या यह अनुमत है कि यदि वह मांगे तो उसे एक पट्टा आशीर्वाद स्वरूप दिया जाए, जिससे हमने कापाडोसिया के पूज्य अर्सेनयिस की पवित्र अवशेषों को क्रूस के आकार में छूकर तैयार किया है?³²

— क्या वह संत की शक्ति में विश्वास रखती है, या जादुई साधनों से मदद की तलाश कर रही है? यदि वह विश्वास रखती है, तो वह ऐसी कमरबंद पहन सकती है।

कुछ बांझ महिलाएं उस समय शादी नहीं कर पाईं जब उन्हें करनी चाहिए थी, और इसलिए अब उन पर आध्यात्मिक नियम लागू होते हैं।³³ कुछ नखरीली युवतियां वर चुनने में नखरे दिखाने लगती हैं: 'नहीं, मुझे यह पसंद नहीं, और वह मेरे स्वाद के मुताबिक नहीं है।' एक युवक से शादी का वादा करने के बाद भी, वह एक ही समय में किसी और पर नज़र रखती है; फिर वह पहले वाले को 'नहीं' कह देती है, और वह अपनी जान ले लेना चाहता है, बजाय इसके कि वह इसे एक आशीर्वाद माने कि कम से कम शादी से पहले ही उसने उसे धोखा दिया, बजाय इसके कि बाद में। अरे, खैर, ऐसी लड़की कैसा परिवार बसाएगी? और ऐसी भी महिलाएं हैं जो अपनी जवानी में अव्यवस्थिति, पापी जीवन जीने के कारण बांझ होती हैं। कुछ ऐसी भी हैं जिनकी बांझपन का कारण खराब आहार है, क्योंकि किई खाद्य पदार्थों में कई तरह के रसायन और हार्मोन होते हैं।

ऐसे विवाहित जोड़े भी होते हैं जो शादी होते ही बच्चा चाहते हैं। और अगर उनके बच्चे का जन्म देर से होता है, तो वे चिंता और परेशान होने लगते हैं। वे स्वयं चिंता और आंतरिक उथल-पुथल से भरे होने पर संतान को कैसे संसार में ला सकते हैं? वे तब संतान को संसार में लाएंगे जब वे उस चिंता और आंतरिक उथल-पुथल को दूर कर देंगे और अपने जीवन को सही आध्यात्मिक मार्ग पर स्थापित कर देंगे।

कभी-कभी ईश्वर जानबूझकर विलंब करते हैं और एक विवाहित दंपति को संतान नहीं देते। इस पर विचार करें: आखिरकार, उन्होंने पवित्र ईश्वर-वाहक माता-पिता योआक्वनि और अन्ना को तथा पवित्र नबी जकरियाह और एलजाबेथ को उनकी वृद्धावस्था में संतान प्रदान की, ताकि मानवजात के उद्धार के लिए अपनी शाश्वत योजना को पूरा कर सकें।

जीवनसाथियों को हमेशा अपने जीवन में ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जो कोई भी विश्वास के साथ स्वयं को ईश्वर के हवाले करता है, उसे ईश्वर कभी नहीं छोड़ता। हम कुछ भी नहीं करते, फिर भी ईश्वर हमारे लिए कतिना कुछ करता है! ऐसे प्रेम और उदारता के साथ वह हमें सब कुछ देता है! क्या ऐसा कुछ है जो ईश्वर की शक्ति से परे हो? एक विवाहित जोड़े के पाँच बच्चे थे, लेकिन जब वे बड़े हो गए, तो उनके बच्चों ने अपने-अपने परिवार बसा लिए और घर छोड़ दिया। पति और माता अकेले रह गए। तब उन्होंने एक और बच्चा करने का फैसला किया ताकि बुढ़ापे में उनके साथ कोई हो। पत्नी की उम्र पहले से ही ऐसी थी कि गर्भधारण असंभव था, और मानवीय दृष्टिकोण से, उनकी इच्छा अटूट लग रही थी।

³² कापाडोसिया के पूजनीय अर्सेनयिस के जीवन में उल्लेख है कि बांझपन के मामलों में, पूजनीय व्यक्ति रस्सी का एक छोटा टुकड़ा आशीर्वाद देते थे और इसे बांझ महिला को दे देते थे ताकि वह इसे अपनी कमर पर बांध सके और उसका बांझपन दूर हो जाए। एल्डर कहा करते थे कि ऐसे मामलों में हमें संत अर्सेनयिस की अवशेषों पर क्रॉस के आकार की एक रबिन की पट्टा बांधनी चाहिए और इसे बांझ महिला को पहनने के लिए देनी चाहिए।

³³ आध्यात्मिक नियमों के लिए, इस खंड के भाग पाँच के अध्याय चार को देखें।

हालाँकि, इसके बावजूद, दंपतिको ईश्वर में गहरी आस्था थी, और उन्हें एक पुत्र का आशीर्वाद मिला जिसने उनके बुढ़ापे में उन्हें सांत्वना दी। और उन्होंने उसे भी पाला, और एक अच्छे युवक के रूप में बड़ा किया।

बच्चे होना केवल मनुष्यों पर निर्भर नहीं करता। यह ईश्वर पर भी निर्भर करता है। जब ईश्वर देखते हैं कि संतान पाने में कठिनाई झेल रहे दंपतिविनिम्र हैं, तो वह न केवल उन्हें एक संतान प्रदान कर सकते हैं, बल्कि उन्हें कई संतानों का आशीर्वाद भी दे सकते हैं। हालाँकि, यदि वह किसी दंपति में दृढ़ता और स्वार्थपरता देखता है [तो ईश्वर उनकी इच्छाएँ इसलिए नहीं देता कि], बच्चों की उनकी प्रार्थना स्वीकार करके वह उनकी दृढ़ता और स्वार्थपरता को बढ़ावा देगा। जोड़ों को स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर के हवाले कर देना चाहिए। उन्हें कहना चाहिए: 'हे मेरे ईश्वर, आप हमारी भलाई का ध्यान रखते हैं, *'आपकी इच्छा पूरी हो'*³⁴ उस स्थिति में, उनकी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी। आखिरकार, ईश्वर की इच्छा तब पूरी होती है जब हम कहते हैं *'तव इच्छा हो'* और ईश्वर में विश्वास करके स्वयं को उनके हवाले कर देते हैं। लेकिन भले ही हम *'तव इच्छा हो'* कहते हैं, हम साथ ही अपनी इच्छा पर भी जोर देते हैं। तो ऐसे में ईश्वर हमारे लिए क्या कर सकते हैं?

वैवाहिक बांझपन

— गेरौना, एक विवाहित जोड़ा हमारे पास आया है। उन दोनों को थैलेसेमिया का एक अनरिणति रूप है। उन्होंने हमसे पूछा कि क्या उन्हें बच्चे होने चाहिए। हमने सुझाव दिया कि वे अपने आध्यात्मिक पति से सलाह लें।

— आध्यात्मिक पति ऐसे विवाहित जोड़ों को संतान उत्पन्न करने से मना नहीं कर सकते। आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को ऐसे दंपतियों में ब्रह्मचर्य का संवर्धन करना चाहिए, ताकि वे संयम का अभ्यास करने का प्रयास कर सकें। और, विक के साथ, आध्यात्मिक पति को उनके प्रति उदारता दिखानी चाहिए।

— जेरोंडा, कुछ विवाहित जोड़े ऐसे हैं जो बहुत आध्यात्मिक जीवन जीते हैं और संतान चाहते हैं, लेकिन वे ऐसा करने में असमर्थ हैं।

— ईश्वर कई लोगों को संतान नहीं देते ताकि वे लोग पूरी दुनिया के बच्चों से अपने बच्चों की तरह प्रेम करके, उनके आध्यात्मिक पुनर्जन्म में मदद कर सकें। एक व्यक्ति को अपनी कोई संतान नहीं थी, लेकिन जब भी वह अपने घर से निकलता, तो पड़ोस के घरों के बच्चे उसकी ओर दौड़ पड़ते और प्यार से उसे घेर लेते थे। वे उसे काम पर जाने नहीं देते थे। देखिए: ईश्वर ने इस व्यक्ति को अपने बच्चे नहीं दिए, लेकिन उन्होंने उस पर इतना आशीर्वाद दिया कि पड़ोस के सभी बच्चे उसे पति के रूप में प्यार करें, जबकि वह अपनी तरह से उनकी आध्यात्मिक रूप से मदद करता था। ईश्वर के मार्ग अथाह हैं।

हालाँकि अन्य मामलों में ईश्वर दंपतिको संतान नहीं देता ताकि वे किसी अनाथ को अपना सकें। मैं एक दयालु ईसाई वकील को जानता था। एक दिन जब मैं ओहायो के उस कस्बे में पहुँचा जहाँ वह रहता था, तो मैं उसके घर गया। उसने मुझे बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया, और मैं एक दिन के लिए उसके यहाँ अतिथि रहा। मैं उनकी पत्नी से भी मिला। वह अपने पति जितनी ही सदाचारी थीं। उनसे मैंने उनके पति के आध्यात्मिक जीवन के बारे में जाना, और उनसे — उनकी पत्नी की आध्यात्मिक स्थिति के बारे में।

बाद में मुझे इन लोगों के बारे में अन्य ईसाइयों से पता चला, जो उन्हें जानते थे और जिन्होंने उनसे विभिन्न प्रकार की दयालुता प्राप्त की थी। इस ईश्वर के पुरुष ने ईमानदारी के साथ कानून का अभ्यास किया। यह देखकर कि प्रतिवादी वास्तव में एक धोखेबाज था, उसने न केवल उसका बचाव करने से इनकार कर दिया, बल्कि उसे होश में लाने के लिए कड़ी फटकार भी लगाई। जब वह देखता कि कोई व्यक्ति दोषी है लेकिन उसने पश्चाताप कर लिया है, तो वह मामले को सुलझाने की कोशिश करता या यह सुनिश्चित करता

³⁴ मत्ती 6:10.

कहिसे कम सजा मलि। जब वह देखता ककिसी गरीब व्यक्तपर कोई अन्यायपूर्ण आरोप लगाया गया है, तो वह पूरी तरह से नःशुल्क उसकी पैरवी करता और अदालत में उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तिका नाम साफ करने का प्रयास करता। यह व्यक्तबिहुत साधारण जीवन जीता था, इसलए जो थोड़े से पैसे वह कमाता था, वे उसके अपने भरण-पोषण के लए और गरीब परिवारों की मदद करने के लए पर्याप्त थे। इस धर्मनष्ट वकील का घर, जसि शहर में वह रहता था, उसके [आध्यात्मिक] सहारा के बीच एक सच्ची आध्यात्मिक नखलसितान था। यह दुखी, गरीब और बेरोजगार लोगों के लए एक मलिन स्थल था; पारिवारिक समस्याओं वाले लोग भी वहाँ आते थे। और वह इन सभी दुर्भाग्यपूर्ण लोगों की सहायता के लए आता था, एक दयालु पति की तरह उनका समर्थन करता था। इस व्यक्तके ऐसे परिचित थे जो जमिंदार पदों पर थे। वे उससे प्रार करते थे और उसे महत्व देते थे, और इसलए जब वह किसी गरीब व्यक्तकी किसी मामले में या बीमारी के समय मदद के लए अपने उच्च पदस्थ परिचितों को फोन करता था, तो कोई भी उसे मना नहीं करता था। उनकी पत्नी भी लगभग इसी तरह काम करती थी। वह उन गरीब बच्चों या युवाओं की मदद करती थी जो पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते थे। वह उनके लए एक माँ की तरह थी। हालाँकि, मुझसे बात करते हुए, इस महिला से गलती से यह बात निकल गई: 'शादी से पहले, फादर, मैं ऊपरी स्कूल में पढ़ाती थी। शादी के तुरंत बाद, मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी क्योंकि मैंने एक अच्छी माँ बनने का फैसला किया था। मैंने मसीह से मुझे बहुत सारे—यहाँ तक कि बीस—बच्चे देने के लए कहा, लेकिन, दुर्भाग्य से, उन्होंने मुझे एक भी नहीं दिया।' फिर मैंने उनसे जवाब दिया: "आपके, बहन, पाँच सौ से भी ज्यादा बच्चे हैं। और फिर भी आप शकियत करती हैं? मसीह ने आपकी सद्भावना देखी है। और वह आपको इसके लए पुरस्कृत करेंगे। अब, इतने सारे बच्चों को आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित होने में मदद करके, आप कई अन्य लोगों से बेहतर माँ हैं। आप तो बहुत सारे बच्चों वाली उन सभी माताओं से भी आगे हैं! और आपको जो पुरस्कार मिलेगा वह भी कहीं अधिक होगा, क्योंकि आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित होकर, बच्चे अनंत जीवन में अपना भविय सुरक्षित कर रहे हैं।" अन्य बातों के अलावा, इन लोगों ने एक युवती को गोद लिया, जिसके नाम पर उन्होंने अपनी सारी संपत्ति पंजीकृत कर दी। उनकी गोद ली हुई बेटी ने वृद्धावस्था में उनकी देखभाल की और, उन्हें दफनाने के बाद, एक मठ में प्रवेश कर लिया। लेकिन फिर भी, इस दंपति का घर एक मठ जैसा ही था! सभी चर्च सेवाएँ वहीं आयोजित की जाती थीं। वेस्पर्स और कॉम्पलाइन पर, मसीह में अन्य भाइयों और बहनों ने उनके साथ मिलकर प्रार्थना की, जबकि उन्होंने एक तकिडी के रूप में मडिनाइट ऑफिस और मैटर्निस का पाठ किया। इन धन्य लोगों ने कई पीड़ितों की मदद की। ईश्वर उनकी आत्माओं को भी शांति प्रदान करें।

इसीलए मैं कहता हूँ कि सबसे उत्तम और सबसे फलदायी पति वह पुरुष है जो आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म पाकर दुनिया भर के बच्चों के आध्यात्मिक पुनर्जन्म में सहायता करता है, ताकि वे स्वर्ग में अपनी आत्माओं का भविय सुरक्षित कर सकें।

— गेराना, कुछ बांझपन से पीड़ित दंपति एक बच्चे को गोद लेने पर विचार कर रहे हैं।

— हाँ, ऐसे लोगों के लए किसी बच्चे को गोद लेना बेहतर है; उन्हें [स्वार्थी ढंग से] अपनी खुद की संतान चाहने की इच्छा पर अड़े नहीं रहना चाहिए। एक व्यक्तकी इच्छा और ईश्वर की इच्छा हमेशा एक जैसी नहीं होती।

— गेरान्डा, क्या दत्तक माता-पति को बच्चे को एक निश्चित उम्र होने पर बता देना चाहिए कि उसे गोद लिया गया था?

— बच्चे को यह बात थोड़ी बड़ी होने पर बताना बेहतर होता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दत्तक माता-पति बच्चे से गहराई से और सच्चे दिल से प्रार करें। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो अपरिचित लोगों से अपने ही पति-माता से भी अधिक प्रार करते हैं, क्योंकि उनके माता-पति उनसे प्रार नहीं करते।

बड़े परिवार

ईश्वर का बड़े परिवारों के प्रति विशेष प्रेम है। वह उन पर विशेष देखभाल करता है। बड़े परिवार में बच्चों को स्वस्थ विकास के लिए कई अनुकूल अवसर मिलते हैं — बशर्ते उनके माता-पिता उन्हें सही ढंग से पालते-पोषित करें। बड़े परिवार में एक बच्चा दूसरे की मदद करता है। बड़ी बेटी अपनी माँ की मदद करती है, बीच का बच्चा सबसे छोटे की देखभाल करता है, और इसी तरह। दूसरे शब्दों में, ऐसे बच्चे एक-दूसरे के लिए खुद को समर्पित करते हैं और त्याग और प्रेम के माहौल में रहते हैं। सबसे छोटा बड़े से प्यार और सम्मान करता है। बड़े परिवार में प्यार और सम्मान स्वाभाविक रूप से पनपते हैं।

इसलिए, यदि किसी परिवार में केवल एक या दो बच्चे हों, तो माता-पिता को इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिए कि वे उनका पालन-पोषण कैसे करते हैं। आमतौर पर [ऐसे छोटे परिवारों में], माता-पिता यह सुनिश्चित करने की कोशिश करते हैं कि उनके बच्चों को किसी चीज़ की कमी न हो। ऐसे बच्चों के पास वह सब कुछ होता है जिसकी वे चाह कर सकते हैं, और परिणामस्वरूप वे किसी भी चीज़ से नपिटने के लिए पूरी तरह से अक्षम होकर बड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, एक युवती को लें—जो अमीर माता-पिता की इकलौती संतान है। उसके पास एक नौकरानी है, जो समय आने पर उसके लिए मेज़ सजाएगी, उसका कमरा साफ करेगी और घर का सारा ज़रूरी काम करेगी। नौकरानी को उसके काम के लिए पैसे मिलते हैं, लेकिन साथ ही वह [सद्गुणों] का विकास भी करती है, क्योंकि वह दूसरों की सेवा करती है। जबकि वह युवती जिसकी वह सेवा करती है, आत्म-त्याग के बारे में कुछ भी नहीं सीखकर, एक 'बेड़ौल' व्यक्ति बनी रहती है, एक अपरिष्कृत व्यक्ति। मैं युवकों को सलाह देता हूँ कि वे बड़े परिवारों की युवतियों से विवाह करें, क्योंकि किठनाइयों में पले-बढ़े बच्चे त्याग करने के आदी हो जाते हैं और हमेशा यह सोचते रहते हैं कि वे अपने माता-पिता की मदद कैसे करें। यह उन बच्चों के साथ शायद ही कभी होता है जो ऐश-ओ-आराम में बड़े होते हैं।

हालाँकि, बड़े परिवारों में केवल बच्चे ही नहीं बल्कि माता-पिता भी उदार हृदय वाले होते हैं। मुझे याद है कि बच्चे के दौरान³⁵ में पड़ोस के एक घर का एक छोटा लड़का पूरी तरह अनाथ हो गया था। एक गरीब आदमी—दस बच्चों वाले परिवार का मुखिया—उस दुर्भाग्यशाली अनाथ पर दया करके उसे अपने घर ले आया और अपने बच्चों के साथ पाला। और क्या आप जानते हैं कि बाद में ईश्वर ने इस व्यक्ति पर कतिनी कृपाएँ बरसाईं! नसिंसेह ईश्वर इतने उदार हृदय वाले व्यक्ति को सहायता के बिना नहीं छोड़ सकता।

बहुत सारे बच्चों वाला व्यक्ति शुरू में किठनाइयों का सामना कर सकता है। लेकिन ईश्वर ऐसे व्यक्ति को कभी नहीं छोड़ता। मैं आपको एक विशेष मामले के बारे में बताता हूँ। एक बार, छह बच्चों वाले एक परिवार के मुखिया ने मुझसे प्रार्थना करने को कहा कि ईश्वर उन लोगों का हृदय नरम कर दे जिनसे वह घर कर लिए पर ले रहा था, ताकि वे उसे सड़क पर न फेंक दें। दुर्भाग्य से, कई मकान मालिक जो पाँच कुत्तों या बिल्लियों वाले जोड़ों को संपत्तिकिराए पर देते हैं—जो घर के अंदर और आसपास गंदगी करते हैं—वे बड़े परिवारों को कर लिए पर देने से हचिकचाते हैं, इस डर से कि बच्चे उनकी संपत्तिको नुकसान पहुँचा सकते हैं। और इस तरह कई बच्चों वाले इस बेबस पिता के पास समझदारी खत्म हो चुकी थी: एक मकान मालिक ने उसे घर से निकाल दिया, दूसरे ने तो उसे संपत्तिकिराए पर देने से ही इनकार कर दिया, और वह अपने बच्चों और सामान के साथ घर-घर भटकने के लिए मजबूर हो गया। अपने परिवार का पेट भरने के लिए, यह आदमी अथक परिश्रम करता था। वह मकान मालिकों से कर लिए पर भी मोल-भाव नहीं करता था — अगर वे बस उसे कुछ सालों के लिए घर में रहने देते, तो उसके लिए इतना ही काफी होता, ताकि उसे लगातार घर बदलने से राहत मिल सके। जब मैंने यह सुना, तो मेरा दिल उसके लिए तरस गया। मैंने उससे कहा, "हतोत्साहति न हो।" 'ईश्वर आपके बच्चों का भी ध्यान रख रहे हैं। आखिरकार, वह सृष्टिकर्ता है जो बच्चों को वह चीज़ देते हैं जो सबसे ज्यादा मायने रखती है—उनकी आत्मा—जबकि आप और आपकी पत्नी, ईश्वर के सह-सृष्टिकर्ता के रूप में, उन्हें उनका शरीर देते हैं। इसलिए, ईश्वर आपके बच्चों की आपसे भी ज्यादा परवाह करते हैं।' मुश्किल से दो-तीन महीने ही बीते थे कि यह आदमी, बहुत खुश देखि रहा था, मुझसे मिलने फरि से

³⁵ 1941-1944 में जर्मनी, इटली और बुल्गारिया द्वारा ग्रीस पर कब्ज़ा। — अनुवादक की टिप्पणी।

आया और कहा: "ईश्वर की स्तुति हो, ईश्वर ने मुझे एक घर दे दिया है, और मेरे पास अभी भी बहुत सारा पैसा बचा है।" मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ, और उसने मुझे यह बताया: "अपने गाँव लौटते समय, मैं बस स्टॉप पर बस का इंतज़ार करते हुए बैठा था। एक लॉटरी टिकट बेचने वाला मेरे पास आया और मुझे एक टिकट बेचने की पेशकश करने लगा। एक ईसाई के रूप में, मैं लॉटरी टिकट नहीं खरीदता; मैं इसे सदिधांत के रूप में मानता हूँ। इसलिए मैंने मना कर दिया। हालाँकि, यह देखकर कि वह जा रहा था, मैंने सोचा कि शायद इस आदमी को बहुत ज़रूरत होगी। इसलिए मैंने उसे वापस बुलाया और एक लॉटरी टिकट के लिए पैसे निकाले, लेकिन टिकट खुद नहीं लिया। हालाँकि, वह विकिरेता एक ईमानदार आदमी था और बिना टिकट के पैसे नहीं लेना चाहता था। फिर मुझे भी थोड़ा बुरा लगा, और उसकी मदद करने की इच्छा से, मैंने कहा: "ठीक है, तो मुझे एक टिकट दे दो; शायद मुझे इसकी ज़रूरत पड़ेगी।" "इस आदमी को थोड़ी खुशी मिलने दो," मैंने मन ही मन सोचा, "और जहाँ तक मेरी बात है, अपना 'नियम' तोड़ने के लिए मैं थोड़ा परेशान हो लूँगा - इसमें कोई बड़ी बात नहीं है।" और इस तरह मैंने जो लॉटरी टिकट खरीदा, वह बिक्री नकिला। मुझे बहुत बड़ी रकम मिली, एक घर खरीदा, और तो और, मेरे पास अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए भी पैसे बचे। और यह पता लगाने के बाद कि लॉटरी टिकट बेचने वाला कहाँ रहता था, मैं चुपके से उसके घर गया और उसके पत्र-बॉक्स में पर्याप्त धनराशि वाला एक लफ़ाफ़ा छोड़ आया। मुझे पता था कि अगर मैं उसे पैसे व्यक्तिगत रूप से देती, तो वह उन्हें स्वीकार नहीं करता।" यह आश्चर्यजनक है कि ईश्वर का प्रेम ईमानदार लोगों में कैसे काम करता है!

गर्भपात एक भयानक पाप है

— जेरोंडा, एक चालीस वर्षीय महिला, जो वयस्क बच्चों की माँ है, गर्भवती हो गई है और अब वह अपने तीसरे महीने में है। उसका पतन गर्भपात कराने पर जोर दे रहा है और अगर वह मना कर देगी तो उसे तलाक की धमकी दे रहा है।

— यदि वह गर्भपात कराती है, तो उसके अन्य बच्चे बीमारी और दुर्भाग्य के माध्यम से इसकी कीमत चुकाएंगे। आज माता-पिता गर्भपात के माध्यम से अपने बच्चों को मारते हैं और ईश्वर का आशीर्वाद खो देते हैं। पुराने दिनों में, यदि कोई बच्चा अस्वस्थ पैदा होता था, तो उसे बपतिस्मा दिया जाता था और वह एक छोटे देवदूत की तरह मर जाता था। और परलोक में उसकी तकदीर को लेकर कोई चिंता नहीं होती थी। माता-पिता के पास अन्य — स्वस्थ — बच्चे रह जाते थे, और ईश्वर का आशीर्वाद उन पर बना रहता था। लेकिन अब माता-पिता अपने स्वस्थ बच्चों को गर्भपात के माध्यम से मार देते हैं, जबकि अपने बीमार बच्चों को इस जीवन में जबरदस्ती बनाए रखने की कोशिश करते हैं। माता-पिता अपने बीमार बच्चों का इलाज कराने के लिए पूरे इंग्लैंड और अमेरिका की यात्रा करते हैं। परिणामस्वरूप, पीढ़ी दर पीढ़ी, बच्चे कम और कम स्वस्थ पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भले ही माता-पिता अपने बच्चों का इलाज कराने में सफल हो जाते हैं और वे मरते नहीं हैं बल्कि शिद्दी कर लेते हैं, तो उनके जो बच्चे होते हैं वे भी बीमार हो सकते हैं। क्या आप समझते हैं कि इसका परिणाम क्या होता है? लेकिन अगर माता-पिता के सिर्फ एक ही नहीं, बल्कि कई बच्चे होते, तो उन्हें एक बीमार बच्चे की उमर बढ़ाने के लिए डॉक्टरों के पास-पास और वदियों तक इतनी दूरियाँ तय करने की नौबत नहीं आती। एक बीमार बच्चा ईश्वर के पास चला जाता। और एक देवदूत की तरह उसके पास जाता।

— जेरोंडा, मैंने कहीं पढ़ा था कि हर साल दुनिया भर में 50 मिलियन गर्भपात किए जाते हैं,³⁶ और इसके परिणामस्वरूप 200,000 महिलाएं मर जाती हैं।

— बच्चों को मारा जा रहा है क्योंकि, जैसा कि वे कहते हैं, अगर आबादी बढ़ी, तो जीवित बचे लोगों के खाने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा, और लोगों के पास जीवन की आवश्यक वस्तुओं की कमी हो जाएगी। लेकिन

³⁶ 1989 में दिया गया। — *अनुवादक की टिप्पणी*। 2001 के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, रूस में 19 लाख गर्भपात किए गए थे। वास्तव में, यह संख्या काफी अधिक है। — *संपादक की टिप्पणी*।

इतनी सारी अनुपयोगी ज़मीन और इतने सारे जंगल हैं, और आधुनिक तकनीक से उन्हें उदाहरण के लिए, जल्दी से जेतून के बागों में बदला जा सकता है, जनिहें गरीबों में बांटा जा सकता है। और जंगलों को काटने से ऑक्सीजन की कमी होने का कोई खतरा नहीं है, क्योंकि जंगली पेड़ों की जगह उगाए गए पेड़ लगाए जाएंगे। अमेरिका में वे गेहूं जला देते हैं, जबकि यहाँ ग्रीस में, फलों और अन्य उपज को [उनकी कीमतों में गरिबों को रोकने के लिए] जमीन में दफना दिया जाता है। इस बीच, अफ्रीका में लोग भूख से मर रहे हैं। जब अबसिनिया में भीषण सूखा पड़ा और लोग थकान से मर रहे थे, तो मैंने एक जहाज मालिक से, जसि मैं जानता हूँ—जो ऐसी परिस्थितियों में लोगों की मदद करता है—अनुरोध किया कि वह उन लोगों से अपील करे जो फल और सब्जियों को जमीन में दबा देते हैं, और उनसे नविदन करे कि वे इन सामानों से एक जहाज मुफ्त में भर दें ताकि उन्हें भूखे लोगों तक पहुँचाया जा सके। लेकिन उसने उनसे चाहे जतिनी भी मन्तिन की, वे मान नहीं गए।

हर दिन कतिने हजारों मानव भ्रूण मारे जाते हैं! गर्भपात एक भयानक पाप है। गर्भपात हत्या है—और यह कोई साधारण हत्या नहीं, बल्कि एक बहुत ही गंभीर हत्या है, क्योंकि इसमें बनिा बपतस्मा लिए बच्चों की हत्या शामिल है। माता-पिता को यह समझना चाहिए कि मानव जीवन गर्भधारण के क्षण से ही शुरू होता है।

एक रात, ईश्वर की इच्छा से, मुझे एक भयानक दर्शन हुआ। उसके बाद मुझे एहसास हुआ कि गर्भपात वास्तव में क्या है! यह ब्राइट वीक के दौरान मंगलवार की रात थी। हमेशा की तरह, मैंने दो मोमबत्तियाँ जलाई और उन्हें दो टन के डब्बों में रख दिया। ये मोमबत्तियाँ आमतौर पर तब जलती रहती हैं जब मैं सो रहा होता हूँ। मैं इन्हें उन लोगों के लिए जलाता हूँ जो शरीर और आत्मा में पीड़ित हैं — मैं इनमें जीवितों और दविंगतों दोनों को शामिल करता हूँ। और इस प्रकार, आधी रात को, यीशु की प्रार्थना का जाप करते हुए, मैंने एक पत्थर की दीवार से घरे एक बड़े खेत को देखा। खेत में गेहूं बोया गया था; पौधे अभी-अभी अंकुरित होने शुरू हुए थे। दीवार के पीछे खड़े होकर, मैंने दविंगतों के लिए मोमबत्तियाँ जलाई और उन्हें पत्थर की दीवार पर रख दिया। बाईं ओर एक नरिजल, बंजर परदिश्य था—सरिफ चट्टानें और पत्थरीली चट्टानें ही थीं। यह परदिश्य एक शक्तशाली गर्जना से लगातार कांप रहा था, जसिमें हजारों दलि दहला देने वाली, आत्मा को झकझोर देने वाली चीखें घुल गईं। इसे सुनकर सबसे नरिदयी व्यक्ति भी उदासीन नहीं रह सकता था। इन चीखों से पीड़ित और यह समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा है, मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी: "गेहूं से बोया गया एक खेत, जसिमें अभी तक बाल नहीं निकले हैं, मृतकों की उन आत्माओं का वशि्रराम स्थल है जनिहें पुनर्जीवित किया जाएगा। इस स्थान में, हृदय वदिरक चीखों से काँपते और थरथराते हुए, गर्भपात से मारे गए बच्चों की आत्माएँ पड़ी हैं।" यह अनुभव करने के बाद, मैं इन बच्चों की आत्माओं के लिए महसूस किए गए अपार दर्द से उबर नहीं सका। और मैं लेटकर आराम भी नहीं कर सका, भले ही मैं बहुत थका हुआ था।

— जेरोंडा, क्या गर्भपात को वैध बनाने वाले कानून को रद्द करवाने के लिए कुछ किया जा सकता है?

— यह संभव है, लेकिन राज्य और चर्च को कार्रवाई करने की ज़रूरत है ताकि लोग इस बात से अवगत हो सकें कि कम जन्म दर के क्या परिणाम होंगे। पादरियों को लोगों को यह समझाना चाहिए कि गर्भपात का कानून सुसमाचार की आज्ञाओं का खंडन करता है। डॉक्टरों को, अपनी ओर से, उन महिलाओं को होने वाले जोखिमों के बारे में बोलना चाहिए जो गर्भपात कराती हैं। देखिए: यूरोपीय, जनिके पास कभी उचित आचरण की संस्कृति थी, उन्होंने इसे अपनी वरिसत के रूप में अपने बच्चों को दिया। दूसरी ओर, हम, जनिके पास कभी ईश्वर का भय था, उसे खो चुके हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए वरिसत में कुछ भी नहीं छोड़ा है। इसीलिए अब हम गर्भपात की अनुमति देते हैं और नागरिक साझेदारी को वैध कर रहे हैं...

यदि कोई एक व्यक्ति सुसमाचार की आज्ञाओं में से किसी एक का उल्लंघन करता है, तो जम्मेदारी केवल उसी व्यक्ति पर होती है। हालांकि, यदि कोई ऐसी व्यवस्था जो सुसमाचार की आज्ञाओं के विपरीत

हो, राज्य का कानून बन जाती है, तो ईश्वर का क्रोध पूरे राष्ट्र पर पड़ता है — उसे अनुशासति करने के लिए।

अध्याय 2. बच्चों के पालन-पोषण में माँ की भूमिका

एक माँ का प्रेम

— जेरोंडा, आपने एक बार हमें बताया था कि प्रेम के माध्यम से ही एक व्यक्ति बिढ़ता और परपिक्व होता है।

— किसी से सरिफ प्रेम करना ही काफी नहीं है। किसी को अपने से अधिक प्रेम करना चाहिए। एक माँ अपने बच्चों से अपने आप से अधिक प्रेम करती है। अपने बच्चों को खाना खिलाने के लिए, वह खुद भूखी रहती है। फरि भी, जो आनंद वह अनुभव करती है, वह अपने बच्चों के आनंद से कहीं अधिक होता है। छोटे शारीरिक रूप से पोषति होते हैं, जबकि माँ आध्यात्मिक रूप से पोषति होती है। वे भोजन के इंद्रिय सुख का अनुभव करते हैं, जबकि वह आध्यात्मिक आनंद में आनंदति होती है।

एक अवविहति युवती सुबह दस बजे तक सो सकती है और फरि भी उम्मीद करती है कि उसकी माँ नाश्ते के लिए उसका दूध गर्म कर दे। ऐसी युवती काम करने के लिए बहुत आलसी होती है। वह चाहती है कि सब कुछ उसे थाली में परोसा जाए। वह चाहती है कि हर कोई उसकी हर बात का पालन करे। उसे अपनी माँ से शिकायतें हैं, अपने पति से शिकायतें हैं, फरि भी वह खुद कुछ भी करने का आनंद नहीं लेती। हालाँकि उसकी [नारी] प्रकृति में प्रेम है, यह विकसित नहीं होता, क्योंकि वह अपनी माँ, अपने पति और अपने भाइयों और बहनों से मदद और आशीर्वाद स्वीकार करती है। हालाँकि एक बार जब वह खुद माँ बन जाती है, तो वह एक स्व-चारजगि डविडस की तरह हो जाती है: वह जतिनी मेहनत करती है, उतनी ही अधिक वह खुद को रचारज करती है — क्योंकि उसके भीतर प्रेम लगातार काम कर रहा होता है। पहले, जब वह कोई गंदी चीज छूती थी, तो उसे घृणा होती थी और वह सुगंधति साबुन से अपने हाथ अच्छी तरह धोती थी। लेकिन अब, जब उसका बच्चा गंदा हो जाता है और उसे धोने की जरूरत होती है, तो उसे ऐसा लगता है मानो वह कोई मारमालेड कैडी उठा रही हो! उसे कोई घृणा महसूस नहीं होती। पहले, जब उसे जगाया जाता था, तो वह परेशान होने पर जोर से अपनी नाराजगी व्यक्त करती थी। अब, जब उसका बच्चा रोता है, तो वह पूरी रात जागती रहती है, और उसे इसमें कोई परेशानी नहीं होती। वह अपने बच्चे की देखभाल करती है और इसमें आनंद लेती है। क्यों? क्योंकि वह खुद अब बच्ची नहीं रही। वह एक माँ बन गई है, और उसमें त्याग और प्रेम आ गया है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि एक माँ पति की तुलना में अधिक प्रेम और आत्म-त्याग करती है, क्योंकि पति को ऐसे त्याग करने के उतने अवसर नहीं मिलते। एक माँ अपने बच्चों के साथ संघर्ष करती है और उनकी देखभाल में पति की तुलना में अधिक समय बिताती है, लेकिन साथ ही वह उनसे 'रचारज' भी होती है, उन्हें अपना सर्वस्व देती है। दूसरी ओर, एक पति अपने बच्चों के साथ उतना संघर्ष नहीं करता जतिना एक माँ करती है, और न ही वह उनसे 'पुनर्ताजगी' प्राप्त करता है; इसलिए, उसका प्रेम माँ के प्रेम जतिना महान नहीं होता।

कतिनी माताएँ आँसुओं में मेरे पास आती हैं और पूछती हैं: 'फादर, मेरे बच्चे के लिए प्रार्थना करें।' आपको अंदाजा भी नहीं कि वे कतिनी व्यथित होती हैं! यह सुनना बहुत दुर्लभ है कि कोई पुरुष कहे: 'मेरे लिए प्रार्थना करें; मेरा बच्चा भटक गया है।' आज ही आठ बच्चों वाली एक माँ मुझसे मिलने आई। कतिनी बेचैनी से इस गरीब महिला ने अपने छोटे-छोटे बच्चों को आगे धकेलकर एक-एक करके कतार में खड़ा किया, ताकि

वे सभी आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। इस तरह का व्यवहार करने वाला पति बहुत दुर्लभ होता है। और रूस अपनी माताओं की बदौलत ही टकि हुआ है। एक पति की गोद — यद्यपि उसमें ईश्वर की कृपा न हो — तो वह सूखी होती है। लेकिन एक माँ की गोद — ईश्वर के बनि भी — पोषण से भरी होती है। एक बच्चा अपने पति से प्यार और सम्मान करता है। फिर भी, पति के प्रति यह प्यार भी माँ के प्यार की कोमलता और गर्माहट से और गहरा हो जाता है।

बच्चों के अभाव के प्रति सही दृष्टिकोण

यदि एक बाँझ महिला अपनी स्थिति के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण नहीं अपनाती, तो वह कष्ट भोगती है। मैंने एक विशेष बाँझ महिला के साथ कतिनी संघर्ष की! इस बेचारी महिला का पति एक उच्च पद पर था। उसके पास कई मकान थे, जिनमें वह करिए पर देती थी। इसके अलावा, उनके पास एक बड़ा घर था, जहाँ वह अपने पति के साथ रहती थी, जस ववाह के समय उससे काफी दहेज मला था। लेकिन सब कुछ उसके लिए बोझ था: बाजार जाना, खाना बनाना... और वह खाना बनाना भी नहीं जानती थी। घर पर बैठकर, वह किसी रेस्टोरेंट को फोन करती और तैयार भोजन मंगवा लेती। उसके पास सब कुछ था, फिर भी वह इस बात से पीड़ित थी कि उसे किसी चीज़ से कोई खुशी नहीं मिलती थी। वह दिन भर घर पर ही रहती: यह ठीक नहीं था, वह ठीक नहीं था। एक काम करना उबाऊ था, दूसरा काम बहुत थका देने वाला था... फिर उसके वचारों ने उस पर हावी होने लगे, और उसे गोलियाँ लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसके पति ने उसे खुश करने के लिए घर पर करने के लिए काम ढूँढ लिया, लेकिन वह, समय बताने का तरीका न जानते हुए, उसके नहाने के दौरान उसके ऊपर खड़ी हो जाती थी। जाहरि है, वह उस बेचारे आदमी की नसों पर सवार हो गई: आखरि कार, बाकी सब चीज़ों के अलावा, उसे अपना काम भी तो करना था! जब मैं उससे मला, तो मैंने उसे सलाह दी: "दिन भर घर पर मत बैठो! इस तरह तो तुम बलिकूल सूख जाओगी! अस्पताल जाओ, बीमारों से मलो..." "लेकिन मैं आखरि जाऊँ कहाँ, फादर?" उसने जवाब दिया। "क्या मैं वाकई ऐसा कर सकती हूँ?" "तो फिर," मैंने कहा, "यह करो: जब पहला घंटा पढ़ने का समय हो, तो उसे पढ़ो; फिर, समय आने पर, तीसरा घंटा पढ़ो, और इसी तरह।"³⁷ एक-दो धनुष भी जोड़ लेना..." "मैं नहीं कर सकती," उसने जवाब दिया। "अच्छा," मैंने कहा, "तो फिर संतों के जीवन में डूब जाओ।" मैंने उससे कहा कि वह उन सभी महिलाओं की जीवनियाँ पढ़े जिनोंने संतत्व प्राप्त किया था, इस आशा में कि जो कुछ वह पढ़ेगी, वह उसकी आत्मा में गूँजेगा और उसकी मदद करेगा। बड़ी कठिनाई से, मैंने उसे सही रास्ते पर वापस लाने में कामयाबी हासिल की ताकि वह किसी मानसिक अस्पताल में न पहुँच जाए। इस महिला ने खुद को पूरी तरह बर्बाद कर लिया था। एक शक्तिशाली इंजन थी, लेकिन उसमें तेल थोड़ा जमी हुई हो गई थी।

इन सब से मेरा तात्पर्य यह है कि यदि किसी महिला के स्वभाव में नहि प्रति प्रेम को कोई अभिव्यक्ति न मिले तो उसका हृदय मुरझा जाता है। बस देखिए: एक और महिला के पाँच, छह या आठ बच्चे भी हो सकते हैं। उस गरीब महिला के पास नाम पर एक पैसा भी नहीं होता, फिर भी वह खुश रहती है। उसमें उदार उदारता और साहसी धैर्य दोनों होते हैं। क्यों? क्योंकि उसने अपना उद्देश्य पा लिया है।

मेरी याददाश्त में एक खास घटना अंकित हो गई है। मेरी एक जान-पहचान की महिला की दो बहनें थीं। उनमें से एक बहुत कम उम्र में ही शादी कर चुकी थी और उसके कई बच्चे थे। इस महिला ने अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर दिया था। अन्य कामों के अलावा, एक दर्जी के रूप में वह कपड़े सलित थी और इस तरह गरीबों को दान देती थी। कुछ दिन पहले वह आई और मुझसे बोली, 'अब तो मेरे पोते-पोतियाँ भी हैं।' उसका दिल खुशी से काँप रहा था। हालाँकि उसकी दूसरी बहन ने कभी शादी नहीं की। फिर भी उसे अपनी इस बेफ़िक्र ज़िंदगी से कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं मला। वह किस हाल में थी! यह पूछना भी ठीक नहीं है

³⁷ घंटे एक संक्षिप्त पूजा-संस्कार सेवा है जो दैनिक उपासना चक्र का हिस्सा है। घंटे, जिनमें वशिष्ट समयों पर जपा जाता है, उन घंटों को पवित्र करते हैं जिनमें रोमन काल में दिन को विभाजित किया गया था। पहला घंटा लगभग सुबह 6 बजे, तीसरा घंटा लगभग सुबह 9 बजे, छठा घंटा लगभग दोपहर में, और नौवां घंटा लगभग दोपहर 3 बजे पढ़ा जाता है।

कविह कैसे जीती... वह उम्मीद करती थी कउसकी बूढ़ी माँ उसकी देखभाल करेगी, और यह शिकायत भी करती थी कविह यह काम पूरी लगन से नहीं कर रही थी। समझ रहे हैं न? वह माँ नहीं बनी, और इसलिए उसके भीतर कुछ भी नहीं बदला। फरि भी, ज़रूरतमंदों की मदद करके, वह उस प्रेम को व्यवहार में ला सकती थी जो एक महिला के स्वभाव में पहले से ही मौजूद है, और उससे लाभ उठा सकती थी। हालाँकि, उसने ऐसा नहीं किया।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि एक महिला को बलदान देना चाहिए। एक पुरुष — भले ही वह अपने भीतर प्रेम का संवर्धन न करे — को कोई वशिष हानि नहीं होती। हालाँकि, एक महिला जिसके पास प्रेम है लेकिन वह उसे सही दिशा में नहीं लगाती, वह उस मशीन की तरह है जसि चालू तो कर दिया गया है, लेकिन कच्चे माल की कमी के कारण वह बेकार चलती रहती है, खुद को और दूसरों को हिलाती रहती है।

एक माँ की सहनशीलता

— गेरोंडा, अपनी ननों को लखि एक पत्र में, एजयाना के संत नेक्टारियोस उनसे आग्रह करते हैं कि वे यह न भूलें कि वे महिलाएँ हैं, और पवतिर पुरुषों के बजाय पवतिर महिलाओं का अनुकरण करें।³⁸ संत ऐसा क्यों कहते हैं? शायद इसलिए कि महिलाओं में सहनशक्तिकी कमी होती है?

— किससे? क्या इन महिलाओं में सहनशक्तिकी कमी है? मैं तो बस यह देखकर हैरान हूँ कि उनमें कतिनी सहनशक्ति है! आखरिकार, वे सात-शरि वाली होती हैं! एक महिला का शरीर भले ही पुरुष से कमजोर हो, लेकिन उसका दिल [मजबूत] होता है, और उसी से वह एक ऐसी सहनशक्ति रखती है जो पुरुष की ताकत से भी बढ़कर है। हाँ, एक पुरुष के पास शारीरिक ताकत होती है, लेकिन उसमें वह दिल नहीं होता जो एक महिला के पास होता है। एक बार, मैं एक बलिली को देख रहा था जो अपने बच्चों के साथ मेरी झोपड़ी में आई थी। वह एकदम पतली थी; आप उसकी पसलियाँ गनि सकते थे। एक दिन, एक बड़ा शिकारी कुत्ता मेरे आँगन में आ गया। कुरद – बलिली का यही नाम था – भाग खड़ा हुआ, जबकि बलिली ने लड़ाई के लिए खुद को तैयार कर लिया, अपनी पीठ को धनुषाकार कर लिया, एक भयावह मुद्रा धारण कर ली और कुत्ते पर झपटने के लिए तैयार थी। मैं बस हैरान रह गया: आखिर उसने इतनी हिम्मत कहाँ से लाई थी! आप देखिए: वह अपने बलिली के बच्चों की रक्षा कर रही थी।

एक माँ हड्डी तक थक जाती है और कड़ी मेहनत करती है, फरि भी उसे न तो दर्द महसूस होता है और न ही थकान। वह खुद को [काम करने के लिए] मजबूर करती है, लेकिन क्योंकि वह अपने बच्चों और अपने घर से प्यार करती है, वह सब कुछ खुशी से करती है। जो व्यक्ति दिन भर एक तरफ लेटा रहता है, वह उससे भी ज्यादा थक जाता है। मुझे याद है जब हम छोटे थे, तो हमारी माँ को दूर से पानी लाना पड़ता था, साथ ही खाना बनाना, रोटी सेंकना, कपड़े धोना, और इसके ऊपर खेतों में भी काम करना पड़ता था। और इन सबके ऊपर, हम बच्चों से उसे कोई चैन नहीं मलित था: जब हम आपस में लड़ते थे, तो उसकी अनगिनत नौकरियों और परेशानियों पर एक जज की भूमिका निभाने का अतिरिक्त बोझ भी आ जाता था! फरि भी वह कहती थी: 'यह मेरा कर्तव्य है। मुझे यह सब करना है और शिकायत नहीं करनी है।' वह यह बात दयालुता से कहती थी। वह अपने घर से प्यार करती थी, वह अपने बच्चों से प्यार करती थी, और वह अपने कामों और चिंताओं से कभी थकती नहीं थी। वह सब कुछ पूरे दिल से, खुशी के साथ करती थी।

और जैसे-जैसे साल बीतते जाते हैं, उसकी माँ अपने घर से और भी अधिक प्रेम करने लगती है। वह अब पहले जैसी जवान नहीं रही; फरि भी, इसके बावजूद, वह अपने पोते-पोतियों की परवरिश के लिए स्वयं को और भी अधिक समर्पित कर देती है। उसके पास अब बहुत कम ताकत बची है, फरि भी वह पूरे मन से अपने सभी कर्तव्यों का पालन करती है, और उसकी ताकत अपने पतकी ताकत से भी बढ़ गई है, और वह ताकत भी जो उसके युवा दिनों में उसके पास थी।

— आप जानते हैं, गेरोंडा, बीमार होने पर भी महिलाएँ पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक संयमति रहती हैं।

³⁸ संत नेक्टारियोस, पेटापोलसि के बशिप। 35 पास्टोरल एपस्टिल्स, पत्र 26। ऑउपाकोए द्वारा प्रकाशित। एथेस, 1993। पृ. 12।

— क्या आप जानते हैं कयिहाँ मामला क्या है? माँ ने अपने बच्चे के कई बार बीमार पड़ने की स्थिति का सामना किया है, इसलिए वह जानती है कि बीमारी क्या होती है; इस संबंध में उसके पास अनुभव का खजाना है। उसे याद है ककितनी बार उसके नन्हें के बुखार चढ़ा और कतिनी बार उतरा। उसने हर तरह की परस्थितियाँ देखी हैं: उदाहरण के लिए, कैसे कोई बच्चा जो सांसें ले रहा हो या बेहोश हो रहा हो, उसके गालों पर हल्की थपकी देते ही होश में आ जाता था। एक पुरुष इन सबका अनुभव नहीं करता, और उसके पास ऐसा कोई अनुभव नहीं होता। इसलिए, जब उसे यह पता चलता है कि बच्चे का बुखार चढ़ गया है या उसका चेहरा पीला पड़ गया है, तो वह घबरा जाता है और घबराने लगता है: 'बच्चा मर रहा है! अब हम क्या करेंगे? जल्दी करो और डॉक्टर को फोन लगाओ!'

गर्भावस्था और स्तनपान

एक बच्चे का पालन-पोषण गर्भावस्था के दौरान ही शुरू होता है। यदगिर्भ में बच्चे को धारण करने वाली माँ चतिति या परेशान होती है, तो गर्भ में पल रहा भ्रूण भी परेशान हो जाता है। और यदमाँ प्रार्थना करती है और आध्यात्मिक जीवन जीती है, तो उसके गर्भ में शिशु पवतिर हो जाता है। इसलिए, गर्भावस्था के दौरान, एक महिला को यीशु की प्रार्थना का जाप करना चाहिए, सुसमाचार के अंश पढ़ने चाहिए, चर्च के भजन गाने चाहिए, और अपनी आत्मा को शांत रखना चाहिए। लेकिन उसके प्रयिजनों को भी वचारशील होना चाहिए, ताकि उसे परेशान न करें। इस स्थितिमें, जन्म लेने वाला बच्चा एक पवतिर बच्चा होगा, और माता-पिता को उसके साथ कोई कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा — न तो जब वह छोटा होगा, और न ही जब वह बड़ा हो जाएगा।

फरि, जब बच्चा पैदा हो जाए, तो माँ को उसे स्तनपान कराना चाहिए — जतिना लंबा हो सके, उतना ही अच्छा। माँ का दूध बच्चों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। स्तनपान के दौरान, बच्चे सरिफ दूध ही नहीं लेते हैं: वे प्यार, कोमलता, आराम और सुरक्षा की भावना को भी ग्रहण करते हैं, और इस तरह वे मजबूत चरतिर वाले वयक्तबिनकर बड़े होते हैं। लेकिन, इसके अतरिक्त, स्तनपान माँ को स्वयं भी मदद करता है। यदा माताएँ अपने बच्चों को स्तनपान नहीं कराती हैं, तो उनके शरीर में असामान्यताएँ वकिसति हो सकती हैं, जो [कैसर] और स्तन के हटाए जाने का कारण बन सकती हैं।

पहले के दनिों में, अगर किसी माँ के पास दूध होता था, तो वह अपने बच्चे और अपने पड़ोसी के बच्चे, दोनों को स्तनपान करा सकती थी। हालाँकि आजकल, कई माताओं को अपने बच्चों को स्तनपान कराना भी मुश्किल लगता है। एक माँ जो आलसी है और अपने बच्चे को स्तनपान नहीं कराती, वह अपने बच्चे में आलस्य और सुस्ती के 'जीवाणु' भी डाल देती है। पहले, कंडेंसड मलिक के डबिबों पर एक माँ की तस्वीर होती थी जो अपने बच्चे को गोद में लिए होती थी, लेकिन अब उन पर एक 'माँ' को फूलों के साथ दखाया जाता है! माताएँ अपने बच्चों को स्तनपान नहीं कराती, और इसलिए बच्चे बनि आराम के बड़े होते हैं। उन्हें कोमलता और प्यार कौन देगा? गाय के दूध का एक टनि? बच्चे एक 'ठंडी' काँच की बोतल से जुड़ी नपिपल चूसते हैं, और उनका दिल भी ठंडा हो जाता है। और फरि, जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे भी बोतल में - पब में - सांतवना ढूँढते हैं। अपने अंदर के उथल-पुथल को भूलने के लिए, वे शराब पीना शुरू कर देती हैं और शराबी बन जाती हैं। अगर बच्चों को खुद कोमलता नहीं मिलती, तो उनके पास अपने बच्चों को देने के लिए पर्याप्त कोमलता नहीं होगी। इस तरह एक बात से दूसरी बात जुड़ती जाती है। और फरि माताएँ आती हैं और वनिती करने लगती हैं: 'मेरे लिए प्रार्थना करें, फादर! मैं अपना बच्चा खो रही हूँ।'

एक कामकाजी माँ

- गेरोन्डा, क्या एक महिला को काम करना चाहिए?
- और इस बारे में उसका पतकिया कहता है?
- वह यह फैसला उस पर छोड़ देता है।

— अगर कोई महिला शादी से पहले पढ़ी-लिखी हो, तो उसके लिए अपनी नौकरी छोड़कर सिर्फ अपने बच्चों को समर्पित हो जाना आसान नहीं होता। हालांकि, एक ऐसी महिला जसिने पढ़ाई नहीं की है और कोई साधारण काम कर रही है, वह इसे बिना किसी कठिनाई के छोड़ सकती है।

— जेरोंडा, मुझे लगता है कि अगर किसी महिला के बच्चे नहीं हैं, तो उसके लिए काम करना फायदेमंद है।

— तो, क्या आप कह रहे हैं कि अगर उसके बच्चे नहीं हैं, तो उसे बस काम पर जाना ही होगा? आखिरकार, वह और भी बहुत कुछ कर सकती है। बेशक, अगर उसके बच्चे हैं, तो उसके लिए घर पर रहना बेहतर है। वरना, वह उनकी देखभाल कैसे करेगी?

— गेरोन्डा, कई महिलाएँ कहती हैं कि उन्हें काम करने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि वे अपना गुजारा नहीं चला पातीं।

— वे अपना गुजारा नहीं चला पाते क्योंकि वे एक टेलीविजन, एक वीडियो रिकॉर्डर, एक कार और इसी तरह की चीजें चाहते हैं। परिणामस्वरूप, उन्हें काम करना पड़ता है, और इसका परिणाम यह होता है कि वे अपने बच्चों की उपेक्षा करते हैं और उनसे दूर हो जाते हैं। अगर केवल पति काम करता है और परिवार थोड़े में गुजारा कर ले, तो यह समस्या उत्पन्न ही नहीं होती। लेकिन क्योंकि पति और पत्नी दोनों काम करते हैं — कथित तौर पर इसलिए कि उनके पास पर्याप्त पैसा नहीं है — परिवार बखिर जाता है और अपना असली उद्देश्य खो देता है। और उसके बाद बच्चों के लिए करने के लिए क्या बचता है? अगर माताएँ अधिक साधारण जीवन जीएँ, तो वे खुद हड्डी-पसली तक काम नहीं करेंगी, और उनके बच्चे खुश रहेंगे। एक आदमी सात विदेशी भाषाएँ जानता था, जबकि उसकी पत्नी ने चार भाषाएँ सीखने के लिए जबरदस्त प्रयास किए। वह नज़ी तौर पर पढ़ाती भी थी और खुद को काम में बनाए रखने के लिए गोलियों पर जीती थी। इस दंपति के बच्चे स्वस्थ पैदा हुए लेकिन मानसिक रूप से बीमार होकर बड़े हुए। बाद में, उन्होंने मनोवैश्लेषकों की 'मदद' लेनी पड़ी... इसीलिए मैं माताओं को सलाह देती हूँ कि वे अपना जीवन सरल बना लें ताकि वे अपने बच्चों को अधिक समय दे सकें, जनिहें उनकी ज़रूरत है। यह एक अलग बात है अगर माँ के पास घर पर कोई ऐसा काम हो जसि पर वह बच्चों की देखभाल करते-करते थक जाने पर अपना ध्यान केंद्रित कर सके। घर पर रहते हुए, एक माँ अपने बच्चों पर नज़र रख सकती है और कोई दूसरा काम भी कर सकती है। इससे परिवार को कई समस्याओं से बचने में मदद मिलती है।

आजकल बच्चे मातृत्व प्रेम की कमी से 'भूखे' हैं। फरि भी वे अपनी मातृभाषा तक नहीं सीख पाते, क्योंकि उनकी माताएँ पूरे दिन काम पर व्यस्त रहती हैं और बच्चों को अजनबियों—अक्सर विदेशी महिलाओं—की देखभाल में छोड़ देती हैं। एक अनाथालय में बच्चे, जहाँ देखभाल करने वालों में किसी ईसाई बहन-संघ की एक महिला हो सकती है जसिने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है और उन्हें कम से कम थोड़ी सी कोमलता दिखाती है, उन बच्चों की तुलना में हजार गुना बेहतर स्थिति में हैं, जनिहें माता-पिता उन्हें उन महिलाओं की देखभाल में छोड़ देते हैं जनिहें उनकी देखभाल के लिए भुगतान किया जाता है! और क्या आप जानते हैं कि इसका नतीजा क्या होता है? इसका मतलब है कि अगर किसी बच्चे की एक माँ नहीं है, तो उसकी देखभाल करने वालों का एक पूरा काफ़िला होता है!

गृहस्थी के कर्तव्य और एक माँ का आध्यात्मिक जीवन

— जेरोंडा, एक गृहिणी अपने कार्यों और ज़िम्मेदारियों को कैसे व्यवस्थित कर सकती है ताकि उसके पास प्रार्थना के लिए भी समय हो? काम और प्रार्थना के बीच कैसा संतुलन होना चाहिए?

— महिलाएँ आमतौर पर अपने मामलों में संयम नहीं रखतीं। वे हमेशा अपने कार्यों और चिंताओं में और अधिक जोड़ने के लिए उत्सुक रहती हैं। अपने विशाल हृदय के कारण, महिलाएँ अपनी आत्मा के 'गृहस्थी' का प्रबंधन बहुत सफलतापूर्वक कर सकती हैं, लेकिन इसके बजाय वे अपने दिली तुच्छ बातों पर बर्बाद कर देती हैं। उदाहरण के लिए कल्पना कीजिए कि हमारे पास सुंदर पैटर्न, धारियाँ और इसी तरह की सजावट

वाला एक गलास है। अगर वह इन धारियों से सजाया नहीं गया होता, तो भी वह अपना काम करने से नहीं रुकता। हालांकि, महिलाएं दुकान में आती हैं और दुकानदार से कहने लगती हैं: "नहीं, नहीं, मुझे ये धारियाँ यहाँ तक चाहिए, और वैसे नहीं, बल्कि ऐसे।" और अगर उस पर एक छोटा सा फूल बना हो, तो उनका दिल बस खलि उठता है! इस तरह एक महिला अपनी पूरी क्षमता बर्बाद कर देती है। आपको शायद ही कोई ऐसा पुरुष मलिंगा जो ऐसी बातों पर ध्यान दे। उदाहरण के लिए, उसका डेस्क लैप लें: अगर वह भूरा या काला है, तो एक आदमी ध्यान भी नहीं देगा। दूसरी ओर, एक महिला कुछ सुंदर चाहती है; वह प्रसन्न होती है और उस सुंदरता को अपने दिल का एक छोटा सा टुकड़ा दे देती है। वह 'सुंदर' लगने वाली किसी और चीज़ को अपना दूसरा टुकड़ा दे देती है, लेकिन मसीह के लिए क्या बचता है? प्रार्थना के दौरान हाँफना और थकान। एक महिला का दिल सुंदर चीज़ों से जतिना दूर होता जाता है, उतना ही वह मसीह के करीब आती है। और अगर दिल मसीह को दे दिया जाए, तो उसमें बड़ी शक्ति होती है! कुछ दिन पहले मैं एक ऐसी महिला से मिली जो खुद को पूरी तरह से ईश्वर को सौंप चुकी थी। आप उसके भीतर एक तरह की मीठी आग जलती हुई देख सकते थे! वह हर काम को उत्साह के साथ करती है। पहले, यह महिला पूरी तरह से सांसारिक व्यक्ति थी, हालांकि वह दयालु स्वभाव की थी, और किसी समय उसकी आत्मा में एक चिंगारी प्रज्वलित हुई। उसने अपना सारा सोने का आभूषण और शानदार कपड़े फेंक दिए। अब वह असाधारण सादगी से रहती है! वह अपने ऊपर आध्यात्मिक कार्य करते हुए प्रयास करती है। उसके कार्य कतिने त्याग से भरे हैं! वह संतों से 'ईर्ष्या' और 'जलन' करने लगी है — शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। क्या आप जानते हैं कि वह प्रार्थना में अपनी उंगलियों से कतिनी जपमाला की मालाएँ फेरती है, वह कौन-कौन से व्रत रखती है, वह भजन संकलन पढ़ने में कतिना समय समर्पित करती है!... यह वास्तव में अद्भुत है! तपस्या अब उसका आहार बन गई है।

— गेरोंडा, एक माँ ने एक बार मुझसे कहा: 'मैं शारीरिक रूप से कमजोर हूँ और बहुत थक जाती हूँ। मैं अपने कामकाज नहीं कर पाती, और प्रार्थना के लिए मेरे पास कोई समय नहीं बचता।'

— प्रार्थना के लिए समय निकालने के लिए, उसे अपना जीवन सरल बनाना होगा। सरलता के माध्यम से, एक माँ बहुत कुछ हासिल कर सकती है। एक माँ को यह कहने का अधिकार है कि 'मैं थक गई हूँ, यदि उसने अपना जीवन सरल बनाया है और केवल इसलिए कड़ी मेहनत कर रही है क्योंकि उसके कई बच्चे हैं। हालांकि, अगर वह अजनबियों को प्रभावित करने के लिए अपना घर सजाने में अपना समय बर्बाद करती है, तो क्या कहा जा सकता है? कुछ माताएँ, जो चाहती हैं कि उनके घर की हर चीज़ अपनी जगह पर सलीके से रखी हो, अपने छोटे बच्चों को कुरसी या तकिया भी अपनी जगह से हटाने नहीं देती, और इस तरह उन पर दबाव डालती हैं और उन्हें 'घुटन' महसूस कराती हैं। वे अपने बच्चों को छावनी-शैली के अनुशासन के नियमों पर जीने के लिए मजबूर करती हैं, और इसलिए जो बच्चे सामान्य पैदा हुए थे, वे दुर्भाग्य से बड़े होकर पूरी तरह सामान्य नहीं रह पाते। यदि कोई समझदार व्यक्ति यह देखे कि एक बड़े परिवार में हर चीज़ अपनी सही जगह पर है, तो वह यह नष्टि नकिलेगा कि या तो बच्चे मानसिक रूप से मंद हैं, या माँ, क्रूर और तानाशाह होकर, उन्हें सैन्य अनुशासन का पालन करने के लिए मजबूर कर रही है। दूसरी स्थिति में, बच्चों के दिलों में डर बस जाता है, और यही डर उन्हें अनुशासित तरीके से व्यवहार करने के लिए मजबूर करता है। एक बार मैं एक ऐसे घर में गया जहाँ बहुत सारे बच्चे थे। मैं उन नन्हें बच्चों की शरारतों से कतिनी प्रसन्न हुआ, जिनोंने उस सांसारिक व्यवस्था को चकनाचूर कर दिया जो कहती है: 'हर चीज़ अपनी जगह पर हो।' यह 'व्यवस्था' सभी अव्यवस्थाओं में सबसे बड़ी है, एक ऐसी व्यवस्था जो आधुनिक लोगों की ऊर्जा को बहुत अधिक सोख लेती है।

अतीत में कोई आध्यात्मिक पुस्तकें नहीं थीं, और माताएँ खुद को व्यस्त नहीं रख सकती थीं या पढ़कर सांत्वना नहीं पा सकती थीं। आजकल चर्च पतिओं की बड़ी संख्या में पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें से कई आधुनिक भाषा में अनुवादित हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश अधिकांश माताएँ [इस सारी संपदा को अनदेखा कर] अपना समय तुच्छ बातों में या सरिफ गुज़ारा चलाने के लिए [लगातार] काम करने में बताती हैं।

घर के कामों में बारीकी और सूक्ष्मता से खुद को लगा देने — जो एक नरिजीव कार्य है — के बजाय, एक माँ के लिए अपने बच्चों का पालन-पोषण करने पर ध्यान केंद्रित करना बेहतर होगा। उसे उनके साथ मसीह के बारे में बात करनी चाहिए और उन्हें संतों के जीवन की कहानियाँ पढ़कर सुनानी चाहिए। साथ ही, उसे अपनी आत्मा को भी शुद्ध करना चाहिए — ताकविह भी आध्यात्मिक रूप से चमक सके। एक माँ का आध्यात्मिक जीवन, सूक्ष्म और मौन रूप से, अपने बच्चों की आत्माओं के पवत्रिकरण में भी मदद करेगा। इस तरह, उसके बच्चे आनंदपूर्वक जाएंगे और वह स्वयं भी प्रसन्न रहेगी, क्योंकि उसमें मसीह होंगे। यदा एक माँ 'हे पवत्र परमेश्वर' का जप करने के लिए भी समय नहीं निकाल पाती है, तो उसके बच्चे कैसे पवत्र होंगे?

— जेरोंडा, अगर किसी माँ के कई बच्चे हों और बहुत सारा काम हो तो क्या करना चाहिए?

— लेकिन क्या वह घर का काम करते हुए प्रार्थना नहीं कर सकती? मेरी माँ ने मुझे यीशु की प्रार्थना सिखाई थी। जब हम बच्चे थे और कोई शरारत कर बैठते थे, और वह गुस्सा होने वाली होती थी, तो मैं उन्हें जोर से प्रार्थना करते हुए सुनता था: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझ पर दया करो। जब वह ओवन में रोटी रखती थी, तो मेरी माँ कहती थी: "मसीह और परमेश्वर की अतपवत्रि माता के नाम पर।" आटा गूंथते और भोजन बनाते समय, वह भी लगातार यीशु की प्रार्थना का जाप करती थी। इस प्रकार, उन्होंने स्वयं को पवत्र किया, उनके द्वारा तैयार रोटी और भोजन पवत्र हो गए, और जो लोग उन्हें खाते थे, वे भी पवत्र हो गए।

कतिनी माताओं ने पवत्र जीवन जिया और उनके बच्चे भी पवत्र हो गए! उदाहरण के लिए, एल्डर हाजी-जॉर्जी की माँ को ही लें। इस धन्य माँ का दूध भी, जसिने अपने शशि गैबरियल — जैसा कएल्डर हाजी-जॉर्जी संसार में जाने जाते थे — को पलाया, तपस्वी स्वभाव का था। इस महिला ने दो बच्चों को जन्म दिया, और बाद में वह और उसके पतबिहमचर्य का पालन करते हुए भाई-बहन की तरह एक-दूसरे से प्रेम करते हुए रहे। बचपन से ही, हाजी-जॉर्जी की माँ अपने तपस्वी स्वभाव के लिए वशिष्टि थी, क्योंकि उनकी बहन एक नन और तपस्वी थीं। वह अक्सर अपनी नन बहन से मिलने जाती थीं और शादी के बाद भी अपने बच्चों के साथ उनसे मिलने आती थीं। गैबरियल के पति भी एक धर्मपरायण व्यक्ति थे। वह एक व्यापारी थे और इसलिए अपना अधिकांश समय घर से दूर बताते थे। इससे उसकी माँ को कई बातों की चिंता या फकिर्मंद हुए बना एक साधारण जीवन जीने का अनुकूल अवसर मिला,³⁹ और वह अपने बेटे को साथ लेकर, अन्य महिलाओं के साथ, पूरी रात की प्रार्थना सभा में शामिल होती थीं, जो कभी-कभी गुफाओं में और कभी-कभी वभिन्न चैपल में आयोजित की जाती थी। यही कारण है कि बाद में, उसके बेटे ने पवत्रता की इतनी ऊँची डगिरी प्राप्त की।⁴⁰

माँ का सम्मान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि माँ वनिम्र और ईश्वर-भयभीत हो, तो घर में सब कुछ सुचारू रूप से चलता है। मैं उन युवा माताओं को जानती हूँ जिनके चेहरे पर चमक होती है, भले ही उन्हें कहीं से कोई मदद न मिले। जब मैं उनके बच्चों के साथ समय बताती हूँ, तो मैं उनकी माताओं की स्थिति को समझ पाती हूँ।

अध्याय 3. अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए माता-पति की जम्मेदारी

³⁹ तुलना करें लूका 10:41।

⁴⁰ देखें माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस। एल्डर हतजसि-जयिर्जसि द अथोनाइट, सेंट जॉन द थयिलोजियन के होली हेसकिंस्टेरयिन, सूरोटी, थेसालोनीकी, 6, 2001 द्वारा प्रकाशित।

माता-पति को अपने बच्चों को ईश्वर के सुपुर्द करना चाहिए

ईश्वर ने पहले मनुष्यों—आदम और हवा—को अपने सह-स्रष्टा बनने का महान आशीर्वाद प्रदान किया। माता-पति, दादा-दादी और परदादा-परदादी भी क्रमशः ईश्वर के सह-स्रष्टा हैं, क्योंकि वे अपने बच्चों को शरीर प्रदान करते हैं।

ईश्वर, यदि ऐसा कहा जाए, बच्चों की देखभाल करने के लिए बाध्य है। जब कोई बच्चा पवित्‍र बपतिस्मा ग्रहण करता है, तो ईश्वर उनकी देखभाल के लिए एक संरक्षक देवदूत नियुक्त करते हैं। इस प्रकार, बच्चा ईश्वर, अपने संरक्षक देवदूत और अपने माता-पति द्वारा संरक्षित रहता है।

एक रक्षक देवदूत हमेशा बच्चे के पास रहता है और उसकी मदद करता है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, उसके माता-पति अपनी जम्मेदारियों से उतने ही अधिक मुक्त हो जाते हैं। यदि माता-पति की मृत्यु हो जाती है, तो ईश्वर — ऊपर से भी और पास से भी — और पास मौजूद रक्षक देवदूत हर समय बच्चे की देखभाल करते रहते हैं।

माता-पति को अपने बच्चों को तब आध्यात्मिक मार्गदर्शन देना चाहिए जब वे अभी छोटे हों, क्योंकि जब वे छोटे होते हैं, तो उनकी कमियाँ भी मामूली होती हैं और उन्हें आसानी से ठीक किया जा सकता है। वे नए आलू की तरह होते हैं, जिनकी छलिका बस थोड़ी सी रगड़ से ही आसानी से उतर जाता है। हालाँकि, अगर आलू को यूँ ही पड़ा रहने दिया जाए, तो बाद में उसे छीलने के लिए चाकू की ज़रूरत पड़ेगी। और अगर वह खराब हो गया हो, तो आपको उस चाकू से और गहराई तक काटना पड़ेगा। अगर बच्चों को बहुत छोटी उम्र से ही मार्गदर्शन मिले और वे मसीह से परिपूर्ण हों, तो वे हमेशा के लिए उनके करीब रहेंगे। भले ही, जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे अपनी उम्र या बुरी संगत के कारण थोड़ा रास्ते से भटक जाएँ, वे फिर से होश में आ जाएँगे। क्योंकि ईश्वर का भय और श्रद्धा, जिससे उनके हृदय बचपन में भर दिए गए थे, वे उन पर कभी फीके नहीं पड़ सकते।

बाद में, कशिरावस्था के दौरान—जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण चरण—माता-पति की अपने बच्चों के प्रति चिंता बढ़ जाती है। यह चिंता तब तक बनी रहती है जब तक माता-पति अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान नहीं कर देते और उन्हें स्वतंत्र जीवन के मार्ग पर नहीं भेज देते। जब बच्चे इस चरण में होते हैं, तो माता-पति को उनकी मदद करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। और जो कुछ भी माता-पति की शक्ति से परे है, उसे सर्वशक्तिमान ईश्वर के हवाले कर देना चाहिए। यदि माता-पति अपने बच्चों को ईश्वर के हवाले कर दें, तो ईश्वर उन चीजों में मदद करने के लिए बाध्य है जिन्हें मानवीय साधनों से हासिल नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए, यदि बच्चे अपने माता-पति की आज्ञा नहीं मानते हैं, तो माता-पति को उन्हें 'तोड़ने' के लिए विभिन्न तरीके अपनाने के बजाय, उन्हें ईश्वर के हवाले कर देना चाहिए। ऐसे मामले में, एक माँ को ईश्वर से निम्नलिखित कहना चाहिए: 'हे मेरे ईश्वर, मेरे बच्चे मेरी बात नहीं मानते। मैं कुछ भी नहीं कर सकती। आप स्वयं उनकी देखभाल करें।'।

मैं उस माँ से बहुत प्रभावित हुई जो कुछ दिनों पहले यहाँ 'ऑल-नाइट वजिलि' के लिए आई थीं। मैं इस महिला को लंबे समय से जानती थी। वह मुझे अभिवादन करने आई। यह देखकर कि उनके साथ केवल उनके बड़े बच्चे थे, मैंने पूछा, 'छोटे बच्चे कहाँ हैं?' 'घर पर, गैरोन्डा,' उन्होंने जवाब दिया। 'ऐसे पूर्व के दिनों, मैं और मेरे पति जागरण में शामिल होना चाहते थे, इसलिए हमने सोचा: "चूंकि हम मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि जागरण के लिए जा रहे हैं, ईश्वर हमारे छोटे बच्चों की देखभाल के लिए एक देवदूत भेजेंगे जब हम यहाँ होंगे।" आजकल ऐसा भरोसा दुर्लभ है, क्योंकि आजकल बच्चों का अपने माता-पति पर और माता-पति का ईश्वर पर भरोसा, दोनों ही सूख गए हैं। आप अक्सर कई माता-पति को कहते हुए सुनते हैं: 'लेकिन हम सब में से हमारा बच्चा ही क्यों भटक गया और गलत रास्ता क्यों चुन लिया? आखिर हम चर्च तो जाते हैं।' ऐसे माता-पति मसीह को 'स्क्रूड्राइवर' नहीं सौंपते ताकि वह उनके बच्चों में कुछ ठीले पेंच कस सकें। वे सब कुछ खुद ही संभालना चाहते हैं। ऐसे माता-पति स्वार्थी चिंता से इस कदर त्रस्त रहते हैं कि वे बीमार पड़ जाते हैं — जबकि एक ईश्वर है जो उनके बच्चों की देखभाल करता है, और उनका संरक्षक देवदूत भी

लगातार उनके साथ रहता है, उनकी रक्षा भी करता है। ये लोग — आसक्ति होने के बावजूद — ऐसा व्यवहार करते हैं मानो ईश्वर का कोई अस्तित्व ही न हो, मानो कोई रक्षक देवदूत न हो। वे दैवीय हस्तक्षेप के मार्ग में बाधा डालते हैं। फरि भी उन्हें वनिम् होकर ईश्वर से मदद मांगनी चाहिए। और तब दयालु ईश्वर उनके बच्चों की देखभाल और रक्षा करेंगे।

बच्चों का आध्यात्मिक पुनरुत्थान

— गेरौना, क्या बच्चों की परवरिश की जम्मेदारी केवल माता-पिता पर ही होती है?

— मुख्य रूप से माता-पिता। आखिरकार, बच्चे अच्छे पादरी, अच्छे शक्तिष्क आदि बनेंगे या नहीं, यह उनकी परवरिश पर निर्भर करता है। फरि, बदले में, वे भी बच्चों की मदद करेंगे — अपने और सभी के बच्चों की। यह भी कहना चाहिए कि बच्चों की परवरिश की अधिक जम्मेदारी पिता की नहीं, बल्कि माँ की होती है।

यदि गर्भ में रहते हुए माता-पिता प्रार्थना करें और आध्यात्मिक जीवन जीएँ, तो बच्चा पवित्र होकर जन्म लेगा। और यदि वे उसे आध्यात्मिक रूप से समर्थन दें, तो वह एक पवित्र व्यक्ति बनेगा और बदले में समाज में योगदान देगा: चाहे वह चर्च में सेवा करे, सरकार में शामिल हो, या कोई अन्य भूमिका निभाए। हमें सभी बच्चों को अच्छे इंसान बनने में मदद करनी चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए थोड़ी सी खमीर बची रहे। आखिरकार, वर्तमान में हालात इस ओर बढ़ रहे हैं कि थोड़ी सी खमीर भी नहीं बचेगी। और अगर कुछ भी नहीं बचेगा, तो इसका नतीजा क्या होगा?

माता-पिता, बच्चों को इस संसार में लाने और उन्हें शरीर देने में, जहाँ तक संभव हो, उनके आध्यात्मिक पुनर्जन्म को बढ़ावा देना चाहिए। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित नहीं होता है, तो उसके लिए नरकीय यातनाएँ प्रतीक्षा कर रही हैं। इसके बाद, माता-पिता को जो वे स्वयं अपने बच्चों के लिए नहीं कर सकते, वह गुरुओं को सौंप देना चाहिए। इसीलिए हमारी चर्च 'माता-पिता और गुरुओं के लिए' प्रार्थना करती है। हालांकि, आध्यात्मिक पिता भी होते हैं। ये लोग स्वयं के बच्चे नहीं हो सकते, लेकिन बच्चों के पालन-पोषण में उनकी मदद अधिक प्रभावी होती है, क्योंकि वे उनके आध्यात्मिक पुनर्जन्म के लिए परिश्रम करते हैं।

मेरा मतलब यह है कि हर किसी को — अपने-अपने तरीके से, अपने-अपने उदाहरण से — बच्चों को आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म लेने में मदद करनी चाहिए, ताकि वे इस जीवन में शांतिपूर्वक जी सकें और स्वर्ग जा सकें। यदि बच्चे आध्यात्मिक व्यक्ति बने जाँ, तो उन्हें [बुराई को रोकने के लिए] कानूनों की आवश्यकता नहीं रहेगी: *'धर्मपरायणों को कानून की आवश्यकता नहीं होती।'*⁴¹ कानून अपराधियों के लिए होता है। आध्यात्मिक अधिकार मानवीय अधिकार से ऊपर है।

माता-पिता का उदाहरण

— जेरौंडा, अगर उनका बच्चा उनकी अवज्ञा करता है या बदतमीजी करता है तो माता-पिता को क्या करना चाहिए?

— यदि कोई बच्चा अवज्ञा करता है और बुरा व्यवहार करता है, तो इसके पीछे कोई कारण होता है। शायद वे घर में या कहीं और अनुचित व्यवहार देख रहे हों, या अनुचित बातचीत सुन रहे हों। जो भी हो, जब आध्यात्मिक मामलों की बात आती है, तो हम बच्चों की मदद मुख्य रूप से जबरदस्ती से नहीं, बल्कि अपने व्यक्तिगत उदाहरण से करते हैं।

यह कहना ज़रूरी है कि माँ अपने बच्चों के लिए बहुत मददगार होती है: अपने उदाहरण से, अपने पतिके प्रति आज्ञाकारिता से, और उनके प्रति सम्मान से। अगर किसी भी मामले में, माँ की राय अपने पति से अलग हो, तो उसे वह राय कभी भी बच्चों के सामने व्यक्त नहीं करनी चाहिए, कहीं कटिदुष्ट (शैतान)

⁴¹ तुलना करें 1 तीमथियुस 1:9।

उसका फायदा उठा ले। एक माँ को कभी भी अपने बच्चों की अपने पति के प्रतिधारणा को कमजोर नहीं करना चाहिए। भले ही पति से गलती हो, उसे उनकी रक्षा करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि पति का व्यवहार बुरा हो, तो माँ को बच्चों से कहना चाहिए: 'पापा थके हुए हैं; उन्होंने एक जरूरी काम पूरा करने के लिए पूरी रात काम किया। और वह यह सब आपके लिए कर रहे हैं।'

कई माता-पति अपने बच्चों के सामने बहस करते हैं, जिससे वे एक बुरा उदाहरण पेश करते हैं। बेचारे बच्चे दुखी और परेशान हो जाते हैं। फिर, उन्हें सांतवना देने की कोशिश में, माता-पति उनकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते हैं। पति, अपने बच्चे को खुश करना चाहकर, उसका 'अनुग्रह खरीदने' लगता है: 'अच्छा, मेरी जान, बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या खरीदूँ?' माँ अपनी ओर से बच्चे की हर मनमानी को पूरा करती है, और अंततः बच्चे बगिड़कर नटखट हो जाते हैं। बाद में, अगर माता-पति उनकी इच्छा पूरी नहीं कर पाते, तो बच्चे अपने माता-पति को धमकी देते हैं कि वे अपनी जान ले लेंगे।

मैं देख सकता हूँ कि एक अच्छा अभिभावकीय उदाहरण बच्चों की कतिनी मदद करता है। आज मेरे यहाँ कुछ मेहमान आए: दो छोटी लड़कियाँ — एक तीन साल की और दूसरी चार साल की — अपने माता-पति के साथ, जो बहुत धार्मिक लोग हैं। इन नन्हीं बच्चियों ने मुझे कतिनी खुशी दी! वे छोटे-छोटे देवदूत जैसी थीं। एक-दूसरे के बगल में बैठकर, उन्होंने अपनी ड्रेस के कनारों से अपने घुटनों को ढक लिया। उन्होंने कतिनी वनिम्रता और सम्मान दिखाया! और यह सब इसलिए था क्योंकि उन्होंने देखा था कि उनके माता-पति कैसे व्यवहार करते थे। जब वे देखते हैं कि उनके माता-पति एक-दूसरे से प्यार और सम्मान करते हैं, समझदारी से व्यवहार करते हैं, प्रार्थना करते हैं और इसी तरह की चीजें करते हैं, तो बच्चे यह सब अपने दिलों-दमाग में बसा लेते हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अगर माता-पति अपनी धार्मिकता अपने बच्चों को देते हैं, तो यह उनके लिए छोड़ी गई सबसे अच्छी वरिसत होगी।

काश तुम उस छोटी लड़की को देख पाते, जिससे मैं ऑस्ट्रेलिया में मिली थी! उसमें कतिनी गरमा थी! हम कैनबरा पहुँचे। मुझे देखने की इच्छा रखने वाले आखिरी दो ' ' आगंतुक मिलने के बाद, मैं जाने ही वाली थी। मैंने ऊपर देखा तो एक कार आकर रुकी, और एक विवाहिता जोड़ा अपनी छोटी बेटी के साथ उतर आया। "जेरोन्डा, आखरिकार हम आपको पकड़ ही लिए," उन्होंने कहा। "हाँ," मैंने जवाब दिया, "हम बस जाने ही वाले थे।" "जेरोन्डा," पति ने फिर कहा, "मुझे देखने की कोई जरूरत नहीं है; इसमें कोई परेशानी नहीं है। बस मेरी पत्नी को थोड़ा समय दे दीजिए ताकि वह परेशान न हो। देखिए, वह बहुत संवेदनशील स्वभाव की है।" हम उसकी पत्नी के साथ एक तरफ हट गए ताकि वह मुझे वह बता सके जो वह कहना चाहती थी। वह छोटी लड़की उसके पीछे दौड़ने लगी। "यही रुको," मैंने लड़की से कहा, "मम्मी जल्द ही वापस आएँगी।" "क्या तुम्हारी कोई मम्मी है?" उसने मुझसे पूछा। "नहीं," मैंने जवाब दिया। मैं उसकी आँखों में चमकते आँसू देख सकता था। "क्या तुम चाहोगी," उसने पूछा, "कि मैं तुम्हें अपनी माँ दे दूँ?" फिर मैंने उससे पूछा: "क्या तुम्हारा कोई दादा है?" "नहीं," उसने जवाब दिया। "क्या तुम्हें दादाजी चाहिए?" "हाँ, मुझे चाहिए, मुझे चाहिए," उसने खुशी से कहा। "क्या तुम हमारे साथ रहने आओगी, या तुम चाहती हो कि हम तुम्हारे साथ रहें? जैसा तुम्हें ठीक लगे!" क्या उदारता! एक छोटी बच्ची अपनी ही माँ की पेशकश कर रही थी! बस देखिए: उसने यह अपने माता-पति से ही सीखा था। उसके पति बहुत ही महान व्यक्ति थे। मैंने उन्हें गले लगाया, चूमा, और इतनी अद्भुत बेटी होने पर उन्हें बधाई दी। मैंने उन पर कतिनी ही दुआएं लुटाईं!

ऐसे लोग सबसे कठोर हृदय वाले व्यक्ति को भी आँसुओं से भर सकते हैं — ईश्वर की तो बात ही छोड़िए!

अपने माता-पति के घर में बच्चों पर कोमलता और प्रेम की वर्षा होनी चाहिए।

एक बच्चे को भरपूर प्यार और कोमलता के साथ-साथ भरपूर मार्गदर्शन की भी आवश्यकता होती है। वे चाहते हैं कि आप उनके बगल में बैठें, वे आपको अपनी समस्याएँ बताना चाहते हैं, और वे चाहते हैं कि आप उन्हें धीरे-धीरे सहलाएँ और चूमें। जब कोई बच्चा बेचैन और अशांत हो, तो माँ को उसे गोद में उठाना

चाहिए, उसे गले लगाना चाहिए और चूमना चाहिए ताकविह शांत हो जाए और उसे सुकून महसूस हो। यदा बचपन में किसी व्यक्तिपर स्नेह और प्यार की बौछार हुई हो, तो बाद में जीवन में आने वाली समस्याओं पर काबू पाने की ताकत उसमें होगी।

हालाँकि, आजकल ज्यादातर बच्चे अपने माता-पिता को बहुत कम समय के लिए, केवल शाम के समय ही देखते हैं — और उन्हें पर्याप्त प्यार नहीं मलित। कई माता-पिता, जो शक्तिशाली या डॉक्टर होते हैं, काम पर बच्चों के साथ काम करते हैं। वे अपना स्नेह दूसरों के बच्चों पर लुटा देते हैं, और जब तक वे घर लौटते हैं, तब तक अपने बच्चों के लिए उनमें कोई स्नेह नहीं बचता। वे घर आते हैं तो थके हुए होते हैं। उनकी ऊर्जा पूरी तरह से खत्म हो चुकी होती है। पिता एक आराम कुर्सी पर धड़ाम से बैठ जाता है, ताजा खबरों के बारे में पढ़ने के लिए अखबार उठाता है, और बच्चों की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता। एक छोटा बच्चा उससे प्यार जताने के लिए चपिकता है, इस उम्मीद में कि उसके पिता उससे बात करेंगे या उसे सहलाएंगे, लेकिन पिता बच्चे को धक्का देकर दूर कर देता है। माँ, अपनी ओर से, रात का खाना बनाने के लिए रसोई में भाग जाती है; उसके पास भी बच्चों के साथ समय बताने का समय नहीं होता है। और परिणामस्वरूप, ये दुर्भाग्यपूर्ण बच्चे प्यार की कमी से ग्रस्त होकर बड़े होते हैं। एक और उदाहरण: कुछ सैन्यकर्मी, जो उनकी अवज्ञा करने वाले सैनिकों को कड़ी सजा देने के आदी होते हैं, अपने परिवारों को भी सैन्य अनुशासन के नियमों के अनुसार जीने के लिए मजबूर करने की कोशिश करते हैं। वे अपने बच्चों के प्रतिक्रिया हो सकते हैं और छोटी-छोटी बातों पर उनके सर पर थपपड़ मार सकते हैं। और कुछ माता-पिता जो न्यायपालिका या कानून प्रवर्तन में काम करते हैं, जब उनके अपने बच्चे मुसीबत में पड़ते हैं तो घर पर ही उनके लिए पूरे 'मुकदमे' चलाते हैं। इनमें से कोई भी माता-पिता अपने बच्चों के साथ कोमलता और प्यार से पेश नहीं आता, जिसके कारण बाद में बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो जाती हैं।

बच्चे अपने माता-पिता के कारण कैसे दुखी होते हैं

— जेरोन्डा, एक माँ ने हमसे पूछा कि उसे क्या करना चाहिए। उसकी बेटी परमेश्वर की अतिपवित्र माता का अपमान कर रही है।

— उसे यह पता लगाने दें कि बुराई कहाँ से शुरू होती है। कभी-कभी, ऐसे मामलों में, माता-पिता को दोष देना चाहिए। बुरा व्यवहार करके, माता-पिता स्वयं अपने बच्चों को नुकसान पहुँचाते हैं, और बच्चे बेशर्मी से बोलने लगते हैं। फिर वे दैवीय प्रभाव में आने लगते हैं और [उनके साथ तर्क करने के प्रयासों पर] एक बेहद भयानक तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं। अन्य मामलों में, माता-पिता मानते हैं कि वे अपने बच्चों को सुधारने के लिए मजबूर कर सकते हैं। स्वार्थभाव समा जाता है, और माता-पिता अपने बच्चों से चड़िचड़ाहट और गुस्से में बात करने लगते हैं, जबकि उन्हें हमेशा उनके साथ दयालुता से पेश आना चाहिए।

आज एक औरत ने सचमुच मेरी नसें खींच दीं! उसके एक बच्चा है, और वह उस पर बेरहमी से मारती है। बेचारा छोटा लड़का डर से कांपता है, बोल नहीं पाता, और घबराहट की हालत में है। "वह भूत-प्रेत से ग्रस्त है," यह औरत दावा करती है, और अपने बच्चे को भूखा छोड़ देती है—कहती है कि इससे भूत उसे छोड़ देगा। "मैं उसे खाने नहीं देती," उसने समझाया, "ताकविह दुष्ट आत्मा से मुक्त हो सके।" "सुनो," मैंने कहा, "क्या तुम्हारे सर में दमिग है? बच्चे को कुछ खाने को दो। और जो दुष्ट आत्माएं तुम्हारे अंदर हैं, उन्हें खुद बाहर निकालने की कोशिश करो। आप ही वजह हैं कि आपका बच्चा इतना बदहाल है। बच्चे में कोई दानव नहीं है: वह इसलिए कांप रहा है क्योंकि वह आपसे डरता है, क्योंकि आप उसे पीटती हैं! क्या आप उसे नियमिति रूप से संस्कार देती हैं?" "नहीं," वह जवाब देती है। खैर, आप क्या कर सकते हैं? ऐसे किसी से तर्क करने की कोशिश करें!

— गेरोन्डा, क्या हो सकता है कि वह कहती हो कि बच्चे में एक राक्षस है क्योंकि वह कभी-कभी गाली-गलौज और ईश्वर की नंदा करता है?

— "गालियाँ और ईश्वरनदि!" लेकिन जब वह माँ अपनी गाली-गलौज से उसे लगभग दम घोंट देती है, तब उसे यह भी एहसास नहीं होता कि वह क्या कर रहा है। यह बेचारा बच्चा कतिना दयनीय है! असल में उसकी माँ पर एक अशुद्ध आत्मा का कब्जा है, उस पर नहीं।

जो भी हो, न्याय के दिन हम आश्चर्यजनक दृश्य देखेंगे! मूर्तपूजा के दिनों में, माताओं ने उस 'देवता' की महिमा में भाग लेने के लिए अपने बच्चों को मोलक की मूर्त के सामने जला दिया था,⁴² ⁴³ काश ये महिलाएँ सच्चे ईश्वर को जानतीं, तो वे उनकी महिमा में क्या-क्या बलदान करतीं! न्याय के दिन, इन महिलाओं के लिए क्षमा के कारण होंगे — क्योंकि उन्हें बुराई ने भटकाया था। लेकिन आज की माताओं के लिए क्या क्षमा के कारण होंगे, जो अपने ही बच्चों के प्रति उदासीनता और उपेक्षा बरतती हैं? ईश्वर उनसे कहेगा: 'तुमने सच्चे ईश्वर को जाना; तुम पवतिर बपतसिमा में बपतसिमति हुई थीं। तुमने बहुत कुछ सुना है, तुमने बहुत कुछ सीखा है। तुम्हें बचाने के लिए स्वयं परमेश्वर को सूली पर चढ़ाया गया। लेकिन तुमने स्वयं क्या किया? तुम अपने बच्चों को पवतिर सहभागिता प्राप्त करने के लिए चर्च ले जाने के लिए भी बहुत आलसी थे! मूर्तपूजकों ने सोचा कि मोलक ही सच्चा देवता था, और उन्होंने अपने बच्चों की भी बलि चढ़ा दी। और तुमने क्या किया?"

बच्चे अपने माता-पिता की गलतियों की कीमत चुकाते हैं! कुछ माता-पिता अपने बच्चों का जीवन बर्बाद कर देते हैं। लेकिन ईश्वर अन्यायी नहीं है। उन्हें उन बच्चों से बहुत विशेष प्रेम है, जिन्होंने इस दुनिया में अन्याय सहा है — चाहे वह उनके माता-पिता के हाथों हुआ हो या किसी और के। यदि कोई बच्चा अपने माता-पिता की गलती से भटक जाता है, तो ईश्वर उस बच्चे को नहीं छोड़ता, क्योंकि वह दैवीय सहायता का हकदार होता है। ईश्वर उसकी मदद करने के लिए सब कुछ व्यवस्थित कर देता है। और इस प्रकार हम देखते हैं कि कैसे कुछ युवा — और केवल युवा ही नहीं, बल्कि बड़े लोग भी — किसी न किसी समय अच्छाई की ओर एक तीव्र मोड़ लेते हैं। मुझे ऐसा ही एक मामला याद है। परिवार में दो बच्चे थे। पिता, माता और बेटी आस्था और चर्च के प्रति उदासीन थे। बेटा शुरू में किसी तरह के मार्क्सवादी संगठन में शामिल हो गया। उसे वहाँ पसंद नहीं आया, इसलिए वह हिंदू धर्म की ओर मुड़ गया। उसे वह भी पसंद नहीं आया, और इसलिए वह पवतिर पर्वत पर आ गया। वह अक्सर मेरे कलवि में आता था और अन्य सेलों में भी जाता था। [उस समय तक, उसके माता-पिता को पहले ही अपने पाप का एहसास हो चुका था] और इस पूरे समय वे यही दोहराते रहे: 'मेरे मसीह! मेरी परमेश्वर की सर्वपवतिर माता!' हमारे बच्चे को बचाओ! वह युवक मठवासी जीवन के लिए उपयुक्त नहीं निकला। माउंट अथोस पर कुछ समय रहने, होश में आने और आध्यात्मिक रूप से मजबूत होने के बाद, वह घर लौट आया और अपने माता-पिता को आध्यात्मिक सहारा देने लगा। अब मैं उसके पिता को 'ऑल-नाइट वजिलि' के लिए सबसे पहले आने वालों में से एक के रूप में देखता हूँ। अपने पैरिश चर्च में, वह समर्पण का भजन,⁴⁴ पढ़ता है और घर पर वह वेस्पर्स और कॉम्प्लेइन पढ़ता है, और प्रार्थनात्मक कैनन गाता है। ईश्वर ने सब कुछ उसकी सही जगह पर व्यवस्थित कर दिया है! शैतान बुरा करना चाहता था, लेकिन ईश्वर ने, एक तरफ से और फरि दूसरी तरफ से इस बुराई का प्रतिकार करते हुए, इन लोगों को सही रास्ते पर ले आए।

— और आपकी बेटी का क्या, गेरोन्डा?

— वह धीरे-धीरे सही मार्ग पर आ रही है। ईश्वर इसके लिए अनुकूल अवसर प्रदान कर रहे हैं।

— जेरोन्डा, कुछ माता-पिता जो जीवन में बाद में आध्यात्मिक जीवन जीना शुरू करते हैं, उन्हें चिता होती है कि उन्होंने अपने बच्चों को बचपन में ईसाई परवरिश नहीं दी।

⁴² मोलक एक सेमेटिक देवता है जिसका उल्लेख पुराने नियम में मिलता है। मोलक की मूर्त को छोटे बच्चों की बलि देना प्रथा थी; उन्हें मारकर लोहे की जाली पर जला दिया जाता था।

⁴³ देखें लेवी 18:21 और 20:2-4; 4 राजा 23:10 और 13।

⁴⁴ भजन संहिता 103, वेस्पर्स की शुरुआत में पढ़ा जाता है।

— यदवि सच्ची पश्चाताप के साथ ईश्वर से अपने बच्चों की मदद करने का आग्रह करें, तो ईश्वर उनके लिए जो कर सकता है, वह करेगा। वह बच्चों को एक जीवनरक्षक रस्सी फेंकेगा ताकि वे चारों ओर मची तूफान से बच सकें। भले ही इन दुर्भाग्यशाली आत्माओं की मदद करने के लिए कोई सक्रिय व्यक्ति न हो, ईश्वर उनके लिए कुछ ऐसा प्रबंध कर सकते हैं जो वे देख सकें, ताकि वे सही मार्ग पर लौट सकें। यह जान लें: जनि माता-पिता की बात हो रही है, वे नेक इरादों वाले थे, लेकिन बच्चों के रूप में उन्हें अपने ही परिवार से मदद नहीं मिली और इसलिए अब वे ईश्वर की मदद के हकदार हैं।

— जेरोंडा, कभी-कभी ऐसा होता है कि जो बच्चे आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनके माता-पिता आस्था के मामलों में उदासीन होते हैं।

— ईश्वर इन बच्चों की परवाह अन्य बच्चों की तुलना में अधिक करता है — उन बच्चों की, जिनके माता-पिता आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। ईश्वर उनकी परवाह वैसे ही करता है जैसे वह अनार्यों की करता है।

बच्चों पर वातावरण का प्रभाव

— जेरोंडा, बच्चे अपने परिवार से कतिनी उम्र से प्रभावित होने लगते हैं?

— बच्चे जन्म से ही अपने माता-पिता की 'नकल' करते हैं। वे वयस्कों का व्यवहार देखते हैं, उसकी 'नकल' करते हैं और उसे अपनी खाली 'टेप' पर रिकॉर्ड कर लेते हैं। इसलिए माता-पिता को अपनी वासनाओं पर काबू पाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्होंने इनमें से कुछ प्रवृत्तियाँ अपने माता-पिता से वरिष्ठता में पाई हैं। न केवल उन्हें इन प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने का प्रयास न करने के लिए ईश्वर के सामने उत्तर देना होगा, बल्कि इन प्रवृत्तियों को अपने बच्चों तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं पर होगी।

— जेरोंडा, ऐसा क्यों है कि माता-पिता के घर में एक ही तरह से पाले-पोसे गए बच्चे कभी-कभी एक-दूसरे से पूरी तरह अलग होते हैं?

— बच्चे अक्सर अपने परिवार से बहुत प्रभावित होते हैं। लेकिन यदुनिमें अच्छा स्वभाव हो, तो जब वे बड़े होते हैं, तो ईश्वर उन्हें अधिक अंतरदृष्टि प्रदान करेगा, ताकि वे उन नकारात्मक प्रभावों को समझ सकें जिनके वे संपर्क में आए थे, और उनसे खुद को मुक्त करने का प्रयास कर सकें।

आजकल दुनिया में द्वेष बहुत है। लोग बच्चों को पालने से ही भ्रष्ट करने की कोशिश करते हैं। बच्चों को बुराई से बचाकर वयस्क होने तक सुरक्षित रखने के बजाय, उन्हें अच्छा करने से भी रोका जाता है। बाद में, पाप में गरिने और उसके परिणामस्वरूप दुख झेलने के बाद, ये दुर्भाग्यशाली बच्चे फिर से उठना चाहते हैं, लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि ऐसा कैसे करें। आखिरकार, एक बार जब वे पाप की फसिलन भरी ढलान पर लुढ़कना शुरू कर देते हैं, तो उनके लिए रुकना अब आसान नहीं रहता। पच्चीस से सत्ताइस वर्ष की आयु के युवक मेरे कलवि में आते हैं—वे युवक जो नशा करते हैं और पाप में जीते हैं—और ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ मदद माँगते हैं।

ऐसा हुआ कि एक बार मैंने इन बच्चों में से एक को सही राह पर लाने में मदद की। और अब वे अपने दोस्तों को मेरे पास लाते हैं, और फिर उनके दोस्तों के दोस्तों को भी, ताकि उन्हें भी मदद मिल सके। ये युवा सचमुच आपके दिल को छू लेते हैं। एक दुर्भाग्यपूर्ण युवक कड़ी ड्रग्स ले रहा था और उसका एक पैर कब्र में ही था। उसकी बाहें सुई के नशियों से भरी थीं, उसके दांत सड़ चुके थे... लेकिन फिर उसने ड्रग्स छोड़ दीं और दूसरों की मदद करने लगा। उसके समूह में लगभग पंद्रह लड़के थे। और जब वे मुझसे मिलने आते, तो ये लड़के अपना परिचय देते: 'मैं फलाने वाले के समूह से हूँ।' वह उनका... 'बड़ा भाई' था! हालाँकि, इनमें से कई बदकसिम आत्माएँ खाई की ओर तेजी से बढ़ रही हैं। वे नशे के इंजेक्शन लगा रहे हैं, [नशे के लिए पैसे जुटाने के लिए] वे अपना खून बेचते हैं... ये युवा लोग खुद को और अपने माता-पिता दोनों को बर्बाद कर रहे हैं। और फिर आप देखते हैं कि उनका पिता स्ट्रोक से मर रहा है, उनकी माँ दिल की बीमारी, लिवर की बीमारी या कसिी और चीज से।

भाई-बहनों के बीच प्रेम

माता-पिता को अपने बच्चों के बीच प्रेम को बढ़ावा देना चाहिए। कमजोर बच्चे की मदद करने की इच्छा में, उन्हें इसके लिए मजबूत बच्चे की 'सहमति' लेकर आधार तैयार करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उन्हें मजबूत बच्चे को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि उसका भाई या बहन जरूरतमंद है। न्याय ईश्वर का कार्य है, और इसे बड़े और छोटे के बीच समान रूप से बाँटा जाना चाहिए। बड़े के प्रति सम्मान के माध्यम से और छोटे के प्रति प्रेम के माध्यम से न्याय दिखाया जाता है, ताकि छोटे को कोई हानि न हो। यह व्यवस्था व्यवस्था की पुस्तक में भी उल्लेखित है।⁴⁵ उदाहरण के लिए, यदि बड़े भाई की गलती हो, तो हमें छोटे भाई का बचाव करना चाहिए, लेकिन छोटे के सामने बड़े की आलोचना नहीं करनी चाहिए। हमें गलती करने वाले से अकेले में बात करनी चाहिए ताकि वह अपनी गलती समझ सके।

— जेरोंडा, बड़े भाई-बहनों को अपने छोटे भाई-बहनों के प्रति जो ईर्ष्या आमतौर पर होती है, उससे कोई कैसे पार पा सकता है?

— ईर्ष्या एक जुनून है। हालांकि, अगर कोई तीन साल का बच्चा अपनी माँ को अपने नवजात भाई या बहन को स्तनपान कराते हुए देखता है, तो उसकी ईर्ष्या एक तरह से जायज है, क्योंकि हाल ही में उसे भी स्तनपान कराया जा रहा था। अब वह अपने छोटे भाई को अपनी माँ की बांहों में देखता है और सोचता है: "कल तक माँ मुझे अपनी बांहों में उठाती थीं, लेकिन अब उन्होंने मुझे कतार में सबसे पीछे धकेल दिया है!" अगर उस छोटे बच्चे की कोई दादी है, तो यह अच्छी बात है: उसके पास सांत्वना के लिए कोई है। हालांकि, जब वह चार साल का हो जाता है, तो उसे कम ईर्ष्या महसूस करनी चाहिए। और जब वह छह साल का हो जाता है, तो माँ को उससे कहना चाहिए: "तुम बहुत बड़े हो गए हो। ऐसी कौन सी माँ है जो इतने बड़े बच्चे को अपनी गोद में उठाती है?" अगर माँ छोटे बच्चे को उसकी ईर्ष्या से उबरने में मदद करती है, तो वह वास्तव में गंभीर कारण होने पर ही मदद के लिए उसकी ओर रुख करेगा। लेकिन अगर बच्चा लगातार माँ की स्कर्ट से चपिके रहना चाहता है, तो उसमें कुछ अस्वस्थ है।

कंपनियों का बच्चों पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है

— जेरोंडा, ऐसा क्यों होता है कि एक युवक जो बचपन से ही आध्यात्मिक जीवन जी रहा था और धार्मिक था, वह अंततः पूरी तरह से मार्ग से भटक जाता है?

— इसके कई कारण हैं। जो बच्चे सांसारिक और लापरवाह जीवन जीते हैं, उन्हें शर्म आती है जब वे उन बच्चों को देखते हैं जो पवित्र और आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, और वे उन्हें अपने जैसे जीवन के रास्ते पर खींचना चाहते हैं। एक बार, दो जवान लड़के सड़क पर चल रहे थे। अचानक, उनमें से एक फसल गया और एक गंदे कीचड़ के गड्ढे में गिर पड़ा। उसके सारे कपड़े कीचड़ से सन गए। जैसे ही वे थोड़ा और आगे चले और एक और कीचड़ के गड्ढे के पास पहुँचे, उसने अपने दोस्त को भी उसमें धकेल दिया ताकि वह भी गंदा हो जाए। उस लड़के ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे असहज महसूस हो रहा था, क्योंकि वह खुद गंदा था जबकि उसका दोस्त साफ-सुथरा था।

कंपनियों का बच्चों पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है। बचपन में मुझे उनमें स्वाभाविक प्रेम था। यह मेरे लिए स्वाभाविक था। जब भी मैं खच्चरों के साथ कहीं जाता था, मैं अपने साथियों में से प्रत्येक को एक-एक खच्चर पर बठाने की कोशिश करता था, जबकि अपने छोटे भाई को कंधों पर उठाए रहता था। एक बार, जब मेरे एक भाई ने एक छोटा पक्षी मार डाला, तो मैं बहुत दुखी हुआ और उसे डाँटा। फिर मैंने उस छोटे पक्षी को उठाया और रोते हुए उसे दफना दिया। मैं अपनी उम्र के बच्चों का दोस्त था। हम जंगल में जाते, प्रार्थना करते, संतों के जीवन पढ़ते और उपवास करते थे। फिर इन बच्चों की माताओं ने उन्हें मेरे साथ दोस्ती करने

⁴⁵ देखें व्यवस्थाविवरण 1:17।

से मना कर दिया। वे कहतीं, 'उसके साथ बाहर मत जाना, वह तुम्हें तपेदकि दे देगा।' इसलिये बच्चे मुझसे अलग हो गए, और मैं अकेला महसूस करने लगा।

इसके ऊपर, वे मुझे चढ़ाते थे, चारों ओर से चलिताते हुए: 'संन्यासी, संन्यासी!' उन्होंने मेरी जूँगी को नरक बना दिया। और मैं उस मुकाम पर पहुँच गया जहाँ मैं उनकी ताने और बर्दाश्त नहीं कर सकता था। तो मैंने फैसला किया: 'मैं बड़े लड़कों से दोस्ती कर लूँगा और दिखावा करूँगा [कि मैं भी उन्हीं जैसा बर्ताव कर रहा हूँ]।' और फिर मैं बड़े कशिशों के साथ घुलने-मलने लगा। मुझे एक रबर बैंड मिला और मैंने उससे एक गुलेल बना लिया। पहले तो मैं बस रबर बैंड को पीछे खींचता, ऐसा दिखावा करते हुए कि मैं नशिना लगाना चाहता हूँ। फिर मुझे कुछ सीसे के गोले मिले और मैं आसपास का सबसे सटीक गुलेलबाज बन गया। और फिर एक दिन, जैसे ही मैंने एक छोटी चड़िया को मारा और उसे मृत देखा, मैं तुरंत होश में आ गया। मैंने इलास्टिक बैंड और छर्रों, दोनों को फेंक दिया और खुद से कहा: "जब तुम्हारे भाई ने एक पक्षी मारा था, तो तुम रोए थे और उसके कपड़े पर उसे डाँटा था। और देखो तुम खुद क्या बन गए हो! तुम पक्षियों को मार रहे हो, और जल्द ही, तुम जानवरों को भी मारने लगोगे।" और सचमुच, अगर मैं उसी तरह की जीवनशैली पर चलता रहता, तो मैं गुलेल से नशिना लगाने से आगे बढ़कर जानवरों का शिकार करने लगता, और यहाँ तक कि उन्हें खुद ही खाल भी उधेड़ता।

एक व्यक्ति—जिसने मूल रूप से एक नाजुक, संवेदनशील आत्मा से नवाजा गया था—कतिनी दुष्टता की गहराइयों में डूब सकता है! यह तब हो सकता है जब वह लापरवाह हो जाए और बुरी संगत में फँस जाए। दूसरी ओर, अच्छी संगत से बहुत लाभ होता है। ईश्वर ने लोगों को विभिन्न प्रकार के उपहार दिए हैं। जैसे कोई व्यक्ति दूसरे की भ्रष्टता और पतन देख सकता है, वैसे ही वह दूसरे के सद्गुण को भी देख सकता है — और उसका अनुकरण कर सकता है।

सही रास्ते से भटक गए बच्चों की मदद करना

घर में प्रेम और शांतिका माहौल होना चाहिए। अपने ही परिवार में थोड़ा सा प्यार पाकर, एक बच्चा—भले ही वह अचानक घर से भाग जाए—तब भी लौट आएगा जब उसे एहसास होगा कि कहीं और उसे प्यार नहीं, बल्कि केवल पाखंड ही मिलेगा। लेकिन अगर उन्हें घर पर हुई अश्लील घटनाएँ, गालियाँ और झगड़े याद रहें, तो उनका दिल घर लौटने के लिए कैसे आकर्षित होगा?

— जेरोंडा, अगर उनका बच्चा घर से भाग जाए तो माता-पिता को क्या करना चाहिए?

— उन्हें उससे संपर्क बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए — ताकि जब वह होश में आ जाए, तो वह उनके पास वापस आ सके। उन्हें उससे प्यार से बात करनी चाहिए और उसकी मदद करने के लिए उसे सोचने पर मजबूर करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा रात में भटक रहा हो और किसी को पता न हो कि वह कहाँ है, तो उसकी माँ को उससे कहना चाहिए: 'यहाँ आओ, मेरे बेटे। अगर तुम मेरी जगह होते, तो क्या तुम शांत रह पाते अगर तुम्हारे बच्चे आधी रात के बाद घर आते?'

बच्चों की सबसे गंभीर चूक भी माता-पिता को नरिशा की ओर नहीं ले जानी चाहिए, क्योंकि आजकल पाप करना फैशन बन गया है। माता-पिता को यह भी ध्यान रखना चाहिए: हमारे समय के बच्चों के पास उनके द्वारा कपड़े हुए दुष्कर्मों के लिए उचित कारण होते हैं। आजकल व्यवहार के लिए '4' उस युग के '5+' के बराबर है जब हम युवा थे। बेशक, माता-पिता को अपने बच्चों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन उन्हें अत्यधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। समय आएगा जब बच्चे होश में आ जाएंगे। फलिहाल, हो सकता है कि वे यह न समझें कि क्या सही है, क्योंकि उनका दमिग अभी परपिक्व नहीं हुआ है। उनका दमिग धुंधला है, और उनमें उस चेतना की स्पष्टता की कमी है जिससे वे न तो उस खतरे को पहचान सकें जिसके वे शिकार हो रहे हैं और न ही उस अपूरणीय नुकसान को जो वे खुद को पहुँचा सकते हैं।

यह अच्छा होगा कि माता-पिता अपने बच्चे को दिखाएँ कि वे उसके दुर्व्यवहार से परेशान हैं। लेकिन उन्हें उस पर दबाव नहीं डालना चाहिए और इसके बजाय प्रार्थना करनी चाहिए। भारी मन से की गई

प्रार्थना सकारात्मक परिणाम लाती है। हालांकि, यदि बिच्चा कोई बहुत गंभीर अपराध करता है, तो माता-पिता को सावधानी से हस्तक्षेप करना चाहिए। यदि दुराचार गंभीर नहीं है, तो ऐसे माता-पिता को कुछ समय के लिए आँखें मूंद लेनी चाहिए, ताकि बिच्चा चढ़ि न जाए या उसकी स्थिति और खराब न हो, क्योंकि ऐसी चढ़ि का परिणाम यह होगा कि बिच्चा उनसे दूर हो जाएगा। [ऐसे मामले में] माता-पिता को बस मसीह और परमेश्वर की अतिपवित्र माता से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे अपने बच्चे की रक्षा करें।

माता-पिता की प्रार्थनाएँ — विशेषकर माताओं की — बहुत फलदायी होती हैं, क्योंकि वे हृदय से निकलती हैं और दुःख से परिपूर्ण होती हैं। जब मैं इवरेन स्केट में रह रहा था, तो एक युवक आकस्मिक रूप से आ गया। चल्कदिकी से यात्रा करते समय, इस युवक की मुलाकात तीर्थयात्रियों के एक समूह से हुई जो पवित्र पर्वत की ओर जा रहे थे। उनके साथ जुड़कर वह अथोस पहुँचा और मेरी कुटिया पर आया। अरे वाह, क्या करिदार था उसका! एक नास्तिक, एक ईश्वर-नंदा करने वाला, एकदम नरिलज्ज! फिर भी उसमें एक तरह की शैतानी चालाकी थी और वह बलिकुल किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता था। वह सभी का—चाहे जवान हों या बूढ़े—अपनी गंदी भाषा से अपमान करता था। क्या आप जानते हैं कि उसे होश में लाने में मुझे कतिना प्रयास करना पड़ा? उसके साथ किसी तरह की आपसी समझ तक पहुँचना संभव हो गया, और मैं उसके लंबे बाल भी काट पाने में सफल रहा!... मैंने उससे कहा, 'भगवान आपकी माँ को स्वस्थ रखें।' 'यहाँ आपको लाने वाली उसकी ही प्रार्थनाएँ थीं।' 'हाँ, फादर,' उसने जवाब दिया। 'मैं चल्कडिकी के आसपास घूम रहा था और मुझे एहसास भी नहीं हुआ कि मैं यहाँ कैसे पहुँच गया।' 'क्या तुम कल्पना कर सकते हो,' मैंने कहा, 'तुम्हारी माँ कतिनी खुश होंगी जब उन्हें पता चलेगा कि तुम पवित्र पहाड़ पर गए थे, और उस पर तुम्हें कटवा बाल में देखेंगी!' 'आपको यह कैसे पता चला, पतिताजी?' उसने हैरानी से पूछा। 'सचमुच, जब माँ देखेंगी कि मैं कतिना बदल गया हूँ, तो वह बहुत खुश होंगी।' देखो तो! ईश्वर ने उस लड़के को चतुराई से मात दी और उसे एक 'विशेषज्ञ' के पास भेज दिया! सोचो तो कि उसकी बेचारी माँ ने ईश्वर से कतिनी प्रार्थनाएँ की होंगी!

बच्चे को कब डाँटे और कब उसकी प्रशंसा करें

माता-पिता को शाम के समय अपने बच्चों को डांटने से बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि शाम के समय बच्चों के पास अपनी पीड़ा दूर करने का कोई साधन नहीं होता। और रात का अंधेरा उनके मानसिक हालत पर और भी गहरा साया डाल देता है। बच्चे यह सोचने लगते हैं कि वे अपने माता-पिता की अवज्ञा कैसे सबसे अच्छी तरह कर सकते हैं। उनके दमिग में 'रक्षा' के विभिन्न विचार आते हैं, शैतान भी इसमें कूद पड़ता है, और इस तरह वे नरिशा की ओर धकेले जा सकते हैं। जबकि दिन के दौरान, भले ही बच्चे अपने माता-पिता को विभिन्न प्रकार की प्रतیشोध की धमकी दें, एक बार बाहर जाने पर उनका ध्यान भटक जाएगा, वे खेल में खो जाएंगे, और उनका दुःख दूर हो जाएगा।

— जेरोंडा, क्या शारीरिक दंड बच्चों को अपने रास्ते सुधारने में मदद करते हैं?

— माता-पिता को इसे यथासंभव टाला जाना चाहिए। उन्हें दया और धैर्य के साथ बच्चे को यह समझाने की कोशिश करनी चाहिए कि वह गलत व्यवहार कर रहा है। केवल तभी सरि पर एक थप्पड़ लाभदायक होता है जब बच्चा बहुत छोटा हो और उसे यह एहसास न हो कि वह खतरे में है — ताकि वह अगली बार अधिक सावधान रहे। एक और थप्पड़ लगाने का डर बच्चे के लिए एक नकारक के रूप में काम करता है और उन्हें खतरे से बचाता है। जब मैं छोटा था, तो मुझे अपने पिता की तुलना में अपनी माँ से अधिक लाभ मिला। वे दोनों मुझसे प्यार करते थे और मेरे लिए सबसे अच्छा चाहते थे। हालाँकि, प्रत्येक माता-पिता ने अपने-अपने तरीके से मेरी मदद की। मेरे पिताजी एक सख्त मजिज इंसान थे। जब हम बच्चे कोई शरारत करते थे, तो वह हमें मारते थे। मार से होने वाले दर्द ने मुझे थोड़ा शांत होने में मदद की, लेकिन जैसे ही दर्द खत्म हो जाता था, मैं वह दर्द और अपने पिता की सलाह दोनों भूल जाता था। और ऐसा नहीं था कि मेरे पिताजी मुझसे प्यार नहीं करते थे: नहीं, वह मुझसे प्यार की वजह से मारते थे। मुझे याद है एक बार — मैं तीन साल का था — मेरे पिता ने

मेरे सरि के पछिले हसिसे पर इतनी जोर से थप्पड़ मारा कि मैं कई मीटर दूर जा गरि! और क्या आप जानते हैं क्यों? बगल का घर खाली था। उसके मालकि अमेरिका चले गए थे, और घर की देखभाल बंद हो गई थी। उस घर के बगीचे में एक अंजीर का पेड़ था, जिसकी टहनियाँ सड़क की तरफ फैली हुई थीं और सड़क के ऊपर लटक रही थीं। पेड़ फलों से लदा हुआ था। जब मैं और मेरे दोस्त सड़क पर खेल रहे थे, तो एक पड़ोसी हमारे पास आया और मुझे उठाया ताकि मैं उसके लिए कुछ अंजीर तोड़ सकूँ, क्योंकि वह खुद टहनियों तक नहीं पहुँच पा रहा था। मैंने पाँच-छह अंजीर तोड़ लिए, और उसने मुझे उनमें से दो दे दिए। जब मेरे पतिजी को पता चला, तो उन्हें बहुत गुस्सा आया। तभी मुझे वह थप्पड़ पड़ा! मैं फूट-फूट कर रोने लगा। मेरी माँ, जनिहोंने यह सब देखा था, मेरे पतिजी की ओर मुड़ी और उनसे कहा: "आप बच्चे को क्यों मार रहे हैं! वह अभी भी बहुत छोटा है, उसे कुछ भी समझ नहीं आता! तुम ऐसे उसके रोने की आवाज़ कैसे सह सकते हो!" 'अगर वह अंजीर तोड़ने ले जाते समय रोया होता,' मेरे पति ने जवाब दिया, 'तो वह अब नहीं रोता। लेकिन लगता है कि वह खुद दूसरों की अंजीर का स्वाद चखना चाहता था! तो उसे रोने दो!' लेकिन क्या मैं सच में उसके बाद फरि से वही कर सकता था? जहाँ तक मेरी माँ की बात है, भले ही वह मेरी शरारत से परेशान थी, उनका स्वभाव बहुत नेक था। जब वह मुझे शरारत करते देखती थी, तो मुझे परेशान न करने के लिए वह मुँह फेर लेती थी और अनदेखा करने का नाटक करती थी। फरि भी माँ की इस 'चाल' ने सचमुच मेरा दिल फाड़ दिया। 'देखो, देखो,' मैं खुद से कहता, 'तुम कतिने बड़े शरारती हो, और माँ तुम्हें न सिर्फ मारती नहीं, बल्कि यह दिखावा भी करती है कि वह देख ही नहीं रही! नहीं, ऐसा फरि कभी नहीं होगा!' मैं फरि से माँ को दुखी होते कैसे देख सकता था?" इस तरह का व्यवहार करके, मेरी माँ ने मुझे सरि पर थप्पड़ मारने से कहीं ज्यादा मदद की। हालाँकि, मैंने खुद इसका फायदा नहीं उठाया, और न ही मैंने कहा: 'ओह, चूँकि वह मुझे अभी देख नहीं सकती, तो चलो कुछ शरारतें करते हैं और और भी बुरा व्यवहार करते हैं।' दूसरी ओर मेरे पतिजी का मामला अलग था: थोड़ी सी भी चूक और तुरंत सरि पर एक थप्पड़ पड़ जाता था। देखिए: वे दोनों मुझसे प्यार करते थे, लेकिन मेरी माँ के उदार रवये ने मुझे ज्यादा मदद की।

— जेरोंडा, कुछ बच्चे तो बहुत शरारती होते हैं: वे चलिंलाते हैं, इधर-उधर दौड़ते हैं और शरारतें करते हैं। उनके माता-पति शारीरिक दंड देने से कैसे बच सकते हैं?

— सुनिए, यह बच्चों की गलती नहीं है। बच्चों के ठीक से बड़े होने के लिए, उन्हें एक ऐसे खेल के मैदान की जरूरत होती है जहाँ वे दौड़-भाग कर सकें और खेल सकें। लेकिन अब ये बेचारे छोटे बच्चे ऊँची-ऊँची इमारतों में कैद हैं। वे आजादी से दौड़ नहीं सकते, वे खेल नहीं सकते, वे मजे नहीं कर सकते। माता-पति को इस बात से परेशान नहीं होना चाहिए कि उनका बच्चा जीवन से भरपूर है। एक जीवंत बच्चे में आंतरिक शक्ति होती है, और इसका सही उपयोग करके, वह जीवन में महान उपलब्धियाँ हासिल कर सकता है।

बच्चों के सर्वोत्तम हतियों में जबरदस्ती नहीं है

कुछ माता-पति अपने बच्चों पर बहुत अधिक दबाव डालते हैं — और ऐसा दूसरों की मौजूदगी में करते हैं। ऐसा लगता है जैसे उनका बच्चा कोई बोझ ढोने वाला जानवर हो, जिससे वे लाठी से धकेल रहे हों ताकि वह दाएँ-बाएँ न मुड़े। ऐसा मानो वे लगाम पकड़े हुए हों और कह रहे हों, 'आजादी से चलो!' और फरि ऐसे माता-पति इतने आगे बढ़ जाते हैं कि वे अपने बच्चों को मारने तक लग जाते हैं। आज एक माँ अपने बेटे के साथ आई — जो एक तगाड़ा लड़का था। उनका बच्चा बीमार था। उन्होंने पूछा, 'मैं क्या करूँ, पतिजी?' 'मेरा बच्चा कुछ भी नहीं खा रहा है और हमें देखना भी नहीं चाहता।' लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि क्या करना है, तो उन्होंने फरि से वही सवाल किया: 'तो अब मैं क्या करूँ?'

— जेरोंडा, शायद उसने वह नहीं समझा जो आपने उससे कहा?

— हाँ, मुझे समझ आ गया! मैंने उससे कहा, 'मैं एक घंटा भी तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।' और तुम्हारा बच्चा तुम्हारे साथ कैसे रहेगा? तुमने उसे जीने-मरने की नौबत पर ला खड़ा किया है।' 'नहीं,' उसने जवाब दिया। — 'मैं उससे प्यार करती हूँ।' 'उसमें प्यार कहाँ है, जब वह तुम्हारे साथ रहकर अपना ठिकाना नहीं

ढूँढ़ पाता? वह घर से भागने पर मजबूर हो गया है क्योंकि विह एक अलग माहौल में रहना चाहता है। आखिर, जब वह तुम्हारे साथ नहीं होता, तो उसका व्यवहार बलिकुल सही रहता है। अगर वह तुम्हें देखना नहीं चाहता, तो इसका मतलब है कि इस बात के लिए तुम्हारी भी आंशिकी रूप से गलती है। उसे परेशान मत करो: तुम उसे नुकसान पहुँचा रही हो। उसके साथ दयालु और धैर्यवान रहो।" मैंने उसे यह सब बताया; उसने मेरी बात सुनी और फिर से वही बात शुरू कर दी: "तो मैं क्या करूँ? बच्चा हमसे मलिना ही नहीं चाहता।" ऐसे किसी व्यक्ति के साथ आपसी समझ कैसे हो सकती है? बच्चे के साथ बलिकुल कुछ भी गलत नहीं है, फिर भी वे उसके साथ एक मूर्ख की तरह व्यवहार करते हैं। इसका मतलब है कि उनमें कुछ गड़बड़ है।

माता-पति का जबरदस्ती करना बच्चों की मदद नहीं करता; यह उन्हें दबा देता है। अनंत 'उसको मत छूना, वहाँ मत जाना, इसे ऐसे करो...' लेकिन आपको लगाम ठीक से खींचनी होती है ताकि विह टूट न जाए। आपको बच्चों को चतुराई से सुधारना चाहिए, ताकि वे अपनी गलती समझ सकें, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आपके बीच कोई दरार न बने। माता-पति को भी ठीक वैसे ही करना चाहिए जैसे एक अच्छा माली एक छोटे से पौधे को लगाते समय करता है। माली नरम रस्सी से धीरे से पौधे को एक खंभे से बाँध देता है ताकि जब हवा उसे दाईं या बाईं ओर धकेले तो वह झुक न जाए या कृष्णतगिरस्त न हो जाए। फिर माली पौधे के चारों ओर बाड़ लगाता है, उसे पानी देता है, उसकी देखभाल करता है, और बकरियों से बचाता है—जब तक कि पेड़ की टहनियाँ पर्याप्त मजबूत नहीं हो जातीं। आखिरकार, अगर बकरियाँ पौधे को खा जाती हैं, तो बस—समझो वह खत्म हो गया। बकरियाँ द्वारा पूरी तरह चर जाने वाला पेड़ न तो फल दे पाएगा और न ही छाया प्रदान कर पाएगा। लेकिन एक बार इसकी टहनियाँ बढ़ जाने पर, माली बाड़ हटा देता है, और पेड़ फल देने लगता है; और उसकी छाया में, बकरियाँ, भेड़ें और लोग सभी आराम कर सकते हैं।

हालाँकि, माता-पति, अपने बच्चों के प्रति अत्यधिक चिंता से प्रेरित होकर, अक्सर उन्हें नरम रस्सी से नहीं बल्कि स्टील की तार से बाँधना चाहते हैं, जबकि बच्चों का मार्गदर्शन कोमलता से किया जाना चाहिए — ताकि उन्हें चोट न लगे। माता-पति को अपने बच्चों की सहायता एक उत्कृष्ट तरीके से करने का प्रयास करना चाहिए। यह उनके युवा हृदयों में दया की भावना विकसित करेगा, और फिर वे स्वयं अच्छा करने की आवश्यकता को महसूस कर सकेंगे। माता-पति को, जहाँ तक संभव हो, अपने बच्चों को दयालुता से समझाना चाहिए कि क्या अच्छा है: प्रेम और दुख के साथ। मुझे एक माँ याद है, जिसने अपने बेटे के बुरा व्यवहार करते देख, आँखों में आँसू और भारी मन से कहा: "ऐसा मत करना, मेरे प्यारे बच्चे।" और ऐसा उदाहरण देखकर, उसके बच्चों ने जीवन के प्रलोभनों से बचने के लिए, कठिनाइयों से पीछे न हटने के लिए, बल्कि प्रार्थना और ईश्वर में विश्वास के माध्यम से उन पर वज्रिय प्राप्त करने के लिए, आनंदपूर्वक प्रयास करना सीखा।

इन दानियों, वयस्क और बच्चे दोनों एक पागलखाने जैसी दुनिया में रहते हैं, और इसलिए इसमें बहुत धैर्य और बहुत प्रार्थना की आवश्यकता होती है। बहुत बड़ी संख्या में बच्चों को अंततः स्ट्रोक् हो जाता है। [यह ठीक वैसा ही है] जैसे कोई घड़ी थोड़ी गड़बड़ हो; माता-पति उसे पूरी सीमा तक—और उससे भी अधिक—चढ़ा देते हैं, और फिर उसकी स्प्रिंग टूट जाती है। एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। एक बच्चे को अधिक 'चढ़ाया' जाना चाहिए, दूसरे को कम। ये बेचारे बच्चे हर तरह के [बुराई के] प्रभावों के संपर्क में आते हैं। जब वे स्कूल में या सड़क पर यह सुनते हैं कि: 'अपने माता-पति का सम्मान मत करो! किसी का या किसी चीज़ का सम्मान मत करो!' — और उस पर यह कि उनकी माताएँ उन पर और भी सख्ती बरतना चाहती हैं — तो वे और भी ज्यादा बगावत करते हैं।

इसलिए मैं माताओं को सलाह देती हूँ कि वे प्रार्थना के माध्यम से स्वयं को अनुशासित करें, न कि अपने बच्चों को। यदि वे लगातार बच्चे से कहते रहें, 'ऐसा मत करो, उस पर हाथ मत लगाओ' — मामूली बातों पर भी, और कभी-कभी अनुचित रूप से — तो गंभीर खतरे की स्थिति में, उदाहरण के लिए, यदि बच्चा आग पर पेट्रोल डालना चाहे, तो वह नहीं सुनेगा और ऐसा करने पर गंभीर रूप से घायल हो जाएगा। बच्चा यह नहीं समझ पाता कि 'ऐसा मत करो' शब्द प्रेम से प्रेरित है। लेकिन जैसे-जैसे बच्चा थोड़ा बड़ा होता है, उसमें

स्वार्थ आ जाता है, और अगर उसे डांटा जाए, तो वह यह सोचते हुए नखरे दखाने लगता है: 'क्या मैं अभी भी इतना छोटा हूँ कि मैं मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर सकते हैं?' माता-पिता को बच्चे को यह समझाना चाहिए कि, जैसी तरह उन्होंने उसे छोटा होने पर जलने से बचाया था, उसी तरह अब जब वह बड़ा हो गया है, तो वे उसे एक अलग तरह की आग से बचा रहे हैं। इसलिए, बच्चे को सतर्क रहना चाहिए, शैतान के प्रलोभनों के आगे नहीं झुकना चाहिए, और अपने भीतर पवित्र बपतिस्मा की अनुग्रह को बनाए रखना चाहिए।

अविवेकी, अत्यधिक माता-पिता का प्रेम

— जेरोंडा, क्या एक माँ अपने बच्चे को अनुचित प्रेम से नुकसान पहुँचा सकती है?

— बेशक, यह हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक माँ देखती है कि उसका नन्हा बच्चा चलना नहीं सीख पा रहा है, और कहती है: 'उसके लिए कतिनी अफसोस की बात है, बेचारा, वह चल नहीं सकता' — और उसे खुद से चलने में मदद करने के लिए उसका हाथ पकड़ने के बजाय, उसे बार-बार उठाती रहती है। सवाल यह है, वह नन्हा बच्चा कभी चलेगा कैसे? बेशक, ऐसी माँ का प्यार ही प्रेरित करता है, लेकिन अति-संरक्षणकारी होने के कारण, वह वास्तव में अपने बच्चे को नुकसान पहुँचा रही है। मैं एक ऐसे पिता को जानता था जिनके बेटे ने अपनी सैन्य सेवा पूरी कर ली थी। और फिर भी वह अपने बड़े बेटे का हाथ पकड़कर उसे नाई के पास ले जा रहे थे! 'मैं अपने बेटे को आपके पास इसलिए लाया हूँ ताकि आप उसके बाल काट सकें,' पिता कहते थे। 'मुझे बताएं कि आपको कतिना भुगतान करना है और उसे लेने कब आना है।' इस तरह [अपने अनुचित अति-संरक्षण के माध्यम से], इस आदमी ने अपने बेटे को अपंग बना दिया।

प्रेम को विवेक द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए। सच्चा प्रेम नस्वित्व होता है। इसमें कोई स्वार्थी पक्षपात नहीं होता और यह विवेकशीलता से परिभाषित होता है। एक महिला के प्रेम में विवेकशीलता अत्यंत आवश्यक है, ताकि वह अपना प्रेम व्यर्थ में बर्बाद न कर दे। एक बार, एक युवक मेरे झोपड़ी पर आया, जो अपने माता-पिता से नाराज़ था। उसके बेचारे माता-पिता की मंशा तो अच्छी थी, लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि उसकी मदद कैसे करें। और फिर उसने मुझसे कहना शुरू कर दिया कि उसके माता-पिता उस पर दबाव डाल रहे थे, कि वे उससे प्यार नहीं करते, और इसी तरह की बातें। मैंने उससे कहा, "सुनो, जब तुम छोटे थे और तुम्हारी माँ तुम्हें कई परतों में कपड़े पहनाती थीं, तो वह ऐसा क्यों करती थीं? क्या इसलिए कि तुम्हें जुकाम न हो, या तुम्हें बहुत गर्मी लगे?" आपकी माँ के हर काम में बहुत सारा प्यार था।" आखिरकार — यह महसूस करते हुए कि उसके माता-पिता उसे कतिना प्यार करते थे — वह युवक रो पड़ा। उसकी माँ में बहुत सारा प्यार था, भले ही वह अपने बेटे की मदद करने में असमर्थ थी क्योंकि वह उसके प्रति इस तरह का व्यवहार करती थी जिससे वह वरिध करने लगता था।

जब आवश्यक हो, माँ को अपने बच्चे के प्रति सिखत होना चाहिए। अगर वह अपने बच्चे के सामने बहुत आसानी से झुक जाए और हर बात में उसकी बात मान ले, तो यह बच्चे के सर्वोत्तम हित में नहीं है। अदाना में⁴⁶ नामक एक वधिवा का एकमात्र पुत्र यानसि था। जब लड़का थोड़ा बड़ा हुआ, तो उसने उसे जूते बनाने वाले कारीगर के पास शिष्य के रूप में भेज दिया। काम पर एक सप्ताह बाद, लड़के ने घोषणा की: 'माँ, मुझे अब गुरुजी के पास और नहीं जाना है: मैंने जूता बनाने का काम सीख लिया है।' 'तुमने यह कब सीख लिया?' उसने पूछा। 'ठीक है, अगर आप चाहें,' उसने जवाब दिया, 'तो मैं आपको दिखा सकता हूँ कि जूते कैसे बनाए जाते हैं। देखो: इस तरह तुम तलवा काटते हो, इस तरह चमड़ा जोड़ते हो, एड़ी फटि करते हो, और उसे कील से ठोकते हो...' और जैसी गुरु के पास जेनसि सीख रहा था, वह बहुत दयालु आदमी था। वह दया के कारण उस लड़के को यह धंधा सिखाना चाहता था, क्योंकि जेनसि बर्ना पिता के बड़ा हो रहा था। हालाँकि, जब उसे एहसास हुआ कि एक हफ्ता बीत गया है और जेनसि नहीं आया, तो वह चिंतित हो गया: क्या लड़का बीमार पड़ गया है? इसलिए वह बच्चे का हाल जानने के लिए उसकी माँ के पास गया। 'जेनसि को क्या हुआ है? वह अब काम पर क्यों नहीं आ रहा है? क्या वह बीमार है?' गुरु ने वधिवा से पूछा। 'नहीं,' उसने जवाब दिया, 'वह

⁴⁶ अदाना — एशिया माइनर में, भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित एक नगर। — अनुवादक की टिप्पणी।

ठीक है।" "तो फरि वह काम पर क्यों नहीं आ रहा है?" "वह वहाँ क्यों जाएगा?" वधिवा ने जवाब दिया। "आखरिकार, जेनसि तो जूता बनाने का काम पहले ही सीख चुका है।" "लेकनि वह कुछ ही दनिों में यह काम कैसे सीख सकता था?" जूता बनाने वाले ने आश्चर्य व्यक्त किया। "यह बहुत सरल है," उसकी माँ ने जवाब दिया। "वह चमड़ा लेता है, उसे मोल्ड पर फैलाता है, कीलें ठोकता है, एड़ी लगाता है, फरि बूट को मोल्ड से उतार लेता है और बस!" मोची हँसा, उससे वदि हुआ और चला गया। जब वह कारयशाला में लौटा, तो शषियों ने उससे पूछा, "गुरुजी, जेनसि का क्या हुआ?" उसने जवाब दिया, "वह ज़िदा और ठीक है।" "जेनसि ने न केवल जूता बनाने का काम सीखा है — उसकी माँ ने भी सीख लिया है!"

और इसलए मैं देखता हूँ कि किई माता-पति बलिकूल इसी वधिवा की तरह व्यवहार करते हैं। वे मानते हैं कि वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं, लेकनि वास्तव में वे उन्हें नष्ट कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, एक माँ अत्यधिक प्रेम के कारण अपने बच्चे पर चुम्बनों की बौछार कर देती है और उससे कहती है, मान लीजिए: 'दुनिया में मेरा बच्चा जैसा अद्भुत कोई नहीं!' ऐसा करके वह उसमें अहंकार और अस्वस्थ आत्मवश्वास की भावना को बढ़ावा देती है। बाद में, ऐसा बच्चा अपने माता-पति की अवज्ञा करता है, इस वश्वास के साथ कि वह स्वयं सब कुछ जानता है।

माता-पति को अपने बच्चों को छोटी उम्र से ही अपनी जम्मेदारी लेने का तरीका सिखाने में मदद करनी चाहिए। बच्चों को घर के कामों में उनकी क्षमता के अनुसार काम करने दें: उन्हें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि सब कुछ उन्हें थाली में परोसा जाए। अन्यथा, जब वे वयस्क होंगे, तो उन्हें जीवन कठिन लगेगा। एक कारीगर ने अथक परशिरम किया और अपने बच्चों का पालन-पोषण किया। लेकनि जब वह काम कर रहा था, तब वे अपना समय सड़कों पर घूमते हुए बताते थे। और जब वे बड़े हो गए और अपना परिवार बसा लिया, तब भी वे अपने पति से अपनी ज़रूरतों की पूर्तकी उम्मीद करते थे। और जब उन्होंने उन्हें बताया कि अब उनके अपने घर और परिवार की देखभाल करने का समय आ गया है, तो उन्होंने जवाब दिया: "ऐसा कैसे हो सकता है, पतिजी? जब हम छोटे थे तब आपने हमें नहीं छोड़ा! तो अब आप हमें कैसे छोड़ सकते हैं — जब हम बड़े हो गए हैं और परिवार की जम्मेदारियों का बोझ उठा रहे हैं?"

एक संपत्तिकी वतिरण

यदि माता-पति आर्थिक रूप से सुरक्षित हैं, तो वे अपने बच्चों के भवषिय के लिए जम्मेदार होते हैं। बेशक, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे उन्हें अच्छे इंसान के रूप में पाले-पोसे, फरि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने या कोई व्यवसाय सीखने में मदद करें ताकि बच्चे अपनी आजीविका कमा सकें। इसके बाद, माता-पति को उनके लिए एक छोटा सा घर खरीदना चाहिए आदि। जब 1924 में उस समय की जनसंख्या आदान-प्रदान के तहत,⁴⁷ हमारा परिवार कापाडोसिया के फारस से ग्रीस आया, तो मेरे पति ने ग्राम परिषद के अध्यक्ष के रूप में हमारे सभी साथी ग्रामीणों को उनके नए जीवन में बसाने के लिए भरसक प्रयास किया। उन्होंने अपने परिवार को सबसे अंत में रखा। बाद में, जब मेरे भाई-बहन बड़े हो गए, तो वे शकियत करने लगे। 'पतिजी, आपने सबकी चिंता की, लेकनि हमारे बारे में आपने नहीं सोचा,' उन्होंने कहा। अगर कोई व्यक्ति अकेला हो, तो वह अपने चरित्र की महानता के कारण दूसरों को सब कुछ दे सकता है और आत्म-बलदान के भाव से अपने प्रतपूरी उपेक्षा दिखा सकता है। लेकनि अगर किसी व्यक्ति का परिवार है, तो उसे उनके बारे में भी सोचना चाहिए।

बेशक, माता-पति को अपना आपा नहीं खोना चाहिए और अपने बच्चों को एक साथ सब कुछ नहीं दे देना चाहिए, क्योंकि युवा अनुभवहीन होते हैं और आज की अतृप्त दुनिया में वे अपनी क्षमता से अधिक खर्च कर सकते हैं। तब माता-पति के लिए यह दुखद होगा जब उन्हें एहसास होगा कि उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। इसके अलावा, माता-पति को सबसे कमजोर बच्चे पर विशेष ध्यान देना चाहिए

⁴⁷ 1924 में ग्रीस और तुर्की के बीच जनसंख्या का आदान-प्रदान। तुर्की में रहने वाले ग्रीक ग्रीस में बसाए गए, जबकि ग्रीस में रहने वाले तुर्क तुर्की में बसाए गए। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

और उसे अधिक भौतिक सहायता के साथ-साथ नैतिक और आचारिक मार्गदर्शन भी देना चाहिए, ताकि असफलता का भय उन्हें उग्र बाढ़ की तरह बहा न ले जाए। लेकिन तर्क और प्रेम के साथ, माता-पिता को अपने सभी बच्चों का खयाल रखना चाहिए, ताकि उनके रश्तों में कोई ठंडक न आ जाए।

आजकल ऐसे घनष्टि परिवार मलिना दुर्लभ हैं जो आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, जहाँ भाई-बहनों के बीच जमीन के टुकड़ों या वरिसत को लेकर झगड़ा न हो, और न ही वे अदालत पहुँचें। मैं एक सात सदस्यों वाले परिवार को जानता था। माता-पिता के पास कुछ सोने के आभूषण थे। उनकी मृत्यु के बाद, बच्चों ने नरिणय लिया कि वह भाई जो वृद्धावस्था में उनके माता-पिता की देखभाल करता था, वह सोना रखे। हालाँकि, उस भाई ने सोचा कि उनकी बहन के परिवार बड़ा है और इसलिए उसे सोने की अधिक आवश्यकता है। उसने सोना उसे दे दिया। बहन ने सोना तीसरे भाई को दे दिया, उसने चौथे को, और अंत में सोना पहले भाई के पास वापस आ गया! दूसरे शब्दों में, इन लोगों के साथ भी वही हुआ जैसा लावसैका में वर्णित है।⁴⁸ अंत में, चूँकि पहला भाई भी सोना अपने लिए रखना नहीं चाहता था, इसलिए उन्होंने इसे मंदिर में दान करने का फैसला किया।

भाग 3. बच्चे और उनकी जम्मेदारियाँ

"माता-पिता का आशीर्वाद बच्चों के लिए सबसे बड़ी वरिसत है। इसलिए, बच्चों को अपने माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।"

अध्याय 1. बच्चों, उनकी खुशियों और उनकी कठिनाइयों पर

शशि अवस्था

— जेरोंडा, मैंने देखा है कि कभी-कभी, दविय लटिरजी के दौरान, शशि मुस्कुराते हैं।

— वे दविय लटिरजी के दौरान केवल मुस्कुराते ही नहीं हैं। शशि ईश्वर के साथ नरितर संवाद में रहते हैं क्योंकि उन्हें कोई चिंता नहीं होती। क्या आपको याद है कि मिसीह ने छोटे बच्चों के बारे में क्या कहा था? 'उनके स्वर्गदूत स्वर्ग में हमेशा मेरे स्वर्गीय पिता का मुख देखते हैं'⁴⁹ छोटे बच्चे ईश्वर और अपने रक्षक स्वर्गदूत के साथ एक संबंध बनाए रखते हैं, जो हमेशा उनके साथ रहता है। नींद में, शशि एक पल हँसते हैं और अगले ही पल रोते हैं, क्योंकि वे सुखद और डरावनी दोनों चीजें देखते हैं। कभी-कभी वे अपने संरक्षक देवदूत को देखते हैं और उसके साथ खेलते हैं। वह उन्हें लाड़-प्यार करता है, उनका हाथ पकड़ता है, और वे हँसते हैं। अन्य समयों में, प्रलोभक उन्हें कुछ डरावना दिखाता है, और वे रोते हैं।

— प्रलोभी शशिओं को क्यों डराता है?

⁴⁸ हेलेनोपोलिस के बशिप पैलाडियस देखें। *लाउसाइओस* या *पवतिर और धन्य पिताओं के जीवन का वृत्तांत*। सेरापियन पर अध्याय। क्रिश्चियन लाइफ फाउंडेशन। क्लिनि, 2001। पृ. 176-177।

⁴⁹ मत्ती 18:10.

— वह उन्हें डराता है, यह वास्तव में उनके भले के लिए है, क्योंकि उनका डर उन्हें अपनी माँ को पुकारने के लिए मजबूर करता है। अगर वह डर न होता, तो बच्चे अपनी माँ की बाहों में नहीं दौड़ते। ईश्वर मानव जात के भले के लिए सब कुछ होने देता है।

— और जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो क्या उन्हें याद रहता है कि उन्होंने बचपन में क्या देखा था?

— नहीं, वे भूल जाते हैं। अगर कोई बच्चा याद रखता कि उसने अपने रक्षक देवदूत को कतिनी बार देखा है, तो वह घमंडी हो जाता। इसीलिए जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वह सब कुछ भूल जाता है। ईश्वर रहस्यमयी तरीकों से काम करते हैं।

— क्या वे अपने बपतस्मा के बाद यह सब देखते हैं?

— बेशक, बपतस्मा के बाद।

— गेरोंडा, क्या बना बपतस्मा लिए हुए शिशु को पवित्र अवशेषों के पास लाना उचित है?

— क्यों नहीं? आप पवित्र अवशेषों से एक बच्चे पर क्रॉस का चहिन भी बना सकते हैं। आज मैंने एक छोटे से लड़के को देखा जो बिल्कुल एक छोटे फरश्ते जैसा दखि रहा था। 'आपके पंख कहाँ हैं?' मैंने उससे पूछा। वह हक्का-बक्का रह गया और उसे समझ नहीं आया कि क्या कहे!... माउंट अथोस पर, वसंत में, जब पेड़ खिले होते हैं, तो मैं अपनी कुटिया के चारों ओर की बाड़ के पास झाड़ियों की शाखाओं पर मठाइयाँ लटका देता हूँ। जब छोटे बच्चों के साथ आगंतुक मुझसे मिलने आते हैं, तो मैं कहती हूँ: "बच्चों, कृपया झाड़ियों से मठाइयाँ तोड़ लो, क्योंकि अगर बारिश हो गई तो वे भीगकर बर्बाद हो जाएँगी!" कुछ चतुर बच्चे समझ जाते हैं कि मैंने खुद ही मठाइयाँ डालकर रखी हैं, और वे हँस पड़ते हैं। कुछ अन्य मान लेते हैं कि मठाइयाँ अपने आप ही झाड़ियों पर उग आई हैं, जबकि कुछ और यह तय नहीं कर पाते कि इसे मानें या नहीं... नन्हे बच्चों को भी थोड़ी खुशी की ज़रूरत होती है।

— जेरोंडा, क्या आप बहुत सारी मठाइयाँ बनाती हैं?

— अगर मैं उन्हें टाँगने जा रहा हूँ तो खूब टाँगूंगा। जब लोग मुझे स्वादुष्ट मठाइयाँ लाते हैं, तो मैं उन्हें बड़ों को नहीं देता। मैं बड़ों को टर्कशि डलाइट खिलाता हूँ। जब लोग मुझे अच्छी मठाइयाँ लाते हैं, तो मैं उन्हें अफोनिया के बच्चों के लिए बचाकर रखता हूँ।⁵⁰ और यहाँ, मठ में, मैंने कल कुछ मठाइयाँ और चॉकलेट भी लगाई थीं, और आज वे पहले ही खलि चुकी हैं! क्या आपने ध्यान दिया? खैर, क्यों नहीं: मौसम धूप वाला है, मटिटी अच्छी है, और आपने इसे अच्छी तरह से खोदा है, इसलिए चॉकलेट इतनी जल्दी खलि गई है!⁵¹ बस इंतजार करें और देखें कि मैं आपके लिए कतिना खूबसूरत फूलों का बगीचा बनाऊँगा! अब हमें बच्चों के लिए मठाइयाँ और चॉकलेट खरीदने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। आपको क्या लगता है? हम अपनी खुद की फसल काटेंगे!

— जेरोंडा, तीर्थयात्रियों ने सब्जी के खेत से बाहर निकलती मठाइयाँ और चॉकलेट बार देखीं और हैरान रह गए। 'यह ज़रूर किसी बच्चे का काम होगा,' उन्होंने कहा।

— आपने उन्हें यह क्यों नहीं बताया कि यह एक बड़े बच्चे ने किया था?

एक संरक्षक देवदूत छोटे बच्चों की देखभाल करता है

— जेरोंडा, ईश्वर हर व्यक्ति को एक संरक्षक देवदूत क्यों देता है? क्या वह स्वयं हमारी रक्षा नहीं कर सकता?

— एक संरक्षक देवदूत ईश्वर की अपनी सृष्टि के प्रति विशेष देखभाल है। एक संरक्षक देवदूत ईश्वर की द्रव्य व्यवस्था है, मानव जात के प्रति उनकी देखभाल का एक प्रकटीकरण है। और इसके लिए हम ईश्वर के ऋणी हैं। देवदूत छोटे बच्चों का विशेष ध्यान रखते हैं। वे उनकी कतिनी देखभाल करते हैं! एक

⁵⁰ अफोनीडा — माउंट अथोस पर स्थिति लड़कों का एक स्कूल। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁵¹ एक दिन पहले, एल्डर ने ताज़ा जोते हुए एक खेत में कई मठाइयाँ और चॉकलेट बार 'रोप' दिए थे और उन पर लैवेंडर की टहनियाँ रख दी थीं ताकि मठाइयाँ ऐसे दखिं मानो वे खलि रही हों।

बार, दो बच्चे सड़क पर खेल रहे थे। एक दूसरे के सरि पर पत्थर फेंकना चाहता था और उसने नशाना भी साथ लिया था। दूसरे बच्चे को खतरा नहीं दिखा। और फिर, बलिकुल आखिरी पल में, उसके रक्षक देवदूत ने ऐसा किया होगा कि उस छोटे लड़के ने कुछ देखा, रास्ते से कूद गया — और पत्थर उसके सरि के पास से निकल गया।

एक दिन, एक माँ खेत में काम करने गई और अपने बच्चे को भी साथ ले गई। उसे दूध पलाने के बाद, उसने उसे पालने में लटि दिया और काम पर चली गई। जब, कुछ समय बाद, वह छोटे बच्चे को देखने गई, तो उसने देखा कि वह अपने हाथ में एक साँप पकड़े हुए था और उसे जज्जासा से देख रहा था! जब माँ बच्चे को दूध पला रही थी, तो उसके मुँह के आसपास कुछ दूध रह गया था। तो साँप रेंगता हुआ उस नन्हे की ओर आया और उसके चेहरे से दूध चाट गया। बच्चे ने साँप को पकड़ लिया। यह देखकर माँ चीख पड़ी; बच्चा डर गया, उसने अपना नन्हा हाथ खोल दिया, और साँप रेंगता हुआ चला गया! ईश्वर बच्चों की रक्षा करता है।

— गेरोन्डा, लेकिन फिर इतने सारे बच्चे बीमारी और अन्य दुर्भाग्यों से क्यों पीड़ित होते हैं?

— ईश्वर जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के भले के लिए क्या आवश्यक है, और उसी के अनुसार उन्हें वह सब कुछ देते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। वह किसी व्यक्ति को ऐसा कुछ भी नहीं देते जो उनके भले के लिए न हो। उदाहरण के लिए, कभी-कभी वह देखते हैं कि कोई शारीरिक विकलांगता या चोट हमें उस स्थितिकी तुलना में अधिक मदद करेगी, यदि उन्होंने हमें उस चोट से बचाया होता या सुरक्षित रखा होता।

पवतिर बपतस्मा

— जेरोंडा, उत्तरी एपरिस के उन लोगों का क्या होगा, जो बनिा बपतस्मा लिए मर जाते हैं? ⁽⁵²⁾

— अरे, उनमें से अधिकांश को उनके माता-पिता ने 'एयर बपतस्मा' के माध्यम से बपतस्मा दिया था।⁵³ और उन देशों में कई लोगों को प्रसूति वार्ड में नैनियों या नर्सों ने 'एयर बपतस्मा' दिया था। मुझे एक ऐसा मामला पता है जहाँ एक नर्स ने एक टब पानी में एक बच्चे को बपतस्मा दिया था। ईश्वर ने इस महिला की सद्भावना देखी... और नव-बपतस्मा प्राप्त लोगों के पास कतिनी प्रचुर कृपा है! एक बार, तीन सौ पचास लोगों के समूह में, मैंने एक बपतस्मा प्राप्त महिला को देखा। मैंने पूछा कि वह कौन है, और मुझे बताया गया कि वह एक तुर्की महिला थी जिसने पवतिर बपतस्मा प्राप्त किया था। उसका चेहरा दमक रहा था। उसकी तुलना में, अन्य लोग बर्बर प्रतीत हो रहे थे।

— गेरोन्डा, क्या यह सही है कि बच्चों को उनके बपतस्मा पर दो नाम दिए जाएँ?

— अगर कोई जोड़ा अपने बच्चे का नाम रखने को लेकर बहस करे और अंत में तलाक ले ले, तो उन्हें बच्चे को कम से कम तीन नाम देना चाहिए! लेकिन अब तो सही ईसाई नामों को भी कौन जाने क्या-क्या बना दिया गया है... वकी, पेप्पी, ममी...

— जेरोंडा, एक महिला जो पाँच महीने की गर्भवती थी, ने अपना बच्चा खो दिया। वह मृत जन्म हुआ था, और अब वह इस बात से परेशान है क्योंकि उस पर वायु-बपतस्मा करना भी संभव नहीं था।

— चूँकि इसमें उसकी कोई गलती नहीं है, इसलिए उसे ईश्वर में अपना विश्वास रखना चाहिए। ईश्वर जानता है कि ऐसे बच्चों का क्या करना है और उन्हें कहाँ रखना है।

⁵² उत्तरी एपरिस — बाल्कन प्रायद्वीप का एक हिस्सा जहाँ ग्रीक रहते हैं। 1912 से, यह अल्बानिया का हिस्सा रहा है। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

⁵³ ग्रीक रीति-रिवाज के अनुसार, यदि बपतस्मा न लिए हुए नवजात शिशु का जीवन तत्काल खतरे में हो, तो बच्चे पर तत्काल 'वायु बपतस्मा' किया जा सकता है। कोई भी ईसाई (पुरुष या महिला) शिशु को अपनी बांहों में लेता है और हवा में तीन बार क्रॉस का चहिन बनाता है, और ये शब्द कहता है: "ईश्वर का सेवक (नाम) को पति के नाम पर बपतस्मा दिया जाता है। आमीन। और पुत्र के नाम पर। आमीन। और पवतिर आत्मा के नाम पर। आमीन।" यदि शिशु की मृत्यु हो जाती है, तो उसे बपतस्मा प्राप्त माना जाता है; यदि वह जीवित बच जाता है, तो, ग्रीस के चर्च के सनिड के एक नरिणय के अनुसार, बपतस्मा का संस्कार पूरी तरह से दोहराया जाता है। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

— जेरोंडा, मेरी माँ ने मुझे बताया कि मेरे एक भाई का जन्म के कुछ ही घंटों बाद नधिन हो गया था और उसे बपतस्मा दिलाने का समय नहीं मिला। मैंने उन्हें सलाह दी कि वे इस बारे में अपने आध्यात्मिक पति से बात करें।

— चूँकि वह उसे बपतस्मा दिलाना चाहती थी, लेकिन समय पर ऐसा नहीं कर सकी, इसलिए उसके मामले में कुछ शमनीय परिस्थितियाँ हैं। आखिरकार, अन्य महिलाएँ गर्भपात कराती हैं और अपने ही बच्चों को मार डालती हैं। ईश्वर का न्याय हमारी समझ से परे है। यह एक गंभीर पाप होता, यदा अपनी ही लापरवाही से, वह अपने बच्चे का समय पर बपतस्मा नहीं करा पाती और वह बनिा बपतस्मा के मर जाता। आप ऐसे मामलों का नरिणय सामान्य ज्ञान के दृष्टिकोण से करते हैं। यही तर्कवाद की धर्मशास्त्र है। मुझे याद है कि एक बार तीर्थयात्रियों का एक समूह मुझसे मिलने आया था, और मैंने उन्हें यह कहानी सुनाई। उत्तरी एपरिस का एक छोटा बच्चा तीन बार बपतस्मा दिया गया था। एक बार उसकी दादी ने, एक बार उसके दादा ने, और फिर उसकी माँ ने — हर किसी ने दूसरों से गुप्त रूप से — क्योंकि वे सभी मानते थे कि बच्चा बपतस्मा नहीं लिया हुआ था। जब मैं यह कहानी सुना रहा था, तो तीर्थयात्रियों में से एक कूद पड़ा और बोला: "यह अप्रामाणिक है!" "सुनो," मैंने उससे कहा, "क्या तुम्हें लगता है कि उन्होंने किसी धार्मिक ग्रंथ में नहीं पढ़ा है कि एक बच्चे का बपतस्मा तीन बार होना चाहिए? आखिरकार, इस नन्हें को तो तहिरी आशीर्वाद मिली है!"

— जेरोंडा, कभी-कभी लोग अपने दविंगत रश्तेदारों को सपने में देखते हैं और उनसे बात करते हैं। क्या ईश्वर लोगों की आस्था और पश्चाताप में मदद करने के लिए ऐसा करने की अनुमति देते हैं?

— हाँ। क्या मैंने आपको एक ऐसी ही कहानी नहीं बताई थी? पवतिर पर्वत का एक भिक्षु बुल्गारिया में स्थिति एक गाँव से आया था। वहाँ कई बनिा बपतस्मा पाए लोग थे। इस भिक्षु ने मुझे बताया कि जब वह अभी भी एक गृहस्थ और बनिा बपतस्मा पाए व्यक्ति था, तो उसने हाल ही में मृत अपने छोटे भतीजे को एक सपने में देखा। वह छोटा लड़का एक सुंदर बगीचे की बाड़ के पीछे खड़ा होकर रो रहा था। बगीचा छोटे बच्चों से भरा हुआ था जो आनंद मना रहे थे और खेल रहे थे। सपने देखने वाले आदमी ने पूछा, 'तुम बगीचे में क्यों नहीं जा रहे हो?' बच्चे ने जवाब दिया, 'मैं वहाँ कैसे जा सकता हूँ?' 'आखिरकार, मेरा बपतस्मा तो हुआ ही नहीं है।' इस घटना के बाद, वह व्यक्ति तुरंत जाकर बपतस्मा ले लिया, और बाद में उसने पादरी को अपने सपने के बारे में बताया। इस तरह ईश्वर ने व्यवस्था की ताकि अन्य लोग भी पवतिर बपतस्मा की गरमा को समझ सकें। इसके बाद, इस बुल्गारियाई गाँव के निवासियों ने भी अपने बच्चों का बपतस्मा कराना शुरू कर दिया।

— जेरोंडा, कुछ माता-पिता जो सविलि पार्टनरशिप में हैं, अपने बच्चों का बपतस्मा करवाना चाहते हैं। क्या उन्हें ऐसा करने की अनुमति है?

— क्यों नहीं? उन गरीब बच्चों ने ऐसा क्या किया है कि उन्हें यह सब झेलना पड़े? यह तथ्य कि सविलि पार्टनरशिप में रहने वाले लोग अपने बच्चों का बपतस्मा करवाना चाहते हैं, यह दर्शाता है कि उनमें कुछ [अच्छा] है, कि वे पूरी तरह से उदासीन नहीं हैं। जाहरि है, ये लोग किसी न किसी बात को लेकर भ्रमति हो गए हैं। अगर कोई उनकी मदद करना चाहता है, तो उसे पहले यह पता लगाना होगा कि उन्होंने चर्च में शादी क्यों नहीं की, और फिर यह कि वे अपने बच्चों का बपतस्मा क्यों करवाना चाहते हैं।

— जेरोंडा, यदा कोई नन कन्वेंट में प्रवेश करने से पहले किसी की बपतस्मा की गॉडमदर थी, तो क्या उसे अब, अपने गॉडचाइल्ड के लिए प्रार्थना करने के अलावा, उसे उपहार भी भेजने चाहिए — जैसा कि धर्मनरिपेक्ष दुनिया में गॉडपेरेंट्स करते हैं?

— अरे, एक नन अब ऐसी जमिमेदारियों से मुक्त है। एक भिक्षु प्रार्थना के माध्यम से [अपने गोद लिए बच्चे] की मदद करेगा। जहाँ तक उसके माता-पिता की बात है — यदा वे चाहें — तो वे अपनी बेटी, नन, के गोद लिए बच्चे के साथ ऐसे संबंध बनाए रख सकते हैं।

— तो क्या नन के माता-पति, अगर वे चाहें, तो अपनी बेटी के गॉडसन के साथ उस तरह का रश्ति रख सकते हैं?

— हाँ, अपनी मर्जी से। एक नन को उन पर ऐसा करने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए। उसे प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर उन्हें ज्ञान दें। लेकिन जो भी हो, गॉडफादर की एक बड़ी जम्मेदारी होती है। जब मैं अभी एक आम आदमी था, तो मेरे माता-पति ने अपने एक जानने वाले दंपति से वादा किया था कि हमारे परिवार का कोई सदस्य उनके एक बच्चे का गॉडफादर बनेगा। जब उनका बच्चा हुआ, तो मेरे सभी रश्तिदार दूर थे, इसलिए उन्होंने मुझसे उस नन्हे बच्चे का गॉडफादर बनने के लिए कहा। उस समय मैं सोलह साल का था, और मैं उसका गॉडफादर नहीं बनना चाहता था क्योंकि मुझे लगा कि मैं एक बड़ी जम्मेदारी ले रहा हूँ। तो, खुद को एक मुश्किल स्थिति में पाकर, मैंने प्रार्थना करना शुरू कर दिया। मैंने वनिती की, "मेरे भगवान, अगर यह बच्चा बड़ा होकर एक अच्छा इंसान बना, तो मेरी ज़िंदगी के बाकी बचे सभी साल ले लो और उसे दे दो। लेकिन अगर वह एक बुरा इंसान निकला, तो उसे अभी अपने पास ले लो — जब वह अभी भी एक छोटे फरश्ति जैसा है।" मैंने बच्चे का बपतिस्मा दिया और उसका नाम पावेल रखा। एक हफ्ते बाद, उसकी मृत्यु हो गई। अब वह स्वर्ग में है और उसे खोने का कोई खतरा नहीं है।

अनाथ बच्चे

— गेरोना, अगर परिवार का मुखिया मर जाए, तो क्या छोटे बच्चों को अपने मृत पति का शव देखना चाहिए?

— ऐसा न करना ही बेहतर है। वयस्क के किसी करीबी रश्तिदार की मृत्यु पर भी आप उन्हें यह खबर यथासंभव कोमलता और संवेदनशीलता से सुनाने का तरीका ढूँढते हैं। तो बच्चों के बारे में हम क्या कह सकते हैं!

— कसि उमर तक बच्चों के लिए अपने दविंगत प्रयिजनों को देखना उचित नहीं है?

— यह बच्चे के [चरतिर, स्वभाव और मानसकि स्थिति] पर निर्भर करता है।

क्या बच्चों को उनके पति की कब्र पर ले जाना ठीक है?

— हाँ, आप बच्चों को कब्र पर मलिन ले जा सकते हैं। आपको उन्हें बताना चाहिए: 'आपके पति यहाँ से स्वर्ग चले गए हैं। अगर आप अच्छे बच्चे रहे, तो वह स्वर्ग से उतरकर आपसे मलिन आएँगे।' मुझे याद है जब मेरी दादी की मृत्यु हुई थी, तो उन्होंने मुझे एक दोस्त के घर ले जाकर रखा था ताकि मैं अंतिम संस्कार न देखूँ और मुझे पता न चले कि वह चल बसी है। वहाँ उन्होंने मेरे साथ खेला और मेरा मनोरंजन किया। मैं हँस रहा था, जबकि वे रो रहे थे। जब वे मुझे वापस घर ले आए, तो मैंने पूछना शुरू कर दिया, 'दादी कहाँ हैं?' उन्होंने मुझसे कहा, 'वह वापस आएँगी, वह वापस आएँगी।' मैं दादी के लौटने का इंतजार करता रहा, लेकिन कुछ ही समय बाद मुझे पता चला कि उनका नधिन हो गया है। बच्चों के लिए अपने प्रयिजनों को मृत देखना अच्छा नहीं है।

— जेरोंडा, जब छोटे बच्चे अपनी माँ को खो देते हैं, तो वे उनकी मृत्यु पर अत्यंत दुख के साथ शोक मनाते हैं।

— बच्चों के पति की तुलना में माँ के गुम होने पर अनाथ होने की संभावना अधिक होती है। इसलिए, जब वे अपनी माँ को खोते हैं, तो उन्हें अधिक पीड़ा होती है। यह दुर्लभ है कि कोई पति उन बच्चों के लिए माँ की भूमिका निभाए जो अपनी माँ को खो चुके हैं। हालाँकि, स्वर्ग में, ऐसे बच्चों को सांत्वना दी जाएगी। उन्हें वह सब कुछ मलिंगा जो वहाँ [गायब] है। एक अनाथ स्वर्ग में कम 'पास मार्क' से 'प्रवेश' करेगा, ठीक वैसे ही जैसे वदिश से आए ग्रीक छात्रों को हमारे विश्वविद्यालयों में बनिा परीक्षा के प्रवेश दिया जाता है, जैसा कि प्रासंगिक कानून में प्रावधान है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर का वधिान अनाथों पर लागू होता है, और उन्हें जन्मत में प्रवेश के लिए कम प्रयास करने की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य लोगों को ऐसा करने के लिए एक बड़ा कारनामा करना पड़ता है। मैं उन बच्चों को खुश और धन्य मानता हूँ जिन्हें अपने माता-पति

की स्नेह-ममता से वंचति कर दिया गया है। क्योंकि इस जीवन में उन्होंने ईश्वर को अपना पति बना लिया है और, साथ ही, उन्होंने अपने माता-पति की ममता—जसिसे वे वंचति थे—को ईश्वर के 'बचत खाते' में जमा कर दिया है, और अब यह उन्हें [आध्यात्मिक] ब्याज दिला रही है।

लेकिन इस जीवन में भी, दयालु ईश्वर ऐसे बच्चों की मदद करेगा, क्योंकि जिस क्षण ईश्वर उनके माता-पति को अपने पास ले जाता है, वह—अगर मैं इसे इस तरह कहूँ—उनके बच्चों की देखभाल करने के लिए बाध्य हो जाता है। याद करो कि भविष्यवक्ता दाऊद क्या कहते हैं? *"वह अनाथों और वधिवानों को आश्रय देगा!"*⁵⁴ ईश्वर स्वाभाविक रूप से ऐसे बच्चों से अधिक प्रेम करता है और उनकी अधिक देखभाल करता है। ऐसे बच्चों को इस जीवन में अन्य बच्चों की तुलना में अधिक [आध्यात्मिक] वशिषाधिकार प्रदान करता है। यदि कोई अनाथ को दया की ओर मोड़ता है, तो वह अत्यधिक समृद्ध प्राप्त करेगा। लेकिन यदि वह कहता है, 'चूँकि मैंने स्वयं कष्ट उठाया है, अब मैं दूसरों को कष्ट दूँगा,' तो वह स्वयं को नष्ट कर लेता है।

— गेरौन्डा, क्या अनाथ होने के नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति के पूरे जीवन भर बने रहते हैं?

— तुम क्या बात कर रहे हो? अनाथ थोड़े आरक्षित, थोड़े शर्मीले और डरपोक हो सकते हैं — उनमें उन बच्चों की खुशी और चंचलता की कमी होती है जिन पर स्नेह की बौछार की गई हो। हालाँकि, यह आरक्षित स्वभाव ऐसे बच्चों के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में काम करता है, जो उन्हें जीवन में आगे बढ़ने में मदद करता है। और साथ ही, वे अपने भविष्य के जीवन के लिए संचित कर रहे होते हैं। आप क्या सोचते हैं: क्या ईश्वर इस संकोच को नहीं देखता? नसिंदेह वह बाद में उनकी मदद करेगा? इसीलिए हमें एक अनाथ को — वशिष रूप से जसि अपनी माँ खोनी पड़ी हो — कोमलता और गहरे प्रेम से अपनाना चाहिए, ताकि वे पहले तो आत्मीयता से भर सकें, उनकी संकोचशीलता दूर हो जाए, और वे अपना दिल खोल सकें। और यदि वे उत्साह से भरपूर हैं, तो हमें उनके महान उत्साह पर दृढ़ता से अंकुश लगाना चाहिए, कहीं वे अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करने की कोशिश में खुद को थका न दें। कैपाडोसिया के संत आर्सेनयिस अनाथ होकर बड़े हुए—उन्होंने अपनी माँ और पति दोनों को खो दिया था। यदि उन्होंने अपनी अनाथता को आध्यात्मिक रूप से और साहस के साथ नहीं जिया होता, तो वे एक पीड़ित व्यक्ति होते, जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित होता। फिर देखिए कि वे कतिने अच्छे युवक थे! उन्होंने कतिने कारनामे किए! मुझे जो बात चौंकाई, वह यह थी कि उसकी हड्डियाँ रूई की तरह, एक स्पंज की तरह नरम थीं। जब, उसके अवशेषों की खुदाई के दौरान, मैंने कब्र से उसकी पसलियों और रीढ़ की हड्डियाँ निकालीं, तो जैसे ही मैंने उन्हें छुआ, वे धूल में टूट गईं। केवल दो हड्डियाँ, कूल्हे की हड्डी और टबिया (पैर की एक हड्डी), अधिक या कम ठोस थीं। यह एक अद्भुत बात है: इतनी नाजुक हालत में होते हुए भी, वह पैदल इतनी लंबी दूरी तक कैसे चल सका? वह ऐसे चलता था मानो हवा में उड़ रहा हो! यहाँ हम उस अलौकिक शक्ति को देखते हैं जो ईश्वर ने उस पर प्रदान की थी। तो क्या वास्तव में एक अनाथ को जीवित करने की शक्ति मसीह की क्षमता से परे हो सकती है?

जब तक बच्चे एक निश्चित उम्र तक नहीं पहुँच जाते, उन्हें नियंत्रण में रखना चाहिए।

दुनियावी पतन की फसिलन भरी ढलान से नीचे न फसिलने के लिए, जो आत्मा को चिता से भर देती है और उसे नरितर ईश्वर से दूर कर देती है, बच्चों को [अपने बड़ों की] सलाह की महान आवश्यकता को लगातार पहचानना चाहिए — वशिष रूप से कशिरावस्था के महत्वपूर्ण वर्षों के दौरान। बच्चों को आज्ञाकारिता का अर्थ समझना चाहिए। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि उनका अपना भला माता-पति की आज्ञा मानने में ही निहित है — ताकि वे उन्हें आनंदपूर्वक आज्ञाकारिता कर सकें और आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से गति कर सकें।

⁵⁴ भजन संहिता 145:9.

क्या आपने कभी यह सोचा है कि एक छोटे बच्चे की स्वतंत्रता कतिनी सीमिति होती है? नौ महीने तक वे अपनी माँ के गर्भ में बंद रहते हैं। एक नवजात शिशु को पालने में रखा जाता है। पाँच या छह महीने बीत जाते हैं, और उन्हें ऊँची रेलिंग के पीछे रखा जाता है। फिर, जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, उन्हें अकेले घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती, ताकि वे किसी चीज़ से टकरा न जाएँ या सीढ़ियों से नीचे न गिर जाएँ। आखिरकार, अगर बच्चे की स्वतंत्रता प्रतर्बिंधति न हो, तो वे गरिकर चोटलि हो जाएँगे।

यह सब यह सुनश्चिति करने के लिए आवश्यक है कि बच्चा सुरक्षति रूप से बड़ा हो। पहली नज़र में, ये सभी उपाय बच्चे की स्वतंत्रता छीन लेते हैं — फिर भी, इनके बिना, बच्चा अपने जीवन के पहले क्षण से ही मृत्यु के खतरे में होगा। हालाँकि, जब बच्चे छोटे होते हैं, तो वे यह नहीं समझते कि उन्हें सीमाओं की आवश्यकता है। और जब वे बड़े हो जाते हैं, तब भी वे यह नहीं समझते कि उन्हें एक अलग तरह की सीमा की आवश्यकता है, और इसलिए वे स्वतंत्रता के लिए तरसते हैं। लेकिन यह कसि तरह की स्वतंत्रता है? वकिलांग होने की स्वतंत्रता? ऐसी 'स्वतंत्रता' बच्चों की मौत का कारण बनती है। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि जब तक वे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर लेते, जब तक उन्हें अपनी डिग्री नहीं मलि जाती, जब तक वे परपिक्वता तक नहीं पहुँच जाते—ताकि वे सभ्य इंसान बन सकें—उन्हें प्रतर्बिंधों की आवश्यकता है। क्योंकि अगर वे एक बार भी वकिलांग हो गए, तो वे मर जाएँगे। बच्चों को प्रतर्बिंधों को एक आवश्यकता के रूप में देखना सीखना चाहिए, और यह महसूस करना चाहिए कि वे ईश्वर की ओर से एक आशीर्वाद हैं। उन्हें इन सीमाओं को नरिधारति करने के लिए अपने माता-पति के प्रतर्आभारी होना चाहिए। उन्हें यह जानना चाहिए कि उनके माता-पति ने ये सीमाएँ प्यार से ही नरिधारति की हैं। किसी भी पति या माता ने कभी भी दुर्भावना से अपने बच्चे पर प्रतर्बिंध नहीं लगाया है — भले ही वे उनके प्रतर्बिहद सख्त्त रहे हों। और अगर माता-पति अपने बच्चों पर थोड़ा ज्यादा ही सख्ती बरतते हैं, तो इसमें भी बहुत सारा प्यार छपि होता है। वे यह सद्भावना से करते हैं, ताकि उनके बच्चे अधिक संयमति, अनुशासति रहें और खतरे से बचे रहें। आखिरकार, एक माली भी, जब एक पौधा लगाता है, तो अधिक सुरक्षा के लिए, उसे ज़रूरत से ज्यादा तार से कस सकता है और थोड़ी सी चोट पहुँचा सकता है। हालाँकि, ईश्वर जल्द ही पेड़ की छाल पर लगे घाव को भर देता है। अगर ईश्वर एक पेड़ के घाव को भरता है, तो वह [मानवों]—अपनी ही रचना—की कतिनी अधिकि परवाह करता होगा! नसिस्देह, यदि माता-पति ने अपने बच्चे पर थोड़ी ज्यादा सख्ती बरती है और उसे मामूली चोट पहुँचाई है, तो क्या ईश्वर उस घाव को नहीं भर देगा?

इसके अलावा, बच्चों को अपने माता-पति से बात करनी चाहिए और उन्हें अपने वचिारों के बारे में बताना चाहिए। जैसे मठ में एक भकिषु को एक वरषिठ होता है, जसिसे वह अपने वचिार साझा करता है और जसिसे उसे मार्गदर्शन मलिता है, वैसे ही एक बच्चे को भी अपने माता-पति से खुलकर बात करनी चाहिए। एक बच्चे के लिए पहले अपनी माँ और फिर अपने आध्यात्मकि पति के सामने अपना मन खोलना सही है। जैसे माता-पति, अगर उनके बच्चे की टांग पर चोट लग जाए, तो वे उसके साथ डॉक्टर के पास जाते हैं और पूछते हैं कि चोट ठीक करने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए, वैसे ही उन्हें अपने बच्चे की किसी भी [आध्यात्मकि] समस्या के प्रतर्भी सचेत रहना चाहिए — ताकि वे उसकी मदद कर सकें। यदि कोई बच्चा अपनी समस्याओं के बारे में केवल अपने आध्यात्मकि पति से ही बात करता है, तो उसके माता-पति उसकी मदद कैसे कर सकते हैं? आखिरकार, उन्हें यह नहीं पता होता कि उसे क्या परेशान कर रहा है।

स्कूल में बच्चों को सामना करने वाली चुनौतियाँ

अच्छी समझ और तीव्र बुद्धिवाले बच्चे कभी-कभी कठनिाइयों का सामना करते हैं और संघर्ष करते हैं। ऐसे बच्चे हर चीज़ को अपनी तरक्शकत्ति के अनुसार व्यवस्थति करना चाहते हैं और अपनी क्षमताओं से परे काम करने का प्रयास करते हैं। उनका दमिाग तेज होता है, फिर भी उन्हें नहीं पता कि किब बरेक लगाना है। वे खुद पर प्रयोग करते हैं, जैसे यह परखना हो कि वे कतिना सहन कर सकते हैं! इससे उन्हें कष्ट होता है। यदि वे अधिकि वनिम्र होना सीख लें, तो उनकी वविक क्षमता उन्हें सफल होने में मदद करेगी।

जनि बच्चों में ऐसी वविक और तीव्र बुद्धिकी कमी होती है, वे इन कठनिाइयों का सामना नहीं करते, लेकनि बदले में, वे [आंतरकि रूप से] प्रयास नहीं करते या [जीवन पर] चतिन नहीं करते — शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में।

क्या आप जानते हैं ककितने छात्र, जनिहोंने अपनी परीक्षाओं की तैयारी की और सब कुछ रट लिया, इतनी असफलता के डर से ग्रस्त होते हैं कवि परीक्षा में शामिल ही नहीं होते? हालाँकि वि अपनी पढ़ाई से नपिटने में सक्षम होते हैं, फरि भी ऐसे छात्र अपनी ही कायरता के कारण खुद को घबराहट में डाल देते हैं। हालाँकि, यदि वि वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करें: 'कृपया मेरी प्रार्थना करें, क्योंकि मैं अकेले अपनी पढ़ाई से नहीं नपिट सकता, लेकनि आपकी प्रार्थनाओं से मैं अपनी परीक्षाओं में अच्छा करने की पूरी कोशिश करूँगा,' तो अपनी वनिम्रता के कारण उन्हें ईश्वर की कृपा और दविय ज्ञान दोनों प्राप्त होंगे। इसके अलावा, परीक्षा देने से पहले, छात्रों को अपने संरक्षक संत से प्रार्थना करनी चाहिए, जो उनके वशिवास और धार्मकिता के अनुसार उनकी मदद करेंगे।

— गेरोंडा, वदिश में पढ़ रही एक युवती ने मुझे लिखा: "एक वचिर बार-बार मुझे बताता रहता है कि मैं कभी भी आध्यात्मकि प्रगतनिहीं कर पाऊँगी। ऐसा लगता है कि मैं हमेशा ऐसी ही रहूँगी।"

— क्या अजीब इंसान है! यूरोप में बैठकर ऐसे नषिकर्ष निकाल रही है! आखरिकार, वह वहाँ आध्यात्मकि संतुष्टिपाने या हमेशा के लिए रहने के लिए नहीं गई थी, बल्कि अपनी डगिरी के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने गई थी। उसे अपनी वर्तमान आध्यात्मकि अवस्था को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए, और वहाँ रहते हुए आध्यात्मकि पूर्णता के लिए प्रयास नहीं करना चाहिए। आखरिकार, यूरोपीय लोग वे लोग हैं जो [दुनियावी] वजिज्ञानों में तो उत्कृष्ट रहे हैं, आध्यात्मकि मामलों में नहीं। उसे खुद पर बहुत अधिक दबाव नहीं डालना चाहिए और हर बात को दिलि पर नहीं लेना चाहिए। उसे यह सब दिलि पर नहीं लेना चाहिए और इस वजह से पीड़ति नहीं होना चाहिए। उसे वहाँ अपने रहने को अनविर्य सैन्य सेवा मान लेना चाहिए। सेना में, एक सैनकि माथे पर पसीना बहाकर मेहनत करता है, अपनी हड्डी-पसली एक कर देता है, और कभी-कभी दूसरों द्वारा उसके साथ बहुत कठोरता से व्यवहार कया जाता है। लेकनि यूरोप में, लोग कम से कम शषिटाचार से पेश आते हैं—भले ही वह दखिवटी और पाखंडपूर्ण हो—जो यूरोपीय मानसकिता के अनुरूप है। यह उम्मीद की जानी थी कि उसे इन कठनिाइयों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि हिम ग्रीस में भी यही देखते हैं। एकमात्र अंतर यह है कि ग्रीस में — चूँकि हिम एक ऑर्थोडॉक्स लोग हैं — अपने आध्यात्मकि जीवन के प्रतचितिति लोगों के लिए आध्यात्मकि समर्थन भी है। थोड़ा धैर्य और थोड़ा ध्यान, और कठनिाइयों पर काबू पाया जा सकेगा। अब जब वह वहाँ है, तो उसे अपना खाली समय पढ़ने और प्रार्थना में लगाना चाहिए, ताकि वह आध्यात्मकि रूप से भी पोषति हो सके। अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उसके प्रयास उसे पूरे मन से उसमें डूबने में मदद करेंगे, और फरि सभी बुरे वचिर और युवा प्रलोभन उसके लिए अजनबे हो जाएँगे।

अध्याय 2.

बच्चों का अपने माता-पति और बड़ों के प्रतसिम्मान और प्रेम

बच्चों का अपने माता-पति और बड़ों के प्रतसिम्मान

जब बच्चा छोटा होता है, तो वह बलिकुल भी काम नहीं करता। उसके माता-पति उसके भोजन, कपड़े आदिका ध्यान रखते हैं। माता-पति अपने बच्चे की मदद प्रेम के कारण करते हैं। एक बच्चा काम नहीं करता — वह केवल छोटे-मोटे घरेलू काम कर सकता है। लेकनि क्या इस काम की तुलना उनके माता-पति

द्वारा उनके लिए किए गए प्रयास और बलिदान से की जा सकती है? यद्वियस्क होकर भी बच्चा अपने माता-पिता द्वारा दिए गए उपकारों की कदर नहीं करता, तो यह कृतघ्नता का बड़ा कृत्य है!

पहले माता-पिता अपने बच्चों को शारीरिक रूप से दंडित करते थे, और बच्चे बर्ना किसी रंजशि के उस दंड को स्वीकार कर लेते थे। अक्सर उन्हें यह भी समझ नहीं आता था कि उन्हें क्यों मारा जा रहा है। लेकिन आज के बच्चे लगातार पूछते रहते हैं, 'क्यों? किसलिए?' यह एक अंतहीन बहस है। उनमें सादगी की कमी है। वे जो कुछ भी होता है, सब कुछ नरिणय और मूल्यांकन के अधीन कर देते हैं। हालांकि, द्रव्य कृपा इस तरह से नहीं आती। यद्वि कोई बच्चा अपने पिता को पिता के रूप में नहीं मानता और अपने पिता के अनुशासन को स्वीकार नहीं करता, तो वह एक अवैध संतान है।⁵⁵ कुछ बच्चे, जैसे ही उनके माता-पिता उन पर थोड़ी सी भी टपिपणी करते हैं, तुरंत धमकी देने लगते हैं: 'मैं अपनी कलाई काट लूंगा!' और माता-पिता क्या करें? वे मान जाते हैं, और अंततः बच्चे भटक जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं।

एक बच्चे को यह समझना चाहिए कि भले ही उसके माता-पिता कभी-कभी उसके सरि पर थपपड़ मारें, वे ऐसा द्वेष से नहीं बल्कि प्यार से करते हैं — ताकि बच्चा अपनी आदतें सुधार सके, एक बेहतर इंसान बने और अंत में खुशी पा सके। जब हम छोटे थे, हम सब कुछ स्वीकार कर लेते थे: माता-पिता का स्नेह, उनकी थपपड़ें और उनके चुम्बन। हम समझते थे कि हमारे माता-पिता यह सब हमारे भले के लिए करते थे। हमें [हमारे माता-पिता] पर बहुत भरोसा था। कभी-कभी ऐसा होता था कि किसी एक भाई का कोई दोष होता था, लेकिन हमारी माँ दूसरे को डाँटती थीं, क्योंकि उनके पास 'मुकदमा' चलाने का समय नहीं था। हालाँकि, दोषी यह देखकर कि उसके कारण दूसरे - मासूम - को सज़ा मिल रही है, अपना जुरम कबूल कर लेता था, क्योंकि उसका अंतरात्मा उसे दोषी ठहराता था। और इस तरह, दोषी भाई या बहन बरी हो जाता था।

परिवार के भीतर, छोटे सदस्यों को अपने माता-पिता और अपने बड़े भाई-बहनों दोनों के प्रति सम्मान दिखाना चाहिए। छोटे सदस्यों को यह महसूस करना चाहिए कि अपने बड़ों के प्रति सम्मान, आज्ञाकारिता और कृतज्ञता आवश्यक हैं। बड़े भाई-बहनों को भी अपने छोटे भाई-बहनों के प्रति प्रेम दिखाना चाहिए, उनकी मदद करनी चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए। जब छोटा भाई-बहन बड़े भाई-बहन का सम्मान करता है, और बड़ा भाई-बहन छोटे भाई-बहन से प्रेम करता है, तो एक अद्भुत पारिवारिक वातावरण बनता है। मेरे पिताजी हमसे कहा करते थे: 'अपने बड़े भाई की आज्ञा मानना।' हम जानते थे कि हमारे पिताजी हम सभी से प्यार करते थे, और हम उनके साथ बहुत आजादी से पेश आते थे। लेकिन अपने बड़े भाई के प्रति, उनमें वही पिता जैसा प्यार न पाकर, हम अधिक आज्ञाकारी थे।⁵⁶

जब पति-पत्नी एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं, तो पारिवारिक जीवन घड़ी की तरह सुचारू रूप से चलता है। ऐसे परिवार में, बड़ा बेटा अपनी माँ से कभी भी कुछ इस तरह नहीं कहेगा, 'देखो माँ, ध्यान रखना कि तुम यह फरि से मत करना' या 'तुमने सब कुछ उल्टा-पुल्टा क्यों कर दिया?' न ही ऐसे परिवार में पिता माँ से ऐसे लहजे में बात करेंगे। कोई वयस्क बच्चे का मनोबल बढ़ाने के लिए मज़ाक कर सकता है, लेकिन बच्चा, वयस्क के मज़ाक का आनंद लेते हुए भी, उनके प्रति अनौपचारिक या घनिष्ठ व्यवहार नहीं करेगा। जब मैं स्टोमयिन मठ में था और कभी-कभी खरीदारी करने के लिए मठ से शहर जाता था, तो एक छोटा लड़का, जिसका घर सड़क के ठीक किनारे था, मुझे देखते ही दौड़कर मेरे पास आता था, और मैं उसका हाथ चूमता था। फिर उसे इसकी आदत पड़ गई और, दौड़कर मेरे पास आकर, वह खुद अपना हाथ आगे बढ़ाता था ताकि मैं उसे चूम सकूँ! मैंने वैसा ही किया जैसा वह चाहता था। लेकिन फिर उसके माता-पिता ने कहा: "फादर, कृपया उसके हाथ को चूमना बंद कीजिए, क्योंकि विह पादरियों के पीछे भागता है, उन्हें चूमने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है, और अगर वे ऐसा नहीं करते, तो वह रोने लगता है।"

⁵⁵ इब्रानियों 12:6-11 से तुलना करें।

⁵⁶ एल्डर पैसयिस के सात भाई-बहन थे।

एक बार जब बच्चों ने अपना परिवार बसा लिया, तो वे अपने माता-पिता से प्यार कैसे बनाए रख सकते हैं?

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने यह वधान बनाया है कि पिता और पत्नी ऐसे प्रेम से बंधे रहें कि वे अपने माता-पिता को भी छोड़ दें। यदि यह प्रेम न होता, तो लोग अपना स्वयं का परिवार शुरू ही नहीं कर पाते। एक माता-पिता की भूमिका तब समाप्त हो जाती है जब उनके बच्चे अपना स्वयं का परिवार शुरू करते हैं [या भविष्य बन जाते हैं]। उसके बाद, बच्चों का अपने माता-पिता के प्रति केवल [दो चीजों] का कर्तव्य होता है: अत्यधिक सम्मान और उतना ही प्रेम जितना किसी को अपने माता-पिता के लिए होना चाहिए। मेरा यह कहना नहीं है कि पिता और पत्नी को अपने माता-पिता से प्रेम नहीं करना चाहिए। नहीं। लेकिन पहले उन्हें एक-दूसरे से बहुत अधिक प्रेम करना चाहिए और [केवल] उसके बाद ही अपने माता-पिता से प्रेम करना चाहिए। जीवनसाथियों को एक-दूसरे से इतना गहरा प्रेम करना चाहिए कि उनका प्रेम लबालब कर दे। और वैवाहिक प्रेम के इसी प्रचुरता से उन्हें अपने माता-पिता के प्रति सभी उचित सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। जीवनसाथियों के बीच का प्रेम उदात्त होना चाहिए, ताकि प्रत्येक जीवनसाथी दूसरे के माता-पिता की यथासंभव देखभाल करे।

परिवार में शांति और सौहार्द बनाए रखने के लिए निम्नलिखित बातें बहुत सहायक होंगी: पति को अपनी पत्नी से अपनी माँ और अन्य निकटतम रिश्तेदारों या परिवार के सदस्यों की तुलना में अधिक प्रेम करना चाहिए। पति को अपने माता-पिता के प्रति प्रेम उसकी पत्नी के माध्यम से प्रवाहित होना चाहिए। बेशक, पत्नी को भी इसी प्रकार व्यवहार करना चाहिए।

मैं ऐसे परिवारों को जानता हूँ जहाँ, अपनी वैवाहिक जीवन की शुरुआत में, पति और पत्नी को समस्याओं और असहमति का सामना करना पड़ा क्योंकि उनमें से एक अपनी माँ से अत्यधिक प्रेम करता था। यह प्रेम एक बेटे या बेटी द्वारा अपनी माँ के प्रति महसूस किए गए स्नेह से उत्पन्न होता है, जो गहरे कृतज्ञता की भावना से जन्म लेता है। हालाँकि, धीरे-धीरे, जैसे-जैसे जोड़ा एक-दूसरे के करीब आता है, यह समस्या दूर हो जाती है। आखिरकार, अगर शादी के तुरंत बाद, एक जीवनसाथी दूसरे पर इतना प्यार लुटाए कि वह उसकी माँ के प्यार की जगह ले ले, तो यह अस्वाभाविक होगा।

यदि पिता अपनी सास और ससुर का सम्मान करता है, तो इससे उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है, ठीक वैसे ही जैसे बहू का अपनी सास का सम्मान और प्रेम करना—वह महिला जिसने उसके पति को जन्म दिया, उनका पालन-पोषण किया, और जिनका पुत्र अब उसका पति और उसकी खुशी है। यदि पिता और पत्नी ऐसी भावनाएँ और विचार साझा करते हैं, तो यह सब चुपचाप उनके अपने बच्चों की आत्मा को आकार देता है।

अपने बेटे की शादी से पहले, उसकी माँ को उसके प्यार में काफी सुकून मिलता था। लेकिन बुढ़ापे में लोग फिर से शिशुओं की तरह हो जाते हैं। अपने बेटे की शादी करवाने के बाद, माँ को ठीक वैसा ही महसूस होता है जैसा सबसे बड़े बच्चे को तब होता है जब वह अपनी माँ की गोद में किसी और—एक नवजात शिशु—को देखता है। देखिए: यदि कोई व्यक्ति अपनी जवानी में अपनी वासनाओं पर काबू नहीं पाता, तो जैसे-जैसे साल बीतते हैं, उसकी इच्छाशक्ति कमजोर हो जाती है और उसकी वासनाएँ और प्रबल हो जाती हैं।

हालाँकि, बहू को इससे आहत नहीं होना चाहिए। और यदि वह अपनी वृद्ध सास की भी देखभाल कर रही है, तो उसे थोड़ी देर के लिए धैर्य रखना चाहिए, ताकि वह अपनी देखभाल के लिए मिलने वाले पुरस्कार से वंचित न रहे। यदि वह अब अपनी सास की देखभाल धैर्यपूर्वक करती है, तो बाद में, जब उसकी सारी दुख-चिंताएँ पीछे छूट जाएँगी, वह अपने किए हुए अच्छे कर्मों पर प्रसन्न होगी।

लेकिन, बेशक, एक सास को अपनी बहूओं से वैसे ही प्यार करना चाहिए जैसे वह अपनी बेटियों से करती। मेरी दादी ने मेरी माँ से मेरे पिता से ज्यादा प्यार किया। जब मेरे भाइयों की शादी हुई, तो पड़ोसी सरि हलाकर मेरी माँ को चेतावनी देते: 'अच्छा, अब नई बहूएँ आने वाली हैं...' लेकिन मेरी माँ जवाब देती: 'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? मेरी सास ने मुझसे अपनी बेटी से भी ज्यादा प्यार किया था। तो मैं अपनी बहूओं से प्यार क्यों न करूँ?' और सचमुच, उन्होंने उनसे उतना ही प्यार किया जितना अपनी बेटियों से।

बुढ़ापा वनिमरता लाता है।

बुढ़ापे में एक व्यक्ति कितना वनिमर हो जाता है! एक वृद्ध व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी ताकत खो देता है और एक बूढ़े बाज़ जैसा दखिने लगता है। जब एक बाज़ बूढ़ा हो जाता है, तो उसके पंख झड़ जाते हैं और उसके पंख टूटे पंखुड़ियों जैसे दखिने लगते हैं। मुझे याद है कि 1914 में, पवतिर सनिॉड के एक सदस्य, फलिथियू मठ⁵⁷ के ई⁵⁸, जो उस समय एक सामान्य व्यक्ति थे, ने अपने पति की हत्या करने वाले तुर्कों से बदला लेने के लिए स्मरना से अल्बानिया में लड़ने हेतु स्वयंसेवा की। एक अवसर पर, उन्होंने एक तुर्क को पकड़ लिया और उसका गला काटने ही वाले थे। तुर्क ने उनसे वनिती की: "हमारा धर्म कठोर है। यह हमें काटने और मारने की शिक्षा देता है। हालाँकि, आपका धर्म ऐसा नहीं है। मसीह आपको मारना नहीं सिखाते।" इन शब्दों ने उसे इतना गहराई से हिला दिया कि उसने अपनी राइफल फेंक दी और तुरंत पवतिर परवत पर वापस चला गया। वह एक भिक्षु और पवतिर धर्मसभा का सदस्य बन गया, फिर भी उसका सरदार वाला स्वभाव कभी नहीं गया। वे सभी मठ के कर्तव्यों के प्रभारी थे, और गोदामों की सभी चाबियाँ उनकी कमर में लटकी रहती थीं। भाइयों में से कोई भी उनका वरिध करने की हिम्मत नहीं करता था। यद्यपि कोई भिक्षु उन्हें ठीक से 'एल्डर स्परिडिोन' कहकर संबोधित करना भूल जाता, तो वे आग-बबूला हो उठते। एक बार, महा-उपवास के दौरान, डाकुओं का एक गरिह मठ में आया और भिक्षुओं से पनीर की मांग करने लगा। तब फादर स्परिडिोन डाकुओं से मलिन बाहर निकले और उन्हें इस प्रकार 'नमस्कार' किया: 'तुम सूअरों! क्या महा-उपवास के दौरान पनीर भीख में मांगने आए हो?' — उन्होंने कहा, और तुरंत उन्हें दरवाजे से बाहर फेंक दिया। एक अन्य अवसर पर, भिक्षुओं ने एक झूमर (⁵⁹) को साफ करने के लिए उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिया। डाकुओं ने, झूमर के वभिनिन चमकीले घुँघराले हसियों को देखकर, सोचा कि वे सोने के बने हैं। मठ पहुँचने पर, उन्होंने इन घुँघराले हसियों को बोरी में डाल दिया और पड़ोस भर से खच्चर इकट्ठा करके उन पर बोरी लाद दी। जैसे ही फादर स्परिडिोन ने यह देखा, उन्होंने डाकुओं को गर्दन से पकड़ लिया, उनके बोझ छीन लिए और उनमें रखी चीजों को ज़मीन पर फेंक दिया। उन्होंने उनसे कहा, "तुम सब घटिया लोग हो, घटिया लोग!" "लेकिन ये तो बस सस्ते धातु के टुकड़े हैं! ठीक वैसे ही सस्ते जैसे तुम्हारे ताँबे के माथे!" इस आदमी को कायरता का मतलब ही नहीं पता था। हालाँकि, अपनी वृद्धावस्था में वह बीमार पड़ गए और सुस्त हो गए। मुझे उनकी देखभाल का काम सौंपा गया था। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा: 'मेरे लिए प्रार्थना करो, एवरकी,⁶⁰ मैं ठीक महसूस नहीं कर रहा हूँ।' मैं खड़ा हो गया और अपनी माला का उपयोग करते हुए, जोर से प्रार्थना करने लगा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने सेवक, एल्डर स्परिडिोन पर दया करो।' 'तुम मूर्ख,' उन्होंने कहा, "'एल्डर स्परिडिोन' नहीं, बल्कि स्परिका!" उनकी बीमारी और वृद्धावस्था ने उन्हें कितना नम्र बना दिया था! उस समय उन्हें "एल्डर स्परिडिोन" के अलावा कुछ और कहकर बुलाने की हिम्मत करना!

और अपनी वृद्धावस्था में, मेरे पतिजी एक मक्खी के कारण घुटने टेकने पर मजबूर हो गए। एक दिन, मेरी बहन ने उन्हें रोते हुए पाया। "क्या बात है, पतिजी?" उसने पूछा। "शायद तुम्हारे पोते-पोतियों में से किसी ने तुम्हें परेशान किया है?" "नहीं, नहीं," उन्होंने जवाब दिया। "ऐसी ही मानव स्वभाव है... मैं मक्खी मारने के लिए मक्खी मारने वाले झाड़ू से मारा, लेकिन कर नहीं पाया। मैंने दाईं ओर से मक्खी मारने की कोशिश की — वह बाईं ओर उड़ गई; मैंने बाईं ओर से मारने की कोशिश की — वह दाईं ओर उड़ गई! जब मैं जवान था, तो मैं इतना नशानेबाज था कि मैंने चेतोव⁶¹ को नहीं मारा, बल्कि उन पर चारों ओर से गोलियाँ चलाई, ताकि गोलियाँ एक तंग समूह में गरिं, और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दें। जब मैं सोलह साल का था, मैंने एक शेर के बच्चे को गोली मारी, उसे घायल किया, और उस घायल जानवर से लड़ा। और अब मैं एक

⁵⁷ एथोस के पवतिर परवत के बीस मठों में से एक। बूढ़े द्वारा वर्णित समय में, यह अभी भी इडिथोराइथमकि (गैर-सामुदायिक) था। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁵⁸ आध्यात्मिक परिषद एक इडिथोराइथमकि (गैर-सामुदायिक) मठ का नरिवाचि शासी निकाय है। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁵⁹ एक ऑर्थोडॉक्स चर्च में एक बड़ा झूमर या बहु-शाखीय कैडेलब्रम। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁶⁰ रसोफोर के रूप में, एल्डर का नाम एवरकी था।

⁶¹ चेतोव — तुर्की डाकू।

मक्खी भी नहीं मार सकता! आह, मनुष्य एक नीच प्राणी है।" उस बेचारे आदमी ने एक महान "शून्यता," शून्य, महसूस की, जैसे उसने अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं किया हो।

क्या आप जानते हैं कपित्थि परवत के वृद्धाश्रमों में वरिष्ठ भिक्षु स्वयं को कैसे समर्पित करते हैं! वे एक और... मठीय मुंडन से गुजरते हैं! उनके बाल छोटे काटे जाते हैं ताकि उन्हें धोना आसान हो। उनकी दाढ़ियाँ छाँटी जाती हैं क्योंकि उनके मुँह से लार टपकती है, भोजन उनके मुँह से गरिता है, और फरि उन्हें बाद में कैसे साफ किया जा सकता है? यह मुंडन अंतमि है। वनिमरता का मुंडन!

बुजुर्गों की देखभाल का पुरस्कार

यह दुनिया कसि हाल में आ पहुँची है! फारस और एपरिस में भी वे बूढ़े जानवरों की देखभाल करते थे। खैर, खच्चरों की बात है—यह स्पष्ट है कि क्यों [—क्योंकि उनका मांस नहीं खाया जाता]। लेकिन वे जानवर भी जनिका मांस खाने योग्य था, उन्हें नहीं काटा जाता था; उन्हें जीवित छोड़ दिया जाता था। उदाहरण के लिए, मालकि उन बूढ़े बैलों का सम्मान करते थे जिनमें कभी हल चलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। वे बुढ़ापे में उनकी देखभाल करते थे और उनका ख्याल रखते थे, यह कहते हुए: 'आखरिकार, वे हमारे रोटी कमाने वाले हैं।' दूसरे शब्दों में, खेतों में मेहनत करने वाले कामकाजी जानवरों को आरामदायक बुढ़ापा दिया जाता था। और फरि भी, उस समय लोगों के पास वे तकनीकी साधन नहीं थे जो आज हमारे पास हैं। उन्हें चारे के लिए दालें हाथ से चलने वाली चक्की में पीसनी पड़ती थीं, उन्हें बारीक पीसकर इतना महीन कर देते थे कि बेचारा बूढ़ा बैल उन्हें चबा सके। लेकिन आजकल के लोग ऐसी बातें भूल गए हैं: वे बूढ़े लोगों की भी देखभाल नहीं करते, तो फरि बूढ़े जानवरों की तो छोड़ ही दीजिए!

मेरे जीवन में कभी भी मुझे उतना अच्छा महसूस नहीं हुआ जतिना उन कुछ दिनों में हुआ जब मुझे एक वृद्ध भिक्षु की देखभाल का काम सौंपा गया था। बुजुर्गों की देखभाल करने से महान पुण्य मलिता है। मुझे पवित्ति परवत पर एक नवसखिए के बारे में बताया गया था, जसि पर एक भयानक राक्षस सवार था। उसे मठ के वृद्धाश्रम में छह वृद्ध भिक्षुओं की देखभाल का काम सौंपा गया था। वे कठिनि समय थे; लोगों के पास अपने श्रम को आसान बनाने के लिए संसाधनों की कमी थी। वह बेचारा बुजुर्गों के कपड़ों का एक बंडल अपने कंधों पर लादता और उसे एक दूर के तालाब तक घसीटता, जहाँ वह उसे सोडा (लाइ) से धोता... कुछ ही समय बाद, वह उस दानव से मुक्त हो गया जसिने उसे वश में कर रखा था और वह एक भिक्षु बन गया। ऐसा सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से इसलिए हुआ कि उन्होंने दूसरों के लिए अपना बलदान दिया, और इसलिए भी कि वृद्ध भिक्षुओं ने उसे अपना आशीर्वाद दिया।

कई विवाहित जोड़े अपने साथ रहने वाले बुजुर्गों की अजीब आदतों और बड़बड़ाहट के कारण अपने परिवार में होने वाली परेशानियों के बारे में शिकायत करते हैं। ये लोग उन 'शरारतों' को भूल जाते हैं जो वे खुद बचपन में किया करते थे, और उस कराहट और अजीब व्यवहार से जसिसे वे उस समय दूसरों को सताते थे। उन्हें याद नहीं रहता कि अपने रोने-धोने और नखरों से उन्होंने खुद अपने माता-पिता को कोई चैन नहीं दिया था। इसीलिए ईश्वर ऐसे लोगों को बुजुर्गों की देखभाल से जुड़ी कठिनाइयों को सहने देता है — ताकि वे किसी न किसी छोटे से रूप में, दूसरों को पहले जो तकलीफें उन्होंने दी थीं, उनका 'बदला चुका सकें'। अब बारी उनकी है कि वे अपने बुजुर्ग माता-पिता की मदद करें और कृतज्ञता के साथ उनकी देखभाल करें, यह याद करते हुए कि जब वे बच्चे थे तो उनके माता-पिता ने उनके लिए कतिने त्याग किए थे। जो लोग अपने माता-पिता के प्रति कोई कर्तव्य-बोध नहीं रखते, उन्हें ईश्वर अन्यायपूर्ण और कृतघ्न लोग मानकर आँकेंगे।

मैं देख सकता हूँ कि इस दुनिया में कई लोगों को जो दुख झेलना पड़ता है, उसका कारण अक्सर यह होता है कि उनके माता-पिता उनके प्रति रिंजशि रखते हैं। परिवार इसलिए पीड़ित होते हैं कि वे अपने दादा-दादी की देखभाल करने में असफल रहते हैं। ऐसे परिवार में पले-बढ़े बच्चों को क्या आशीर्वाद मलि सकता है जहाँ एक दुखी बूढ़ी महिला या एक गरीब बूढ़े आदमी को किसी वृद्धाश्रम में भेज दिया गया हो, वहाँ उन्हें पीड़ा में मरने के लिए छोड़ दिया गया हो, जबकि उनकी संपत्ति छीन ली गई हो और उन्हें अपने पोते-

पोतयियों के साथ समय बताने की खुशी से वंचित कर दिया गया हो? आज एक बुजुर्ग महिला मुझसे मलिन आई और उन्होंने मुझे बताया कि उनके चार विवाहित बेटे हैं। वे सभी एक ही मोहल्ले में रहते हैं, लेकिन वह उन्हें देख नहीं सकती क्योंकि एक दिन उसने अपनी बहुओं को यह सलाह देने की 'हमिमत' की थी: 'एक-दूसरे से प्यार करो, और चर्च जाओ!' यह सुनते ही, वे बस आग-बबूला हो गईं! उन्होंने उससे कहा, 'हमारे घरों में दोबारा पैर मत रखना!' उस बेचारी महिला को अपने बच्चों को पाँच साल से नहीं देखा है। 'मेरे लिए प्रार्थना करें, फादर,' वह रोते हुए वनिता करने लगी, 'क्योंकि मेरे भी पोते-पोतियाँ हैं। प्रार्थना करें कि मैं उन्हें देख सकूँ, भले ही वह सिर्फ एक सपने में ही क्यों न हो।' खैर, इस महिला के बच्चों को किस तरह का आशीर्वाद मिला सकता है?

परिवार में दादी का होना एक बड़ी सौभाग्य की बात है, लेकिन कुछ लोग इसे महसूस नहीं कर पाते। पुरुष आमतौर पर अपनी पत्नियों से पहले बूढ़े हो जाते हैं, और उनकी देखभाल पत्नियाँ ही करती हैं। जब पति की मृत्यु हो जाती है, तो बच्चे अपनी दादी को अपने घर में ले आते हैं ताकि वह अपने पोते-पोतियों की देखभाल कर सकें और उन्हें यह महसूस न हो कि अब उनकी ज़रूरत नहीं रही। जब बच्चे ऐसा करते हैं तो यह बहुत अच्छा होता है। इस तरह, वृद्ध माँ को शांति मिलती है, और परिवार को मदद मिलती है। आखिरकार, अपनी कई ज़िम्मेदारियों के कारण, एक माँ के पास हमेशा अपने बच्चों को वह कोमलता और प्यार देने का समय नहीं होता जिसकी उन्हें ज़रूरत होती है। यह वही तत्व है जो दादी बच्चों को प्रदान करती हैं, क्योंकि दादी की उम्र प्यार और कोमलता की उम्र होती है। बस देखिए: जब कोई बच्चा शरारत करता है, तो उसकी माँ उसे डाँटती है, जबकि उसकी दादी उसे दिलासा देती है। जब बच्चे अपनी दादी की देखभाल में होते हैं, तो माँ को अपने कामकाज निपटाने का समय मिल जाता है, बच्चों को स्नेह और प्यार से घिरा हुआ होता है, और दादी खुद अपने पोते-पोतियों के प्यार से आनंदित होती है।

जो व्यक्ति अपने माता-पिता की देखभाल करता है, उसे ईश्वर का महान आशीर्वाद प्राप्त होता है। एक युवक, जिसकी शादी हो चुकी थी, ने मुझसे अपनी योजनाएँ साझा कीं: 'गेरोंडा, मैं एक घर बनाना चाहता हूँ और भूतल पर अपने माता-पिता तथा अपनी सास-ससुर के लिए दो छोटे फ्लैट बनाना चाहता हूँ।' क्या आप जानते हैं कि मैं इससे कतिना भावुक हो गया था! क्या आप जानते हैं कि मैंने उस व्यक्ति पर कतिनी आशीर्वादें बरसाईं! यह आश्चर्यजनक है: कई विवाहित जोड़े इसे क्यों नहीं समझते?

कुछ दिन पहले, एक महिला मेरे पास आई और बोली: "फादर, मेरी माँ लकवाग्रस्त हैं। मैं बहुत थक गई हूँ! मैं आठ साल से उन्हें एक तरफ से दूसरी तरफ पलटती आ रही हूँ!" क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि क्या हो रहा है? एक बेटी अपनी माँ के बारे में उस लहजे में बोल रही है! "ओह," मैंने कहा, "तुम्हारी समस्या बहुत आसानी से हल हो सकती है! मैं अभी प्रार्थना करूँगा कि तुम आठ साल तक लकवाग्रस्त रहो, जबकि तुम्हारी माँ ठीक हो जाएँ और तुम्हारी देखभाल करें।" "नहीं, नहीं, फादर!" वह चिल्लाई। "चार साल," मैंने कहा, "कम से कम चार साल तुम्हें चाहिए होंगे! तुम्हें खुद पर शर्म नहीं आती? तुम कौन सा चुनोगी? स्वस्थ रहना, किसी बीमार की देखभाल करना और ईश्वर से पुरस्कार पाना, या फरि पीड़ा सहना, पैर न हिला पाना, खुद को नम्र करके कहना: 'कृपया मेरे लिए एक बत्तख ला दो, मुझे दूसरी तरफ पलटा दो, मुझे दीवार के और करीब कर दो...'" जब उस महिला ने मेरी बात सुनी, तो वह थोड़ी शर्मिदा हो गई।

परिवार में ऐसी कोई समस्या नहीं होती अगर बच्चे अपने बूढ़े माता-पिता की जगह खुद को रख लें, या अगर बहू अपनी सास की जगह खुद को रखकर सोचे: 'आखिरकार, मैं भी एक दिन बूढ़ी हो जाऊँगी; एक दिन मैं खुद सास बनूँगी — और क्या मुझे अच्छा लगेगा अगर मेरी बहू मुझ पर ध्यान ही न दे?'

एक अभिभावक का आशीर्वाद

माता-पति का आशीर्वाद वह सबसे बड़ी वरिसत है जो माता-पति अपने बच्चों को छोड़कर जाते हैं। इसलिए बच्चों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे इसे प्राप्त करें। बस देखिए कविकाब ने अपने पति का आशीर्वाद पाने के लिए कतिनी दूर तक गया—उसने यहाँ तक कभिड़ की खाल पहन ली!⁶²

एक माँ का आशीर्वाद वाकई में एक महान चीज है! एक बार किसी ने कहा था: 'मेरी माँ का हर शब्द सोने के सक्के जैसा होता है।' हाल ही में जोहान्सबर्ग से एक ग्रीक व्यक्ति मुझसे मिलने आया था। क्या आप जानते हैं उसने मुझ पर क्या छाप छोड़ी? वह पतझड़ में मेरे कालीवा में मुझसे मिलने आया था। "गेरोंडा," उसने कहा, "मेरी माँ बीमार हो गई हैं, और मैं उन्हें देखने आया हूँ।" मुश्कलि से तीन महीने ही बीते थे कविह कुरसिमस पर फरि आया। "क्या, तुम फरि आ गए?" मैंने पूछा। "हाँ," उसने जवाब दिया। 'मैंने सुना है कभिरी माँ फरि से बीमार हैं और मैं उनका हाथ चूमने आया हूँ, क्योंकि उनकी उम्र बढ़ रही है और वे मर भी सकती हैं। मेरे लिए, मेरी माँ का आशीर्वाद मेरा सबसे बड़ा खजाना है।' साठ साल का एक आदमी — और वह सरिफ अपनी माँ का हाथ चूमने के लिए जोहान्सबर्ग से ग्रीस तक की यात्रा करता है! और अब ईश्वर ने इस व्यक्ति को इतनी संपन्नता दी है कविह पादरयों के लिए एक बड़ा केयर होम स्थापति करके उसे चर्च को दान करना चाहता है। दूसरे शब्दों में, कहा जा सकता है कविह आशीर्वादों से अभिभूत है और नहीं जानता कउनका क्या करे! ऐसी आत्मा मेरे लिए मरहम की तरह है। यह ऐसा है जैसे आप सहारा रेगस्तान में चल रहे हों और अचानक आपको थोड़ा सा पानी मिल जाए। धीरे-धीरे, वह सब सूख जाता है और गायब हो जाता है।

और एक आदमी मेरी झोपड़ी में आँसुओं से भरकर मेरे पास आया। "पतिजी," उसने कहना शुरू किया, "मेरी माँ ने मुझे शाप दे दिया है। और अब मेरे परिवार पर बीमारी और मुसीबत का कहर छाया हुआ है, और कामकाज में भी सब कुछ गड़बड़ हो रहा है..." "तुमने ही अपनी माँ को कोई न कोई वजह दी होगी," मैंने जवाब दिया। 'आखरिकार, वह तुम्हें बनिा किसी वजह के शाप नहीं दे सकती थी।' 'हाँ,' उसने कहा, 'उस समय मैं वाकई एक बहुत ही नालायक बेटा था...' 'जाओ,' मैंने कहा, 'और अपनी माँ से माफी माँगो।' 'मैं ऐसा ही करूँगा, पतिजी,' उसने जवाब दिया। 'मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए।' मैंने उससे कहा, 'मैं तुम्हें अपना आशीर्वाद देता हूँ, लेकिन तुम्हें अपनी माँ का आशीर्वाद भी लेना होगा।' उसने कहा, "मुझे संदेह है कविह मुझे अपना आशीर्वाद देगी।" मैंने कहा, "जाओ, उसके पास, और अगर वह तुम्हें आशीर्वाद न दे, तो उससे यह कहना: 'एक बुजुर्ग ने मुझसे कहा कितुम भी एक दनि अपनी आत्मा ईश्वर को अर्पति करोगे।' वह अपनी माँ के पास गया, और उन्होंने उसे इस प्रकार आशीर्वाद दिया: 'मेरे बच्चे, तुझ पर अब्राहम का आशीर्वाद बना रहे!' कुछ समय बीता, और वह माउंट अथोस लौट आया, और मेरे लिए उपहार लाया—चेरी का कंपोट और टर्कशि डलीट। वह आनंद से भरपूर था। उसके बच्चे स्वस्थ थे, और काम पर भी सब कुछ ठीक चल रहा था। उसकी आँखों में आँसू थे, और वह बार-बार कहता रहा, 'ईश्वर की महमि हो।' इस आदमी का जीवन बदल गया था, और वह केवल आध्यात्मिक बातों के बारे में ही बात करता था। और अगर कोई व्यक्ति शुरु से ही अपने माता-पति का सम्मान करता है तो क्या कहा जा सकता है! ऐसा व्यक्ति ईश्वर का आशीर्वाद कैसे नहीं पा सकता?

भाग 4. आध्यात्मिक जीवन

⁶² उत्पत्ति 27 देखें।

"ईश्वर से प्रेम करने, उनके महान बलदान और उनकी कृपाओं को पहचानने, तथा तरक के द्वारा स्वयं को संतों का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करने पर, एक व्यक्ति शीघ्र ही पवत्रि हो जाता है: वह स्वयं को नम्र करना आरंभ कर देता है, अपनी अयोग्यता और ईश्वर के प्रति अपनी महान कृतघ्नता को महसूस करने लगता है।"

अध्याय 1. परिवार के भीतर आध्यात्मिक जीवन

जतिना अधिक कोई व्यक्ति शिकायत करता है, उतना ही अधिक वह स्वयं को नष्ट करता है

— गेरोन्डा, शिकायत कहाँ से शुरू होती है, और इससे कैसे बचा जा सकता है?

— बड़बड़ाहट अपनी बदकस्मिती की भावना से उत्पन्न होती है, और इसे [ईश्वर] का धन्यवाद देकर दूर किया जा सकता है। बड़बड़ाहट बड़बड़ाहट को जन्म देती है, जबकि धन्यवाद कृतज्ञता को जन्म देता है। यदि किठनाइयों का सामना करते समय कोई व्यक्ति शिकायत नहीं करता, बल्कि ईश्वर की स्तुति करता है, तो शैतान क्रोध से फट पड़ता है और किसी और के पास चला जाता है — उस व्यक्ति के पास जो शिकायत करता है — ताकि उसे और भी बड़ी परेशानी में डाल सके। क्योंकि कोई व्यक्ति जतिना अधिक शिकायत करता है, उतना ही अधिक वह स्वयं को नष्ट करता है। कभी-कभी शैतान हमसे चुरा लेता है और हमें कुछ भी पाकर संतुष्ट न होने की शक्ति देता है, जबकि हमारे साथ जो कुछ भी होता है, उसका हम आध्यात्मिक आनंद और प्रशंसा के साथ सामना कर सकते हैं, और हमें ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो सकता है। मैं पवत्रि पर्वत पर एक भिक्षु को जानता हूँ। अगर बारिश शुरू हो जाए और आप उससे कहें, 'फरि से बारिश हो रही है,' तो वह शुरू कर देता है: 'हाँ, मूसलाधार बारिश हो रही है। हम इस सारी नमी से जल्द ही सड़ जाएँगे।' अगर थोड़ी देर बाद बारिश रुक जाए और आप उससे कहें, 'बारिश रुक गई है,' तो वह जवाब देगा, 'हाँ, लेकिन क्या वह सच में बारिश है? ऐसी बारिश तो सब कुछ मुरझा ही देगी...' आप यह नहीं कह सकते कि इस आदमी के दमिग में कुछ गड़बड़ है। नहीं। वह बस बड़बड़ाने का आदी है। वह होश में है, फरि भी सोचता है जैसे पागल हो!

बड़बड़ाने में एक शाप है। यानी, जो व्यक्ति बड़बड़ाता है वह असल में खुद को ही शाप दे रहा होता है, और फरि उस पर ईश्वर का क्रोध आता है। एपरिस में, मैं दो कसिनों को जानता था। एक के पास परिवार और दो छोटी-छोटी जमीनें थीं, और वह सब कुछ आत्मविश्वास के साथ ईश्वर के भरोसे छोड़ देता था। वह चिंता से खुद को पीड़ित किए बिना, अपनी पूरी क्षमता से काम करता था। वह कहा करता था, 'जो कुछ भी मैं कर पाऊँगा, कर लूँगा।' कभी-कभी वह समय पर भूसा नहीं ला पाता और वह बारिश में सड़ जाता; कभी-कभी हवा भूसे के ढेरों को बखिर देती; फरि भी वह कहता, 'तेरा ही महिमा हो, हे ईश्वर,' और उसके लिए सब कुछ ठीक हो जाता। एक दूसरे आदमी के पास बहुत जमीन, गायें और इसी तरह की चीजें थीं। उसके कोई बच्चे नहीं थे। अगर आप इस आदमी से पूछते, 'आप कैसे हैं?', तो वह जवाब देता, 'पहले तो यह मत पूछो कि हालात कैसे चल रहे हैं।' वह कभी नहीं कहता था, 'हे ईश्वर, तेरा यश हो,' बल्कि हमेशा बड़बड़ाता और शिकायत करता रहता था। और आपको वह हाल देखना चाहिए था: पहले एक गाय मर जाती, फरि उसके साथ कोई और अप्रिय घटना घटती, फरि कुछ और... इस आदमी के पास सब कुछ था, लेकिन वह तरककी नहीं कर पाया।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि धन्यवाद देना एक महान बात है। ईश्वर हमें आशीर्वाद देता है, लेकिन हम उनका लाभ उठाते हैं या नहीं, यह हम पर निर्भर करता है। हालांकि, हम उनका लाभ कैसे उठा सकते हैं यदि उदाहरण के लिए, ईश्वर हमें एक केला देता है, फरि भी हम किसी और स्वादपिष्ट व्यंजन के बारे में सोचने लगते हैं जसै कोई करोड़पति रहा है? क्या आप जानते हैं कि कितने लोग एक ही बासी बस्किट खाते हुए

दनि-रात ईश्वर की स्तुति करते हैं और द्रव्य मठास का आस्वादन करते हैं! ये लोग आध्यात्मिक संवेदनशीलता प्राप्त करते हैं और समझ जाते हैं कि ईश्वर का हाथ उन्हें कब सहलाने लगता है। लेकिन हम इसे नहीं समझते, क्योंकि हमारे हृदय कठोर हो गए हैं और हमें कुछ भी संतुष्ट नहीं करता। हम यह महसूस करने में असफल रहते हैं कि सिच्ची खुशी उस चीज़ में नहिं है जो शाश्वत है, न कि इस दुनिया की क्णभंगुर चीज़ों में।

आइए हम ईश्वर को अपने जीवन का मार्गदर्शन करने दें

— जेरोंडा, सुसमाचार में परमेश्वर के राज्य की तुलना सरसों के दाने से क्यों की गई है: '... जब इसे जमीन में बोया जाता है, तो यह पृथ्वी पर सभी बीजों में सबसे छोटा होता है; लेकिन जब इसे बोया जाता है, तो यह बढ़ता है और सभी पौधों में सबसे बड़ा हो जाता है...' ⁶³

— सरसों का दाना बहुत छोटा होता है, लेकिन जब पौधा बढ़ता है, तो यह एक बड़ा झाड़ बन जाता है। यहाँ तक कि पक्षी भी इसकी टहनियों पर बैठ सकते हैं। परमेश्वर के वचन की तुलना सरसों के दाने से की जाती है, क्योंकि सुसमाचार के एक ही छोटे से वचन से, एक व्यक्ति बढ़ता है और परमेश्वर के राज्य को समझने लगता है।

— गेरोंडा, कोई व्यक्ति उस बात का अनुभव कैसे कर सकता है जो पवित्र धर्मग्रंथ कहता है: 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है?' ⁶⁴

— सुन, धन्य आत्मा: जब हम अपने भीतर जन्म की खुशी का एक हिस्सा बसाते हैं, तो परमेश्वर का राज्य हमारे भीतर है। इसके विपरीत, जब हम अपने भीतर आंतरिक कलह और अंतरात्मा की पीड़ा को पालते हैं, तो हम अपने भीतर नरक की यातनाओं का एक हिस्सा लिए चलते हैं। यह एक महान बात है यदि कोई व्यक्ति इसी जीवन में स्वर्ग की आनंद का एक अंश अनुभव करने लगे। और इसे प्राप्त करना कठिन नहीं है; हालाँकि, दुर्भाग्यवश, हमारी स्वार्थपरता हमें इस आध्यात्मिक महानता को प्राप्त करने से रोकती है।

ईश्वर को एक प्रेमपूर्ण पति के रूप में स्वीकार करके, हम स्वयं अपने जीवन को स्वर्ग बना सकते हैं। हमें ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए, जो कुछ भी हम करना चाहते हैं उसमें अपनी आशा उसी में रखनी चाहिए — और हर चीज़ के लिए उसी की महिमा करनी चाहिए। हमें अपने दिलों में चिंता नहीं पालनी चाहिए। चिंता इंसान को भावनात्मक टूटन तक ले जाती है; यह आत्मा को लकवाग्रस्त कर देती है। यदि कोई व्यक्ति स्वर्ग के राज्य की खोज करता है, तो उसे बाकी सब कुछ दिया जाएगा। सुसमाचार कहता है: 'पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करो,' ⁶⁵ और यह भी, 'परमेश्वर का राज्य उन लोगों द्वारा प्राप्त किया जाता है जिन्हें इसकी आवश्यकता है' ⁶⁶

आजकल, लोगों ने अपना जीवन और भी जटिल बना लिया है क्योंकि वे थोड़ी सी चीज़ों से संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि लगातार भौतिक वस्तुओं के पीछे भागते रहते हैं। हालाँकि, जो लोग एक सच्चा, प्रामाणिक आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहले थोड़ी सी चीज़ों से संतुष्ट होना सीखना चाहिए। यदि लोग अपने जीवन को सरल बना लें, यदि उनका जीवन अनेक चिंताओं से बोझिल न हो, तो यह उन्हें सांसारिक चिंताओं से मुक्त कर देगा और आध्यात्मिक साधना के लिए उन्हें अवकाश देगा। अन्यथा, नवीनतम प्रवृत्तियों के साथ कदम से कदम मिलाने के प्रयास में लोग थक जाएंगे, अपनी शांति और प्रसन्नता खो देंगे, और अपने हृदय में गहरी बेचैनी महसूस करेंगे।

मैं देखता हूँ कि लोग कभी-कभी अपनी ज़िंदगी को खुद ही एक असली कष्ट में क्यों बदल देते हैं! आज, जब मैं माउंट अथोस से निकल रहा था, तो उरानोपोलिस का एक आदमी अपनी कार में मुझे यहाँ मठ तक

⁶³ मार्क 4:31-32। देखें: मत्ती 13:32, लूका 13:19।

⁶⁴ लूका 17:21.

⁶⁵ मत्ती 6:33.

⁶⁶ तुलना करें मत्ती 11:12 से।

लफिट दे गया, और रास्ते में उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं थोड़ी देर के लिए उसके घर आ सकता हूँ। चूंकि वह बहुत ज़िद कर रहा था, मैं उसे नाराज़ नहीं करना चाहता था। जैसे ही हम उसके घर के दरवाजे पर पहुँचे, मैंने देखा कि वह अपने जूते उतार रहा था और उंगलियों के बल चलकर गलियारे में जा रहा था। मैंने उससे पूछा, "तुम्हें क्या हुआ है? तुम इतनी अजीब तरह से क्यों चल रहे हो?" उसने जवाब दिया, "चिंता की कोई बात नहीं, गैरोना, मैं बस सावधानी से कदम रखने की कोशिश कर रहा हूँ ताकि पार्कट फर्श को नुकसान न पहुँचे।" खैर, क्या कहा जा सकता है? लोग बना किसी वजह के खुद को ही तकलीफ देते हैं।

दूसरों के प्रति सहानुभूति परिवार की मदद करती है।

आजकल लोग जितनी अधिक [भौतिक] संपत्ति प्राप्त करते हैं, उन्हें उतनी ही अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे न तो ईश्वर की कृपा के लिए धन्यवाद देते हैं, और न ही वे अपने पड़ोसियों की बदकस्मिती को देखते हैं। और क्योंकि वे अपने पड़ोसियों की बदकस्मिती को नहीं देखते, वे उन्हें दान नहीं देते। लोग बेमतलब पैसा खर्च करते हैं और अपने उस पड़ोसी के बारे में नहीं सोचते जिसके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है। तो फिर, ईश्वर की कृपा उन तक कैसे पहुँच सकती है? भले ही किसी व्यक्ति का परिवार हो, उसे फिर भी किसी न किसी चीज़ में मतिव्ययति बरतनी होती है और दूसरों को दान देने के लिए पैसे अलग रखना होते हैं। उसे अपनी पत्नी और बच्चों को यह समझाने की ज़रूरत है कि किहीं कोई बीमार व्यक्ति है जिससे सभी ने छोड़ दिया है, या कोई गरीब परिवार है जिससे बहुत ज़रूरत है। और यदि उनके पास दुर्भाग्यशाली लोगों की मदद करने के लिए पैसे नहीं हैं, तो उन्हें अपने प्रियजनों से कहना चाहिए: 'आओ, हम कम से कम इन दुर्भाग्यशाली लोगों को एक या दो ईसाई कतिबे तो दे दें; आखिरकार, हमारे पास उनकी कोई कमी नहीं है।' ज़रूरतमंदों को दान देकर, एक व्यक्ति स्वयं और अपने परिवार, दोनों की मदद करता है।

क्या आप जानते हैं कि रूस में गरीब वशिवासियों को कतिनी ज़रूरत है! एक बार, मैंने एक रूसी पादरी को धूप की एक छोटी सी डब्बि दी और कहा, 'कृपया इस मामूली उपहार को स्वीकार करें।' लेकिन क्या यह वास्तव में एक मामूली उपहार है? उन्होंने जवाब दिया। 'आखिरकार, रूस में आपको इतनी अच्छी धूप नहीं मिलती।' और क्या आप जानते हैं कि रूस और अन्य देशों के शरणार्थी यहाँ ग्रीस में कतिनी तकलीफ झेल रहे हैं? चल्कदिकी में, मैं एक ऐसे व्यक्ति से मिला जो रूस से आया था। वह पत्थर की पट्टियाँ बछि रहा था, प्रतविर्ग मीटर तीन सौ ड्रैकमा कमा रहा था⁶⁷, और उसने कहा: 'तेरा महमि हो, हे ईश्वर, कि हमारे पास रोटी है।' तो, जब एक ठेकेदार ने मुझसे शिकायत की कि काम करते समय वह खुद को पापों का 'बोझ' दे रहा है, तो मैंने जवाब दिया: 'अगर आप इन शरणार्थियों को काम देते हैं और उनकी मदद करते हैं, तो आप खुद को पाप से मुक्त कर लेंगे। आखिरकार, इन बेचारों के पास रहने के लिए कोई जगह नहीं है। इनकी तुलना में, आप ओनाससि हैं।'⁶⁸

हममें सदगुणों को विकसित करने की अपनी इच्छा में, ईश्वर बीमारी, गरीबी और इसी तरह की परिस्थितियों को अनुमति देता है। आखिरकार, ईश्वर बीमारों को ठीक कर सकता है और गरीबों को धनी बना सकता है; वह सभी की आवश्यकताओं की पूर्तिकर सकता है, लेकिन तब हमें यह झूठा भ्रम होगा कि हम सदगुणी हैं। हम खुद को, उदाहरण के लिए, दयालु कह लेंगे, जबकि वास्तव में हम ऐसे नहीं होंगे, जबकि अब हमारे गुण हमारे कर्मों से स्पष्ट होते हैं। ईश्वर का धन्यवाद है कि ऐसे लोग हैं जो अपने पड़ोसी के लिए खुद को बलिदान कर देते हैं। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था जिससे सेना से रहिा होते ही तुरंत और अन्यायपूर्ण ढंग से एक लंबे समय की कैद की सज़ा सुनाई गई। उसने एक परिवार को बचाने के लिए यह जानबूझकर चुना। इस व्यक्ति ने इस बात पर कोई विचार नहीं किया कि वह खुद को समझौता करेगा, न ही अपने भविष्य के करियर पर।

⁶⁷ 1992 में दिया गया। लगभग एक अमेरिकी डॉलर।

⁶⁸ अरस्तू ओनाससि (1900-1975) – एक ग्रीक करोड़पति और दुनिया के सबसे बड़े जहाज मालिक, दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक थे।

मैं देख सकता हूँ कि ईश्वर इस तरह व्यवस्था करता है कि हर परिवार में कम से कम एक ऐसा व्यक्ति हो जिससे आस्था और धर्मपरायणता प्राप्त हो, ताकि परिवार के अन्य सदस्य भी सहायता प्राप्त कर सकें। कोनिका में, मैं एक ऐसे परिवार को जानता था जिसमें सभी सदस्य चर्च के प्रति उदासीन थे, सिवाय एक बेटी के। जैसे ही इस युवती ने घंटी की आवाज सुनी, वह अपना एपन उतार देती, सारे काम अधूरे छोड़ देती और चर्च की ओर दौड़ पड़ती। यहाँ तक कि जब जर्मन गाँव में आए और सेक्सटन लोगों को चेतावनी देने के लिए घंटी बजाने लगा, तब भी यह युवती संध्या की प्रार्थना के लिए चर्च दौड़ पड़ी! और यद्यपि उसके माता-पिता बहुत कंजूस थे, वह स्वयं बहुत दयालु थी। कंजूसी के कारण, इस लड़की का पिता ठीक से भोजन नहीं करता था, बल्कि पानी में भीगी हुई सूखी रोटी खाता था। उसकी माँ भी बहुत कंजूस थी! इस तथ्य के बावजूद कि उसके बच्चे ज़िम्मेदार पदों पर थे और अमीर थे, वह, एक माचिस की तीली भी बर्बाद न करने के लिए, राख में से अभी भी जलता हुआ कोयला खोजने के लिए छानती और उससे आग जलाने के लिए भूसे का एक टुकड़ा इस्तेमाल करती। एक कॉफी पॉट खरीदने से बचने के लिए, वे एक टन के डब्बे में कॉफी बनाते थे।

लेकिन उसकी माँ मुझे पसंद करती थी। उस समय मैं स्टोमयिन मठ में रहता था। और इसलिए, जब भी यह लड़की अपने कंजूस माता-पिता के घर से कुछ लेकर किसी गरीब को दान करना चाहती, और चोरी-छिपि नहीं ले पाती, तो वह अपनी माँ से कहती: "मम्मी, एक भिक्षु को इसकी ज़रूरत है।" 'उसे दे दो, उसे दे दो,' उसकी माँ जवाब देती। वह कंजूस औरत केवल भिक्षुओं को ही कुछ देने के लिए तैयार होती थी। और कबजे के दौरान, उसकी बेटी गुप्त रूप से गरीबों की मदद करती थी। वह गोदामों से चुपके से गेहूँ निकालती, उसे अपने कंधों पर लादकर चक्की तक ले जाती, उसे पीसती और आटे को गरीब परिवारों में बाँट देती। एक बार, उसकी माँ ने उसे 'लाल हाथों' पकड़ लिया। उस लड़की की खूब फटकार लगाई गई! तब उसने ईश्वर से एक प्रण लिया। 'हे ईश्वर,' उसने कहा, 'मुझे कोई नौकरी दिलाने में मदद करो, और मैं अपनी पूरी तनख्वाह दान में दे दूँगी।' और अगले ही दिन, उसे एक धर्मार्थ संगठन में नौकरी का प्रस्ताव मिला। ओह, वह कतिनी प्रसन्न हुई! उसने अपना वादा नभिया: उसने अपनी कमाई से अपने लिए मोजे की एक जोड़ी भी नहीं खरीदी; वह सब कुछ दान में दे दिया। क्या आप जानते हैं कि अब कतिने लोग उससे कहते हैं: 'भगवान आपको सलामत रखें। आपके माता-पिता की राख को आशीर्वाद मिले!' और इस प्रकार, उसके दान के कारण, भगवान ने बाद में उसकी माँ पर भी दया की।

परिवार में सदगुणों का संवर्धन

— जेरोंडा, परिवार वाला व्यक्ति अपने भीतर सदगुण कैसे विकसित कर सकता है?

— ईश्वर इसके लिए अनुकूल अवसर प्रदान करता है। लेकिन कई लोग, यद्यपि वे ईश्वर से सदगुणों को विकसित करने के लिए अनुकूल अवसर देने का आग्रह करते हैं, जब उन्हें कोई कठिनाई होती है तो वे शिकायत करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, कभी-कभी परमेश्वर अपने असीम प्रेम से, पत में वनिम्रता और धैर्य विकसित करने की इच्छा से, अपनी कृपा उसकी पत्नी से वापस ले लेते हैं, जो तब 'नखरेबाज' ढंग से व्यवहार करने और अपने पति के साथ असभ्य व्यवहार करने लगती है। इस मामले में, पति को शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि उस अनुकूल अवसर के लिए प्रसन्न होना चाहिए और ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए जो वह उसे सदगुण का एक कार्य करने के लिए दे रहे हैं। या, उदाहरण के लिए, एक माँ ईश्वर से धैर्य प्रदान करने के लिए प्रार्थना करती है। फिर वह मेज़ पर खाना लगाती है; उसका बच्चा मेज़ के पास आता है, मेज़पोश के कनारे को खींचता है, और सारा बर्तन-भाँडा फर्श पर गिर जाता है। ऐसा है मानो वह नन्हा बच्चा अपनी माँ से कह रहा हो: "मम्मी, धैर्य रखो!"

किसी भी हाल में, आज की दुनिया में मौजूद कठिनाइयाँ उन लोगों को, जो थोड़ा भी आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते हैं, सतर्क रहने और आँखें बंद न करने के लिए मजबूर करती हैं। जब, ईश्वर न करे, कोई युद्ध छिड़ जाता है, तो लोग अपनी चौकसी नहीं छोड़ते और अपनी आँखें नहीं बंद करते। मेरी दृष्टि में, कुछ ऐसा ही अब उन लोगों के साथ हो रहा है जो आध्यात्मिक जीवन जीने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, उन

युवाओं को लें जो चर्च-केंद्रित जीवन जीते हैं। उन्हें, उन बेचारे प्राणियों को, कतिनी कठिनाइयों को सहना पड़ता है! फरि भी, जसि घनौनी दुनिया में वे रहते हैं, उससे उन्हें जो शत्रुता का सामना करना पड़ता है, वह कसी तरह उन्हें सतर्क रहने में मदद करती है। लेकिन शांतिके समय, जब कोई कठिनाइयाँ नहीं होती हैं, तो आप देखते हैं कि अधिकांश लोग आस्था और नैतिकता के मामलों के प्रति उदासीन रहते हैं। फरि भी लोगों को इन शांतपूर्ण समय का भी उपयोग आध्यात्मिक प्रगति के लिए करना चाहिए: उन्हें अपने दोषों को दूर करने और सद्गुणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

आध्यात्मिक जीवन में मौन बहुत सहायक होता है। अपनी दैनिक दिनचर्या को इस तरह व्यवस्थित करना अच्छा होता है कि उसमें मौन के लिए एक निश्चित समय शामिल हो। इस घंटे के दौरान, व्यक्तियों को अपने भीतर गहराई से झाँककर अपनी वासनाओं को पहचानना चाहिए और उन्हें त्यागने तथा अपने हृदय को शुद्ध करने के लिए शक्ति जुटानी चाहिए। यह भी बहुत अच्छा है यदि घर में एक शांत कमरा हो, जिसका वातावरण एक मठ की कोठरी जैसा हो। वहाँ, 'गुप्त रूप से'⁶⁹, कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों को पूरा कर सकता है, आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ सकता है और प्रार्थना कर सकता है। यदि प्रार्थना से पहले आध्यात्मिक पठन का एक संक्षिप्त समय हो, तो यह बहुत मददगार होता है, क्योंकि ऐसा पठन आत्मा को गर्म करता है और मन को आध्यात्मिक क्षेत्र में ले जाता है। इसलिए, यदि दिन भर कई चीजों से वचिलित रहने वाले व्यक्तियों के पास प्रार्थना के लिए दस मिनट हैं, तो उनके लिए अपनी वचिलिता को दूर करने के लिए उस समय में से दो मिनट कुछ गहन पढ़ने में बिताना बेहतर है।

— गेरोन्डा, क्या आपको नहीं लगता कि आज की दुनिया में आप जसि तरह का जीवन वर्णन कर रहे हैं, उसे जीना काफी मुश्किल है?

— नहीं, ऐसे गृहस्थ भी होते हैं जो बहुत आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। वे तपस्वियों की तरह रहते हैं: वे उपवास रखते हैं, प्रार्थना सभाओं में जाते हैं, माला जपकर प्रार्थना करते हैं और प्रणाम करते हैं — भले ही उनके बच्चे और पोते-पोतियाँ हों। रविवार को, ऐसे लोग चर्च जाते हैं, पवित्र Communion ग्रहण करते हैं और अपनी 'कोठरी' में लौट आते हैं, ठीक वैसे ही जैसे संन्यासी जो रविवार को मठ के गरिजाघर में आते हैं और फरि से मौन में जीने के लिए अपनी कोठरियों में लौट जाते हैं। भगवान का शुक्र है, दुनिया में ऐसी कई आत्माएँ हैं। और खास तौर पर कहूँ तो, मैं एक ऐसे परिवार के मुखिया को जानता हूँ जो जहाँ भी हो, लगातार यीशु प्रार्थना का जाप करता है। यह आदमी प्रार्थना करते समय हमेशा रोता है। उसकी प्रार्थना सहज हो गई है, और उसके आँसू मीठे हैं; वे दिव्य आनंद के आँसू हैं। मुझे पवित्र पर्वत पर एक मजदूर भी याद है। उसका नाम यानसि था। वह बहुत कड़ी मेहनत करता था और दो लोगों का काम एक अकेले करता था। मैंने उसे काम करते समय यीशु की प्रार्थना का जाप करना सखाया, और धीरे-धीरे वह इसकी आदत में आ गया। एक दिन वह मेरे पास आया और कहा कि यीशु की प्रार्थना का जाप करते समय उसे बहुत आनंद महसूस हुआ। "भोर हो रही है," मैंने जवाब दिया। कुछ ही समय बाद, मुझे पता चला कि इस आदमी को दो नशे में धुत गुंडों ने मार डाला था। मुझे कतिनी गहरी पीड़ा हुई! कुछ और दिन बीत गए, और एक भिक्षु उस औजार को ढूँढ़ने लगा जिससे यानसि ने कहीं रख दिया था लेकिन उसे नहीं मिला रहा था। और फरि यानसि उसे सपने में दिखाई दिए और उसे बताया कि उसने वह औजार कहाँ रखा था। इस व्यक्ति ने एक आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर ली थी और वह परलोक से भी दूसरों की मदद करने में सक्षम था।

आध्यात्मिक जीवन कतिना सरल है! ईश्वर से प्रेम करके, उनके महान बलदान और उनकी कृपाओं को स्वीकार करके, और एक स्पष्ट मन के साथ स्वयं को संतों का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करके, एक व्यक्ति शीघ्र ही पवित्र हो जाता है। इसके लिए केवल इतना आवश्यक है कि स्वयं को नम्र करें, अपनी दयनीयता और ईश्वर के प्रति अपनी महान कृतघ्नता को पहचानें।

⁶⁹ मत्ती 6:4 देखें।

परिवार में प्रार्थना

— जेरोंडा, क्या पूरे परिवार को एक साथ वेस्पर्स का पाठ करना चाहिए?

— वयस्कों को इस संबंध में उदारतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए। उन्हें वेस्पर्स सेवा का पाठ करना चाहिए और छोटे बच्चों से कहना चाहिए: 'अगर आप चाहें, तो आप थोड़ी देर के लिए हमारे साथ प्रार्थना कर सकते हैं।' जब बच्चे थोड़े बड़े हो जाएँ, तो वे प्रार्थना के संबंध में एक नश्चिती 'दनिचर्या' का पालन कर सकते हैं: उदाहरण के लिए, यदवियस्क पंद्रह मिनट तक प्रार्थना करते हैं, तो बच्चे दो या पाँच मिनट तक प्रार्थना कर सकते हैं — और यदवि अधिक समय तक प्रार्थना करना चाहते हैं, तो उन्हें जितनी देर चाहिए प्रार्थना करने दें। यदमाता-पति अपने बच्चों को उनके साथ पूरी शाम की प्रार्थना खड़े रहने के लिए मजबूर करते हैं, तो बच्चे अंततः 'हंगामा करने' लगेंगे।" हमें बच्चों पर दबाव नहीं डालना चाहिए, क्योंकि उन्होंने अभी प्रार्थना की शक्ति और महत्व को नहीं समझा है। उदाहरण के लिए, माता-पति बीन्स, मांस और कोई भी अन्य ठोस भोजन खा सकते हैं। हालांकि, अगर एक बच्चा अभी भी केवल दूध पर ही पल रहा है, तो क्या माता-पति उसे सिर्फ इसलिए मांस खिलाने के लिए मजबूर करेंगे क्योंकि उसमें कैलोरी अधिक होती है? यह वास्तव में कैलोरी में अधिक होता है, लेकिन बच्चा अभी इसे पचाने में सक्षम नहीं है। इसलिए, शुरुआत में, बच्चे को मांस खाने की आदत डालने के लिए, माता-पति इसे बहुत कम मात्रा में देते हैं — मांस के शोरबे की एक चम्मच में एक छोटा सा टुकड़ा — ताकि बच्चा अंततः अपनी मर्जी से ऐसा भोजन खाना चाहे।

— जेरोंडा, कभी-कभी सिर्फ बच्चे ही नहीं, बल्कि वियस्क भी शाम तक इतने थक जाते हैं कि वे शाम की प्रार्थनाएँ भी नहीं पढ़ पाते।

— यदवि बहुत थके हुए या बीमार हों, तो उन्हें संपूर्ण प्रार्थना के बजाय आधी प्रार्थना ही कराएं। या कम से कम एक बार 'प्रभु की प्रार्थना' कराएं। प्रार्थना को बिल्कुल भी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। जैसे युद्ध के समय एक सैनिक, जो ऊँची जगह पर दुश्मनों से घिरा हो, दुश्मनों को दूर रखने और उन पर हमला करने से रोकने के लिए समय-समय पर अपनी बंदूक से गोली चलाता है, वैसे ही उन लोगों को भी, जिनमें पूरी प्रार्थना करने की ताकत नहीं बची है, [आध्यात्मिक] गोली चलाकर तांगलाशका को उनसे डरकर भागने के लिए मजबूर करना चाहिए।

परिवार में प्रार्थना एक शक्तिशाली शक्ति है। मैं दो भाइयों को जानता हूँ जिन्होंने अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से न केवल अपने अलग-थलग पड़े माता-पति को तलाक लेने से रोका, बल्कि उन्हें पहले से भी अधिक करीब ला दिया। हमारे पति हमें कहते थे: "तुम जो कुछ भी कर रहे हो, तुम्हें दनि में दो बार ईश्वर को रिपोर्ट करनी होगी — ताकि उन्हें पता रहे कि तुम कहाँ हो।" हर सुबह और हर शाम, हम सभी - पति, माता, भाई और बहनें - आइकनोस्टेस (चित्रपट्ट) के सामने प्रार्थना करते थे, और प्रार्थना के अंत में हम मसीह की प्रतीति के सामने झुकते थे। और जब भी हमारा परिवार किसी प्रलोभन या कठिनाई का सामना करता था, तो हम उसके समाधान के लिए प्रार्थना करते थे। मुझे याद है जब एक दनि मेरा सबसे छोटा भाई बीमार पड़ गया था; मेरे पति ने कहा: "चलो जाकर ईश्वर से प्रार्थना करें कि या तो वह उसे ठीक कर दें या उसे अपने पास बुला लें, ताकि उसे कष्ट न सहना पड़े।" हमने एक परिवार के रूप में प्रार्थना की, और हमारा भाई ठीक हो गया। और हम सब साथ में बैठकर खाना भी खाते थे। पहले हम प्रार्थना करते, और फिर खाना शुरू करते। अगर कोई भोजन का आशीर्वाद लिए बिना खाना शुरू कर देता, तो हम कहते, 'उसने व्यभिचार किया है।' हम आत्म-संयम की कमी को व्यभिचार मानते थे। अगर परिवार का हर सदस्य बिना किसी कारण के, जब मन करे घर लौट आए और अकेले खाने के लिए बैठ जाए, तो इससे परिवार का वधितन होता है।

ववाहति जोड़ों का आध्यात्मिक जीवन

— जेरोंडा, अगर पति आध्यात्मिक जीवन नहीं जीता तो पत्नी को क्या करना चाहिए?

— उसे अपने पतकिो मसीह के भरोसे छोड़ देना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि उसका हृदय थोड़ा नरम हो जाए। समय के साथ, मसीह चुपचाप उसके हृदय में 'एक बीज बोएंगे', और उसका पतिवास्त्व में महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा करना शुरू कर देगा। और जैसे ही उसके पतिका दिल थोड़ा नरम हो जाए, पत्नी उनसे उदाहरण के लिए, चर्च तक लफिट देने के लिए कह सकती है। उसे यह कहकर उन्हें मनाने की कोशिश करने की ज़रूरत नहीं है, 'आप चर्च क्यों नहीं करते?', बल्कि बस पूछें: 'क्या आप, अगर आपको बहुत ज्यादा तकलीफ़ न हो, तो मुझे चर्च तक छोड़ सकते हैं?' और, उसे चर्च तक छोड़ने के बाद, पतकिह सकते हैं: 'खैर, जब मैं इतनी दूर आ ही गया हूँ, तो चलो ईश्वर के घर में जाकर एक मोमबत्ती जला आता हूँ।' और यह काफी संभव है कि तब वह धीरे-धीरे अपनी आध्यात्मिक यात्रा जारी रखेंगे।

— गेरौना, क्या एक पत्नी के आध्यात्मिक पति उसके पतकिी किसी भी तरह से मदद कर सकते हैं?

— कभी-कभी, पतकिी मदद करने के लिए, आध्यात्मिक पति को पत्नी के साथ आध्यात्मिक कार्य करना पड़ता है। और फिर पत्नी में जो सद्गुण हैं, वे उसके पति में आ जाएँगे। अगर उसका दिल अच्छा है, तो ईश्वर उसकी बदलने में मदद करेंगे।

एक महिला स्वभाव से ही श्रद्धा की भावना रखती है। लेकिन यदि कोई पुरुष, जो शुरू में चर्च के प्रति उदासीन था, बाद में आध्यात्मिक रूप से होश में आता है, तो वह आत्मविश्वास के साथ आध्यात्मिक मामलों में आगे बढ़ता है, जबकि उसकी पत्नी उसके साथ कदम नहीं मिला पाती। ऐसा भी हो सकता है कि पत्नी उससे ईर्ष्या करने लगे, क्योंकि वह स्वयं आध्यात्मिक रूप से पानी में तैर रही है। इसीलिए, ऐसे मामलों में, मैं पतियों को सतर्क रहने की सलाह देता हूँ। आखिर, क्या होता है? पतिजितना अधिक आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ता है, उसकी पत्नी — यदि वह आध्यात्मिक जीवन नहीं जीती है — उतनी ही अधिक उसके खिलाफ हो जाती है। यदि उदाहरण के लिए, पतकिहता है, 'हम देर हो रहे हैं, उठो और चर्च चलते हैं,' तो वह जवाब देती है: 'तो तुम अकेले ही चले जाओ! नहीं, तुम मुझे समझते नहीं; मुझे बहुत सारा काम करना है...' या अगर पति उदाहरण के लिए, कहता है, 'सुनो, तुम्हारा दीया क्यों नहीं जला है?' या खुद बुझा हुआ दीया जलाना चाहता है, तो वह उसकी इगो को ठेस पहुँचाता है और वह चिल्लाती है, 'क्या, तुम पादरी बनने की योजना बना रहे हो? या भिक्षु बन जाओ?' वह यह भी कह सकती है: "आखिर हम यह दीया जलाते ही क्यों हैं? हम तो तेल किसी गरीब को दे दें, यह बेहतर होगा।" हाँ, हाँ, वह शायद इतनी भी आगे बढ़ जाए। यहाँ तक कि प्रोटेस्टेंटों जैसी बकवास तक। बेशक, बाद में पत्नी अपने बनाए हुए बहानों के ढेर के कारण खुद ही परेशान हो जाती है, लेकिन साथ ही वह अपने पति में जो आध्यात्मिक प्रगति देखती है, उससे भी वह परेशान होती रहती है। इसीलिए, ऐसे मामलों में, पतिद्वारा दीपक जलाने की तुलना में दीपक को बना जलाए छोड़ देना हजार गुना बेहतर है। और इसलिये, परिवारों को टूटने से बचाने के लिए, मैं पतियों को सलाह देता हूँ: 'जब आपकी पत्नी शांत मनस्थिति में हो, तो उससे यह कहें: 'तुम जानती हो, जब मैं चर्च जाता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, थोड़ा झुकता हूँ या कोई आध्यात्मिक किताब पढ़ता हूँ, तो मैं यह किसी महान भक्त के कारण नहीं करता, नहीं। लेकिन क्योंकि यह सब मुझे धीमा कर देता है, मुझे रोकता है और इस भयानक समाज, जिसमें हम रहते हैं, की धारा में बह जाने से बचाता है। वरना, आप जानते हैं कि यह मुझे उन सभी पबों और सामाजिक समारोहों में कैसे घसीट ले जाएगा...' " यदि कोई पति इस तरह से सवाल पूछता है, तो उसकी पत्नी प्रसन्न हो जाती है और वह भी बदल सकती है, यहाँ तक कि आध्यात्मिक रूप से उससे भी आगे निकल सकती है। लेकिन अगर वह सवाल को अलग तरह से पेश करता है, तो वह उसे बहुत नाराज़ कर देता है और उसे नरिशा की स्थिति में धकेल देता है। वे यहाँ तक कि तिलाक भी ले सकते हैं। अगर कोई पति अपनी पत्नी की आध्यात्मिक रूप से मदद करना चाहता है, तो उसे उसे एक ऐसे परिवार से जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए जो आध्यात्मिक जीवन जीता हो, जिसमें माँ और पत्नी धर्मपरायण हों — ताकि वह उनकी नकल करना चाहे।

बच्चे और आध्यात्मिक जीवन

— जेरोंडा, एक माँ अपने बच्चे को पवतिर जल देती है, लेकिन बच्चा उसे थूक देता है। इस मामले में क्या किया जाना चाहिए?

— उसे अपने बच्चे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। शायद वह उसे इस तरह पवतिर जल दे रही है कि वह उसका वरिध कर रहा है। बच्चों को ईश्वर के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, माता-पिता को भी एक धार्मिक आध्यात्मिक जीवन जीना चाहिए। कुछ माता-पिता जो चर्च जाते हैं, वे अपने बच्चों को अच्छे इंसान बनाने की कोशिश करते हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें अपनी आत्माओं की मुक्ति की चिंता है, बल्कि इसलिए कि वे चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छे हों। दूसरे शब्दों में, वे इस बात की अधिक चिंता करते हैं कि दूसरे लोग उनके बच्चों के बारे में क्या कहेंगे, बजाय इस तथ्य के कि उनके बच्चों को शाश्वत यातना का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन उस स्थिति में, ईश्वर कैसे मदद करेंगे? उद्देश्य यह नहीं है कि बच्चे जबरदस्ती चर्च जाएँ, बल्कि यह है कि वे चर्च से प्रेम करने लगें। उन्हें अच्छा काम जबरदस्ती नहीं, बल्कि इसलिए करना चाहिए क्योंकि उन्हें लगता है कि यह एक आवश्यकता है। माता-पिता का पवतिर जीवन बच्चों की आत्मा को छूता है, और फिर बच्चे [अपने पिता और माता] की आज्ञा खुशी-खुशी मानते हैं। इस प्रकार वे भक्ति और सुदृढ़ स्वास्थ्य के साथ बड़े होते हैं, और आध्यात्मिक हानि से बचते हैं। यदि माता-पिता ईश्वर के भय से प्रेरित होकर अपने बच्चों पर कड़ा नियंत्रण रखते हैं, तो ईश्वर मदद करते हैं और बच्चे को सहायता मिलती है। हालाँकि, यदि वे ऐसा स्वार्थ के वश में होकर करते हैं, तो ईश्वर मदद नहीं करते। बच्चे अक्सर अपने माता-पिता के अहंकार के कारण पीड़ित होते हैं।

— जेरोंडा, माताएँ कभी-कभी हमसे पूछती हैं कि तीन या चार साल के बच्चे कैसे और कतिनी प्रार्थना करें?

— उनसे कहें: 'आप माँ हैं, इसलिए आप खुद देख सकती हैं कि आपके छोटे बच्चे में कतिनी ऊर्जा है।' यहाँ किसी तय नियम की जरूरत नहीं है।

— जेरोंडा, माता-पिता अपने छोटे बच्चों को हमारी मठ में रात्रिजागरण के लिए लाते हैं। क्या यह बच्चों के लिए थकाऊ हो सकता है?

— प्रातःप्रार्थना के दौरान, उन्हें बच्चों को थोड़ी देर आराम करने दें। फिर, द्रव्य लटिर्जी के लिए, उन्हें वापस चर्च में लाएँ।

माताओं को अपने बच्चों पर दबाव डाले बिना, उन्हें बहुत छोटी उम्र से ही प्रार्थना करना सिखाना चाहिए। कैपाडोसियाई गांवों के नविसी बड़ी भक्तिके साथ तपस्या की परंपरा का पालन करते थे। वे अपने बच्चों को गुफाओं, चर्चों और प्रार्थना-गृहों में ले जाते थे, जहाँ वे स्वयं को प्रणाम करते और आँसुओं के साथ प्रार्थना करते थे, और इस तरह उनके बच्चे भी प्रार्थना करना सीख गए। जब डाकुओं के गरीह रात में उन्हें लूटने निकलते थे, तो जब वे इन छोटी-छोटी चर्चों से गुजरते थे, तो वे रोना सुनकर हैरान रह जाते थे। वे पूछते, 'क्या हो रहा है? ये किस तरह के लोग हैं? ये दिन में क्यों हँसते हैं और रात में क्यों रोते हैं?' डाकू यह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या हो रहा है।

छोटे बच्चों की प्रार्थनाएँ चमत्कार कर सकती हैं। ईश्वर उन्हें वह सब कुछ देता है जो वे उससे माँगते हैं। आखरिकार, बच्चे शुद्ध और मासूम होते हैं, और इसलिए ईश्वर उनकी शुद्ध प्रार्थनाएँ सुनता है। मुझे एक बार याद है जब हमारे माता-पिता खेतों में काम करने गए थे और मुझे अपने दो छोटे भाइयों के साथ घर पर छोड़ गए थे। अचानक आसमान काला हो गया और एक भयंकर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। "ओह, इस समय हमारे माता-पिता क्या झेल रहे होंगे!" हम चिंतित हो गए। "वे घर कैसे आएँगे?" छोटे बच्चे रोने लगे। "यहाँ आओ," मैंने उन्हें बुलाया। "आओ, हम मसीह से बारिश रुकवाने के लिए प्रार्थना करें।" हम तीनों आइकनोस्टेस (प्रतिमाओं की दीवार) के सामने घुटनों के बल गरि पड़े और प्रार्थना करने लगे। कुछ ही मिनटों बाद, बारिश रुक गई।

वचिरशील माता-पति को अपने बच्चों को बहुत कम उम्र से ही मसीह के करीब आने और आरंभिक वर्षों से ही उच्चतम आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करने में मदद करनी चाहिए। जब बच्चे स्कूल जाना शुरू करते हैं, तो माता-पति को धीरे-धीरे उन्हें आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ना सिखाना चाहिए और एक आध्यात्मिक जीवन जीने में उनकी मदद करनी चाहिए। तब वे छोटे स्वर्गदूतों जैसे होंगे और अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर के सामने उन्हें बड़ी नरिभीकता प्राप्त होगी। ऐसे बच्चे अपने परिवारों के लिए एक सच्ची आध्यात्मिक संपत्ति होते हैं। संतों के जीवन उनकी आध्यात्मिक यात्रा में विशेष रूप से सहायक होते हैं। जब मैं छोटा था, तो मैं उन दिनों प्रकाशित होने वाली संतों के जीवन वाली छोटी-छोटी पुस्तकियाँ लेकर जंगल में चला जाता था। वहाँ मैं पढ़ता, प्रार्थना करता और आनंद से ऊँचा उड़ान भरता था। दस वर्ष की आयु से सोलह वर्ष की आयु तक (जब तक ग्रीको-इटालियन युद्ध शुरू नहीं हुआ⁷⁰), सांसारिक चिंताओं के बोझ से मुक्त, मैंने एक आध्यात्मिक जीवन जिया। एक बच्चे की खुशियाँ शुद्ध होती हैं: वे एक व्यक्ति पर स्थायी छाप छोड़ती हैं और, जब वे बड़े होते हैं, तो उनके दिल को गहराई से छूती हैं। यदि बच्चे एक आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, तो वे इस जीवन में आनंदित रहेंगे, और आने वाले जीवन में वे मसीह की उपस्थिति में अनंत काल तक आनंदित होंगे।

परिवार और दोस्तों के साथ संबंध

— गेरोंडा, एक महिला ने हमसे पूछा कि उसे अपने दो चचेरे भाइयों के बारे में क्या करना चाहिए, जो कई वर्षों से उस पर नरिभर हैं।

— और वह क्या चाहती है? क्या, हमें एक नया सुसमाचार लिखना है? ईश्वर चाहते हैं कि वह उनकी मदद करे, और वह स्वयं उनकी आत्माओं के लिए जो सबसे अच्छा है, वह करेंगे।

— जेरोंडा, अगर परिवार के सदस्यों के बीच कोई गलतफहमी हो जाए, तो क्या उन्हें समझाने के लिए कुछ कहना चाहिए?

— हाँ, हमें उनसे बात करनी चाहिए, लेकिन वविकपूर्ण ढंग से। आखरिकार, अगर हम चुप रहें तो इससे परेशानी हो सकती है। हालाँकि, अगर झगड़ रहे रशितेदारों को सही सलाह देने वाले व्यक्ति को गलत समझ लिया जाए और वे उससे नाराज़ हो जाएँ, तो उसे कहना चाहिए: 'कृपया मुझे माफ़ करें कि मैंने आपको दुखी किया' — और इसके बाद उन्हें चैन से छोड़ दें और उनके लिए प्रार्थना करें।

जो व्यक्ति शांतिपूर्वक जीवन जीना चाहता है, उसे परिवार और मतिरों के साथ अपने संबंधों में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। उसे दूसरों में मलिन वाली वनिम्रता और अच्छे आचरण से धोखा नहीं खाना चाहिए। सांसारिक वनिम्रता और अच्छे आचरण काफी नुकसान पहुँचा सकते हैं — क्योंकि वे पाखंड में जड़ें रखते हैं। किसी व्यक्ति को बाहरी व्यवहार उसे दूसरों की नज़रों में एक आदर्श संत जैसा दिखा सकता है; हालाँकि, जब उसकी आंतरिक दुनिया दूसरों के सामने आती है, तो यह पता चलता है कि वास्तव में इसके वपिरीत ही सच था।

— गेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति महसूस करता है और यह अनुभव करता है कि उसका पड़ोसी उसके साथ दयालुता से पेश आता है, तो क्या यह उचित है कि वह इसके लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करे?

— यदि वह व्यक्ति उससे बहुत करीबी है, तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पहली बात तो यह है कि उसने भी कभी उस व्यक्ति की मदद की थी और उस पर एहसान किए थे, और दूसरी बात यह है कि वह स्वयं उस आंतरिक कृतज्ञता को महसूस करता है जो दूसरा व्यक्ति उसके प्रति महसूस करता है। हालाँकि, यदि किसी व्यक्ति ने उनके लिए एहसान किया या उनके साथ दयालुता दिखाई वह इतना करीबी नहीं है, तो उन्हें अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का पूरा प्रयास करना चाहिए। अजनबियों को हम कहते हैं, 'धन्यवाद।' और यदि उदाहरण के लिए, कोई बच्चा अपने माता-पति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना

⁷⁰ 1940 में ग्रीस और फासीवादी इटली के बीच युद्ध। — अनुवादक की टिप्पणी।

चाहता है, तो उसके पास उनके द्वारा किए गए हर काम के लिए दनि-रात, बनिा रुके, 'धन्यवाद' कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

यह बहुत लाभदायक है यदि कोई व्यक्ति दूसरों के साथ अपने व्यवहार में सीधा-सादा हो, हमेशा उनके बारे में अच्छा सोचे और हर किसी को बहुत गंभीरता से न ले। व्यक्ति को उन बहसों और चर्चाओं से बचना चाहिए जो दिखावटी तौर पर आध्यात्मिक लाभ के लिए की जाती हैं, लेकिन अक्सर सरिदर्द का कारण बनती हैं। जनि लोगों को ईश्वर में विश्वास नहीं है, उनसे आध्यात्मिक समझ की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ऐसे लोगों के लिए प्रार्थना करना बेहतर है कि ईश्वर उन्हें क्षमा करे और ज्ञान प्रदान करे। हर किसी से उनकी समझी जाने वाली भाषा में बात करनी चाहिए, और [एक आसक्ति को] उन महान सच्चाइयों को दूसरों के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए जनि पर वे स्वयं विश्वास करते हैं और जनिहें वे अनुभव करते हैं, क्योंकि दूसरे उन्हें नहीं समझेंगे, क्योंकि वे एक अलग आवृत्ति पर बात करते हैं और एक अलग [आध्यात्मिक] तरंगदैर्घ्य पर हैं।

कुछ कहते हैं: 'मैं चाहता हूँ कि दूसरे भी मसीह को जानें—जैसे कि मैंने उन्हें जाना है।' और ये लोग दूसरों के प्रति ऐसे व्यवहार करने लगते हैं जैसे कि वे शिक्षक हों। हालाँकि, उनका जीवन उनके उपदेश के अनुरूप होना चाहिए। अपने जीवन के द्वारा दूसरों को एक 'मसीह' सिखाते हुए, जबकि वे स्वयं अपनी बातों पर खरे नहीं उतरते, वे यह दावा नहीं कर सकते कि उन्होंने मसीह को जान लिया है। आध्यात्मिक जीवन के अनुभव के बिना, व्यक्ति वास्तविकता से कट जाता है, और देर-सवेर उसका अंतरमन दूसरों के सामने उसे 'बेनकाब' कर देता है। जब हम करुणा और सच्चे प्रेम के साथ अपने पड़ोसी के करीब आते हैं, तो मसीह का यह सच्चा प्रेम उन्हें बदल देता है। जो व्यक्ति पवित्रता से युक्त होता है—चाहे वह कहीं भी हो—वह, कह सकते हैं, अपने चारों ओर एक प्रकार का आध्यात्मिक विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र बनाता है और उस क्षेत्र में प्रवेश करने वालों को प्रभावित करता है। बेशक, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम अपने प्रेम को बर्बाद न करें या अपना दिल दूसरों को बहुत आसानी से न दे दें, क्योंकि अक्सर कुछ लोग हमारे दिल को अपने हाथों में ले लेते हैं, और बाद में उसे [बेवजह] खून से लथपथ कर देते हैं। या फिर वे हमें समझ नहीं पाते और हमसे नाराज हो जाते हैं।

त्योहारों के मौसम में प्रलोभन

— जेरोंडा, त्योहारी मौसम के दौरान हमें आमतौर पर किसी न किसी प्रलोभन का सामना क्यों करना पड़ता है?

— क्या तुम स्वयं नहीं जानते? पर्व के दिनों में मसीह, परमेश्वर की माता और संतों का आनन्द होता है और वे [आध्यात्मिक रूप से] दूसरों का सत्कार करते हैं। वे लोगों पर आशीर्वाद बरसाते हैं और उन्हें आध्यात्मिक उपहार देते हैं। आखिरकार, माता-पिता भी अपने बच्चों के नाम-दनि पर भोज का आयोजन करते हैं, और जब कोई राजकुमार पैदा होता है तो राजा क्षमादान करते हैं। तो संत अपने पर्व के दनि लोगों को [कुछ आध्यात्मिक] क्यों नहीं दे सकते? और यह कहना चाहिए कि संत जो आनंद प्रदान करते हैं वह लंबे समय तक रहता है, और लोगों की आत्माओं को इससे अपार लाभ होता है। इसलिए, शैतान, यह जानते हुए, लोगों को लुभाने के लिए जाल बछिता है ताकि वे प्राप्त किए हुए दिव्य उपहारों से वंचित हो जाएँ, और ताकि पर्व उन्हें न तो आनंद दे और न ही कोई लाभ। तो आप देखते हैं कि अक्सर एक परिवार में, जब हर कोई पवित्र कम्युनियन के लिए तैयारी कर रहा होता है, तो शैतान उन्हें झगड़ने के लिए उकसाता है, और वे न केवल कम्युनियन प्राप्त करने में विफल रहते हैं, बल्कि वे चर्च भी नहीं जाते हैं। शैतान अपनी पूरी ताकत लगा देता है ताकि लोग दिव्य सहायता से वंचित रहें।

हमारे मठवासी जीवन में भी यही देखा जा सकता है। अक्सर प्रलोभक, अनुभव से जानकर कि हमें पर्व के दनि आध्यात्मिक लाभ होगा, उसी दनि—या अधिकतर, उससे एक दनि पहले—किसी न किसी प्रकार का प्रलोभन रच देता है। लेकिन फिर, वह तो परीक्षा में डालने वाला है [— और वह और क्या कर सकता

है?। और इस तरह वह हमारे अंतर्मन को बगिड़ देता है। उदाहरण के लिए, वह हमें किसी साथी भाई के साथ बहस या झगड़े में उकसा सकता है, और फिर हमें दुख पहुँचाता है और हमें आत्मा और शरीर दोनों में तोड़ देता है। यह सब करके, वह हमें परमेश्वर की महिमा करने के आनंद में परव का लाभ उठाने से रोकता है, [परव का अनुभव करने से रोकता है]। हालाँकि, यदि दयालु परमेश्वर देखते हैं कि हमने स्वयं शैतान को प्रलोभन का कोई कारण नहीं दिया है, कि यह केवल उसकी ईर्ष्या से उत्पन्न हुआ है, तो वह हमारी मदद करते हैं। और वह हमें और भी अधिक लाभ प्राप्त करने में मदद करता है यदि हम वनिम्रतापूर्वक हुई परीक्षा का दोष स्वयं पर लेते हैं और न केवल अपने भाई को, बल्कि उस शैतान को भी, जो भलाई से नफरत करता है, दोषी नहीं ठहराते। आखिरकार, यह उसका काम है: जाल बछिना और द्वेष फैलाना। जबकि मनुष्य, जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है, उसे शांति और दया फैलानी चाहिए।

अध्याय 2. काम और आध्यात्मिक जीवन

मेहनत एक आशीर्वाद है

— जेरोंडा, पुराने दनियों में वे कहा करते थे: 'कंबलों को पोंछने से बेहतर है कि आप अपने जूतों के तले पोंछें।' उनका क्या मतलब था?

— इसका आशय यह था: 'बसितर पर लेटकर आलस करने से तो काम करते-करते जूतों की तली घसि जाना बेहतर है।' काम एक आशीर्वाद है; यह ईश्वर का दिया हुआ वरदान है। यह शरीर को सुफूर्ति देता है और मन को ताजगी प्रदान करता है। यदि ईश्वर ने मनुष्य को काम न दिया होता, तो मनुष्य काँपड़ हो जाता। मेहनती लोग बुढ़ापे में भी काम करना बंद नहीं करते। अगर वे जब तक ताकतवर हैं, काम करना बंद कर दें, तो उनका हौसला टूटने लगेगा। ऐसे लोगों के लिए काम करना छोड़ देना मौत के बराबर है। मुझे कोनटिसा में एक नब्बे साल का आदमी याद है जो अथक परशिरम करता था। अंत में, उसकी मौत वहीं खेतों में हुई — घर से दो घंटे की पैदल दूरी पर।

लेकिन यह भी कहा जाना चाहिए कि कुछ लोगों द्वारा खोजी जाने वाली शारीरिक शांति कोई स्थायी अवस्था नहीं है। शारीरिक शांति की अवस्था में लोग केवल अस्थायी रूप से अपनी आंतरिक कलह को भूल सकते हैं। उनके पास सब कुछ होता है: दोपहर का भोजन, मठाई, स्नान, आराम... हालाँकि, जैसे ही यह सब समाप्त होता है, वे और भी अधिक शांति की लालसा करते हैं। इस प्रकार, लोग नरंतर कुछ न कुछ की कमी महसूस करते हैं और इसलिए वे सदैव अशांत रहते हैं। उन्हें एक खालीपन महसूस होता है, और उनकी आत्मा उस खालीपन को भरने का प्रयास करती है। जबकि जो लोग परशिरम से थक जाते हैं, उनके पास एक स्थायी आनंद होता है — एक आध्यात्मिक आनंद।

— जेरोंडा, लेकिन अगर, उदाहरण के लिए, आपकी कमर में समस्या है, तो आप कोई भी काम नहीं कर सकते।

— तो, क्या आपको लगता है कि निचिले हिससे की पीठ (लोअर बैक) की कसरत करने की कोई जरूरत नहीं है? क्या ऐसा व्यायाम करना जो उसकी कसरत का काम करे, वास्तव में मदद नहीं करेगा? मैं आपको यह बता दूँ: अगर कोई व्यक्ति खाता-पीता है, सोता है और काम नहीं करता, तो उसके शरीर के सभी आंतरिक अंग सुस्त पड़ने लगते हैं और उसे लगातार नींद आती रहती है, क्योंकि उसका शरीर और उसकी नसें आराम करके ढीली पड़ जाती हैं। धीरे-धीरे, ऐसा व्यक्ति उस स्थिति तक पहुँच जाता है जहाँ वह कुछ भी नहीं कर पाता। जैसे ही वे थोड़ी सी दूरी तय करते हैं, उनकी सांस फूलने लगती है। लेकिन अगर वे काम करना शुरू कर दें और थोड़ा इधर-उधर घूमें, तो उनके पैर और हाथ दोनों मजबूत हो जाएंगे। देखिए: जो लोग काम से प्यार

करते हैं, वे लंबी अवधिक नहीं सोते, या थकान के कारण तो बलिकुल भी सो नहीं पाते; फरि भी, इसके बावजूद, उनमें बहुत ऊर्जा होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेहनत के माध्यम से, वे खुद को सख्त बनाते हैं और अपने शरीर को मजबूत करते हैं।

काम आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, खासकर युवा लोगों के लिए। मैंने देखा है कि कुछ लाड़ले लड़के जब सेना में शामिल होते हैं, तो वे बड़े हो जाते हैं और मजबूत हो जाते हैं। सेना इन लड़कों के लिए बहुत फायदेमंद है। बेशक, मैं जो कह रहा हूँ वह मुख्य रूप से अतीत पर लागू होता है। आजकल सेना सैनिकों को परेशान करने या उन्हें कुछ करने के लिए मजबूर करने से डरती है, क्योंकि अगर उन्हें किसी भी तरह से 'परेशान' किया जाता है, तो वे अपनी कलाई काट लेते हैं या 'मानसिक रूप से टूट जाते हैं'... बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए, मैं माता-पिता को सलाह देता हूँ कि वे उन्हें किसी के लिए काम करने भेजें और यहाँ तक कि उस व्यक्तिको भुगतान भी करें। मुख्य बात यह है कि बच्चों को वह काम पसंद आए जो वे करने जा रहे हैं। आखिरकार, अगर एक युवक, जिसमें ताकत और चतुराई है, काम नहीं करता है, तो वह सुस्त, उदासीन और ढीला-ढाला हो जाता है। और अगर, इसके ऊपर, वह दूसरों को सफल होते देखता है, तो वह अपनी ही स्वार्थपरता में उलझ जाता है और उसे किसी भी चीज़ में कोई खुशी नहीं मिलती। वह लगातार वचारों से पीड़ित रहता है, और उसका दमिग जैसे पुआल से भरा हो। फरि शैतान उसके पास आता है और फुसफुसाना शुरू कर देता है: 'तुम्हारे जैसे नकिम्मे, तुम तो किसी काम के नहीं हो!' तुम्हारा एक साथी शकिषक बन गया है, दूसरे ने अपना व्यवसाय शुरू कर लिया है और पैसे कमा रहा है—लेकिनि तुम कभी क्या कर पाओगे?' इस तरह, शैतान इस व्यक्तिको नरिशामें धकेल देता है। लेकिनि अगर वह युवक काम करना शुरू कर दे, तो उसे आत्मवशिवास हासलि होगा — शब्द के सकारात्मक अर्थ में। वह देखेगा कि वह भी कठनिाइयों से नपिट सकता है; लेकिनि इसके अलावा, उसका मन काम में लगा रहेगा, और उसके पास ऐसे वचारों के लिए समय नहीं बचेगा। दूसरे शब्दों में, इसका लाभ दोहरा होगा।

कैरयिर चुनना

— जेरोंडा, कुछ माता-पिता अपने बच्चों को अपना ही कैरयिर चुनने के लिए प्रोत्साहति करते हैं, और अक्सर बहुत ज़िद पर उतर आते हैं।

— नहीं, वे गलत कर रहे हैं। बच्चों पर यह दबाव नहीं डालना चाहिए कि वे वही करें जो उनके माता-पिता चाहते हैं, अगर यह बच्चों की खुद की इच्छा नहीं है। मैं एक ऐसे युवक को जानता था जो धर्मशास्त्र संकाय में दाखलि लेना चाहता था और पादरी बनना चाहता था। हालाँकि, उसकी माँ इसके खिलाफ थी; उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि वह चकितिसा पढ़े। इस युवक ने बाइबेलाइन भजन सीखा था और चर्च में गाता था। उसने अपना संगीत वादययंत्र बनाया और उसका उपयोग चर्च के स्वरों को बजाने के लिए किया। वह कई चर्च भजनों को कंठस्थ जानता था। वह काफी प्रतभिशाली था; वह ट्रोपारिया लिखता था और सेवाएं रचता था। माध्यमकि वदियालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद, वह युवक धर्मशास्त्र संकाय में दाखलि ले लिया। अपनी चति के कारण उसकी माँ का मानसकि संतुलन बगिड़ गया। फरि वह मेरे पास आई और वनिती करने लगी: 'प्रार्थना करें, पादर, कि मैं ठीक हो जाऊँ, और फरि मेरे बच्चे को जो वह चाहे करने दें।' लेकिनि एक बार जब वह ठीक हो गई, तो उन्होंने एक बार फरि अपने बेटे के धर्मशास्त्र पढ़ने के रास्ते में अड़चन डालनी शुरू कर दी। और अंत में, उसने धर्मशास्त्र संकाय छोड़ दिया, गायन छोड़ दिया और बनिा किसी अच्छे कारण के अपना जीवन बर्बाद कर लिया।

यह देखते हुए कि युवा लोग अध्ययन के क्षेत्र का चयन करने में संघर्ष कर रहे हैं, मैं उन्हें नमिनलिखति सलाह देता हूँ: "वचार करें कि कौन सा पेशा या अध्ययन का क्षेत्र आपको आकर्षति करता है। आपको उसी का अनुसरण करना चाहिए जिसके प्रत आपकी स्वाभावकि रुचि हो।" हालाँकि, यदि युवा पुरुष या महिलाएँ किसी ऐसे मार्ग पर वचार कर रहे हैं जिसके प्रत उनकी कोई रुचि नहीं है, तो मैं उन्हें उस कार्य को करने की सलाह देता हूँ जिसके प्रत उनकी स्वाभावकि रुचि है, ताकि यह उनके लाभ के लिए हो।

दूसरे शब्दों में, मैं उन्हें एक ऐसा कार्य क्षेत्र चुनने में मदद करता हूँ जिसमें उन्हें आनंद आता है और जो उनके कौशल के अनुरूप हो। यह पर्याप्त है कि जो वे करते हैं वह ईश्वर की इच्छा के अनुसार हो। क्या किसी की संगीत की ओर स्वाभाविक प्रवृत्ति है? तो उन्हें, उदाहरण के लिए, एक अच्छा संगीतकार या एक अच्छा चर्च गायक बनना चाहिए और अपने गायन के माध्यम से, जो लोग उन्हें सुनते हैं, उन्हें चर्च और प्रार्थना से प्रेम करने में मदद करनी चाहिए। क्या किसी को चित्रकला का बुलावा मिला है? तो उन्हें एक कलाकार या आइकनोग्राफर बनना चाहिए और श्रद्धा के साथ चमत्कार करने वाले ई के आइकन चित्रित करने चाहिए। क्या किसी को विज्ञान का बुलावा मिला है? तो उन्हें खुद को इसमें समर्पित कर देना चाहिए और उत्साह के साथ काम शुरू कर देना चाहिए।

और देखो: बचपन से ही किसी व्यक्ति का बुलावा क्या है, यह स्पष्ट हो जाता है। एक दिन, एक आदमी अपने दो छोटे भाइयों के बेटों के साथ स्टोमयिन मठ में आया। उनमें से एक, जो लगभग छह या सात साल का था, हमारे पास बैठ गया और बर्ना रुके हमसे तरह-तरह के सवाल पूछने लगा। "तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो?" मैंने उससे पूछा। "वकील!" उसने जवाब दिया। दूसरा बच्चा कहीं गायब हो गया था। "वह कहाँ है?" मैंने उसके चाचा से पूछा। 'क्या वह खाई में गिर गया है?' हम उसे ढूँढने बाहर गए और हमें बढई की कार्यशाला से हथौड़े की चोटों की आवाज़ सुनाई दी। हम कार्यशाला में गए और देखा कि उस छोटे लड़के ने अपनी कुल्हाड़ी से चिकनी की गई वर्कबेंच की सतह को इस तरह से खुरचकर बर्बाद कर दिया था कि वह अब केवल चूलहे के काम की ही बची थी! मैंने उससे पूछा, "बड़े होकर तुम क्या बनोगे?" लड़के ने जवाब दिया, "एक बढई!" मैंने कहा, "तुम बनोगे, तुम जरूर बनोगे। इस बात की परवाह मत करो कि तुमने तख्ती खराब कर दी! कोई बड़ी बात नहीं।"

काम से प्रेम

— जेरोंडा, कुछ लोग काम करते समय बोर क्यों हो जाते हैं?

— शायद उन्हें अपनी नौकरी पसंद नहीं है? या शायद वे काम के दौरान लगातार एक ही काम बार-बार कर रहे हैं? अक्सर, कुछ उत्पादन वातावरणों में—उदाहरण के लिए, खड़कियाँ और दरवाजे बनाने वाली फैक्ट्री में—एक मजदूर पूरा दिन बोरडों को गोंद से चपिकाता है, दूसरा लगातार उनमें काँच के शीशे फटि करता है, और तीसरा हर दिन उन पर पुट्टी लगाता है। ये लोग लगातार एक ही नीरस काम करते रहते हैं, जबकि मालिक उन पर नज़र बनाए रखता है। और यह सिर्फ एक-दो दिन ही नहीं, बल्कि बहुत समय तक चलता रहता है। लेकिन अगर आप बार-बार एक ही काम करते रहें, तो लोग उससे ऊब जाते हैं। पहले के दिनों में ऐसा नहीं था: एक बढई बिल्डरों से चार दीवारें लेता था और उसे मालिक को एक तैयार घर सौंपना होता था। उसे फर्श बछिना होता था, खड़कियाँ और दरवाजे लगाना होते थे, काँच को पुट्टी से सील करना होता था, और इसी तरह। फरि वह विभिन्न घुमावदार सीढ़ियाँ और घुमावदार रेलिंग बनाने में लग जाता, फरि उन सब पर रंग करता, फरि अलमारियों और शेल्फों की बारी होती... और अंत में, वह फर्नीचर बनाने का काम करता। और भले ही एक अकेला कारीगर यह सब अकेले न करता हो, वह फरि भी हर काम करना जानता था। जरूरत पड़ने पर, एक बढई छत पर टाइलें भी लगा सकता था।

इन दिनों, कई लोग थके हुए हैं क्योंकि उन्हें अपने काम में आनंद नहीं आता। वे बार-बार घड़ी की ओर देखते रहते हैं, उस पल का बेसब्री से इंतजार करते हुए जब वे घर जा सकें। लेकिन अगर किसी व्यक्ति में ज़िम्मेदारी की भावना, अपने काम के प्रति जुनून, और जो वह करता है उसकी सच्ची परवाह हो, तो जतिना अधिक वह काम करता है, उतना ही वह जुनून और प्रबल होता है। फरि वे अपने काम में पूरी तरह से डूब जाते हैं, और जब जाने का समय होता है, तो वे हैरानी से पूछते हैं, 'समय कहाँ चला गया?' वे खाना और सोना भूल जाते हैं; वे सब कुछ भूल जाते हैं। भले ही उन्होंने कुछ भी न खाया हो, फरि भी उन्हें भूख नहीं लगती, और भले ही उन्होंने सोया न हो, उन्हें नींद नहीं आती। उन्हें न केवल नींद नहीं आती—बल्कि वे इस बात से खुश

होते हैं कवि सोए नहीं हैं! उन्हें भूख या नींद की कमी से पीड़ा नहीं होती: ऐसे व्यक्तिके लिए काम एक उत्सव, एक दावत है।

— गेरोंडा, मान लीजिए दो लोग एक ही काम कर रहे हैं। एक को इससे आध्यात्मिक लाभ क्यों मिलता है, जबकि दूसरे को आध्यात्मिक हानि होती है?

— यह सब इस बात पर निर्भर करता है कवि अपना काम कैसे करते हैं और उनके भीतर क्या है। यदि कोई व्यक्ति विनिमृता और प्रेम के साथ काम करता है, तो [वे जो कुछ भी करते हैं] सब कुछ प्रबुद्ध, शुद्ध और आनंदमय कृपा से भर जाएगा, और वे स्वयं भी शक्तिके आंतरिक नवीकरण को महसूस करेंगे। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति इस घमंडी विचार को पालता है कि वह दूसरों से बेहतर काम कर रहा है, तो उसे एक निश्चित संतुष्टि महसूस हो सकती है; फिर भी यह संतुष्टि उसके हृदय को भरती नहीं है, क्योंकि आत्मा को कोई [आध्यात्मिक] प्रकटीकरण प्राप्त नहीं होता और उसे कोई शांति नहीं मिलती।

इसके अलावा, यदि कोई व्यक्ति अपना काम प्रेम के बनिा करता है, तो वह थक जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति अपने काम से नफरत करता है और उसे पूरा करने के लिए एक पहाड़ी चढ़नी पड़ती है, तो उस पहाड़ी का दृश्य ही उसकी ताकत सोख लेता है। जबकि दूसरा व्यक्ति, वही काम पूरे मन से करते हुए, बिना महसूस किए पहाड़ी पर चढ़ जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति अपने सब्जी के बगीचे की मिट्टी खोद रहा है या खरपतवार निकाल रहा है और वह यह काम पूरे मन से कर रहा है, तो वह भले ही कड़ी धूप में हो, कई घंटे बिना थके काम कर सकता है। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति पूरे मन से काम नहीं कर रहा है, तो वह बार-बार रुकता है, हाँफता है, गर्मी और तकलीफ की शिकायत करता रहता है।

— गेरोंडा, क्या काम या पढ़ाई किसी व्यक्तिको इस हद तक ले सकती है कि वह अपने परिवार और अन्य जम्मेदारियों के प्रति उदासीन हो जाए?

— आपको बस अपने काम से प्यार करना चाहिए: इसमें पागल होने की ज़रूरत नहीं है। अगर कोई व्यक्ति अपने काम से प्यार नहीं करता है, तो वह दोगुनी थकान महसूस करेगा — शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से। और एक बार जब उसकी आत्मा थक जाती है, तो शारीरिक आराम भी उसकी ताकत वापस नहीं ला सकता। मानसिक थकान — यही एक व्यक्तिको सचमुच थकाती है। जब कोई व्यक्ति दिल से काम करता है और आनंद महसूस करता है, तो वह अपनी मानसिक शक्तिको खर्च नहीं करता, और शारीरिक थकान भी दूर हो जाती है। मैं एक ऐसे जनरल को जानता हूँ जो एक सैनिक का काम भी करता है। क्या आप जानते हैं कि वह अपने सैनिकों की कतिनी परवाह करता है? एक पति की तरह। और क्या आप जानते हैं कि वह कैसा आनंद महसूस करता है? यह व्यक्ति अपना कर्तव्य पूरा करता है और आनंदित होता है। एक बार, आधी रात को, वे एवरोस,⁷¹ से सेंट अचिलियस के उत्सव⁷² के लिए लारसि की यात्रा पर रवाना हुए और दक्खि लटिर्जी के लिए समय पर पहुँच गए, हालाँकि वे बाद में भी पहुँच सकते थे, प्रार्थना सेवा के ठीक समय पर। लेकिन, उन्होंने संत का सम्मान करने के लिए पहले रवाना होने का फैसला किया। यह व्यक्ति जो कुछ भी करता है, वह दिल से करता है।

जो व्यक्ति अपने कार्य को निष्ठापूर्वक करता है, उसे जो आनंद मिलता है, वह एक स्वास्थ्यवर्धक आनंद है। ईश्वर ने यह आनंद इसलिए प्रदान किया है ताकि उनकी सृष्टिकति न हो। यह थकान के माध्यम से शक्तिकी पुनर्स्थापना है।

प्रत्येक व्यक्तिको उस उपहार का आध्यात्मिक उपयोग करना चाहिए जो उसे दिया गया है।

प्रत्येक व्यक्तिको उन उपहारों का उपयोग सामान्य भलाई के लिए करना चाहिए जो उसे दिए गए हैं। क्योंकि ईश्वर, किसी व्यक्तिको एक विशेष उपहार प्रदान करने के बाद, उससे उसका हिसाब लेगा। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्तिकी बुद्धि एक शक्ति है [जो उसे प्रदान की गई है], लेकिन यह इस बात

⁷¹ एवरोस उत्तरी-पूर्वी ग्रीस में, तुर्की की सीमा पर एक नदी है। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁷² लारसि के संत अचिलियस († लगभग 330) का पर्व दिस 15 मई को मनाया जाता है। — अनुवादक की टिप्पणी।

पर निर्भर करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी बुद्धि का उपयोग कैसे करता है, वह अच्छा या बुरा कर सकता है। यदि बहुत बुद्धिमान होने के नाते, कोई व्यक्ति अपनी क्षमताओं का सही उपयोग करता है, तो वह ऐसे आविष्कार कर सकता है जो लोगों की मदद करेंगे। हालाँकि, अपनी दी गई क्षमताओं का दुरुपयोग करके, कोई व्यक्ति उदाहरण के लिए, अपने पड़ोसी को लूटने के तरीके गढ़ सकता है। या, कलाकारों का उदाहरण लें, जो अपने चित्र अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित करते हैं। एक अकेला कार्टून या चित्र अपने भीतर एक पूरे घटनाक्रम को छिपा सकता है। दूसरे शब्दों में, यदि वे कलाकार अपने मन की चपलता का उपयोग भलाई के लिए करें, तो वे इसे पवत्र कर देंगे और स्वयं तथा दूसरों दोनों की मदद करेंगे। जबकि वर्तमान में, ऐसे कई लोग गलत कर रहे हैं: यदि वे नरिलज्ज हैं, तो वे और भी अधिक नरिलज्ज हो जाते हैं; यदि वे मसखरे हैं, तो वे और भी अधिक हास्यास्पद हो जाते हैं।

दूसरे शब्दों में, प्रतिभाशाली लोग, जिन्हें विशेष क्षमताओं से संपन्न किया गया है, या तो दूसरों का भला करते हैं या उन्हें नष्ट कर देते हैं। जबकि जिनके पास ऐसी विशेष क्षमताएँ नहीं होतीं, वे निश्चिंता रूप से ज्यादा भला नहीं कर सकते, लेकिन कम से कम ज्यादा नुकसान भी नहीं कर सकते।

काम और मानसिक चिंता

— जेरोंडा, कई लोग काम से घर लौटने पर तनाव में रहते हैं।

— मैं पुरुषों को सलाह देता हूँ कि वे काम के बाद चर्च में जाएँ, एक मोमबत्ती जलाएँ, सेवा में दस से पंद्रह मिनट बताएँ, या किसी पार्क में कहीं बैठकर सुसमाचार का एक अंश पढ़ें, ताकि उन्हें मन की शांति मिल सके। उसके बाद, उन्हें घर जाने दें — चैन और मुस्कुराहट के साथ। अन्यथा, वे चड़िचड़ि होकर घर आएँगे और अपने प्रियजनों से बहस शुरू कर देंगे। उन्हें काम की समस्याएँ घर नहीं लानी चाहिए: इन समस्याओं को दरवाजे पर ही छोड़ देना चाहिए।

— गेरोंडा, हालाँकि, कुछ लोग अपनी बेचैनी और घबराहट को अपने काम की ज़िम्मेदारियों का हवाला देकर जायज़ ठहराते हैं, जो उन्हें चिंता से भर देती हैं।

— यह उन्हें आंतरिक चिंता से भर देता है, क्योंकि वे अपने मामलों में ईश्वर को अपना सहायक बनाने को भूल जाते हैं। एक आलसी व्यक्ति, जो लगातार यही दोहराता रहता है, 'कोई बात नहीं, ईश्वर मुझे नरिंश नहीं करेगा...', ऐसे लोगों से बेहतर है। जहाँ तक मेरा सवाल है, किसी व्यक्ति के लिए यह बेहतर है कि वह एक साधारण कर्मचारी के रूप में काम करे, अपना काम ठीक से और लगन से करे, अपने जीवन को सरल बनाने की कोशिश करे, बुनियादी ज़रूरतों से काम चलाए और शांत दमिग रखे, बजाय इसके कि वह किसी व्यवसाय का मालिक बने और बार-बार यही दोहराता रहे: 'ओह, मैं क्या करूँ?' और आमतौर पर ऐसे 'बड़े लोगों' पर भारी कर्ज होता है। और फिर अहंकार भी घुस आता है। 'एक बार मुझे एक और बड़ा कर्ज मिल जाए, तो मैं यह बनाऊँगा, वह लगाऊँगा, और ऐश-ओ-आराम की ज़िंदगी जीऊँगा...' — ऐसे लोग कहते हैं, लेकिन फिर वे गलत हिसाब लगा बैठते हैं, दवािलिया हो जाते हैं, और उनकी संपत्ति नीलामी में बिक जाती है।

इसके अलावा, कई लोग काम पर अपने दमिग का इस्तेमाल नहीं करते। वे बेवजह खुद को थका लेते हैं और उन्हें सौंपे गए कार्यों से नपिटने में असफल रहते हैं। परिणामस्वरूप, वे दूसरों का सम्मान खो देते हैं, और उनका मन चिंता से भर जाता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति किसी विशेष कला या शिल्प को सीखना चाहता है, और वह एक शिक्षक या किसी शैक्षणिक संस्थान में वर्षों तक पाठों में भाग लेता है, लेकिन चूंकि वह लापरवाह होता है, इसलिए वह सफल नहीं हो पाता क्योंकि वह अपने दमिग का उपयोग नहीं करता। एक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि उसे अपने काम के लिए क्या चाहिए और जो कमी है उसे पूरा करना चाहिए। उदाहरण के लिए, धर्मनिरपेक्ष दुनिया में रहते हुए और एक बर्द के रूप में काम करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि मुझे जो फरनीचर बना रहा था, उसे बनाने के लिए मुझे एक लेथ (खरा) की ज़रूरत थी। तो क्या? क्या मुझे एक खरादकार (turner) को ढूँढ़कर उससे मदद मांगनी चाहिए थी?

नहीं। मैंने एक लेथ खरीदी और खुद ही उसे चलाना सीखा। कुछ ही समय बाद मुझे एहसास हुआ कि मुझे सर्पिल सीढ़ियाँ बनानी हैं। मैं बैठ गया, अपनी ज्यामिति और अंकगणित को ताज़ा किया, और उन्हें बनाना सीख लिया। अगर आप दमिग का इस्तेमाल नहीं करेंगे, तो आपको संघर्ष करना पड़ेगा। मेरा मतलब यह है कि आपको अपने दमिग का इस्तेमाल करना होगा, क्योंकि काम करते समय अक्सर कई समस्याएँ और जटिलताएँ सामने आती हैं। अपने दमिग का इस्तेमाल करके, एक व्यक्ति एक कुशल कारीगर बन जाता है और हर विशेष स्थिति में कैसे काम करना है, यह जानते हुए, आगे बढ़ता है। यही इसका पूरा आधार है। मन को हर चीज़ में एक उत्पादक शक्ति होना चाहिए। अन्यथा, एक व्यक्ति अपरिष्कृत रहता है और अपना समय बर्बाद करता है।

श्रम का पवतिरीकरण

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रार्थनाओं और अपने [ईसाई] जीवन के माध्यम से अपने कार्य को पवतिर करना चाहिए और स्वयं को पवतिर करना चाहिए। यदि कार्यस्थल पर, अन्य लोग किसी व्यक्ति के अधिकार में हैं और वह उनके लिए ज़िम्मेदार है, तो उसे उन्हें आध्यात्मिक सहायता भी प्रदान करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति आंतरिक रूप से अच्छा है, तो वह भी अपने कार्य को पवतिर करता है। उदाहरण के लिए, यदि युवा पुरुष किसी गुरु के पास उसका धंधा सीखने आते हैं, तो उसे एक ही समय में उन्हें आध्यात्मिक रूप से जीना सिखाने में भी मदद करनी चाहिए। ऐसा दृष्टिकोण स्वयं नयित्व, उसके अधीनस्थों और उसके ग्राहकों को लाभान्वित करेगा, क्योंकि ईश्वर उसके काम को आशीर्वाद देगा।

कोई भी पेशा पवतिर किया जा सकता है।⁷³ उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक को यह नहीं भूलना चाहिए कि चिकित्सा में मुख्य रूप से ईश्वर की कृपा सहायक होती है। इसलिए, उसे द्रव्य कृपा का पात्र बनने का प्रयास करना चाहिए। एक चिकित्सक, जो एक अच्छा, दयालु ईसाई और साथ ही एक कुशल पेशेवर है, अपनी दया और अपने विश्वास के द्वारा रोगियों की सहायता करता है, क्योंकि वह उन्हें साहस और विश्वास के साथ अपनी बीमारी का सामना करने के लिए प्रेरित करता है। गंभीर बीमारी की स्थिति में, ऐसा चिकित्सक रोगी से कह सकता है: 'चिकित्सा विज्ञान इस स्तर तक पहुँच चुका है। जहाँ मानव ज्ञान समाप्त हो जाता है, वहाँ ईश्वर हैं, जो चमत्कार करते हैं।'

एक शिक्षक को अपना कर्तव्य आनंदपूर्वक नभाने और बच्चों के आध्यात्मिक पुनर्जन्म में मदद करने का प्रयास करना चाहिए। आखिरकार, सभी माता-पिता अपने बच्चों का आध्यात्मिक पुनर्जन्म कराने में सक्षम नहीं होते हैं, भले ही उनकी मंशा अच्छी हो। बच्चों को ज्ञान देते समय, एक शिक्षक को साथ ही यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि वे सच्चे इंसान बनें। अन्यथा, उनका शैक्षणिक ज्ञान उनके क्या काम आएगा? समाज को ऐसे सच्चे लोगों की आवश्यकता है जो — चाहे उनका कोई भी पेशा हो — उसे अच्छी तरह से नभाएँ। एक शिक्षक को न केवल यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पाठ ठीक से सीखा गया है, बल्कि उसे छात्रों के अन्य सदगुणों और सकारात्मक गुणों — जैसे कशिरद्धा, दया और उदारता — को भी ध्यान में रखना चाहिए। जो अंक ईश्वर बच्चों को देता है, वे हमेशा उनके शिक्षकों द्वारा दिए गए अंकों से मेल नहीं खाते। एक बच्चे के लिए 'दो' ईश्वर की दृष्टि में 'पाँच प्लस' हो सकता है, जबकि किसी दूसरे के लिए 'पाँच प्लस' ईश्वर की दृष्टि में 'दो' साबित हो सकता है।

एक पेशा किसी व्यक्ति को व्यक्ति नहीं बनाता

— गेरोना, अगर कोई व्यक्ति काम के दौरान चतिति महसूस करता है, तो इसका कारण क्या है?

⁷³ स्वाभाविक रूप से, इसमें ईसाई की उपाधि के साथ असंगत पेशे शामिल नहीं हैं, जिनकी अब बहुत संख्या है — उदाहरण के लिए, एक गुंडा, एक चोर, अनैतिकता का प्रसारक, एक सूदखोर, एक जादूगर, गर्भपात करने वाला डॉक्टर, एक फैशन मॉडल, एक मसखरा, और इसी तरह। ऐसे पेशे न केवल पवतिर नहीं किए जा सकते, बल्कि उन्हें पश्चाताप के माध्यम से उपचार की भी आवश्यकता होती है। — अनुवादक की टिप्पणी।

— शायद वे अपने काम को अच्छे इरादों से नहीं करते? यदवि अपने श्रम को सही तरीके से करते हैं, तो चाहे काम कोई भी हो, वह उनके लिए एक उत्सव, एक आनंद होगा।

— जेरोंडा, अगर कोई व्यक्ति किठनि या गंदा काम करने के कारण नरिश महसूस करता है तो क्या करे? उदाहरण के लिए, अगर वह किसी नरिमाण स्थल पर काम कर रहा है, कैटीन में बॉयलर धो रहा है, या ऐसा ही कुछ कर रहा है? उसे इसे कैसे लेना चाहिए?

— यदविह इस तथ्य पर विचार करता है कि मसीह ने अपने शिष्यों के पैर धोए,⁷⁴ तो वह उदास महसूस करना बंद कर देगा। मसीह ने जो किया, वह ऐसा था मानो वह हमसे कह रहे हों: "तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए।" एक व्यक्ति चाहे कुछ भी करे—चाहे वह बॉयलर धोना हो, सॉसपैन साफ करना हो या धरती खोदना हो—उसे प्रसन्न रहना चाहिए। आखिरकार, कुछ लोग तो सीवर भी साफ करते हैं क्योंकि उन्हें कोई और काम नहीं मिलाता। दनि भर, वह गरीब व्यक्ति गंदगी और कीटाणुओं से घरि रहता है। लेकिन क्या वह एक इंसान नहीं है? क्या वह ईश्वर की छवि में नहीं बना है? एक परिवार के मुखिया सीवर साफ करने का काम करते थे और उन्होंने एक उच्च आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त की। उन्हें तपेदकि हो गई, और हालाँकि वे वह नौकरी छोड़ सकते थे, पर वे नहीं चाहते थे कि उनकी जगह कोई और कष्ट सहता। इस व्यक्ति को एक वनिम्र जीवन पसंद था, जसि दूसरे तुच्छ समझते थे, और इसी के लिए ईश्वर ने उन्हें अपनी कृपा से भर दिया।

एक पेशा किसी व्यक्ति को मानव नहीं बनाता। मैं एक ऐसे नावकि को जानता था जसिने एक मृतक को मृतकों में से जीवति कर दिया। जब मैं आइवर्सकी स्केट में डीकन था⁷⁵, एक दनि लगभग पचास-पाँच वर्ष का एक व्यक्ति मुझसे मिलने आया। शाम को देर से पहुँचकर उसने दरवाजा नहीं खटखटाया, क्योंकि विह पादरियों को परेशान नहीं करना चाहता था, बल्कि बाहर ही सोने लेट गया। जब स्केट के भाइयों ने यह देखा, तो उन्होंने उसे अंदर ले आकर मुझे इस घटना की सूचना दी। मैंने उससे पूछा, "आपने घंटी क्यों नहीं बजाई?" "हम आपके लिए दरवाजा खोल देते और अतिथि गृह में एक कमरा दे देते।" उसने जवाब दिया, "आप क्या कह रहे हैं, फादर? मैं भाइयों को परेशान करने की हमिमत कैसे कर सकता था?" उसके चेहरे पर चमक देखकर मुझे एहसास हुआ कि विह बहुत आध्यात्मिक जीवन जीता था। उस आदमी ने फरि मुझसे कहा कि वह कम उम्र में ही अपने पति को खो चुका था और, परिणामस्वरूप, शादी के बाद वह अपने ससुर से बहुत प्यार करता था। काम के बाद, वह पहले अपने ससुर और सास के घर जाता था, और उसके बाद ही अपने घर जाता था। हालाँकि, वह बहुत परेशान था क्योंकि उसके ससुर बहुत गाली-गलौज करते थे। उसने अपने ससुर से कई बार गाली-गलौज बंद करने के लिए कहा था, लेकिन वह मानता नहीं था। एक दनि, उसका ससुर गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। उसे अस्पताल ले जाया गया, और कुछ दनि बाद उसकी मृत्यु हो गई। जब उसका ससुर मर रहा था, तो वह नावकि उसके पास नहीं था, क्योंकि उस समय वह बंदरगाह पर एक जहाज से माल उतार रहा था। जब वह अस्पताल पहुँचा और उसे बताया गया कि उसके ससुर की मृत्यु हो गई है, तो वह शवगृह में गया और, अत्यंत पीड़ा में, इस प्रकार प्रार्थना करने लगा: 'हे मेरे ईश्वर, मैं आपसे वनिती करता हूँ, उसे वापस जीवति कर दें ताकि विह पश्चाताप कर सके, और फरि उसे वापस ले जाएँ।' तुरंत, मृत व्यक्ति ने अपनी आँखें खोल दीं और अपने हाथ हलाने लगा। मर्च्युरी के कर्मचारी, यह देखकर कि क्या हो रहा है, भय से भाग गए। वह जहाज से माल उतारने वाला अपने ससुर को घर ले गया, और वह पूरी तरह से ठीक हो गया। उसके बाद, वह पश्चाताप में और पाँच साल तक जीवति रहा। "मेरे पति," जहाज से माल उतारने वाले ने मुझसे कहा, "मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझ पर यह दया दिखाई। मैं कौन हूँ कि परमेश्वर मुझ पर ऐसी दया करें?" यह आदमी बहुत सरल था। और फरि भी वह इतना नम्र था कि उसे यह भी कभी नहीं

⁷⁴ देखें 1 यूहन्ना 13:4-14।

⁷⁵ डाइकेओस — माउंट अथोस के स्केट्स में, एक भिक्षु जो स्केट के नवासियों के जीवन का समन्वय करने के लिए एक वर्ष के लिए चुना या नियुक्त किया जाता है। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

लगा क उसने मृतक को जलाया था। वह सचमुच परमेश्वर के प्रतकृतज्जता से अभिभूत था, जो उन्होंने उसके लिए किया था।"

कई लोग इस बात से पीड़ित रहते हैं कि वे सांसारिक संपत्तिके माध्यम से व्यर्थ की प्रसद्धि या धन-संपत्ति नहीं कमा सकते। वे यह विचार करने के लिए नहीं रुकते कि यह सारी प्रसद्धि और धन-संपत्ति आने वाले जीवन—अर्थात् वास्तविक जीवन—में किसी भी काम नहीं आएगी। आखिरकार, इन्हें उस दूसरे, सच्चे जीवन में साथ ले जाना असंभव होगा।

हम अपने साथ केवल उन्हीं कर्मों को लेंगे, जो इस पृथ्वी पर हमें आगे आने वाली महान और शाश्वत यात्रा के लिए आवश्यक 'पासपोर्ट' प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे।

अध्याय 3. दैनिकी जीवन में संयम

तपस्या के माध्यम से, एक व्यक्ति निरिकार स्वर्गदूतों के समान बन जाता है

— जेरोंडा, आपने एक बार हमसे कहा था: 'आध्यात्मिक संघर्ष में, [शत्रु] को रोकना आवश्यक है।' आप उससे क्या अभिप्रेत थे?

— युद्ध के समय, दुश्मन को घेराबंदी कर दी जाती है। उसे घेर लिया जाता है, शहर की दीवारों के अंदर धकेल दिया जाता है और भूख से मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। फिर उससे पानी भी छीन लिया जाता है। क्योंकि यदि दुश्मन के पास पानी, भोजन या गोला-बारूद का कोई भंडार नहीं रहता, तो वह आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर हो जाता है। मेरा आशय यह है कि यदि हम उसी तरह शैतान से लड़ें — उपवास और जागरण के माध्यम से — तो वह हथियार डाल देता है और पीछे हट जाता है। 'उपवास, जागरण और प्रार्थना के माध्यम से, हमें दिव्य उपहार प्राप्त हों...' ⁷⁶ — भजन लेखक कहते हैं।

तपस्या और आत्म-अनुशासन के माध्यम से, एक व्यक्ति अद्वय शक्तियों के समान हो जाता है। बेशक, आत्म-संयम का अभ्यास करते समय उच्च आध्यात्मिक लक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वसा से छुटकारा पाने के लिए आत्म-संयम का अभ्यास करता है, तो वह केवल अपने शरीर की भलाई के प्रतीति रहता है। इस मामले में, उसकी तपस्या योग अभ्यास करने वालों की तपस्या के समान होती है।

दुर्भाग्यवश, चर्च से संबंधित लोग भी तपस्या और भक्तिके मामलों को पृष्ठभूमि में धकेल चुके हैं। "खैर, क्या कर सकते हो," ऐसे लोग कहते हैं, "खाना तो पड़ता है, यह-वह का आनंद तो लेना ही है... आखिरकार, ईश्वर ने सब कुछ हमारे लिए ही बनाया है।" क्या आप जानते हैं कि एक आर्चमिंड्राइट ने हमारे सम्मान में आयोजित एक रात्रिभोज के दौरान मुझसे क्या कहा था? यह देखकर कि मैं सामान्य से अधिक खाने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पा रहा था, आर्चमिंड्राइट ने कहा: 'जो कोई भी परमेश्वर के मंदिर को भ्रष्ट करता है, परमेश्वर उसे भ्रष्ट कर देगा।' ⁷⁷ मैंने उनसे पूछा, 'क्या आपको कहीं कुछ गड़बड़ हो गई है? यह पवित्र शास्त्र का अंश किसकी ओर संकेत करता है?' संयमवाद या एक कामुक, व्यभिचारी जीवन की ओर? पवित्र शास्त्र उन लोगों को संदर्भित करता है जो व्यभिचार और अतशियोक्तिके माध्यम से ईश्वर के मंदिर [अपने शरीर—] को कलंकित, अर्थात् नष्ट करते हैं। धर्मग्रंथ उन लोगों का उल्लेख नहीं करता जो मसीह के प्रतिप्रेम के कारण तपस्या करते हैं।" और वह, आप देखिए, अपने ही विचारों को

⁷⁶ सम्माननीयों के लिए सामान्य ट्रोपारयिन से: 'मनुभूमिका नविसी और देह में देवदूत...'

⁷⁷ 1 कुरिन्थियों 3:17।

सही ठहराने की कोशिश कर रहा था और कहा: "हमें ठीक से खाना चाहिए, ताकि [हमारी संयम के द्वारा] परमेश्वर के मंदिर [— हमारे शरीर] को 'खराब' न करें!" और एक दूसरे आदमी ने, एक मठ में जाने के बाद, मुझसे अपने अनुभव साझा किए: "मैं एक ऐसे मठ में था जहाँ भिक्षुओं ने इतनी कठोरता से उपवास किया था कि वे बीमार पड़ गए। उनकी चर्बी वाली खाल पूरी तरह से अछूटी रह गई थी। उपवास और जागरण का यही नतीजा होता है, फादर!" इस पर क्या कहा जा सकता है? ऐसे लोग खुद को किसी भी चीज़ से वंचित नहीं करना चाहते। वे अपना दोपहर का भोजन, अपना फल और अपना केक खाते हैं, और फिर, खुद को सही ठहराने के लिए, दूसरों को दोष देना शुरू कर देते हैं — उन लोगों को जो तपस्या के कारनामे कर रहे हैं। ऐसे लोगों ने वह आध्यात्मिक आनंद [कभी] महसूस नहीं किया है जो तपस्या और संयम लाते हैं। "मुझे दूध के इतने गलास पीने ही हैं," इस तरह का व्यक्ति कहता है। "नहीं, बेशक मैं लेंट (ईसाई उपवास) के दौरान संयम बरतूँगा। हालाँकि, बाद में मैं उन दूध के गलासों की भरपाई करूँगा जिनसे मेरा शरीर लेंट के दौरान वंचित रहा! आखिरकार, मुझे प्रोटीन की एक निश्चित मात्रा तो लेनी ही है।" और ऐसा भी नहीं है कि उसके शरीर को वास्तव में प्रोटीन की जरूरत है। नहीं, वह कहता है कि उसे [यह दूध पीने का] अधिकार है, और खुद को यह आश्वासन देता है कि सब कुछ ठीक है, क्योंकि पाप नहीं है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति केवल इस तरह से सोचता भी है, तो वह अपने आप में ही एक पाप है। मानव तर्क कतिनी हद तक जाता है! एक व्यक्ति चर्च द्वारा निर्धारित उपवासों का पालन तो कर लेता है, लेकिन साथ ही उन चीज़ों से खुद को वंचित नहीं करता जो उसने इन उपवासों के दौरान खोई हैं। अरे, खैर, उसके बाद पवित्र आत्मा [ऐसे व्यक्ति में] कैसे वास कर सकता है?

और देखो कि कुछ परिवार वाले कतिनी मोहबबत दिखाते हैं! एक बार, नौ बच्चों वाला एक बहुत ही साधारण आदमी पाप-स्वीकार के लिए आया, और उसके पादरी ने उसे पवित्र संस्कार ग्रहण करने की अनुमति दी। "ओह, फादर," उसने जवाब दिया। "मैं पवित्र संस्कार कैसे ग्रहण कर सकता हूँ! आखिरकार, हम मक्खन के साथ खाते हैं। आखिरकार, मुझे काम तो करना ही है। और मेरे बच्चों को भी।" "तुम्हारे कतिने बच्चे हैं?" उसके पादरी ने पूछा। "नौ।" "और तुम अपने खाने में कतिना तेल डालते हो?" "दो चम्मच वनस्पति तेल।" "तुम्हें असल में कतिना तेल मलित है, बेचारे?" पादरी ने कहा। — "जाओ और पवित्र भोज ग्रहण करो!" ग्यारह लोगों के लिए — महज दो चाय के चम्मच वनस्पति तेल। और फिर भी वह एक अपराधबोध की भावना से पीड़ित था!

मैं ऐसे गृहस्थों को जानता था जो अपने साधनात्मक तपस्या से पवित्र हो गए थे। कुछ ही साल पहले, एक गृहस्थ और उसका बेटा पवित्र पर्वत पर काम कर रहे थे। वे अथोस पर लंबे समय तक काम कर चुके थे। फिर घर पर एक अच्छी नौकरी मिल गई, और पति ने पवित्र पर्वत छोड़ने का निर्णय लिया, अपने बेटे को साथ लेकर ताकि पूरा परिवार एक साथ रह सके। हालाँकि, बेटा संन्यासियों के तपस्वी जीवन से गहराई से प्रभावित था, और सांसारिक जीवन की सभी आंतरिक कलह को याद करते हुए, वह लौटना नहीं चाहता था। "आखिरकार, पतिजी," उसने कहा, "आपके और भी बच्चे हैं। ईश्वर की परम पवित्र माता के बगीचे में बस एक को यहाँ छोड़ दें।" वह अपने पति की वनितियों के आगे नहीं आया, और उसके पति को उसे पवित्र पर्वत पर ही छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह युवक नरिक्षर था, लेकिन बहुत सूक्ष्मदर्शी था; उसमें महान दया और सादगी थी। वह खुद को मठ के मुंडन के लिए पूरी तरह से अयोग्य समझता था, क्योंकि उसका मानना था कि मठ के नियमों का पालन करना और इसी तरह की चीज़ें उसकी शक्ति से परे होंगी। और इस प्रकार उसे एक छोटी सी झोपड़ी मिली, जिसका पहले सामान ढोने वाले जानवरों के लिए अस्तबल के रूप में उपयोग किया जाता था; उसने पत्थरों और फर्न की पत्तियों से दरवाजा और खड़िकी बंद कर दी, और केवल एक छोटा सा गोल छेद छोड़ दिया — जिससे वह अपने आवास में रेंगकर अंदर-बाहर जा सके। अंदर से, उसने उस छेद को कहीं से उठाए हुए एक पुराने, फटे हुए कोट से ढक दिया। उसने आग भी नहीं जलाई। पक्षियों के घोंसले भी उसके घर से बेहतर आवास थे, और जानवरों के बलि भी उस घर से बेहतर घर थे जसिमें वह रहता था। फिर भी, भव्य महलों में रहने वाले भी वह आनंद नहीं अनुभव करते जो इस आत्मा ने महसूस किया।

क्योंकि यह आदमी मसीह के लिए परशिरम करता था, और मसीह उसके साथ थे—न केवल उसकी झोपड़ी में, बल्कि उसके आध्यात्मिक घर के भीतर भी—उसके शरीर में, उसके हृदय में। इसलिए, वह स्वर्ग में रहता था। कभी-कभी वह अपनी गुफा से निकलकर उन कोठरियों में से किसी एक में जाता था जहाँ भाई सब्जी के बगीचों में काम कर रहे होते थे। वह भाइयों की मेहनत में मदद करता, और बदले में वे उसे कुछ सूखी रोटी और जैतून दे देते। अगर वे उसे काम न करने देते, तो वह सूखी रोटी या जैतून नहीं लेता था। वह जो आशीर्वाद प्राप्त करता था, उसे दोगुनी मेहनत से चुकाना आवश्यक समझता था। बेशक, केवल ईश्वर ही उसके आध्यात्मिक जीवन को जानता था, क्योंकि वह गुमनामी में, सादगी से और बना किसी धूम-धाम के रहता था। लेकिन एक घटना से, जो बाद में ज्ञात हुई, बहुत कुछ समझा जा सकता है। एक दिन वह एक मठ में गया और पूछा कि ग्रेट लेंट (Great Lent) कब शुरू हो रहा है, हालांकि इस आदमी के लिए ग्रेट लेंट लगभग पूरे साल ही चलता था। फिर वह अपनी 'गुफा' में वापस गया और अंदर से खुद को बंद कर लिया। लगभग तीन महीने बीत गए, और उसे पता भी नहीं चला। एक दिन वह अपनी कोठरी से बाहर निकला और यह पूछने के लिए एक मठ में गया कि क्या ईस्टर जल्द आ रहा है। उसने प्रार्थना सभा में भाग लिया, दैवीय धर्मवर्धि के दौरान पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया, और फिर भिक्षुओं के साथ भोजन करने गया। भोजन पर, उसने लाल अंडे देखे। उस दिन पुनरुत्थान का पर्व था।⁷⁸ वह हैरान हो गया और उसने एक भ्राता से पूछा: "सुनो, क्या वाकई ईस्टर आ गया है?" दूसरे ने जवाब दिया, "तुम किस ईस्टर की बात कर रहे हो? कल आरोहण है!" दूसरे शब्दों में, इस व्यक्ति ने पूरे बड़े लेंट (Great Lent) और आरोहण तक के चालीस दिनों में उपवास रखा था! इस प्रकार वह अपनी मृत्यु के क्षण तक दृढ़ रहा। दो महीने बाद एक शिकारी ने उसे पाया और जो कुछ हुआ था, वह पुलिस और एक डॉक्टर को बता दिया। "न केवल सड़ने की कोई गंध नहीं थी," डॉक्टर ने मुझे बताया, "बल्कि इसके विपरीत, उसके शरीर से एक मधुर सुगंध आ रही थी।"

बच्चों के लिए उपवास

— गेरोंना, क्या पाँच या छह साल के बच्चों को पवित्र कम्युनियन से पहले उपवास करना चाहिए?

— कम से कम, जसि दिन उन्हें पवित्र संस्कार प्राप्त करना है, उसके एक दिन पहले शाम को उन्हें तेल वाला लेंट का भोजन करना चाहिए। लेकिन यह मामला आध्यात्मिक पिता के अधिकार क्षेत्र में आता है। माँ के लिए यह सबसे अच्छा होगा कि वह आध्यात्मिक पिता से पूछे कि उसके बच्चे को कैसे उपवास करना चाहिए, क्योंकि बच्चे को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं और उदाहरण के लिए, उसे दूध पीने की आवश्यकता हो सकती है।

— जेरोंडा, एक छोटे बच्चे को कतिनी देर तक उपवास करना चाहिए?

— यदि कोई बच्चा स्वस्थ और तंदुरुस्त हो, तो वह उपवास कर सकता है। इसके अलावा, अब लेंट के दौरान उपवास-उपयुक्त खाद्य पदार्थों की एक विशाल श्रृंखला उपलब्ध है। पहले बच्चे पूरे दिन दौड़ते-भागते और खेलते हुए उपवास करते थे। फ़ारस में, महा-उपवास के दौरान, सभी — बच्चे और वयस्क दोनों — नौ बजे तक उपवास करते थे।⁷⁹ माता-पिता अपने बच्चों को कल में इकट्ठा करते, उनके साथ खेलने के लिए खिलौने छोड़ देते, और दोपहर के तीन बजे, जब चर्च की घंटी 'प्रीसैक्टिफाइड गविग्स की लटिर्जी' के लिए बजती, तो वे चर्च जाते और पवित्र कम्युनियन ग्रहण करते। कैपाडोसिया के संत आर्सेनियस ने कहा: "बच्चे, यदि वे पूरे दिन खेलते हैं, तो वे भोजन के बारे में सोचते भी नहीं हैं। तो निश्चिंता रूप से वे अब उपवास सहन कर सकते हैं, जब स्वयं मसीह उन्हें उपवास करने में मदद कर रहे हैं?"

और जो वयस्क उपवास नहीं करते, वे भी जब बच्चों को उपवास करते देखते हैं तो उन्हें अंतरात्मा की पीड़ा होने लगती है। मुझे याद है जब मैं छोटा था और अपने मालिक के घर में काम करता था। हम वहाँ दोपहर का भोजन भी करते थे। बुधवार और शुक्रवार को, मैं दोपहर के भोजन के लिए रुकता नहीं था और घर जाकर

⁷⁸ ईस्टर के बाद उनतालीसवां दिन, जब चर्च में 'मसीह जी उठे हैं' और अन्य ईस्टर भजन आखिरी बार गाए जाते हैं। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁷⁹ अर्थात्, वे दोपहर के तीन बजे तक—बाइजेंटाइन समय के अनुसार नौ बजे तक—कुछ भी नहीं खाते-पीते थे।

खाना खाता था, क्योंकि वे लोग उपवास नहीं करते थे। मुझे एक विशेष बुधवार याद है; उन्होंने कुछ केक लाए और मुझे कुछ देने की पेशकश की। "धन्यवाद," मैंने उनसे कहा, "लेकिन मैं उपवास कर रहा हूँ।" "बस इसे देखो," उन्होंने आश्चर्य से कहा, "एक छोटा लड़का उपवास कर रहा है, जबकि हम बड़े लोग सब कुछ खा रहे हैं।"

जजिजासा से एक पोस्ट

उपवास के माध्यम से, एक व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रदर्शन करता है। ईश्वर के प्रति प्रेम से, वे आत्म-अनुशासन का एक कार्य करते हैं, और ईश्वर उनकी सहायता करते हैं। हालांकि, यदि कोई व्यक्ति खुद पर जबरदस्ती करता है और कहता है, 'मैं क्या कर सकता हूँ?' फिर से शुक्रवार आ गया – और मुझे उपवास करना है, तब वे स्वयं को सता रहे होते हैं। लेकिन यदि वे उपवास के सच्चे अर्थ को समझें और मसीह के प्रेम से उपवास करें, तो वे आनंदित होंगे। 'आज के दिन,' ऐसा व्यक्ति सोचेगा, 'मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था। उन्होंने उन्हें पीने के लिए पानी तक नहीं दिया—उन्होंने उन्हें सरिका दिया।⁸⁰ और आज मैं पूरे दिन कोई पानी नहीं पिएँगा।' ऐसा करने से, एक व्यक्ति अपने भीतर उस व्यक्ति से भी अधिक आनंद महसूस करेगा जो सबसे उत्तम ताजगी देने वाले पेय पीता है।

और बस देखो: कई सांसारिक लोग गुड फ्राइडे पर उपवास नहीं कर पाते। फिर भी वे किसी मंत्रालय के सामने फुटपाथ पर बैठकर, कुछ हासिल करने के लिए यदि और दृढ़ता से भूख हड़ताल कर रहे होते हैं। यह शैतान ही है जो उन्हें ऐसा करने की ताकत देता है। वे जो कर रहे हैं वह आत्महत्या है। फिर भी अन्य लोग, जब ईस्टर आता है, तो खुशी से ऊँचे स्वर में गाते हैं, 'मसीह जी उठे हैं,' जबकि यह सोचते हैं कि वे कतिनी अच्छी तरह से भोजन करेंगे। ऐसे लोग उन यहूदियों की तरह हैं जो मसीह को अपना राजा बनाना चाहते थे केवल इसलिए कि उन्होंने उन्हें रेगसितान में भोजन कराया था।⁸¹

और क्या तुम्हें याद है कि पैगंबर क्या कहते हैं? *"शापित हो वह जो प्रभु का कार्य लापरवाही से करता है।"*⁸² यह एक बात है कि कोई व्यक्ति उपवास के प्रति सिद्धान्त रखता हो लेकिन उपवास नहीं कर पाता क्योंकि अगर वह कुछ नहीं खाता तो उसकी टाँगें काँपने लगती हैं, वह गरि पड़ता है, आदि।

दूसरे शब्दों में, उसकी ताकत और उसका स्वास्थ्य उसे उपवास करने की अनुमति नहीं देते। यह एक बिल्कुल अलग मामला है यदि कोई व्यक्ति ताकत होते हुए भी उपवास नहीं करता। उसमें सिद्धान्त कहें? लेकिन जो व्यक्ति तपस्या करना चाहता है पर कर नहीं सकता, उसकी पीड़ा और दुख अनेक तपस्याओं के बराबर है, और उसे स्वयं उस व्यक्ति से भी अधिक पुण्य मिलता है जिसके पास शक्ति है और जो तपस्या करता है। आखिरकार, जिसके पास शक्ति है और जो तपस्या करता है, उसे एक प्रकार की संतुष्टि होती है। आज, लगभग पचास-पाँच साल की एक बेचारी महिला मुझसे मिलने आई। वह इसलिए रो रही थी क्योंकि वह उपवास नहीं कर सकती थी। उसके पति ने उससे तलाक ले लिया था। उसका एक बच्चा था, जो एक दुर्घटना में मारा गया, और वह बिल्कुल अकेली रह गई। उसकी माँ भी मर चुकी थी, और उसके पास न तो सरि पर छत है और न ही खाने के लिए एक नवाला। अब कोई एक, तो अब कोई दूसरा परिचित इस महिला को अपने घर में ले लेता है, और वह वहाँ कोई न कोई काम कर लेती है। 'फादर, मेरे अंतरात्मा पर एक भारी बोझ है,' उस गरीब महिला ने मुझसे कहा, 'क्योंकि मैं कुछ भी नहीं करती। और सबसे बुरी बात यह है कि मैं उपवास नहीं कर सकती। मुझे जो कुछ भी दिया जाता है, मैं वही खा लेती हूँ। कभी-कभी, बुधवार और शुक्रवार को, वे मुझे लेंट का भोजन देते हैं, लेकिन अक्सर वे मुझे गैर-लेंट का भोजन देते हैं, और मुझे उसे खाने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि अगर मैं नहीं खाती, तो मेरी ताकत चली जाती है और मैं अपने पैरों पर खड़ी नहीं रह सकती।' मैंने उससे कहा, "खा लो, चूँकि तुम्हारे पास ताकत नहीं है।" एक व्यक्ति को अपनी देखभाल

⁸⁰ देखें मत्ती 27:34; मरकुस 15:36; लूका 23:36 और यूहन्ना 19:29।

⁸¹ देखें यूहन्ना 6:5–15।

⁸² यरिम. 48:10.

खुद करनी चाहिए। अगर उन्हें एहसास हो कि उनकी ताकत खत्म हो रही है, तो उन्हें थोड़ा और खाना चाहिए। 'अपनी सीमाएँ खुद तय करो,' आदरणीय उपवासी नीलस कहते हैं।⁸³

— जेरोंडा, पुराने दनियों में गाँवों की कुछ महिलाएँ क्लीन मंडे से लेकर सेंट थियोडोर टायरॉन के शनिवार तक कुछ भी क्यों नहीं खाती थीं?⁸⁴ वे इतने लंबे उपवास के लिए—सभी घरेलू काम, घर, बच्चे, पशु-पक्षी और सब्जी के खेतों की देखभाल के साथ—शक्ति कैसे जुटा पाती थीं?

— अपने दिलों में ये महिलाएँ सोच रही थीं: 'अगर हमें ठीक से उपवास करना हो, तो हमें ग्रेट सैटरडे तक कुछ भी नहीं खाना पड़ेगा।' खैर, उन्होंने सोचा, मैं कम से कम पहले सप्ताह के शनिवार तक तो उपवास कर ही लूंगी — आखिर वह शनिवार तो जल्द ही आने वाला है। या शायद उन्होंने सोचा: 'मसीह ने चालीस दिन तक उपवास किया।'⁸⁵ तो क्या, क्या मैं सिर्फ एक हफ्ते का उपवास नहीं कर सकती?' इसके अलावा, ये महिलाएँ सादगी से परिपूर्ण थीं और इसलिए वे ऐसा उपवास सहन कर सकती थीं। यदि किसी व्यक्ति में सादगी और वनिम्रता होती है, तो उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है, वह वनिम्रता से उपवास करता है और द्रव्य आहार से पोषित होता है। तब उनमें द्रव्य शक्ति होती है, और लंबे उपवास के दौरान उनके पास सहनशक्ति का एक बड़ा 'भंडार' होता है। ऑस्ट्रेलिया में, सत्ताइस वर्षीय एक युवक उस बटु पर पहुँच गया था जहाँ वह अट्ठाइस दिनों तक बिना भोजन के रह सकता था। उसके आध्यात्मिक पिता ने उसे मेरे पास भेजा ताकि वह मुझे इसके बारे में बता सके। यह युवक बहुत धार्मिक था और उसमें तपस्या की भावना थी। वह पाप-स्वीकार के लिए जाता था, चर्च जाता था, चर्च के धर्मगुरुओं की रचनाएँ और सबसे बढ़कर, नया नियम पढ़ता था। एक बार, सुसमाचार में यह पढ़ते हुए कि कैसे मसीह ने चालीस दिन तक उपवास किया, उस युवक के हृदय को स्पर्श हुआ और उसने सोचा: "यदि प्रभु, जो ईश्वर हैं, और अपनी मानवता में पाप रहित पुरुष हैं, ने चालीस दिनों तक उपवास किया,⁸⁶ तो मुझे—जो एक बहुत ही पापी मनुष्य हूँ—क्या करना चाहिए?" इसलिए, उसने अपने पादरी से उपवास करने का आशीर्वाद माँगा; हालाँकि, उसने अपने पादरी को यह बताने का सोचा भी नहीं कि उसकी मंशा चालीस दिनों तक बिल्कुल कुछ भी खाने-पीने की नहीं है। इस प्रकार, उन्होंने महा-उपवास के प्रथम सप्ताह के सोमवार को अपना उपवास शुरू किया और क्रूस की वंदना के सप्ताह तक, बिना एक घूंट पानी पिए, उपवास किया। वह एक कारखाने में काम करता था, और उसका काम कठिन था — पेटियों को ढेर करना, उन्हें एक के ऊपर एक रखना। जब उपवास का अट्ठाइसवाँ दिन आया, तो काम करते समय उसे थोड़ी चक्कर आने लगी और वह एक पल के लिए बैठ गया। फिर उसने कुछ चाय पी और एक छोटा सा बसिकुट खाया। उसे लगा कि अगर वह गिर पड़ता और उसे अस्पताल ले जाया जाता, तो उन्हें पता चल जाता कि उसने उपवास से खुद को थका दिया है, और वे कहते: 'देखो—ये ईसाई उपवास से मर रहे हैं।' 'जेरोन्डा,' उसने मुझसे कहा, 'इतने दिनों के उपवास के बाद, मुझे खाने से घृणा हो रही है। लेकिन मैं खुद को कुछ खाने के लिए मजबूर करता हूँ, क्योंकि अन्यथा मैं काम नहीं कर सकता।' हालाँकि, यह युवक इस विचार से परेशान था कि उसने जो उपवास शुरू किया था, उसके चालीस दिन पूरे नहीं किए थे, और उसने यह विचार अपने आध्यात्मिक पिता से साझा किया। आध्यात्मिक पिता ने तर्कसंगत शब्दों में जवाब दिया: 'जनि दिनों तुमने उपवास किया, वे काफी थे; ऐसे विचारों से खुद को पीड़ा मत दो।' तब उस पादरी ने उसे मेरे पास भेजा ताकि अगर उसे सताने वाला वह विचार अभी भी बना रहता है, तो मैं उसे दूर करने में उसकी मदद कर सकूँ। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उस युवक के इरादे शुद्ध थे, मैंने उससे पूछा: "क्या आपने चालीस दिन के उपवास का संकल्प लिया था?" "नहीं," उसने जवाब दिया। "जब तुमने उपवास के लिए अपने आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद माँगा था, तो क्या तुमने बस चालीस दिनों तक कुछ भी न खाने-पीने के अपने इरादे का उल्लेख करना भूल गए थे, या तुमने जानबूझकर इस—कथित रूप से अच्छे—इरादे को उनसे छिपाया था, ताकि तुम अपनी मर्जी से चालीस दिनों का उपवास कर सको?" मैंने फिर से पूछा। "नहीं, फादर,"

⁸³ देखें द वर्क्स ऑफ़ अवर वेनेरेबल फादर नीलस ऑफ़ सनिई। मॉस्को, 2000। पृ. 130।

⁸⁴ अर्थात्, उन्होंने पाँच दिनों तक भोजन और पानी से परहेज किया।

⁸⁵ देखें मत्ती 4:2 और लूका 4:2।

⁸⁶ उपरोक्त।

उसने एक बार फिर जवाब दिया। फिर मैंने कहा: "बेशक, मैं आपके इरादों को खुद समझ गया था। लेकिन मैंने आपसे यह इसलिए पूछा ताकि आप खुद यह महसूस कर सकें कि जिन दिनों आपने उपवास किया, उन दिनों का आपको स्वरगीय पुरस्कार मिलेगा। वे दिन ही काफी थे। और इस विचार से खुद को पीड़ा न दें कि आप चालीस दिन का उपवास पूरा नहीं कर सके। हालाँकि, अगली बार, अपने आध्यात्मिक पिता को अपने मन में आने वाले अच्छे विचारों और अपने दिल में बसी अच्छाई के बारे में बताएं। और आध्यात्मिक पिता यह तय करेंगे कि आपको ऐसा कोई कार्य या उससे मलिता-जुलता कोई कार्य करने की आवश्यकता है या नहीं।" इस युवक में अपने भीतर विकसित किए गए विचारों के कारण महान विमर्शता थी। और उसने यह उपवास मसीह के प्रति अपने महान प्रेम के कारण, मसीह के लिए किया। और यह स्वाभाविक ही था कि मसीह ने अपनी दिव्य कृपा से उसे मजबूत किया। लेकिन यदि कोई [जिसमें ऐसी विमर्शता नहीं है और जो स्वार्थी है] ऐसा उपवास करने की इच्छा रखता है, यह कहते हुए, 'दूसरे ने यह किया है तो मैं क्यों नहीं कर सकता?'—तो वे केवल एक या दो दिन का उपवास करेंगे और फिर छोड़ देंगे। और उनका मन भी म्लान हो जाएगा, क्योंकि प्रेमेश्वर की कृपा उनसे दूर हो जाएगी। ऐसा व्यक्ति उस उपवास पर किए गए प्रयास पर भी पछताएगा, जैसे वह बड़ी मुश्किल से सहन कर पाया। वह यहाँ तक कह सकता है: 'खैर, इस उपवास से मुझे क्या मिला?'

उपवास के द्वारा, एक व्यक्ति को मेमने के समान हो जाता है। यदि वे एक दानव में परिवर्तित हो जाते हैं, तो इसका अर्थ दो बातों में से एक है: या तो उन्होंने जो तपस्या की है वह उनकी शक्ति से परे है, या वे इसे स्वार्थ के लिए कर रहे हैं और इसलिए उन्हें दिव्य सहायता नहीं मिलती। यहां तक कि जंगली जानवर भी कभी-कभी उपवास से वश में और वशवत हो जाते हैं। बस देखिए: जब जानवर भूखे होते हैं, तो वे लोगों के पास आते हैं। सहज रूप से, जानवरों को एहसास होता है कि वे भूख से मर जाएंगे, लेकिन लोगों के पास जाकर वे भोजन पा सकते हैं और जीवित रह सकते हैं। एक बार मैंने एक भेड़िया देखा था जो भूख के मारे एक मेमने की तरह आज्ञाकारी हो गया था। सर्दियों में, जब बहुत बर्फबारी हुई थी, तो वह पहाड़ों से उतरकर हमारे आँगन में आ गया। मेरा भाई और मैं मवेशियों को चारा खिलाने के लिए बाहर गए, और मेरे हाथ में एक लालटेन थी। जब मेरे भाई ने भेड़िये को देखा, तो उसने एक कोयला खुरचने वाला डंडा उठाया और उस पर वार करना शुरू कर दिया। और भेड़िये ने बलि कुल भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

यदि कोई व्यक्ति उस स्तर तक नहीं पहुँचता जहाँ वह जो कुछ भी करता है, वह ईश्वर के प्रति प्रेम और अपने साथी मनुष्यों—अपने पड़ोसियों—के प्रति प्रेम से करता है, तो वह अपनी ऊर्जा व्यर्थ में बर्बाद कर रहा है। यदि वे यह अहंकारी विचार मन में रखकर उपवास करते हैं कि वे कुछ महत्वपूर्ण कर रहे हैं, तो उनका पूरा उपवास व्यर्थ हो जाता है। फिर ऐसा व्यक्ति एक छेद वाली बाल्टी की तरह हो जाता है, जिसमें कुछ भी नहीं ठहरता। एक छेद वाली बाल्टी में पानी डालने का प्रयास करें — वह सब धीरे-धीरे रसि जाएगा।

हल्के पेट का आनंद

यदि कोई व्यक्ति संयम का पालन नहीं करता, तो वह [वसा] का पूरा भंडार अपने साथ रखता है। लेकिन यदि वह संयम का पालन करता है और केवल उतना ही खाता है जतिनी उसे आवश्यकता है, तो उसका शरीर जो कुछ भी वह खाता है उसे जला देता है, और वह शरीर में संग्रहित नहीं होता।

विविध आहार पेट को फैलाता है और भूख बढ़ाता है, लेकिन इसके अलावा यह व्यक्ति को ढीला बना देता है और शारीरिक बेचैनी पैदा करता है। यदि भोजन में केवल एक ही व्यंजन परोसा जाए और वह बहुत स्वादशून्य न हो, तो व्यक्ति उसे पूरा भी नहीं कर पाता; या — यदि वह स्वादशून्य हो और वह लालच में आ जाए — तो वह थोड़ा और खा लेता है। हालाँकि, अगर आप अपने सामने मछली, सूप, आलू, पनीर, एक अंडा, सलाद, फल और कोई मीठा व्यंजन सजा हुआ देखें, तो आप सब कुछ खाने और दोबारा माँगने के लिए भी लालायित होंगे। आपकी भूख एक चीज़ से दूसरी चीज़ के लिए भड़कती है; एक चीज़ खा लेने के बाद, आप उसके ठीक बगल में रखी अगली चीज़ खाना चाहेंगे। और ज़रा देखिए: एक व्यक्ति अपने पड़ोसी का एक भी

शब्द बर्दाश्त नहीं कर सकता। वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता, वह वह बर्दाश्त नहीं कर सकता... फरि भी बेचारा पेट सब कुछ सहन करता है और हम जो कुछ भी उस पर डालते हैं, वह सब झेल लेता है। और हम उससे पूछते हैं, 'क्या तुम इसे पचा पाओगे?' दूसरे शब्दों में, पेट, जैसी कोई तरक नहीं है, सद्गुण में हमसे भी आगे है! वह हर चीज़ को पचाने की पूरी कोशिश करता है! और अगर हमने जो एक भोजन खाया है वह दूसरे के अनुकूल नहीं है, तो जब वे पेट में पहुँचते हैं, तो वे आपस में 'झगड़ना' शुरू कर देते हैं। और तब पेट के लिए क्या बचता है? वह अपच से पीड़ित होने लगता है।

— कैसे, गैरोन्डा, कोई बहुत ज्यादा खाने की आदत को तोड़ सकता है?

— तुम्हें खुद पर थोड़ी लगाम कसने की जरूरत है। अपनी मनपसंद चीज़ें मत खाओ, ताकतुम्हारी भूख न बढ़े, क्योंकि धीरे-धीरे, वह 'कोठरी' बस बड़ी और बड़ी होती जाती है। फरि तुम्हारा पेट — जैसा कि अब मकरयिस कहते हैं, वह दुष्ट 'कर वसूलने वाला' — लगातार और भी ज्यादा मांगता रहता है। जब आप कुछ चखते हैं, तो उसका आनंद तो लेते हैं, लेकिन बाद में आपको नींद आने लगती है: आप काम भी नहीं कर पाते। लेकिन अगर आप सिर्फ एक ही तरह का भोजन करें, तो इससे आपकी भूख कम होती है।

— गैरोन्डा, अगर मेज़ पर तरह-तरह के व्यंजन हों, भले ही थोड़ी मात्रा में—क्या तब भी व्यक्तियों को वही कठिनाई का सामना करना पड़ता है?

— अरे, मुश्किल बलिकूल वही है। बस राजनीतिक गुट छोटे-छोटे हैं, और इसलिए वे सरकार नहीं बना पाते!... जब व्यंजनों में विविधता होती है, तो ऐसा है जैसे कई राजनीतिक दल पेट में इकट्ठा हो रहे हों। एक दल दूसरे को चढ़ाता है; वे आपस में टकराते और लड़ते हैं — और अपच हो जाता है...

एक मध्यम भोजन से मिलने वाली प्रसन्नता, सबसे स्वादुष्ट व्यंजनों से मिलने वाली प्रसन्नता से भी अधिक होती है। बचपन में, मैं जंगल में जाता था और पूरे दिन बस बेगल का एक छोटा सा टुकड़ा खाता था। ओह, लेकिन मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए था! सबसे स्वादुष्ट व्यंजन भी उस आध्यात्मिक आनंद की जगह नहीं ले सकते थे जो मुझे महसूस हुआ। लेकिन मैं यह खुशी-खुशी करता था। हालाँकि, कई लोगों ने कभी हल्के पेट की खुशी का अनुभव नहीं किया है। शुरुआत में, जब वे कुछ स्वादुष्ट खाते हैं, तो उन्हें आनंद महसूस होता है, लेकिन फिर लालच और अतृप्त भोग शुरू हो जाता है; वे बहुत अधिक खा लेते हैं और — खासकर बुढ़ापे में — भारी महसूस करते हैं। इस तरह, वे खुद को हल्के पेट की खुशी से वंचित कर लेते हैं।

भाग 5.

जीवन में हम जिन परीक्षाओं का सामना करते हैं

"स्वीट पैराडाइज तक पहुँचने के लिए, इस जीवन में बहुत कड़वाहट चखनी पड़ती है और परीक्षाओं को पास करने के बाद ही पासपोर्ट मिलता है"

अध्याय 1.

"मैं आग और पानी से गुज़रा हूँ..."⁸⁷

परीक्षणों के क्रॉस

— जेरोंडा, मैं हमेशा वह छोटा क्रॉस पहनता हूँ जिससे आपने मुझे आशीर्वाद दिया था। यह क्रॉस मुश्किल समय में मेरी मदद करता है।

— आप जानते हैं, हम में से हर एक जो क्रॉस उठाता है, वह बस एक छोटा सा क्रॉस है। ये उन छोटे क्रॉसों की तरह हैं जिनमें हम अपनी गर्दन में पहनते हैं, जो जीवन भर हमारी रक्षा करते हैं। क्या आप सच में सोचते हैं कि हम कोई बड़ा क्रॉस उठा रहे हैं? केवल मसीह का क्रॉस ही बहुत भारी था, क्योंकि मसीह ने हम मनुष्यों के प्रतिप्रेम के कारण अपनी दिव्य शक्त का स्वयं उपयोग नहीं करना चाहा। और सूली पर चढ़ाए जाने के बाद, उन्होंने हर व्यक्ति के क्रॉस का बोझ स्वयं उठाया, उठाते हैं और उठाते रहेंगे, और अपनी दिव्य सहायता तथा अपनी मधुर सांतवना के द्वारा, वे हमें हमारी परीक्षाओं के दर्द से मुक्ति दिलाने हैं।

सद् ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी शक्त के अनुसार एक क्रॉस प्रदान करता है। ईश्वर किसी व्यक्ति को केवल कष्ट सहने के लिए क्रॉस नहीं देता, बल्कि क्रॉस के माध्यम से उसे स्वर्ग तक आरोहण करने के लिए देता है। क्योंकि, मूलतः क्रॉस स्वर्ग की सीढ़ी है। परीक्षणों के दर्द को सहते हुए हम [स्वर्गीय] खजाने में कतिनी संपत्ति जमा कर रहे हैं, यह समझकर, हम शिकायत नहीं करेंगे, बल्कि उस छोटे से क्रॉस को उठाकर, जिससे उसने हम पर प्रदान किया है, हम ईश्वर की महिमा करेंगे। ऐसा करने से, हम इस जीवन में भी आनंदित होंगे, और आने वाले जीवन में, हमें एक [आध्यात्मिक] 'पेंशन' और एक 'मुआवजा' राशि दोनों प्राप्त होंगी। वहाँ, स्वर्ग में, हमें उन संपत्तियों और वरिसत—की गारंटी है जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार की हैं। हालाँकि, यदि हम परमेश्वर से परीक्षाओं से बचाने के लिए प्रार्थना करें, तो वह ये संपत्तियाँ और वरिसत दूसरों को दे देता है, और हम उनसे वंचित रह जाते हैं। लेकिन अगर हम धीरज रखें, तो वह हमें आध्यात्मिक ब्याज भी प्रदान करेगा।

जो व्यक्ति यहाँ कष्ट सहता है, वह धन्य है, क्योंकि इस जीवन में जितना अधिक वह कष्ट सहता है, आने वाले जीवन के लिए उतना ही अधिक लाभ प्राप्त करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहा है। परीक्षण के क्रॉस उन प्रतिभाओं और उपहारों से भी बड़े हैं जिनसे ईश्वर हमें सुसज्जित करते हैं। धन्य है वह व्यक्ति जो एक नहीं, बल्कि पाँच क्रॉस उठाता है। पीड़ा या शहीद की मृत्यु अपने साथ एक शुद्ध पुरस्कार लाती है। इसलिए, हर परीक्षा में, हम कहें: 'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे मेरे ईश्वर, क्योंकि यह मेरी मुक्ति के लिए आवश्यक था।'

परीक्षण लोगों को होश में आने में मदद करते हैं

— जेरोंडा, मुझे खबर मिली है कि मेरे परिवार का दुख खत्म होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है। क्या कभी उनका दुख समाप्त होगा?

— धैर्य रखो, बहन, और ईश्वर में आशा न खोओ। जब हम उन सभी परीक्षाओं को देखते हैं जो तुम्हारे परिजनों पर आई हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर तुमसे प्रेम करता है और इन परीक्षाओं को इसलिए आने देता है ताकि तुम्हारा पूरा परिवार आध्यात्मिक रूप से शुद्ध हो सके। यदि हम सांसारिक दृष्टिकोण से तुम्हारे परिवार पर आई परीक्षाओं को देखें, तो तुम दुखी प्रतीत होगी। हालाँकि, जब एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए, [तो हमें एहसास होता है] कि आप खुश हैं, और आने वाले जीवन में, जिनमें इस जीवन में खुश माना जाता है, वे आपसे ईर्ष्या करेंगे। इन सभी परीक्षाओं को सहन करके, आपके माता-पिता [वास्तव में] एक आध्यात्मिक करतब कर रहे हैं। क्योंकि वे एक अन्य — एक उत्कृष्ट, आध्यात्मिक रूप के करतब — को नहीं समझते या उससे अनजान हैं [अर्थात्, एक ऐसा कारनामा जो अपनी इच्छा से किया गया हो]। लेकिन जो भी हो, आपके परिवार और कुछ अन्य परिवारों पर आई इन परीक्षाओं में कोई रहस्य छिपा हुआ है। आखिरकार, आपके परिजनों के लिए इतनी सारी प्रार्थनाएँ की जा रही हैं! ईश्वर के मार्ग को कौन जानता है? ईश्वर अपना हाथ बढ़ाए और इन परीक्षाओं को समाप्त करे।

— गेरोंडा, क्या लोगों के लिए दुख और परीक्षाओं के माध्यम से नहीं, बल्कि किसी अन्य तरीके से होश में आना संभव नहीं है?

— हर बार किसी परीक्षा को आने देने से पहले, ईश्वर ने सौम्य तरीके से [किसी व्यक्ति को] होश में लाने की कोशिश की। हालांकि, उन्हें समझा नहीं गया, और इसलिए उन्होंने उस परीक्षा को होने दिया। इस पर विचार करें: यदि एक अवज्ञाकारी बच्चा अपने पिता की नहीं सुनता, तो पिता पहले उसे प्यार से सुधारने की कोशिश करता है, और उसे अपनी मनमर्जी करने देता है। लेकिन, यदि बच्चा अपनी आदतें नहीं सुधारता, तो पिता अपनी दया को सख्ती से बदल देता है — ताकि अपने बच्चे को सही रास्ते पर ला सके। परमेश्वर के साथ भी ऐसा ही है—कभी-कभी, यदि कोई व्यक्ति सौम्य व्यवहार करने पर भी नहीं समझता है, तो वह उसे परीक्षाएँ देता है ताकि वह होश में आ जाए। यदि लोगों को थोड़ा दर्द, बीमारी और इसी तरह की चीजों का अनुभव न होता, तो वे दरदियों की तरह हो जाते और परमेश्वर के बिल्कुल भी नजिक न आते।

यह जीवन छलावा भरा और कष्ट है। और यह अच्छा है क्योंकि यह कष्ट है, क्योंकि वे कड़वी दुख, जो कड़वी दवाओं की तरह हमारी आत्मा को ठीक करते हैं, जल्दी बीत जाएँगी। इस पर विचार करो: जब मरीज पीड़ित होते हैं, तब डॉक्टर भी उन्हें कड़वी दवा देते हैं, क्योंकि मरीज मीठी चीज से नहीं, बल्कि कड़वी चीज से ठीक होते हैं। मेरा आशय यह है कि जो कड़वा है, वह शरीर के स्वास्थ्य और आत्मा के मोक्ष दोनों को लाता है।

जब हम दर्द में होते हैं, तो मसीह हमसे मिलते हैं।

एक व्यक्ति जो परीक्षाओं का सामना नहीं करता, जो दर्द महसूस नहीं करना चाहता, जो दुख सहना नहीं चाहता, जो परेशान या आलोचिता होना नहीं चाहता, बल्कि एक बेफ़िक्र जीवन जीने का प्रयास करता है, वह वास्तविकता से कट चुका है। *"तू ने हमें आग और पानी से होकर निकाला, और हमें वशिराम के स्थान पर पहुँचाया,"*⁸⁸ — भजनकार कहता है।

बस सोचिए, हमारी माता, परमेश्वर की अतिपवित्र माता ने भी कष्ट झेले, और हमारे चर्च के संतों ने भी कष्ट भोगा। इसलिए हमें भी कष्ट भोगना चाहिए। क्योंकि हम उन्हीं के पदचिह्नों पर चल रहे हैं, बस अंतर इतना है कि इस जीवन में थोड़ा सा दुख या कष्ट भोगकर हम [अपने पापों का] ऋण चुकाते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं। लेकिन मसीह भी दुख के माध्यम से पृथ्वी पर आए। वे स्वर्ग से अवतरित हुए, मानव रूप धारण किया, दुख सहन किया, और सूली पर चढ़ाए गए। और अब एक ईसाई यह समझता है कि मसीह उनसे ठीक इसी माध्यम से - दुख के माध्यम से - मिलते हैं।

जब कोई व्यक्ति दुख से पीड़ित होता है, तो मसीह उनके साथ होते हैं। लेकिन जब कोई व्यक्ति बिल्कुल भी दुख का अनुभव नहीं करता, तो ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया है। ऐसा व्यक्ति तो अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है और न ही कोई आध्यात्मिक भंडार बनाता है। बेशक, मैं उन लोगों की बात कर रहा हूँ जो मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए [स्वयं] दुख सहना नहीं चाहते। ऐसा व्यक्ति कहता है, "मेरी सेहत अच्छी है। मेरा खाना-पीना बढ़ाया है। मैं तृप्त होकर खाता हूँ, एक बेफ़िक्र और शांतपूर्ण जीवन जीता हूँ।" और फिर भी ऐसा व्यक्ति यह नहीं कहता, "हे परमेश्वर, तुझमें महिमा हो!" काश वे कम से कम, कृतज्ञता के साथ उन सभी आशीर्वादों को स्वीकार तो करते जो परमेश्वर उन पर करते हैं, तो यह एक बात होती। ऐसे व्यक्ति को यह कहना चाहिए, 'मैं इसके लायक नहीं था। लेकिन, चूँकि मैं कमजोर हूँ, ईश्वर मुझ पर सहनशीलता से व्यवहार करते हैं।' संत अम्ब्रोज़ के जीवन में वर्णित है कि एक अवसर पर संत और उनके साथियों का एक धनी व्यक्ति के घर में रात बिताने के लिए स्वागत किया गया। वहाँ अकल्पनीय धन-संपत्ति देखकर, संत अम्ब्रोज़ ने पूछा कि क्या इस व्यक्ति ने अपने जीवन में एक बार भी दुख का अनुभव किया है। "नहीं, कभी नहीं," धनी व्यक्ति ने उत्तर दिया। 'मेरी संपत्ति लगातार बढ़ रही है, मेरे खेतों में भरपूर फसल होती है, मुझे कोई दर्द महसूस नहीं होता और मुझे यह भी नहीं पता कि बीमारी क्या होती है।' तब संत

⁸⁸ भजन संहिता 65:12.

एम्ब्रोज रो पड़े और अपने साथियों से कहा: 'गाड़ियाँ तैयार करो और हमें इस जगह से तुरंत नकिल जाना चाहिए, क्योंकि ईश्वर ने इस आदमी पर कभी कृपा नहीं की!' और जैसे ही संत और उनके साथी सड़क पर नकिले, उस धनी व्यक्ति का घर ढह गया! वह बेफ़किर, दुख-रहति जीवन जो इस व्यक्ति ने जिया था, वास्तव में ईश्वर द्वारा त्याग था।⁸⁹

"क्योंकि प्रभु उसी को अनुशासति करता है जसिं वह प्रेम करता है..."⁹⁰

— गेरोना, आज लोग इतनी पीड़ा क्यों सहते हैं?

— ईश्वर के प्रेम से। एक नन के रूप में, आप सुबह जल्दी उठती हैं, अपने मठ के नियम का पालन करती हैं, अपनी माला से प्रार्थना करती हैं, प्रणाम करती हैं और इसी तरह। गृहस्थ लोगों के लिए, जिन कठिनाइयों से वे गुजरते हैं, वे ही उनका नियम, उनका वधान है। इन कठिनाइयों और कष्टों के माध्यम से, लोग शुद्ध होते हैं। ये कष्ट उन्हें एक बेफ़किर सांसारिक जीवन की तुलना में अधिक लाभ पहुँचाते हैं, जो न तो उन्हें ईश्वर के करीब आने में मदद करता है और न ही स्वर्ग के लिए आध्यात्मिक संचय करने में। इसलिए, लोगों को दुख और प्रलोभनों को ईश्वर की ओर से उपहार के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

सद् ईश्वर, अपने बच्चों के अपने पास लौटने की इच्छा रखते हुए, उन्हें परीक्षाओं के माध्यम से अनुशासति करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक सद् पति करता है। वह यह प्रेम के कारण, दैवीय सद्गुण के कारण करते हैं, न कद्वेष या सांसारिक, कानूनी न्याय के कारण। दूसरे शब्दों में, अपनी सृष्टि को बचाने और उन्हें अपने स्वर्गीय राज्य का वारस बनाने की इच्छा से, ईश्वर उन्हें परीक्षाओं का सामना करने की अनुमति देते हैं। वह इन परीक्षाओं को इसलिए होने देते हैं ताकि मिनुष्य प्रयास कर सके, वीरता के कार्य कर सके, और कष्टों में धैर्य की परीक्षा में सफल हो सके, ताकि शैतान यह न कह सके: 'तो फिर आप उसे इनाम क्यों देते हैं, या आप उसे कैसे बचाते हैं? आखिरकार, उसने परशिरम नहीं किया है।' ईश्वर सांसारिक जीवन से चतिति नहीं हैं; वे आने वाले जीवन से चतिति हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, वे हमारे आने वाले जीवन की परवाह करते हैं, और उसके बाद ही हमारे सांसारिक जीवन की।

— जेरोंडा, तो फिर ऐसा क्यों है कि ईश्वर कुछ लोगों को कई परीक्षाएँ भेजता है, जबकि दूसरों को एक भी नहीं भेजता?

— शास्त्र क्या कहता है? *"क्योंकि प्रभु जनिहें प्रेम करता है, उन्हें अनुशासति करता है..."*⁹¹ उदाहरण के लिए, एक पति के आठ बच्चे हैं। पाँच अपने पति के साथ घर पर रहते हैं, जबकि तीन घर छोड़कर उनके बारे में सब कुछ भूल जाते हैं। यदि पति के साथ रहने वाले बच्चे कुछ गलत करते हैं, तो वह उन्हें डाँट सकता है, या सरि पर हल्की थप्पड़ मार सकता है, या, यदि उन्होंने अच्छा व्यवहार किया हो, तो उन्हें प्यार दिखाकर चॉकलेट बार दे सकता है। लेकिन जो अपने पति से दूर रहते हैं, उन्हें न तो स्नेह मिलता है और न ही सरि पर थप्पड़। ईश्वर भी इसी तरह काम करते हैं। जो उनके साथ रहते हैं, और जो उनके प्रति भक्तपूरण हैं, उन्हें यदि कोई गलती हो जाती है, तो ईश्वर उन्हें 'सरि पर थप्पड़' के साथ दंडित करते हैं, और वे अपने पाप का प्रायश्चित्त करते हैं। या, यदि वह उन्हें अधिक 'हल्की सजाएँ' देता है, तो वे अपने लिए स्वर्गीय पुरस्कार जमा करते हैं। और जो उससे दूर रहते हैं, उन्हें वह लंबे जीवन के वर्ष प्रदान करता है ताकि वे पश्चाताप कर सकें। यही कारण है कि हम सांसारिक लोगों को गंभीर पाप करते हुए देखते हैं और, इसके बावजूद, वे भौतिक समृद्धि का आनंद लेते हैं और बना किसी कठिनाई के लंबा जीवन जीते हैं। यह ईश्वर की व्यवस्था से होता है—ताकिये लोग पश्चाताप कर सकें। यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं, तो आने वाले जीवन में उनका कोई बचाव नहीं होगा।

⁸⁹ देखें द ग्रेट साइनाक्सरायिन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स चर्च, खंड 12, पृष्ठ 243–244।

⁹⁰ नीतविचन 3:12.

⁹¹ नीतविचन 3:12.

ईश्वर लोगों द्वारा सहन की जाने वाली पीड़ा से व्यथित है।

लोग कतिनी पीड़ा सहते हैं! उन्हें कतिनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है! कुछ लोग चलते-फरिते दो मिनट में अपनी पीड़ा बताने और थोड़ी सांतवना पाने के लिए यहाँ आते हैं। एक थकी हुई माँ ने मुझसे कहा: 'जेरोन्डा, ऐसे क्षण आते हैं जब मुझमें सहने की ताकत नहीं रहती। तब मैं प्रार्थना करती हूँ: "हे मेरे मसीह, मुझे थोड़ी देर के लिए विश्राम दे दो, और फिर दुख आने दो।"' लोगों को प्रार्थना की कतिनी जरूरत है! लेकिन, इसके अलावा, हर परीक्षा ईश्वर का एक उपहार भी है। यह आने वाले जीवन में प्रवेश करने की ओर एक और 'बढ़ि' है। आने वाले जीवन में पुरस्कार की यह आशा मुझे आनंद, सांतवना और शक्ति देती है, और मैं उन दुखों के दर्द को सहन करने में सक्षम हो पाता हूँ जो बहुत, बहुत से लोगों को सताते हैं।

हमारा ईश्वर बाल नहीं, बल्कि प्रेम के ईश्वर हैं। वे वही पति हैं जो अपने बच्चों के दुख को देखते हैं, जब वे वभिनिन प्रलोभनों और परीक्षाओं का सामना करते हैं जो उन्हें पीड़ित करती हैं। और वे हमें पुरस्कृत करेंगे, बशर्ते हम इस छोटी सी शहादत को सहन करें जो इस परीक्षा के रूप में हम पर आई है—या, बल्कि, इस आशीर्वाद के रूप में जो हम पर आया है।

— गेरोना, कुछ लोग पूछते हैं: 'लेकिन क्या यह करूरता नहीं है कि ईश्वर ने ऐसा होने दिया? क्या ईश्वर को इससे पीड़ा नहीं होती?'

— बीमारी, राक्षसों, बर्बर लोगों और इसी तरह की अन्य पीड़ाओं से पीड़ित लोगों के लिए ईश्वर का दुख, उनके लिए तैयार किए गए स्वर्गीय पुरस्कार की प्रसन्नता के साथ जुड़ा होता है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर उस पुरस्कार को ध्यान में रखता है जो परीक्षा से गुजरने वाले व्यक्तियों को स्वर्ग में प्राप्त होगा। वह जानता है कि ऐसे व्यक्तियों आने वाले जीवन में क्या इंतजार कर रहा है, और यह ही ईश्वर को इस दर्द को झेलने की शक्ति देता है। आखिरकार, ईश्वर ने हेरोद को इतने सारे अपराध करने की अनुमति दी!⁹² हेरोद ने चौदह हजार शिशुओं का कत्ल करवाया, साथ ही उन अनगिनत माता-पिता का भी जनिहोंने अपने बच्चों को सैनिकों से मारने नहीं दिया! इन माता-पिता को भी मार डाला गया। अपने कमांडरों को खुश करने के लिए, बर्बर सैनिकों ने शिशुओं के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। और इन शिशुओं ने जतिना अधिक कष्ट सहा, उतना ही अधिक दर्द ईश्वर को हुआ। लेकिन उनकी प्रसन्नता भी उतनी ही महान थी। वे स्वर्ग में उनका इंतजार कर रही परम महिमा पर आनंदित हुए। वे इन छोटे-छोटे स्वर्गदूतों के लिए आनंदित हुए, जो शहीदों के स्वर्गदूतों का कर्म बनाने वाले थे। शहीदों से बने स्वर्गदूत!

दुख के समय, ईश्वर लोगों को सच्ची सांतवना देता है।

ईश्वर, हमसे निकट होकर, अपने बच्चों के दुखों को देखता है और हमें सांतवना देता है, ठीक वैसे ही जैसे एक स्नेही पति करता है। आप क्या सोचते हैं—क्या वह सचमुच अपने बच्चे को दुख में देखना चाहता है? ईश्वर उनके सभी दुखों और आँसुओं का ध्यान रखता है, और बाद में उन्हें इसके लिए पुरस्कृत करेगा। केवल ईश्वर ही दुख के समय सच्ची सांतवना देता है। इसलिए, जो व्यक्ति सच्चे जीवन या परमेश्वर में विश्वास नहीं करता, और आत्मा को क्लेश देने वाली परीक्षाओं के दौरान उनकी दया नहीं मांगता, वह पूर्ण निराशा में रहता है। ऐसे व्यक्तियों जीवन निरर्थक है। वे इस जीवन में असहाय, अवलिंबनीय और पीड़ित रहते हैं, और उस पर भी, वे अपनी आत्मा को अनंत काल के लिए शापित कर लेते हैं।

हालाँकि आध्यात्मिक लोगों को अपनी कोई दुख नहीं होती, क्योंकि वे मसीह के समीप रहकर उन सभी परीक्षाओं पर विजय प्राप्त कर लेते हैं जो उन पर आती हैं। ऐसे लोग दूसरों के दुखों की तीव्र कड़वाहट को सहते हैं, लेकिन साथ ही उन्हें ईश्वर का प्रचुर प्रेम भी प्राप्त होता है। जब मैं गाता हूँ, 'सर्व पवतिर देवी, मुझे मानवीय मध्यस्थता के भरोसे न छोड़ो', तो कभी-कभी मैं इन शब्दों पर रुक जाता हूँ... 'लेकिन अपने सेवक की प्रार्थनाएँ स्वीकार करो...' अगर मुझे कोई दुख नहीं है, तो मैं ये शब्द कैसे उच्चारित कर सकता

⁹² मत्ती 2:16 देखें।

हूँ: '... क्योंकि दुख मुझ पर हावी हो जाता है, मैं इसे सहन नहीं कर सकती...' ⁹³ मैं झूठ कैसे बोल सकती हूँ? आध्यात्मिक रूप से कहें तो, परीक्षाओं में कोई दुख नहीं है, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपने मन को आध्यात्मिक रूप से सही कर ले, तो सब कुछ बदल जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने दर्द की कड़वाहट के साथ मधुर यीशु को छू ले, तो उसकी सारी कड़वाहट और पीड़ा मधु में बदल जाती है।

आध्यात्मिक जीवन के रहस्यों और उस रहस्यमयी तरीके को समझ लेने के बाद, जिसमें ईश्वर कार्य करते हैं, व्यक्ति उन घटनाओं से नरिश नहीं होता जो उस पर घटित होती हैं। वे खुशी-खुशी उस कड़वी दवा को स्वीकार करते हैं जो ईश्वर उनकी आत्मा के स्वास्थ्य के लिए देते हैं। ऐसा व्यक्ति जो कुछ भी उसके साथ होता है, उसे अपनी प्रार्थना का परिणाम मानता है, क्योंकि वह नरितर ईश्वर से अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए प्रार्थना करता है। हालांकि, जब लोग सांसारिक दृष्टिकोण से परीक्षाओं का सामना करते हैं, तो वे कष्ट भोगते हैं। लेकिन चूँकि ईश्वर हम में से हर एक पर नगिह रखते हैं, इसलिए हम में से हर एक को खुद को पूरी तरह से उनके हवाले कर देना चाहिए। अन्यथा, एक व्यक्ति का जीवन एक यातना बन जाता है: वे चाहते हैं कि उनके जीवन में सब कुछ ठीक वैसा ही हो जैसा वे चाहते हैं। फिर भी चीजें उनकी इच्छानुसार नहीं होतीं, और इसलिए उनकी आत्मा को कोई शांति नहीं मिलती।

चाहे कोई व्यक्ति तृप्त हो या भूखा, चाहे उसकी प्रशंसा की जाए या उसके साथ अन्याय किया जाए, उसे हरषति रहना चाहिए और वनिम्रता तथा धैर्य के साथ सब कुछ सामना करना चाहिए। तब ईश्वर उन पर आशीर्वाद बरसाएगा — जब तक उनकी आत्मा उस अवस्था तक नहीं पहुँच जाती जहाँ वह इन आशीर्वादों को और अधिक धारण नहीं कर सकती। ईश्वर के आशीर्वाद उस आत्मा के लिए सहने के लिए अत्यधिक महान हो जाएंगे। और जतिना अधिक व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से प्रगत करेगा, उतना ही वह ईश्वर के प्रेम को देखेगा और उससे प्रभावित होगा।

ईश्वर की अनुमति से परीक्षाएँ और दुख

कभी-कभी हम जनि परीक्षाओं का सामना करते हैं, वे एंटीबायोटिक की तरह होती हैं जो ईश्वर हमारी आत्मा की बीमारी को ठीक करने के लिए हमें देते हैं। ये परीक्षाएँ हमें महान आध्यात्मिक सहायता प्रदान करती हैं। एक व्यक्ति को ईश्वर की ओर से सरि पर एक कोमल 'थपकी' मिलती है, और उसका हृदय नरम हो जाता है। बेशक, परमेश्वर [हमें परखे बना भी] जानते हैं कि हम में से प्रत्येक की क्या स्थिति है, लेकिन चूँकि हम यह नहीं जानते, इसलिए वह हमें परीक्षाओं से गुजरने देते हैं — ताकि हम स्वयं को जान सकें, अपने भीतर छिपी वासनाओं को उजागर कर सकें, और न्याय के दिन हमारे ऊपर अत्यधिक दावे न हों। क्योंकि भले ही ईश्वर हमारी प्रवृत्तियों पर आँखें मूंद लें और हमें जैसा है वैसा ही स्वर्ग में ले जाएँ, तब भी हम वहाँ भी भ्रम और असंतोष का तूफान मचा देंगे। इसलिए, ईश्वर शैतान को यहाँ प्रलोभन पैदा करने की अनुमति देते हैं, ताकि ये प्रलोभन हमसे [हमारे जुनून की] धूल झाड़ सकें, और ताकि हमारी दुखों के माध्यम से, हमारी आत्मा वनिम्र और शुद्ध हो सके। और उसके बाद, ईश्वर हमें अपनी कृपा से भर देते हैं।

सच्ची खुशी उस कड़वाहट से उत्पन्न होती है जिससे कोई व्यक्ति मिसीह की खातिर खुशी-खुशी सहन करता है — वही जनिहोंने स्वयं हमें बचाने के लिए कड़वाहट सहन की। एक ईसाई को और भी अधिक आनंदित होना चाहिए जब उस पर कोई परीक्षा आती है, भले ही उसने स्वयं इसके लिए कोई कारण न दिया हो।

कभी-कभी हम ईश्वर से कहते हैं: 'हे मेरे ईश्वर, यह न जानते हुए कि आप क्या करेंगे, मैं स्वयं को पूरी तरह से आपके हवाले कर देता हूँ ताकि आप मुझे एक इंसान बना सकें।' और ईश्वर, इन शब्दों को सुनकर, मुझे सरिफ एक इंसान ही नहीं, बलुक एक इंसान से भी कुछ बड़ा बनाना चाहता है। इसीलिए वह शैतान को आने और मुझे लुभाने तथा पीड़ा पहुँचाने की अनुमति देता है। अब, जब मैं कैसर से पीड़ित हूँ, तो मैं शैतान की चालें देखता हूँ, और मुझे यह हँसी आती है। बस देखो कि वह कैसा शैतान है! क्या आप जानते हैं कि जब ईश्वर उसे किसी को परीक्षाओं से गुजरने के लिए बहकाने की अनुमति देते हैं, तो शैतान उस व्यक्ति को

⁹³ देखें द बुक ऑफ आवर्स। मॉस्को, 1990। पृ. 288।

धोने के लिए कसि साबुन का उपयोग करता है? शैतान व्यक्ति को अपनी दुर्भावना के झाग से धोता है। उसके पास कतिना बढ़िया साबुन है! जैसे एक ऊँट गुस्से में झाग उगलता है, वैसे ही शैतान ऐसी परस्थितियों में व्यवहार करता है। और फिर वह किसी व्यक्ति को रगड़ना शुरू कर देता है। बेशक, वह ऐसा किसी व्यक्ति से गंदगी धोने और उन्हें साफ करने के लिए नहीं करता है। नहीं, वह यह द्वेष के कारण करता है। हालाँकि, ईश्वर शैतान को तब तक किसी व्यक्ति को रगड़ने देते हैं जब तक कि उसके गंदे दाग धुल नहीं जाते और वह साफ नहीं हो जाता। क्योंकि अगर ईश्वर शैतान को किसी व्यक्ति को वैसे ही रगड़ने देते जैसे कपड़ों को धोते समय रगड़ा जाता है, तो शैतान उस व्यक्ति को चीथड़ों में बदल देता।

— जेरोंडा, क्या हम कह सकते हैं कि हमारे जीवन में आने वाली वभिनिन परीक्षाएँ ईश्वर की इच्छा से होती हैं?

— नहीं, हमें परमेश्वर की इच्छा को उस सब चीज़ से भ्रमति नहीं करना चाहिए जो प्रलोभक लाता है। परमेश्वर शैतान को मनुष्य को एक नश्चिती बढ़ि तक प्रलोभति करने की स्वतंत्रता देते हैं। और वह मनुष्य को अच्छा या बुरा करने के लिए भी स्वतंत्र छोड़ देते हैं। हालाँकि, मनुष्य द्वारा किए गए बुरे काम के लिए परमेश्वर दोषी नहीं होंगे। उदाहरण के लिए, यहूदा मसीह का एक चेला था। लेकिन क्या यह कहना स्वीकार्य है कि उसके लिए एक गद्दार बनना ईश्वर की इच्छा थी? नहीं, यहूदा स्वयं था जिसने शैतान को अपने भीतर प्रवेश करने दिया। एक आदमी ने एक पादरी से पूछा: 'मैं आपसे वनिती करता हूँ, फादर, कि यहूदा के लिए एक स्मरण सभा आयोजित करें।' ऐसा था मानो वह कह रहा हो: 'हे मसीह, आप अन्यायी हैं। यह तथ्य कि यहूदा ने आपका विश्वासघात किया, आपकी इच्छा थी। अतः अब उसकी मदद करें।'।

यह दुर्लभ है कि ईश्वर कुछ धर्मनष्टि लोगों को परीक्षाओं से गुजरने देता है ताकि कोई दुष्ट जीवन जीने वाला व्यक्ति होश में आकर पश्चाताप करे। कुछ लोग परीक्षाओं के दौरान अपने जीवन के पापों का प्रायश्चित्त कर रहे होते हैं, फिर भी वे बेवजह शकियत करते हैं। ईश्वर उन्हें मदद पाने का अवसर देता है, ताकि वे उन लोगों के धैर्य का उदाहरण देख सकें जो दोषी नहीं होते हुए भी बनिा शकियत के कष्ट सहते हैं। ऐसे भक्तमिय लोगों को दोहरा पुरस्कार मिलता है। मान लीजिए कि एक बहुत अच्छा, भक्तमिय परिवार-प्रमुख अपनी पत्नी और बच्चों के साथ घर पर बैठा है। अचानक, एक भूकंप आता है, घर ढह जाता है, पूरा परिवार मलबे के नीचे दब जाता है, और भयानक पीड़ा के बाद, वे सभी मर जाते हैं। ईश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया? ताकि दूसरे—जो दोषी हैं और जनिहें दंडति किया जा रहा है—वे शकियत न करें।

इसलिए, जो कोई भी धर्मात्माओं द्वारा उठाए गए महान कष्टों पर वचार करता है, वह अपनी छोटी-मोटी परीक्षाओं से कभी नरिश नहीं होता। ऐसे लोग यह महसूस करते हैं कि अपने जीवन में वभिनिन पाप करने के बावजूद, वे धर्मी लोगों की तुलना में कम पीड़ा सहते हैं, और इसलिए वे बुद्धिमान चोर की तरह स्वीकार करते हैं: ⁹⁴ 'इन लोगों ने कुछ भी गलत नहीं किया, फिर भी इन्होंने इतनी पीड़ा झेली है।' तो फिर, हम कसि प्रकार के दुख के पात्र हैं? दुर्भाग्यवश, कुछ लोग उस अपराधी की तरह हैं जसि मसीह के बाएँ ओर सूली पर चढ़ाया गया था।⁹⁵ ऐसे लोग उन धर्मकि लोगों के बारे में कहते हैं जनिहोंने दुख सहन किया: "बस देखो—उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी सूली से चपिके रहकर बर्ताई, और उन पर क्या बड़ी बदकस्मिती आई है!"

ऐसे उदाहरण भी हैं — यद्यपि बहुत ही दुर्लभ — जब ईश्वर प्रेमवश कुछ चुने हुए तपस्वियों को महान परीक्षाओं से गुजरने की अनुमति देते हैं। वह ऐसा इसलिए करते हैं ताकि उन्हें महिमा का मुकुट पहना सकें। ऐसे लोग मसीह के अनुयायी होते हैं। इस पर वचार करें: क्योंकि संत सक्लिेटिका ने अपनी उपदेशों के माध्यम से कई लोगों को आध्यात्मिक सहायता प्रदान की, शैतान ने इस कार्य में उन्हें बाधति करने का प्रयास किया, और साढ़े तीन वर्षों तक वह आदरणीय व्यक्ति बीमारी के कारण मौन रही।⁹⁶

⁹⁴ लूका 23:39 और उसके बाद देखें।

⁹⁵ उपरोक्त।

⁹⁶ संत सक्लिेटिका की स्मृति 5 जनवरी को मनाई जाती है। देखें रूसी में संतों के जीवन। जनवरी। मॉस्को, 1904। पृ. 189

अन्य मामलों में, मसीह का एक सच्चा अनुयायी ईश्वर से अपने पड़ोसियों के पापों को क्षमा करने और उन्हें ईश्वर के धार्मिक क्रोध का शिकार न बनाने की कृपा मांगता है। ऐसा व्यक्ति प्रार्थना करता है कि ईश्वर इन पापी लोगों के बजाय उसे दंडित करे, भले ही वह स्वयं दोषी न हो। ऐसा व्यक्ति ईश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में रहता है, और ईश्वर अपने बच्चे के महान और उत्तम प्रेम से गहराई से प्रभावित और स्पर्शित होते हैं। ईश्वर न केवल उस व्यक्ति को वह दया प्रदान करते हैं जिसकी वह प्रार्थना करता है— अर्थात्, वे न केवल दूसरों के पापों को क्षमा करते हैं—बल्कि वे इस व्यक्ति को उसकी सच्ची वनिती के अनुसार शहीद होने की अनुमति भी देते हैं। साथ ही, ईश्वर ऐसे व्यक्ति के लिए स्वर्ग में सबसे उत्तम शाही महल तैयार करते हैं, और वह भी और भी अधिक महिमा के साथ, क्योंकि किई लोगों ने बाहरी दिखावे को देखकर इस व्यक्ति को अन्यायपूर्वक दोषी ठहराया और सोचा कि ईश्वर उसे, मानो, उसके अपने ही पापों के लिए दंडित कर रहे थे।

ईश्वर के प्रेम के प्रतिकृतघनता

— जेरोंडा, क्या परीक्षाएँ हमेशा लोगों के लाभ के लिए होती हैं?

— यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति परीक्षाओं का सामना कैसे करता है। जनि लोगों का स्वभाव अच्छा नहीं होता, वे जब परीक्षाएँ आती हैं तो ईश्वर की नदि करने लगते हैं। ऐसे लोग बड़बड़ाते हैं, "यह मेरे साथ क्यों हुआ?" "देखो, अमुक व्यक्ति कितना सुखी है! यह किस तरह का ईश्वर है जो यह सब होने देता है?" ऐसे लोग 'मैंने पाप किया है' नहीं कहते, बल्कि वे कष्ट भोगते हैं। दूसरी ओर, धर्मपरायण लोग इस प्रकार ईश्वर का धन्यवाद करते हैं: 'ईश्वर की महिमा हो! इस परीक्षा ने मुझे उनके और करीब ला दिया है। ईश्वर ने यह मेरे भले के लिए होने दिया है।' पहले, ऐसे लोग शायद चर्च भी नहीं जाते थे, लेकिन अपनी परीक्षाओं के बाद वे प्रार्थना सभाओं में जाने, पाप-स्वीकार करने और पवित्र Communion ग्रहण करने लगते हैं। इसके अलावा, ईश्वर अक्सर बहुत कठोर हृदय वाले लोगों को, उनकी परीक्षाओं के दौरान किसी न किसी समय, पश्चाताप की ऐसी अवस्था में ले आते हैं कि वे स्वयं पूरी तरह से बदल जाते हैं और अपने किए हुए सभी कार्यों के लिए महसूस होने वाले दर्द से चूर-चूर हो जाते हैं।

— गेरोंडा, जब हमारे लिए सब कुछ ठीक चल रहा हो, तो क्या हमें कहना चाहिए, 'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर'?

— खैर, अगर हम खुशी के समय 'हे ईश्वर, तेरा महिमा हो' नहीं कहते, तो हम दुःख के समय यह कैसे कह सकते हैं? क्या आप दुःख के समय ईश्वर का धन्यवाद करते हैं, लेकिन खुशी के समय उन्हें धन्यवाद देने से इनकार करते हैं? लेकिन, बेशक, अगर कोई व्यक्ति कृतघन है, तो ईश्वर का प्रेम उसके लिए अज्ञात है। कृतघनता एक बड़ा पाप है। मेरे लिए, यह एक घातक पाप है। एक कृतघन व्यक्ति भी किसी चीज़ से संतुष्ट नहीं होता; उसे कुछ भी प्रसन्न नहीं करता। वे छोटी-छोटी बातों पर बड़बड़ाते हैं। उनकी नज़रों में हर चीज़ और हर कोई दोषी होता है। हमारे यहाँ फारस में, अंगूर का मसूर एक बहुत प्रिय व्यंजन था। और इसलिए एक रात, एक छोटी लड़की रोने लगी क्योंकि उसे अंगूर का मसूर खाने का मन कर रहा था। क्या किया जा सकता था? उसकी माँ को पड़ोसियों के पास जाकर कुछ माँगना पड़ा। थोड़ी सी मसूर खाने के बाद, वह लड़की फिर से रोने लगी, जोर-जोर से पैर पटकने लगी और चिल्लाने लगी: 'मम्मी, मुझे भी खट्टी क्रीम चाहिए!' — उसकी माँ ने पूछा, 'मेरी जान, इस समय मैं तुम्हारे लिए खट्टी क्रीम कहाँ से लाऊँगी?' — नहीं, "मुझे खट्टी क्रीम चाहिए" और बस। वह क्या कर सकती थी? बेचारी माँ पड़ोसी के पास गई और कुछ खट्टी क्रीम उधार माँगी। खट्टी क्रीम का स्वाद चखते ही बेटी फिर से रो पड़ी। उसकी माँ ने पूछा, "अरे, अब तुम क्यों रो रही हो?" "मम्मी, मैं चाहती हूँ कि आप दोनों को मेरे लिए एक साथ मिला दें!" तब माँ ने छान्छ और खट्टी क्रीम को लेकर मिला दिया। लेकिन बेटी ने वह नहीं पिया: वह रोना बंद ही नहीं कर रही थी। "माँ, मैं इन्हें एक साथ नहीं पी सकती! मैं चाहती हूँ कि आप इन्हें मेरे लिए अलग कर दें!" उस समय, माँ के पास अपनी

बेटी के गाल पर एक जोरदार थप्पड़ मारने के सविा कोई चारा नहीं था! और इस तरह छाछ को खट्टी क्रीम से अलग कर दिया गया।

मेरा आशय यह है कि कुछ लोग बिल्कुल इसी युवती की तरह व्यवहार करते हैं, और फिर उन पर ईश्वर की सजा आती है। हमें कम से कम—अपनी कृतघ्नता स्वीकार कर—दुनि-रात उन आशीर्वादों के लिए ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए जो वह हम पर प्रदान करता है। ऐसा करने से हम कायर शैतान के पीछे-पीछे दौड़ेंगे, जो अपने सभी अनुयायियों को इकट्ठा करके काले धुएँ की तरह गायब हो जाएगा, क्योंकि [अपनी कृतघ्नता को स्वीकार करके और ईश्वर की कृपाओं के लिए धन्यवाद देकर], हम शैतान को वहीं चोट पहुँचाएंगे जहाँ उसे सबसे अधिक तकलीफ होती है।

हमारे अपने छोटे-छोटे परीक्षण और हमारे करीब लोगों द्वारा सामना किए गए बड़े परीक्षण

हम पर आने वाली हर परीक्षा में, हमारे पड़ोसियों पर आई उससे भी बड़ी परीक्षा ही सबसे अच्छा उपचार है। हमें बस इसे अपनी परीक्षा से तुलना करनी है, और उनके बीच के महान अंतर को देखना है, और उस अपार प्रेम को देखना है जो ईश्वर ने हमें केवल एक छोटी सी परीक्षा देकर दिखाया है। ऐसा करके हम उसकी स्तुति करेंगे; हम अपने उस पड़ोसी के लिए पीड़ा महसूस करेंगे जो हमसे अधिक कष्ट में है, और हम हृदय से प्रार्थना करेंगे कि ईश्वर उसे सहायता प्रदान करें। उदाहरण के लिए, मेरी एक टांग काट दी गई है। 'महमिा तेरी हो, हे ईश्वर,' मैं कहूँगा, 'कम से कम मेरी एक टांग तो बची हुई है।' आखिरकार, किसी और के दोनों पैर काट दिए गए हैं। और अगर मैं लंगड़ा भी हो जाऊँ, अगर मेरे दोनों हाथ और पैर कट जाएं, तो भी मैं यही कहूँगा: 'तेरा महमिा हो, हे परमेश्वर, इस बात के लिए कि मैं इतने सालों तक अपने दो पैरों पर चल सका, क्योंकि कुछ लोग तो हलि-डुल ही नहीं सकते, वे जन्म से ही लंगड़े हैं।'

जब मुझे पता चला कि एक घर का मुखिया ग्यारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित है, तो मैंने कहा: 'मैं उसकी तुलना में कहीं भी उतना बुरा नहीं हूँ।' एक सांसारिक व्यक्ति ग्यारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित है; फिर भी उसके बच्चे हैं और उसे सुबह उठकर काम पर जाना पड़ता है, जबकि मैं तो इन रक्तस्रावों से सात साल से भी अधिक समय से पीड़ित नहीं रहा हूँ।⁹⁷ जब मैं दूसरों के बारे में सोचता हूँ, जो ऐसी पीड़ा सहते हैं, तो मैं खुद को सही नहीं ठहरा सकता। लेकिन जब मैं इस तथ्य के बारे में सोचना शुरू करती हूँ कि मैं पीड़ित हूँ जबकि दूसरे शानदार जीवन जी रहे हैं, इस तथ्य के बारे में किरात में मुझे हर आधे घंटे में उठना पड़ता है क्योंकि मुझे आंतर संबंधी समस्याएँ हैं और मैं सो नहीं सकती, जबकि दूसरे गहरी नींद में सोते हैं, तो मैं खुद को सही ठहराती हूँ, भले ही मैं शिकायत करती हूँ। बहन, तुम कब से होंठ के छाले से पीड़ित हो?⁹⁸

— आठ महीने, गेरोन्डा।

— क्या आप देखते हैं? ईश्वर एक व्यक्ति को इस बीमारी से दो महीने तक, दूसरे को दस महीने तक, और तीसरे को पंद्रह महीने तक पीड़ित होने देता है। मैं आपको समझता हूँ। आप बहुत दर्द में हैं। कुछ लोग इस बीमारी से नरिशा में चले जाते हैं। लेकिन अगर कोई सांसारिक व्यक्ति, जो एक-दो महीने से हरपीज से पीड़ित रहा हो और तीव्र दर्द के कारण नरिशा में डूब गया हो, यह जान ले कि एक आध्यात्मिक व्यक्ति पूरे एक साल से उसी बीमारी से पीड़ित है और फिर भी बिना किसी शिकायत के उसे सहन कर रहा है, तो उसे तुरंत सांत्वना मिलती है। "बस देखो," पीड़ित कहता है। "मैं दो महीने पहले बीमार पड़ा और पहले ही नरिशा के कगार पर पहुँच गया हूँ, जबकि यह दूसरी बेचारी आत्मा पूरे एक साल से पीड़ित है — और कुछ नहीं! और फिर भी मैं एक पापी हूँ, जबकि वह एक आध्यात्मिक जीवन जीता है।" इस तरह, किसी ने भी अभी तक इस व्यक्ति को फटकार नहीं लगाई या नरिदेश नहीं दिया है, फिर भी वह पहले से ही मदद प्राप्त कर रहा है!

⁹⁷ 1988 से, एल्डर को लगातार आंतों से रक्तस्राव की समस्या थी।

⁹⁸ हरपीज जोस्टर एक वायरल रोग है जिसकी विशेषता त्वचा पर एरिथिमा और ओडेमा की पृष्ठभूमि में बुलबुलों के समूह हैं। यह तीव्र दर्द और शरीर में विभिन्न जटिलताएँ उत्पन्न करता है। — अनुवादक की टिप्पणी

लोगों द्वारा हमें दी जाने वाली दुख

— जेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के अनुसार दूसरों द्वारा दी गई दुखों और अन्यायों को सहता है, तो क्या यह धैर्य उसे उसके वासनाओं से शुद्ध करता है?

— वह अभी भी पूछ रही है! यह सरिफ उसे शुद्ध नहीं करता, बल्कि उसे परषिकृत भी करता है! क्या ऐसे धैर्य से बड़ा कुछ है? इस तरह, कोई व्यक्ति अपने पापों का प्रायश्चित्त कर सकता है। इसे सोचिए: एक अपराधी जैसी पकड़ लिया गया है, उसे पीटा जाता है और जेल में बंद कर दिया जाता है, जहाँ वह अपना छोटा अपना छोटा सा 'पश्चाताप' भोगता है। और यदि ऐसा व्यक्ति सच्चे मन से पश्चाताप करता है, तो वह शाश्वत अंधकार से बच जाता है। तो क्या यह कोई तुच्छ बात है, यदि सांसारिक पीड़ा के माध्यम से कोई व्यक्ति शाश्वत काल में अपना हिसाब नपिता लेता है?

किसी भी दुख को आनंदपूर्वक सहो। दूसरों द्वारा हमें पहुँचाया गया दुख उन मीठे 'शर्बतों' से भी अधिक मीठा होता है, जिनसे हमें प्यार करने वाले हमें शांत करने की कोशिश करते हैं। इस पर विचार करो: धन्यवचन में मसीह यह नहीं कहते: 'धन्य हो जब तुम्हारी सतुत की जाए,' बल्कि 'धन्य हो जब तुम्हारा अपमान किया जाए...' ⁹⁹ और, इसके अलावा, 'जब वे तुम्हारे विरुद्ध झूठ बोलते हैं।' जब कोई व्यक्ति अन्यायपूर्ण अपमान सहता है, तो वह स्वर्गीय खजाने में आध्यात्मिक बचत जमा कर रहा होता है। और यदि जिस बदनामी का वे सामना करते हैं, वह उनके कर्मों के कारण है, तो वे अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं। इसलिए, हमें न केवल उन लोगों को बना शिकायत के सहना चाहिए जो हमें परीक्षा में डालते हैं, बल्कि उनके प्रति कृतज्ञता भी महसूस करनी चाहिए, क्योंकि ये लोग हमें प्रेम, नम्रता और धैर्य का अभ्यास करने का एक अनुकूल अवसर देते हैं।

बेशक, बदनाम करने वाले टंगलाशका के साथ मलीभगत कर रहे हैं। लेकिन आमतौर पर तेज हवाएँ उन कमजोर पेड़ों को तोड़ देती हैं जिनकी जड़ें उथली होती हैं। जहाँ तक गहरी जड़ें वाले पेड़ों की बात है, तेज हवाएँ उन्हें अपनी जड़ें और भी गहरी करने में मदद करती हैं।

हमें उन सभी के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो हमारे बारे में बुरा कहते हैं, और ईश्वर से उन्हें पश्चाताप, ज्ञानोदय और अच्छे स्वास्थ्य की कृपा देने के लिए निवेदन करना चाहिए। हमें इन लोगों के प्रति तो थोड़ी सी भी घृणा पालनी चाहिए। आइए हम केवल उस परीक्षा से सीखे गए पाठ को बनाए रखें जिसका हमने सामना किया है, सभी कड़वाहट [शिकायतों और द्वेष] को त्याग दें, और आदरणीय एफ्रेम द सीरियन के शब्दों को याद करें: "यदि आप बदनामी को सहते हैं और बाद में आपके अंतरात्मा की पवित्रता स्पष्ट हो जाती है, तो घमंडी न बनें, बल्कि निम्रता से उस प्रभु की सेवा करें, जिसने आपको मानवीय बदनामी से बचाया है, ताकि आप एक दयनीय शिकार न बन जाएँ।" ¹⁰⁰

अध्याय 2. बीमारी पर

बीमारियाँ लोगों की मदद करती हैं

— जेरोंडा, 'आपको स्वर्ग मल्लि' कहावत का क्या अर्थ है?

— 'तुम्हारा स्वर्ग की यात्रा शुभ हो।'

— जेरोंडा, क्या इस अभिव्यक्ति का मतलब हो सकता है: 'आप खुद को एक अच्छे स्वर्ग में पाएँ'?

⁹⁹ मत्ती 5:11.

¹⁰⁰ संत एफ्रेम सीरियई। कृतियाँ। खंड 1 / थेसालोनीकी, 1988। पृ. 253।

— क्या आपने कभी किसी को स्वर्ग के बारे में बुरा कहते सुना है? लेकिन जो भी हो, उस मीठे स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, एक व्यक्तिको इस जीवन में बहुत कड़वाहट चखनी पड़ती है। इस तरह, उन्हें उन परीक्षाओं का 'पासपोर्ट' दिया जाएगा जिनका उन्होंने सामना किया है। अस्पतालों में क्या हो रहा है! क्या त्रासदयियाँ! लोग कतिना दर्द सहते हैं! कतिनी ही दुखी माताएँ, जब ऑपरेशन के लिए जाती हैं, तो अपने नन्हें बच्चों के बारे में सोचकर अपने परिवार की चिंता से बेचैन हो जाती हैं! कतिने पति कैसर से पीड़ित हैं, रेडियोथेरेपी करवाते हैं, और वे कतिना कष्ट सहते हैं! ये लोग काम नहीं कर सकते, फिर भी उन्हें अपने रहने का खर्च उठाना पड़ता है; आखिरकार, उनके बहुत से खर्च होते हैं! फिर कुछ ऐसे भी हैं, जो पूरी तरह से स्वस्थ हैं, लेकिन फिर भी अपना गुजारा नहीं चला पाते, और तो और, जो बीमार हैं और फिर भी अपने परिवार के खर्चे किसी तरह चलाने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं। मैं मानवीय पीड़ा के बोझ तले दब गया हूँ। मैं हर दिन कतिना कुछ सुनता हूँ! अनंत पीड़ा, अनंत कठिनाइयाँ!... दिन भर मेरा मुँह लोगों की पीड़ा की कड़वाहट से भरा रहता है, और शाम को मैं थोड़ी राहत पाने के लिए भूखा ही सोने जाता हूँ। मैं शारीरिक रूप से पूरी तरह थका हुआ महसूस करता हूँ, फिर भी एक ही समय में मुझे आंतरिक शांति मिलती है।

— जेरोंडा, क्या बीमारी हमेशा किसी व्यक्तिके लिए फायदेमंद होती है?

— हाँ, यह हमेशा अत्यधिक लाभदायक होता है। बीमारी उन लोगों की मदद करती है जिनमें सद्गुण की कमी होती है, ताकि वे ईश्वर को प्रसन्न कर सकें।¹⁰¹ स्वास्थ्य एक महान चीज है, लेकिन बीमारी से व्यक्तिको जो लाभ मिलता है, वह स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर सकता! बीमारी किसी व्यक्तिको आध्यात्मिक लाभ प्रदान करती है। बीमारी एक बहुत बड़ी, बहुत बड़ी आशीर्वाद है। यह व्यक्तिको पाप से शुद्ध करती है, और कभी-कभी उन्हें [स्वर्गीय] पुरस्कार की 'गारंटी' भी देती है। एक व्यक्तिकी आत्मा सोने के समान है, और बीमारी उस सोने को शुद्ध करने वाली आग के समान है। विचार करें, क्योंकि स्वयं मसीह ने प्रेरित पौलुस से कहा: '*मेरी शक्ति दुर्बलता में सदिध होती है*'।¹⁰² एक व्यक्ति जितना अधिक बीमारी से पीड़ित होता है, उतना ही शुद्ध और पवित्र हो जाता है — बशर्ते कि वह धैर्यपूर्वक और आनंद के साथ अपनी बीमारी को स्वीकार करे।

कुछ बीमारियों के मामले में केवल थोड़े धैर्य की आवश्यकता होती है। ईश्वर बीमारी इसलिए आने देता है ताकि व्यक्तिको थोड़ा इनाम मिल सके, और इस बीमारी के माध्यम से ईश्वर व्यक्तिको उसकी कमियों से शुद्ध करता है। शारीरिक बीमारी आध्यात्मिक बीमारी को ठीक करने में मदद करती है। शारीरिक बीमारी व्यक्ति में वनिम्रता लाती है और इस प्रकार उसकी आध्यात्मिक बीमारी का प्रतिकार करती है। ईश्वर सब कुछ व्यक्तिके भले के लिए मोड़ देता है! वह जो कुछ भी अनुमति देता है, वह हमें आध्यात्मिक लाभ पहुँचाता है। वह जानता है कि हमें से प्रत्येक को क्या चाहिए, और उसी के अनुसार वह हमें बीमारी भेजता है — या तो ताकि हमें इसके लिए इनाम मिल सके, या ताकि हम कुछ पापों का प्रायश्चित्त कर सकें।

बीमारी के लिए दैवीय दंड

— आपकी माँ कैसी हैं?

— ठीक नहीं है, गेरोन्डा। समय-समय पर उसका बुखार बहुत बढ़ जाता है, और इससे उसे असहनीय दर्द होता है। उसकी त्वचा फट जाती है और उस पर छाले हो जाते हैं, और वह रात में सो नहीं पाती।

— आप जानते हैं, ऐसे लोग शहीद होते हैं। अगर पूरी तरह से शहीद नहीं, तो नश्चिति रूप से आधे शहीद।

— लेकिन उसके लिए, गेरोन्डा, उसकी पूरी जिंदगी एक लंबी परीक्षा है।

— तो उसे जो इनाम मिलेगा, वह और भी अधिक होगा। क्या आप जानते हैं कि उसे कतिना मिलने वाला है? उसे जन्नत में एक स्थान की गारंटी है। चूंकि कोई व्यक्ति गंभीर बीमारी सहन कर सकता है, मसीह उस

¹⁰¹ ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र में ईश्वर से 'माफी माँगने' की अवधारणा में पश्चिमी धर्मशास्त्र का कानूनी स्वरूप नहीं है, बल्कि यह पापी मानव के उद्धार के लिए ईश्वर की दयालु सजा को व्यक्त करती है।

¹⁰² 1 कुरिंथियों 12:9.

बीमारी को उन पर डालते हैं, ताक़िस सांसारिक जीवन में थोड़ी सी पीड़ा के लिए, वे स्वर्ग में शाश्वत जीवन में एक महान पुरस्कार प्राप्त कर सकें। वे यहाँ पीड़ित होते हैं, लेकिन अपना पुरस्कार वहाँ, आने वाले जीवन में प्राप्त करेंगे, क्योंकि वहाँ जन्मत है, और वहाँ [उनके दुखों के लिए] एक पुरस्कार है।

कडिनी की समस्याओं से पीड़ित एक महिला आज मुझसे मिलने आई। वह कई वर्षों से हेमोडायलिसिस करा रही है।¹⁰³ "पतिजी," उसने मुझसे कहा, "कृपया मेरी बांह पर आशीर्वाद दीजिए। मेरी नसों में एक भी स्वस्थ जगह नहीं बची है, और मैं ठीक से हेमोडायलिसिस भी नहीं करा पा रही।" "इन घावों और छाले," मैंने कहा, "एक दिन इस दुनिया के हीरों से भी अधिक मूल्यवान हीरों में बदल जाएंगे। आप कतिने वर्षों से हीमोडायलिसिस करा रही हैं?" "बारह," उसने उत्तर दिया। "ऐसे में," मैंने जवाब दिया, "आप [आध्यात्मिक] 'एकमुश्त भत्ते' और 'न्यूनतम पेंशन' दोनों की हकदार हैं।" फिर उसने मुझे अपनी दूसरी बांह पर एक घाव दिखाया और कहा: "फादर, यह घाव ठीक नहीं हो रहा है। इसमें से हड्डी दिखाई दे रही है।" "हाँ," मैंने जवाब दिया, "लेकिन के माध्यम से आप स्वर्ग भी देख सकते हैं। धैर्य रखें; मैं आपके लिए बहुत धैर्य की कामना करता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मसीह अपने प्रेम को आपके भीतर बढ़ाए और आप इस दर्द को भूल जाएँ। बेशक, मैं आपके लिए कुछ और भी कामना कर सकता था: कि आपका दर्द कम हो जाए, लेकिन तब आपके इनाम का बहुत हिसा समाप्त हो जाएगा। इसलिए, जो मैंने शुरुआत में आपके लिए कामना की थी, वह बेहतर है।" इन शब्दों ने उस दुर्भाग्यपूर्ण महिला को सांतवना दी।

जब शरीर परीक्षाओं से गुजरता है, तो आत्मा पवत्र हो जाती है। यह शरीर—हमारा छोटा मट्ठी का घर—है जो बीमारी से पीड़ित होता है, लेकिन उस घर का स्वामी—हमारी आत्मा—उस स्वर्गीय महल में, जहाँ मसीह हमारे लिए तैयार कर रहे हैं, इस पर हमेशा आनंदित होगी। इस आध्यात्मिक तर्क के अनुसार—जो इस संसार के लोगों को तर्कहीन लगता है—मैं भी अपनी शारीरिक बीमारियों और कमियों में आनंदित होता हूँ और उन पर गर्व करता हूँ। एकमात्र बात जिस पर मैं ध्यान नहीं देता, वह यह है कि मुझे अपना स्वर्गीय पुरस्कार प्राप्त करना है। मैं [अपने दर्द] को इस तरह समझता हूँ कि [इसके माध्यम से] मैं ईश्वर के प्रति अपनी कृतघ्नता का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने उनकी महान उपहारों और आशीर्वादों का उचित रूप से उत्तर नहीं दिया है। मेरे जीवन में हर चीज़ एक नरितर [आध्यात्मिक] भोज है: मेरा संन्यासी जीवन भी और मेरी बीमारियाँ भी। ईश्वर हर बात में मुझ पर प्रेम करते हैं; वे हर चीज़ में मुझ पर दयालु हैं। हालाँकि, प्रार्थना करें कि वे यह सब इस जीवन में ही मेरे वरिद्ध न गनँ, क्योंकि तब—हाय मेरी दुर्दशा, हाय! मसीह मुझ पर एक बड़ा सम्मान बरसाएंगे यदि मैं उनके प्रेम के लिए और भी अधिक कष्ट सहूँ। काश कि वह मुझे [इस दर्द] को सहने के लिए शक्ति दें। और मुझे किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं है।

जब कोई व्यक्ति पूर्ण स्वास्थ्य में होता है, तो इसका वास्तव में मतलब है कि उसके साथ कुछ गड़बड़ है। उनके लिए किसी बीमारी से पीड़ित होना बेहतर होगा। मुझे अपनी बीमारी से उन सभी तपस्याओं से अधिक लाभ हुआ जो मैंने बीमार पड़ने से पहले की थीं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि यदि किसी व्यक्ति पर दूसरों के प्रति कोई दायित्व नहीं है, तो उसके लिए स्वास्थ्य की बजाय बीमारी चुनना बेहतर होगा। स्वस्थ रहने पर व्यक्ति ऋणग्रस्त रहता है, लेकिन धैर्यपूर्वक बीमारी सहने पर उसे अपना पुरस्कार मिलेगा। जब मैं एक सामुदायिक मठ में रहता था,¹⁰⁴ एक निश्चित पवत्र बशिप, हयिरोथियोस नाम का एक बहुत बूढ़ा आदमी, एक बार वहाँ आया था। वह सेवानिवृत्त हो गया था और सेंट ऐन की स्केटा में एक तपस्वी के रूप में रह रहा था। जब वह जाने के लिए अपने घोड़े पर चढ़ रहा था, तो उसकी पतलून ऊपर खसिक गई, और सभी ने उसके भयानक रूप से सूजे हुए पैरों को देखा। जनि भिक्षुओं की मदद से वह घोड़े पर चढ़ रहे थे, वे भयभीत हो गए। बशिप ने यह महसूस किया और कहा: "ये वे सबसे बेहतरीन उपहार हैं जनिसे ईश्वर ने मुझे धन्य किया है। मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे इन्हें मुझसे न छीन लें।"

¹⁰³ हीमोडायलिसिस — 'कृत्रिम गुरदा' मशीन का उपयोग करके रक्त का डायलिसिस और अल्ट्राफिल्ट्रेशन। — अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁰⁴ 1953–1955 में एस्फ़िमेन मठ में।

दरद के सामने धैर्य

जब हम बीमार पड़ते हैं, तो हमारे लिए यह उचित होगा कि हम स्वयं को पूरी तरह से मसीह के हवाले कर दें। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे दुःख के समय में हमारी आत्मा को एक 'इस्पात-जैसी' देह, जसिसे हम महान शारीरिकी करतब दिखा सकें, की तुलना में धैर्य और प्रशंसा की कहीं अधिक आवश्यकता होती है। आखिरकार, ऐसे कारनामे हमें एहसास भी हुए बनिा घमंड और डींगबाजी के खतरे में डाल देते हैं, क्योंकि हमें ऐसा लग सकता है कि हम अपनी ही 'घुड़सवार धावा' से स्वर्ग जीतने में सक्षम हैं।

क्या आप जानते हैं कि मैं कतिने सालों से दरद में हूँ? कभी यह सहनीय होता है, और कभी असहनीय। जो दरद सहनीय है, वह एक स्थायी अवस्था है। क्या आप जानते हैं कि मैंने ब्रोंकएक्टिसिस (105) से और उस ऑपरेशन से कतिना कष्ट उठाया है! फरि मेरी आंतों में ये सारी समस्याएँ शुरू हो गईं। उसके बाद, छह महीने तक मैं डसिक हरनएशन से पीड़ित रहा और मुझे बहुत तेज दरद हुआ। मैं पहले की तरह झुक नहीं पाता था, और भले ही मुझे अपनी देखभाल करना मुश्किल लगता था, फरि भी मुझे मलिन आने वाले लोगों की मदद करनी पड़ती थी। फरि मेरे पेट में कुछ सख्त महसूस हुआ, और मुझे बताया गया कि यह हरनयिा है। जब मैं थक जाता, तो उसमें दरद होने लगता और वह बहुत सूज जाता। एक बार, महान शहीद संत पैटेलमिोन के पर्व की पूर्व संध्या पर, हरनयिा सूज गया और उसमें दरद होने लगा। हालाँकि, मुझे 'ऑल-नाइट वजिलि' (All-Night Vigil) के लिए पैटेलमिोन हरमटिज जाना था। मैंने ठान लिया, "जो भी हो, मैं जाऊँगा," क्योंकि मुझे इस पर्व के दिन वहाँ हर हाल में होना था। प्रार्थना सभा के दौरान, मुझे एक पल के लिए बैठने का मन हुआ, लेकिन मैंने सोचा कि अगर मैं स्तासयिादी (stasidia) की सीट नीचे कर के बैठ गया, तो बाकी सब भी बैठ जाएँगे। इसलिए मैंने बलिकुल भी न बैठने का फैसला किया और खड़ा रहा। बारह घंटे की पूरी रात की प्रार्थना सभा के बाद, मुझे लगा कि मेरी हालत काफी बगिड़ जाएगी। मैं अपनी कोठरी में लौटी ही थी कि दरवाजे की लोहे की कड़ी पर किसी ने खटखटाया। मैंने एक आवाज सुनी, "दरवाजा खोलिए, फादर!" मैं हँस पड़ा। मैंने खुद से कहा, "खैर, बस हो गया, अब बस एक धूम मचाने की तैयारी कर लो।" और सचमुच: जल्द ही दूसरे मेहमान आने लगे, फरि और भी अधिक। और शाम को, आखिरी मेहमानों को वदिा करने के बाद, मैंने देखा कि मेरा हरनयिा... पूरी तरह से गायब हो गया था! लेकिन अगले दिन, आराम करने के बाद, यह फरि से उभर आया! उसके बाद, इसने मुझे परेशान किया और मुझे दरद दिया, लेकिन साथ ही इसने मुझे खुशी भी दी। क्योंकि मसीह को मेरी हालत के बारे में पता था; वह यह भी जानते थे कि मेरे लिए क्या अच्छा होगा। इसीलिए उन्होंने मुझे पाँच साल तक इस हरनयिा के साथ छोड़ा। क्या आप जानते हैं कि मैंने इसके कारण कतिना कष्ट उठाया?

— गेरोन्डा, क्या तुम्हें याद है जब तुम्हारी टाँगों में समस्या थी?

— वह एक अलग कहानी है। मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पा रहा था। और जब लोग मलिन आते थे, तो मेरे लिए मुश्किल होता था। फरि मेरी टाँगों का दरद चला गया, लेकिन खून बहने लगा। डॉक्टरों ने कहा कि यह अल्सरेटवि कोलाइटिस है। एक नया अध्याय शुरू हुआ... सात साल का खून बहना और दरद... लेकिन नरिश न हों; बस मेरी आत्मा की सेहत के लिए प्रार्थना करें। मुझे खुशी है कि परमेश्वर ने मुझे सम्मानित किया है और यह उपहार मुझे दिया है, और मैं नहीं चाहता कि वह इसे मुझसे छीन ले। परमेश्वर की स्तुति हो, वह मुझे अपनी बीमारियों से लाभ उठाने की अनुमति देता है। इस तरह, हमारी धैर्य की परीक्षा ली जा रही है। आज एक बात, कल दूसरी... 'क्योंकि तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है'।¹⁰⁶ आखिरकार, अगर हम, जनिमें ईश्वर का थोड़ा सा भी भय है, धैर्य नहीं रखते, तो सांसारिक लोगों के लिए क्या बचता है? फरि भी मैं देखता हूँ कि कई गृहस्थ सदाचार में हम संन्यासियों से आगे नकिल जाते हैं। मेरे माता-पिता ने मुझे बताया कि जब फरासयिाट्स किसी बीमारी से पीड़ित होते थे, तो वे तुरंत ही ठीक होने के लिए हाजी फेंदी के पास नहीं भागते

¹⁰⁵ ब्रोंकएक्टिसिस — छोटी श्वास-नलकियाँ के लंबे समय तक सूजन या अवरोध के परिणामस्वरूप ब्रोंकी और ब्रोंकयिल्स का फैलाव — अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁰⁶ इब्रानियों 10:36.

थे। पहले, वे दर्द सहते थे। वे उतना ही सहते थे जतिना वे कर सकते थे — ईश्वर के प्रति अपने प्रेम और अपने धैर्य के अनुसार — क्योंकि वे इसे एक आशीर्वाद मानते थे। वे कहते थे, "मुझे अपने आत्मा को मसीह के लिए थोड़ा कष्ट देना चाहिए, क्योंकि मसीह ने मुझे बचाने के लिए बहुत कष्ट सहन किया।" वे हज फेंदी¹⁰⁷ के पास इलाज के लिए केवल तभी जाते थे जब वे देखते कि बीमारी उनके काम में बाधा डाल रही है और उनके परिवार कष्ट झेलने लगे हैं। देखिए कि उनमें कतिनी आत्म-अनुशासन थी! चूंकि ये लोग, जो सामान्य भक्त थे, इस तरह सोचते थे और अपने दुख को सहते थे, तो मुझे — एक भिक्षु — कैसे सोचना चाहिए? मसीह ने कहा: 'अपने धैर्य से तुम अपनी आत्माओं को प्राप्त करोगे।'¹⁰⁸ इस पर विचार करो: जब यॉब के पास हर प्रकार की आशीर्वादें थीं, तब उनके दान के कार्य उतने प्रसन्न करने वाले नहीं थे जतिना कि उन परीक्षाओं के दौरान उनका धैर्य था।¹⁰⁹

— गेरौन्डा, जब आप कहते हैं कि कोई व्यक्ति दर्द सहता है, तो क्या आपका मतलब है कि वे बिल्कुल भी यह नहीं दिखाते कि वे दर्द में हैं?

— अंतिम उपाय के रूप में, वह अपने आस-पास के लोगों को यह हल्का-सा संकेत दे सकता है कि वह दर्द में है। वह उन्हें अपने दर्द के बारे में बता सकता है, लेकिन यह नहीं बताता कि यह कतिना गंभीर है। आखिरकार, अगर वह अपने दर्द को पूरी तरह से दूसरों से छिपाए, तो वे उसके कुछ कार्यों से भ्रमति हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई भिक्षु दर्द से पीड़ित है और सेवा में शामिल नहीं हो सकता है, तो यदि वह अपनी स्थिति के बारे में दूसरों को नहीं बताता है, तो कोई बुरा इरादा रखने वाला व्यक्ति निराज्ञ हो सकता है।

दर्द के प्रति दृष्टिकोण

— गेरौन्डा, आप किस तरह के दर्द को असहनीय कहेंगे?

— वह दर्द जो आँखों में आँसू ले आए। ये पश्चात्ताप के आँसू नहीं हैं, न ही ये खुशी के आँसू हैं। आपको लगता है ये आँसू किस श्रेणी में आते हैं?

— शायद, जेरौन्डा, शहादत की श्रेणी?

— बेशक — वे शहादत की श्रेणी में आते हैं।

— जेरौन्डा, जब मुझे बहुत दर्द होता है, तो मुझे 'महमिा तेरी हो, हे ईश्वर' कहना मुश्किल लगता है।

— आपको ये शब्द कहने में क्यों कठिनाई होती है? सोचिए कि मसीह ने क्या-क्या सहा: पटिर्ई, अपमान, कोड़ों की मार, सूली पर चढ़ाया जाना!¹¹⁰ उन्होंने यह सब सहा, 'पापरहति',¹¹¹ हमें बचाने के लिए। और आप, जब आप दर्द में होते हैं, कहते हैं: 'तेरे प्रेम की खातिर, हे मसीह, मैं सहन करूँगा।'

— गेरौना, दर्द पर काबू पाने के लिए क्या चाहिए?

— इसके लिए साहस और प्रयास की आवश्यकता होती है।

— और कोई व्यक्ति असहनीय पीड़ा को कैसे पार कर सकता है?

— अगर वह सांसारिक व्यक्ति है, तो सांसारिक गीत के साथ; अगर वह आध्यात्मिक व्यक्ति है, तो आध्यात्मिक भजन के साथ... एक बार, मेरे पति को तेज बुखार हो गया और उन्हें भयंकर सरिदर्द हो गया। क्या आप जानते हैं कि उसने क्या किया? उसने नमकीन हेरगि भरपेट खाई, एक छोटा गलास शराब पी और गाने लगा: 'जागो, मेरे दुखी, उत्पीड़ित लोगों।' फिर उसने कुछ और पार्टीजान गीत गाए, और उसका सरिदर्द चला गया! तो — दर्द दूर करने के लिए — हम भी आध्यात्मिक भजन गाएंगे! मुझे याद है कि एक बार मुझे

¹⁰⁷ यह नाम फारस के नविसयों द्वारा कापाडोसिया के आदरणीय आर्सेनयिस को दिया गया था। — अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁰⁸ लूका 21:19.

¹⁰⁹ यॉब की पुस्तक देखें।

¹¹⁰ देखें मत्ती 27:26-44; मरकुस 15:15-32; लूका 23:23-43 और यूहन्ना 19:1-23।

¹¹¹ देखें यशायाह 53:9।

ठंड लग गई थी और इतनी भयंकर सरिदर्द हुई कि मेरा सरि फटने को हो रहा था। खैर, तब मैंने एक बहुत ही सुंदर भजन गाना शुरू किया, और सरिदर्द गायब हो गया। वास्तव में, यीशु की प्रार्थना के साथ भजन गाना ऐसे मामलों में बहुत मदद करता है। यह आत्मा को कोमल और शांत करती है, क्योंकि निरंतर दुख और दर्द आत्मा पर भारी पड़ते हैं, और वह ठंडी पड़ जाती है। और कल रात भी, दर्द के कारण मैं सो नहीं पाया। मैंने तो यह भी सोचा कि अगर मैं भोर से पहले मर गया, तो मेरे लिए एक लंबा दनि शुरू हो जाएगा। आखिरकार, परलोक में न तो सूर्यास्त होता है और न ही सूर्योदय... लेकिन फिर मैंने... एक दर्द नवारक 'गोलियाँ' लीं — मैंने ट्रोंपारयिन गाया: 'तेरे लिए संतों द्वारा सहन किए गए कष्टों के माध्यम से, हे प्रभु, हम तुझसे वनिती करते हैं कि तू हमारी सभी बीमारियों को ठीक कर दे...' ¹¹² इस गोली का प्रभाव दीर्घकालिक साबित हुआ; यह पूरी रात तक चला! क्या डॉक्टरों के पास ऐसी गोलियाँ होती हैं?

— जेरोंडा, कहते हैं कि रात में दर्द और बढ़ जाता है।

— हाँ, लोग रात में और अधिक परेशान महसूस करते हैं। लेकिन, इसके अलावा, दनि के दौरान, जब वे दूसरों के साथ घुल-मलिकर बातें करते हैं, तो मरीज अपने दर्द को भूल जाते हैं। रात में वे अपने विचारों के साथ अकेले रह जाते हैं; उनका मन दर्द पर अटका रहता है, और उन्हें लगता है कि यह और बढ़ रहा है। जब आप बीमार होते हैं तो दर्द से बच नहीं सकते, लेकिन तरीका यह है कि अपनी [आध्यात्मिक] मानसिकता की डायल को एक अलग आवृत्ति पर घुमाएं, ताकि आप दर्द को भूल जाएं। आखिरकार, अगर आप दर्द का सामना गलत तरीके से करते हैं, तो यह दोगुना तकलीफदायक हो जाता है। यदि आप दर्द पर ही अटके रहें, तो वह और भी बढ़ जाता है। लेकिन यदि आप कोई दयालु विचार मन में लाएं—उदाहरण के लिए, उन लोगों को याद करके जो आपसे भी अधिक पीड़ित हैं, या कोई भजन गाकर—तो दर्द भूल जाता है।

— गेरोंडा, दर्द आमतौर पर इस बात की चेतावनी देता है कि शरीर में कुछ गड़बड़ है। इस संबंध में, किसी को दर्द पर कतिना ध्यान देना चाहिए?

— आपको यह आकलन करना होगा कि आपके पास कतिनी ऊर्जा बची है और उसी के अनुसार ड्राइव करना होगा। यह बात खासकर किसी बुजुर्ग व्यक्ति के मामले में सच है। यहाँ सावधानी बरतने की ज़रूरत है, क्योंकि अगर आप एक पुरानी कार को उसी रफ़्तार से चलाते रहें जसि रफ़्तार से वह नई थी, तो वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी: एक पहिया एक तरफ़ उड़ जाएगा, कार्बोरेटर दूसरी तरफ़... जब मेरे नचिले हसिसे में दर्द हो रहा था, तो मैं खड़े होकर माला जप नहीं पा रहा था। जब मैंने देखा कि मेरी हालत थोड़ी बेहतर हो गई है, तो मैंने खड़े होने की कोशिश की: मैं खड़े होकर माला जपने लगा और प्रणाम किया। मेरे नचिले हसिसे में फिर से दर्द होने लगा। मैं थोड़ा झुक गया। फिर मैंने खुद से कहा: "ठीक है, फिर से कोशिश करते हैं।" वही हुआ। मेरी कमर फिर से दर्द करने लगी। उसके बाद, मैं खड़े होने और झुकने से बचता रहा, लेकिन मेरा मन शांत रहा।

— गेरोंडा, अगर मुझे पता हो कि मेरे दर्द का मेरे शरीर पर कोई और बुरा असर नहीं है, तो मुझे इससे कोई परेशानी नहीं होती। हालाँकि, अगर मुझे पता हो कि यह दर्द किसी गंभीर बीमारी का लक्षण है, तो मुझे इससे परेशानी होती है।

— देखिए, उदाहरण के लिए, कमर दर्द के शरीर पर कोई गंभीर परिणाम नहीं हो सकते, फिर भी यह दर्द गतिको सीमित करता है, व्यक्ति को 'लकवाग्रस्त' कर देता है, और वह हलि-डुल नहीं सकता। लेकिन शरीर अन्य प्रकार के दर्द को सहन कर सकता है।

— जेरोंडा, क्या दर्द इंसान को कटु बना देता है?

— यदि कोई व्यक्ति पीड़ा को आध्यात्मिक रूप से नहीं देखता, तो वह उससे कटु हो सकता है। हालाँकि, आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने पर, उसे शांति मिलती है और दवि सान्त्वना से वह तसल्ली पाता है। तब बीमारी एक भोज, एक उत्सव बन जाती है। एक व्यक्ति इस बात पर प्रसन्न होता है कि उसे स्वीकार करने

¹¹² सेबास्ते के चालीस शहीदों का ट्रोंपारयिन; उनका पर्व 9 मार्च को मनाया जाता है।

वालों और शहीदों में गनिा जाएगा। पवतिर शहीदों ने अपना दर्द भूल गए क्योंकिमिसीह के प्रतउनका प्रेम उनके दर्द से अधिक प्रबल था और उसने उसे नषिप्रभावी कर दिया।

— लेकिन क्या वह व्यक्तिजो दर्द का अनुभव करता है और उसे आध्यात्मिक रूप से नहीं अपनाता, शुद्ध नहीं होता?

— एक गृहस्थ शुद्ध हो जाता है, लेकिन एक भिक्षु नहीं।

दूसरे के दर्द में सहभागी होना

जब कोई व्यक्तिअपने पड़ोसी के लिए पीड़ा महसूस करता है, तो यह किसी न किसी तरह से ईश्वर को करुणा से प्रेरित करता है। ईश्वर आनंदति होते हैं क्योंकिऐसा व्यक्तिअपने प्रेम के माध्यम से यह दर्शाता है कि वह ईश्वर का सम्बन्धी है, और यह उसे दवि्य सांतवना प्रदान करता है। [यदि यह दवि्य सांतवना न होती], तो कोई व्यक्तिअपने पड़ोसी की पीड़ा सहन नहीं कर पाता।

— गेरोंडा, कोई दूसरे का दर्द कैसे महसूस कर सकता है?

¹¹³— अगर आपको भी दर्द हो रहा हो, तो आप किसी दूसरे व्यक्ति के दर्द के बारे में सोचते हैं, खुद को उनकी जगह रखते हैं, और एक और भी गहरा दर्द महसूस करते हैं—अपने लिए नहीं, बल्किउनके लिए। दूसरे शब्दों में, आपका अपना दर्द आपको दूसरों के दर्द को समझने में मदद करता है। और जब आप अपने दर्द को खुशी से स्वीकार करते हैं, तो आप उन लोगों को सांतवना देते हैं जो पीड़ित हैं। लेकिन, बेशक, यह जानना कि कोई बीमार पड़ गया है, एक बात है, और खुद बीमार पड़ना एकदम दूसरी बात है। तभी आप पीड़ित को सचमुच समझ पाते हैं। पहले, जब मैं 'कीमोथेरेपी' शब्द सुनता था, तो मुझे लगता था कि यह 'कीमो-थेरेपी' है — दूसरे शब्दों में, मुझे लगता था कि कैंसर के मरीजों को दवा के रूप में जूस और प्राकृतिक भोजन दिया जाता है। मुझे कैसे पता होता कि 'कीमोथेरेपी' वास्तव में क्या है? लेकिन अब, मुझे एहसास हो गया है कि यह कतिना कठिन दौर है।

— जेरोंडा, किससे नपिटना अधिक कठिन है — कीमोथेरेपी या रेडियोथेरेपी?

— कौन सा ज्यादा मुश्किल है? कोई भी आसान नहीं है — रेडियोथेरेपी और कीमोथेरेपी... और सबसे बुरी बात यह है कि ये सारे इलाज खाने का मन ही मार देते हैं। आपको अच्छा खाना चाहिए, लेकिन आप कुछ भी खा नहीं पाते। और डॉक्टर बार-बार कहते रहते हैं: 'आपको अच्छा खाना चाहिए।' मुझे पता है कि मुझे खाना चाहिए, लेकिन आखिर मैं खाऊँ कैसे जब यह सारी कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी मेरी भूख मार रही है और मुझे तबाह कर रही है! जब मैं रेडियोथेरेपी ले रहा था, तो भले ही मुझे बहुत तेज बुखार था, मैं बिल्कुल भी पानी नहीं पी पा रहा था। पानी पीने से भी मुझे जी मचिलाता था। मुझे उल्टी आने को जी चाहता था।¹¹⁴

— जेरोंडा, काश तुम थोड़ा पहले ही ऑपरेशन के लिए मान जाते...

— 'ठीक होने' की तो बात ही छोड़ो! मैं अपनी ही ठीक होने की प्रार्थना नहीं करता, क्योंकि एक कैंसर रोगी के रूप में, मैं उन लोगों के साथ पीड़ा सहता हूँ जो दर्द में हैं। मैं दर्द में रहने वालों को बेहतर समझता हूँ, और उनके दर्द में सहभागी हूँ। लेकिन इसके अलावा, यह बीमारी मेरे लिए आध्यात्मिक रूप से भी लाभदायक है। मैं केवल इतना चाहता हूँ कि मैं अपनी देखभाल कर सकूँ और दूसरों की मदद कर सकूँ। हालाँकि, जैसा ईश्वर की इच्छा हो, वैसा ही हो।

यदि आपको कोई बीमारी है और वह आपको परेशान नहीं करती [अर्थात् आप उस पर ध्यान नहीं देते], तो, एक तरह से, आपको ईश्वर से अन्य लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए प्रार्थना करने का अधिकार है। लेकिन जसि कोई दर्द नहीं हो रहा है, उसे भी, पीड़ा में पड़े लोगों के लिए, थोड़ा-बहुत कष्ट

¹¹³ ग्रीक शब्द 'χρμός' से — रस। — अनुवादक का नोट।

¹¹⁴ जून 1994 में, उनकी मृत्यु से एक महीने पहले दिया गया।

सहना चाहिए। जैसा कफिरीसयिों कहा करते थे: 'मैं तुम्हारा झोला उठा लूंगा,' अर्थात् मैं अपने ऊपर तुम्हारा दर्द, तुम्हारी पीड़ा, तुम्हारा दुख लूंगा।

— जेरोंडा, उन्होंने ऐसा कैसे किया?

— प्रेम के माध्यम से। यदि कोई व्यक्ति किसी से प्रेमपूर्वक कहता है, 'मैं तेरा दर्द उठा लूंगा,' तो वह वास्तव में उसे उठा ही लेता है। हालांकि, एक बार जब वह ऐसा कर लेता है, तो उसे उसे सहने के लिए बहुत धैर्य, बहुत साहस और बहुत शक्त की आवश्यकता होगी। कुछ लोग आकर मुझसे कहते हैं, 'जेरोन्डा, मैं आपकी पीड़ा अपने ऊपर लेना चाहता हूँ।' कुछ लोग यह सच्ची हमीमत से कहते हैं, लेकिन कुछ कायरों को यह भी एहसास नहीं होता कि वे क्या बकवास कर रहे हैं। वे खुद तो छोटी-सी बात पर डॉक्टर के पास भाग जाते हैं और बहुत जल्दी नरिशा में डूब जाते हैं। वे अपना मामूली दर्द भी सहन नहीं कर सकते, फिर भी दावा करते हैं कि वे मेरा दर्द उठा लेंगे! यह बेहतर होगा कि वे बस अपना दर्द सहन करें, ईश्वर द्वारा दी गई पीड़ा को खुशी-खुशी स्वीकार करें, और (दखावे के तौर पर प्रेम के लिए) किसी और की बीमारी को अपने ऊपर लेने के लिए न कहें। क्योंकि अगर ईश्वर अचानक उनकी प्रार्थना मान लेते, लेकिन तब तक वे भूल चुके होते कि उन्होंने उनसे क्या माँगा था और शकियत करने लगते, तो शायद वे उस पर भी ईश्वर को दोष देते जो उन पर आया था।

रोगी देखभाल

कल रात, जब मैं प्रार्थना सभा के लिए चर्च जा रहा था, तो मैंने एक कोने में एक पति को वहीलचेयर में बैठे एक छोटे लड़के के साथ देखा। मैं उनके पास गया, उस छोटे लड़के को गले लगाया और उसे चूमा। "क्या तुम्हें पता है कि तुम एक देवदूत हो?" मैंने उससे पूछा। और उसके पति से मैंने कहा: "एक देवदूत की देखभाल करना आपके लिए बहुत बड़ा सम्मान है। आनंदति हो जाइए, क्योंकि आप दोनों स्वर्ग जाएँगे।" उनके चेहरे खुशी से खलि उठे, क्योंकि उन्होंने दवि सात्वना महसूस की।

जो लोग बीमारों, वकिलांगों और ऐसे ही अन्य लोगों की देखभाल प्रेम और धैर्य से करते हैं, वे अपने बलदान से उनके पाप धो देते हैं। यदि उनके कोई पाप नहीं हैं, तो वे पवित्र हो जाते हैं। एक बार एक महिला ने मुझे अपने जीवन की कुछ चमत्कारक घटनाओं के बारे में बताया। मैं हैरान रह गया, क्योंकि जिनि अनुभवों का उसने वर्णन किया, वे हम संतों के जीवन में ही पाते हैं, फिर भी वह एक साधारण, सरल महिला थी। लेकिन जब उसने मुझे बताया कि उसने अपना अधिकांश जीवन कैसे व्यतीत किया, तो मुझे एहसास हुआ कि उसका पूरा जीवन एक नरितर बलदान का कार्य था। एक छोटी लड़की रहते हुए ही, उसने बीमारों की देखभाल करना शुरू कर दिया था, क्योंकि उसके दादा-दादी, जो बीमार थे, उसके माता-पति के घर में रहते थे। जब उसकी शादी हुई, तो उसके ससुर और सास, जो भी बीमार थे, उनके साथ रहने लगे। फिर उसका पति बीमार पड़ गया। वह बसितर पर पड़ा था, और वह उसकी देखभाल करती थी। दूसरे शब्दों में, इस महिला ने अपना पूरा जीवन बीमारों की देखभाल में बिताया। उन सभी वर्षों में, वह आध्यात्मिक कतिबे पढ़ने और चर्च में पूरी रात की प्रार्थना सभाओं में शामिल होने के लिए तरसती थी, लेकिन उसके पास ऐसी चीजों के लिए समय नहीं था। हालांकि, चूँकि उसके पास एक जायज कारण था, ईश्वर ने उस पर अपनी सारी कृपा एक साथ प्रदान की।

— जेरोंडा, आप जानते हैं, कुछ लोग बीमार पड़ने पर काफी अजीब व्यवहार करने लगते हैं।

— हाँ, ऐसा वाकई होता है। लेकिन स्वस्थ लोगों को भी बीमारों की चिंता, बड़बड़ाहट, खामोशी या वचित्र आदतों के प्रतिक्रिया से कम थोड़ी समझ दिखानी चाहिए, क्योंकि उनके लिए यह स्वाभाविक है। खासकर यदि कोई व्यक्ति खुद कभी बीमार नहीं हुआ हो, तो वह किसी बीमार व्यक्ति को समझ नहीं सकता। उन्होंने खुद कभी दर्द नहीं सहा है, और इसलिए उनका दिल थोड़ा कठोर होता है।

जो लोग बीमारों की, बसितर पर पड़े लोगों की देखभाल करते हैं, उन्हें बहुत सावधान रहना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि वे उनकी देखभाल कर रहे हैं, उन्हें कराहने के लिए उकसाएँ नहीं। वे कई वर्षों

तक उनकी देखभाल कर सकते हैं, लेकिन अगर अंत में वे उन्हें एक बार भी कराहने के लिए उकसा देते हैं, तो वे सब कुछ खो देंगे। यदि कोई व्यक्ति इस संसार से द्वेष की अवस्था में वृद्धि हो जाता है, तो उन्होंने उस द्वेष को उत्पन्न किया, वे एक घोर पाप कर रहे हैं। तब दुष्ट उन्हें यातना देगा, तथाकथित रूप से उनके अंतर्मन को 'शुद्ध' करते हुए [उन्हें याद दिलाकर कि उन्होंने उस व्यक्ति को द्वेष तक पहुँचाया, और वह मर गया]।

— जेरोंडा, जब आप किसी बीमार व्यक्ति की देखभाल करते हैं, तो आपकी ताकत सिर्फ शारीरिक थकान ही नहीं छिनती, बल्कि भावनात्मक तनाव भी, क्योंकि आप अपने किसी प्रियजन को धीरे-धीरे कमजोर होते हुए देखते हैं।

— देखिए, जब परिवार का एक सदस्य बीमार पड़ता है, तो पूरा परिवार उसकी पीड़ा महसूस करता है। और अगर पति बीमार हों और काम न कर सकें, तो पूरा परिवार कष्ट में रहता है और उसे सहायता की जरूरत होती है। वे सभी इस बात की चिंता करते हैं कि क्या उनका पति बच पाएगा या नहीं। वह कष्ट सहता है, और उसके प्रियजन भी। जैसे-जैसे वह कमजोर होता जाता है, वैसे-वैसे उसके आसपास के लोग भी कमजोर पड़ते जाते हैं। और माँ पर बोझ और भी भारी हो जाता है। उसे बच्चों की देखभाल करनी होती है और बीमार व्यक्ति की देखभाल के लिए अस्पताल भी जाना होता है। मेरा कहना यह है कि जब कोई व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार पड़ता है, तो केवल वही नहीं जो पीड़ित होता है, थक जाता है और मरना चाहता है, बल्कि उसके प्रियजन भी, जो उसकी देखभाल करते हैं, हतोत्साहित हो जाते हैं, पीड़ित होते हैं और थक जाते हैं। और प्रियजनों के बीच जितना गहरा बंधन होता है, वे जितना एक-दूसरे से प्यार करते हैं, ईश्वर उतना ही यह होने देता है कि बीमारी के अंत के करीब, मरीज और उनकी देखभाल करने वाले दोनों ही बहुत अधिक पीड़ा और बहुत अधिक दर्द का अनुभव करते हैं। वे उस बिंदु पर पहुँच जाते हैं जहाँ वे कहते हैं, 'भगवान उसे उठा ले ताकि वह चैन पा सके,' लेकिन उनके नधिन के बाद उन्हें भी चैन मिलता है। इस पर विचार करें: जब, एक बहुत ही घनिष्ठ परिवार में, माता-पति की किसी पूर्व बीमारी के बिना, अचानक मृत्यु हो जाती है, और न तो माता-पति स्वयं और न ही उनके बच्चे उनकी देखभाल करते समय कोई कष्ट सहते हैं, तो बच्चों के लिए वियोग का दर्द, अपने माता-पति से बछिड़ने का दर्द, बहुत बड़ा होता है।

— गेरोंडा, एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति उसकी शारीरिक सेहत को किस हद तक प्रभावित कर सकती है?

— यदि कोई व्यक्ति अच्छे मानसिक अवस्था में होता है, तो इससे शारीरिक दर्द कम हो जाता है। यदि वे बुरे मानसिक अवस्था में होते हैं, तो वह नकारात्मक अवस्था उनकी [शारीरिक] सेहत को और खराब कर देती है। उदाहरण के लिए, एक कैसर के मरीज को लें, जिसने डॉक्टरों ने अब उम्मीद छोड़ दी है। ईश्वर में विश्वास करके और खुद को एक आनंदमय आध्यात्मिक वातावरण में पाकर, वे अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं। अन्यथा, उनकी पीड़ा के कारण वे कुछ ही हफ्तों में कर्षण हो सकते हैं। कभी-कभी, चिकित्सा के दृष्टिकोण से, कोई व्यक्ति स्वस्थ दिखाई दे सकता है, और उसके परीक्षण परणाम और स्कैन सामान्य हो सकते हैं, लेकिन यदि वे अपने भीतर कुछ ऐसा पालते हैं जो उनकी आत्मा को पंगु बना रहा है, तो वास्तव में वे अस्वस्थ हैं। आखिरकार, ज्यादातर बीमारियाँ पीड़ा से ही शुरू होती हैं। हर किसी की कोई न कोई कमजोरी होती है। किसी एक व्यक्ति के लिए, तनाव पेट को 'प्रभावित' कर सकता है; दूसरे के लिए, सरि को।

बीमारी का सबसे उत्तम उपचार वह आध्यात्मिक आनंद है जो दैवी कृपा आत्मा में भरती है। आध्यात्मिक आनंद में ही हर बीमारी के लिए सर्वाधिक उपचार शक्ति निहित है। यह दैवी मरहम है जो घावों को भरती है, जबकि कष्ट केवल उन्हें और बढ़ाता है।

बीमारों के दुख और ईश्वर में विश्वास

— जेरोंडा, क्या आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो गंभीर रूप से बीमार हैं और सही काम करते हुए स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर के हवाले करने का संकल्प ले चुके हैं?

— अगर उसकी दूसरों के प्रति कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, तो उसे अपनी मर्जी से जैसा चाहे वैसा करने दो। हालाँकि, अगर उसकी दूसरों के प्रति ज़िम्मेदारियाँ हैं, तो यह उन पर निर्भर है कि वे तय करें कि उसे चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए या खुद को ईश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए। आखिरकार, मैं अपनी मर्जी से तो डॉक्टर के पास गया भी नहीं था... अगर मैं उस 'साधारण जाँच' के लिए नहीं गया होता, जइस, तो ट्यूमर मेरी आंत को पूरी तरह से बंद कर देता। मैं केवल थोड़ा-सा तरल ही पी पाता, और फरि सब कुछ खत्म हो जाता... आप देखिए कैसे होता है: मैं एक 'साधारण जाँच' के लिए गया, और इस तरह की गड़बड़ में फँस गया... पहले एक सीटी स्कैन, फरि कार्डियोलॉजिस्ट के पास; मेरे खून में प्रोटीन का स्तर बार-बार बढ़ता-घटता रहता है। उन्होंने मुझे चीर-फाड़ कर सलि दिया, पैच लगाए... और आखिर में इन सबका क्या नतीजा निकला? लगता है कि मुझे यहीं हमेशा के लिए रहना होगा...

हम आमतौर पर कहते हैं: "पहले, बीमारों को अपने साथी मनुष्यों से मदद मांगनी चाहिए, और केवल जब वे ऐसी मदद प्राप्त नहीं कर पाते, तब ईश्वर उनकी सहायता के लिए आएगा।" लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि, अपने साथी मनुष्यों से मदद मांगते समय भी, गंभीर बीमारी से पीड़ित लोग बहुत कष्ट सहते हैं।

उन्हें एक वास्तविक यातना सहनी पड़ती है। उन्हें अनगणित जांचों, ऑपरेशनों, अंग प्रत्यारोपों, कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी से गुजरना पड़ता है... ड्रपि लगाने के लिए उनकी बांहों में छेद किए जाते हैं; इन बेचारों की नसें फट जाती हैं; उन्हें नाक में ट्यूब डालकर खाना दिया जाता है; वे सो नहीं सकते... और यह सब सिर्फ इंसानयित भरे तरीके से किया जा सके, इसके लिए। समझ रहे हैं? यह कोई साधारण मामला नहीं है। उदाहरण के लिए, किसी ज़ख्म में पीब जम गई है, और उस पीब को निकालने के लिए, उस ज़ख्म को चीरना पड़ता है — फरि सब कुछ ठीक हो जाता है। नहीं, यहाँ एक व्यक्ति एक वास्तविक गोल-चक्कर में फँस जाता है। इसीलिए हमें यह नहीं कहना चाहिए, 'ठीक है, यह मरीज अच्छे डॉक्टरों के हाथों में पड़ गया है' — और इसी से खुद को आश्वस्त करना। नहीं, हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए: मरीज को चिकित्सा सहायता मिलने के लिए, उसे वास्तविक कष्ट और पीड़ा से गुजरना होगा। हमें ईमानदारी से प्रार्थना करनी चाहिए कि मिसीह उसे धैर्य दें और डॉक्टरों को ज्ञान दें, क्योंकि डॉक्टर — खासकर यदि उनमें वनिम्रता की कमी हो — गलतियाँ कर सकते हैं।

बस सोचिए: जब कोई घर खंडहर हो जाता है, तो उसका मालिक उसमें नहीं रह सकता। ठीक उसी तरह, शरीर का मालिक — आत्मा — अपने घर — शरीर — में नहीं रह सकती, यदि वह खंडहर हो रहा हो। और अब वे लोहे, स्टील, और विटामिन ए, बी और सी की मदद से मालिक को उसके घर में बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं... दूसरे शब्दों में, वे विज्ञान के माध्यम से बीमारों की मदद करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन सभी बीमारों को मदद नहीं मिलती। और ऐसी मदद केवल उनके जीवन को दर्द के साथ लंबा कर देती है, या यँ कहें कि उनके दुख को बढ़ा देती है। आखिरकार, अकेला विज्ञान पर्याप्त नहीं है। विश्वास और प्रार्थना भी आवश्यक हैं। कभी-कभी यहाँ, कन्वेंट में भी, मैं देखती हूँ कि जो बहन धर्मनिरपेक्ष दुनिया में डॉक्टर थीं, वे ईश्वर में विश्वास और प्रार्थना की तुलना में चिकित्सा विज्ञान के माध्यम से बीमारों की अधिक मदद करना चाहती हैं। हालाँकि, हार्दिक प्रार्थना इन बहनों को उच्चतम चिकित्सा योग्यता की धारक बना देगी, क्योंकि इसे प्राप्त करने के बाद, वे मानव विज्ञान में अपनी आशा रखना बंद कर देंगी। यदि किसी व्यक्ति के भीतर प्रेम का विकास किया जाता है, और साथ ही सभी लोगों के प्रति करुणा भी होती है, तो दिव्य शक्तियाँ सक्रिय हो जाती हैं। बशर्ते कि आत्मा में गहरी वनिम्रता हो, ताकि व्यक्ति घिंमंडी न हो जाए और यह सोचकर ईश्वर का अपमान न करे कि ये शक्तियाँ उसकी अपनी हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मसीह उन बीमारियों को भी ठीक कर सकते हैं जिनमें डॉक्टर ठीक नहीं कर सकते, लेकिन मसीह के हस्तक्षेप के लिए एक गंभीर कारण होना चाहिए, और जो व्यक्ति बीमारों के लिए प्रार्थना कर रहा है वह महान विश्वास वाला और मसीह के प्रति गहराई से समर्पित व्यक्ति होना चाहिए।

— गेरोन्डा, तो क्या इसका मतलब यह है कि अगर लोग पीड़ित हैं, तो उन्हें चिकित्सा सहायता नहीं लेनी चाहिए?

— लेकिन मेरा मतलब यह नहीं है, मेरे भाई! मैं यह नहीं कह रहा कि हमें एक बीमार व्यक्ति को ऑक्सीजन न देकर उसे दम घुटने दें। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि एक बीमार व्यक्ति मानवीय मदद पाते हुए कतिना कष्ट सहता है, और हमें मसीह से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह बीमारों की मदद करें ताकि वे कष्ट न सहें। यदि बीमारी गंभीर है, तो आइए हम मसीह से प्रार्थना करें कि वे केवल अपनी कृपा से इसे दूर कर दें। आखिरकार, यदि मसीह बीमारों के हाथ पर कोमलता से हाथ फेरते, तो उनकी सभी बीमारियाँ दूर हो जातीं और वे ठीक हो जाते! तब दवाओं या जहरों की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

और अगर वह किसी व्यक्ति के चेहरे पर कोमलता से हाथ फेरता है, तो यह और भी बेहतर होता है। और अगर वह उन्हें गले भी लगा लेता है, तो मानव हृदय कोमल हो जाता है। क्या आप इसे समझते हैं? हालांकि, इसके लिए बहुत अधिक विश्वास की आवश्यकता होती है। यदि बीमार व्यक्ति स्वयं में विश्वास नहीं रखता, तो वह ठीक नहीं होगा।

बीमार बच्चे

— गेरोन्डा, वह बीमार बच्चा जैसा आज उसके माता-पिता यहाँ लाए हैं, बहुत बुरी तरह से पीड़ित है।

— सब ठीक है; उसकी बीमारी धीरे-धीरे ठीक हो जाएगी। लेकिन वह जीवन भर इस संवेदनशीलता को बनाए रखेगा, और वह अपनी बीमारी को याद रखेगा। यह संवेदनशीलता उसे आध्यात्मिक रूप से मदद करेगी।

— गेरोना, ल्यूकेमिया से पीड़ित बच्चे भी बहुत कष्ट सहते हैं।

— पवित्र सहभागिता ऐसे बच्चों के लिए बहुत सहायक है। कई बच्चों को पवित्र सहभागिता के माध्यम से उनकी बीमारी से चंगा किया गया है। जैसा कि हम भजन संहिता 145 पढ़ते हैं, जिसमें हम परमेश्वर से रक्तस्राव से पीड़ित लोगों के रक्तस्राव को रोकने के लिए प्रार्थना करते हैं,¹¹⁵ आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर एनीमिया से पीड़ित बच्चों की मदद करें, और साथ ही यह भी कि थैलेसेमिया से पीड़ित बच्चों के लिए अस्पतालों में पर्याप्त रक्त हो।¹¹⁶ ये बच्चे उन शिशुओं से भी अधिक पीड़ित हैं जिनमें हेरोद ने कत्ल किया था।¹¹⁷ बीमारी से पीड़ित छोटे बच्चों को शुद्ध पुरस्कार मिलता है, क्योंकि उन पर कोई पाप नहीं है। आगामी जीवन में हम कतिने छोटे-छोटे बच्चों को देखेंगे, बेथलेहेम के शहीद, स्वर्गदूतों जैसी मंडली के साथ! दो महीने के बच्चे ऑपरेशन कराते हैं, इंजेक्शन लगाते हैं और ड्रपि पर रखे जाते हैं! इतनी छोटी सी बाँह में नस कहाँ मिलेगी! और इसलिए वे चुभते जाते हैं, चुभते जाते हैं... एक बच्चे को मस्तिष्क का ट्यूमर है, और उसे रेडियोथेरेपी दी जा रही है; उसका छोटा सा सरि मोटी बजिली की तारों के बीच पड़ा है... एक वयस्क भी ऐसी स्थिति सहन नहीं कर सकता, एक बच्चे की तो बात ही छोड़िए!

— जेरोन्डा, क्या ये बच्चे अंततः ठीक हो जाते हैं या मर जाते हैं?

— खैर, उनमें से कई तो, बेशक, मर जाते हैं, लेकिन उनके माता-पिता का क्या — वे उन्हें बना चिकित्सा देखभाल के कैसे छोड़ सकते हैं?

¹¹⁵ कैपाडोसिया के संत आर्सेनियस ऐसे अवसरों पर भजन संहिता 145 पढ़ते थे।

¹¹⁶ थैलेसेमिया — एक आनुवंशिक हेमोलिटिक एनीमिया है जो ग्लोबिन प्रोटीन के संश्लेषण में खराबी से होता है, और भूमध्यसागरीय देशों में आम है। यह बीमारी प्रगतशील एनीमिया, यकृत और प्लीहा के बढ़ने, पीलिया आदिकी कारण बनती है। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹¹⁷ मत्ती 2:16 देखें।

— जेरोंडा, क्या समय से पहले जन्मे शिशुओं के जीवन को बचाने के लिए बालरोग विशेषज्ञों का प्रयास करना कोई मायने रखता है?

— डॉक्टरों को हर संभव प्रयास करना चाहिए और साथ ही इन बच्चों के लिए प्रार्थना भी करनी चाहिए। "हे ईश्वर," डॉक्टरों को कहना चाहिए, "यदि यह बच्चा बच जाए और उसे जीवन भर कष्ट सहना पड़े, तो मैं आपसे वनिती करता हूँ कि इसे अपने पास ले जाएँ।" साथ ही, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिशुओं को पवित्र बपतिस्मा मिला। फिर ये शिशु स्वर्ग में जलती हुई मोमबत्तियाँ लेकर अपने डॉक्टरों से मिलेंगे।

और जब बच्चे इतने बड़े हो जाएँ कि वे समझ सकें कि क्या हो रहा है, तो डॉक्टरों को उनके नदिन के बारे में बताते समय बहुत सावधान रहना चाहिए ताकि उन्हें आघात न पहुँचे। एक आठ वर्षीय बच्चे को एक डॉक्टर ने कहा: "तुम अंधा हो जाओगे।" उसका पिता बच्चे को लेकर मेरे पास आया और ठीक उसके सामने बोला: 'हम उसे जांच के लिए वद्विश ले गए थे। हमें बताया गया था कि वह अंधा हो जाएगा।' एक स्वस्थ बच्चा भी, अगर ऐसा कुछ सुन ले, तो इतना परेशान हो सकता है कि उसकी अपनी स्थिति और बगिड़ जाए। और जो बच्चा पहले से ही बीमार हो, उसकी तो बात ही अलग है!

एक बीमार व्यक्ति के ठीक होने के लिए कुछ बलदान देना पड़ता है।

यदि हम स्वयं कोई बलदान किए बिना ईश्वर से कुछ माँगते हैं, तो हमारी प्रार्थना का मूल्य बहुत कम होता है। यदि मैं हाथ पर हाथ धरे बैठकर कहूँ, 'हे मेरे ईश्वर, मैं आपसे वनिती करता हूँ, इस बीमार व्यक्ति को ठीक कर दें,' जबकि मैं स्वयं कोई बलदान नहीं कर रहा, तो मैं केवल सुंदर शब्द बोल रहा हूँ। [— उन्हें हवा में उड़ा रहा हूँ।] लेकिन अगर मुझमें प्रेम है, अगर मैं कोई बलदान करता हूँ, तो मसीह इसे देखकर मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे — बशर्ते कि वह किसी अन्य के भले के लिए हो। इसलिए, जब लोग आपसे बीमारों के लिए प्रार्थना करने को कहें, तो उन्हें स्वयं भी प्रार्थना करने के लिए कहें, या कम से कम अपनी कमियों से छुटकारा पाने का प्रयास करने के लिए कहें।

कुछ लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं: "मुझे ठीक कर दो; मैंने सुना है कि तुम मेरी मदद कर सकते हो।" हालांकि, ये लोग खुद कोई प्रयास किए बिना मदद चाहते हैं। उदाहरण के लिए, आप किसी से कहते हैं: 'मीठा मत खाओ; यह बलदान करो ताकि ईश्वर तुम्हारी मदद कर सके।' और वे जवाब देते हैं: 'क्यों? क्या ईश्वर इस बलदान के बिना मेरी मदद नहीं कर सकता?' ऐसे लोग अपने ही लिए भी बलदान नहीं कर सकते। तो फिर वे किसी और के लिए खुद को बलदान कैसे कर सकते हैं! लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो मधुमेह से पीड़ित लोगों की मदद के लिए मीठाई खाना छोड़ देते हैं, या अनदिरा से पीड़ित लोगों को थोड़ी नींद देने के लिए जागते रहते हैं। इस तरह से कार्य करके, एक व्यक्ति ईश्वर के साथ एकता में प्रवेश करता है। और फिर ईश्वर लोगों पर अपनी कृपा प्रदान करते हैं।

जब कोई मुझसे कहता है कि वह अपने किसी बीमार रश्तिदार के लिए प्रार्थना नहीं कर सकता, तो मैं उसे उस व्यक्ति के लिए एक बलदान करने की सलाह देता हूँ — अपनी सेहत के लिए हानिकारक किसी चीज को त्याग दे।

एक बार, जर्मनी का एक आदमी मेरे कलवि पर मुझसे मिलने आया। उसकी एक लकवाग्रस्त बेटी थी। डॉक्टरों ने उसके इलाज की उम्मीद छोड़ दी थी। बेचारा पिता पूरी तरह से निराश था। मैंने उसे सलाह दी, "अपने बच्चे की सेहत के लिए आप खुद कोई बलदान करें।" 'तुम न तो झुक सकते हो, और न ही प्रार्थना कर सकते हो। इसकी परवाह मत करो। मुझे बताओ: तुम एक दिन में कितने सगिरेट पीते हो?' 'साढ़े चार पैकेट,' उसने जवाब दिया। मैंने उससे कहा, "सिर्फ एक पैकेट पीओ, और बाकी ढाई पैकेट पर जो पैसा खर्च होता, वह किसी गरीब को दान में दे दो।" उसने मुझसे कहा, "फादर, अगर मेरा बच्चा ठीक हो गया, तो मैं सगिरेट पीना पूरी तरह से छोड़ दूँगा।" "नहीं," मैंने कहा, "जब तक वह ठीक हो जाएगा, तब तक इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। तुम्हें अभी धूम्रपान छोड़ना होगा। धूम्रपान छोड़ दो। क्या तुम अपने बच्चे से प्यार नहीं करते?"

"क्या मैं अपने बच्चे से प्यार नहीं करता?! मैं उसके खातरि छठी मंजलि से कूद जाऊँगा," उसने जवाब दिया। "मैं तुम्हें छठी मंजलि से कूदने के लिए नहीं कह रहा; मैं तुम्हें धूम्रपान छोड़ने के लिए कह रहा हूँ। अगर तुम छठी मंजलि से कूदने जैसा कोई पागलपन करोगे, तो तुम अपने बच्चे को अनाथ कर दोगे और अपनी आत्मा भी खो दोगे। मैं तुम्हें कुछ बहुत आसान करने की सलाह दे रहा हूँ: धूम्रपान छोड़ दो। इसे अभी छोड़ दो!" लेकिन उसने किसी भी हालत में धूम्रपान छोड़ने से इनकार कर दिया, और अंत में वह रोते हुए मुझसे दूर चला गया! ऐसे किसी की मदद आखिर कैसे की जा सकती है? जबकजि लोग आपकी बात सुनते हैं, उन्हें मदद मिलती है।

एक अन्य अवसर पर, एक आदमी इतनी दूर पैदल चलकर आया कि हाँफ रहा था। मुझे पता चला कि वह बहुत ज्यादा धूम्रपान करता है और मैंने उससे कहा, "तुम भी अजीब हो, है ना? आखिर तुम इतना ज्यादा धूम्रपान क्यों करते हो? तुम अपनी तबीयत खराब कर लोगे।" थोड़ा साँसें संभालने के बाद, उसने कहा, "मेरी पत्नी बहुत बीमार है, और वह मर भी सकती है। कृपया चमत्कार के लिए प्रार्थना करें। डॉक्टरों ने हार मान ली है, वे मदद करने में असमर्थ हैं।" "क्या आप अपनी पत्नी से प्यार करते हैं?" मैंने उससे पूछा। "हाँ।" "तो आप खुद उसकी मदद क्यों नहीं करना चाहते? उसने अपनी तरफ से सब कुछ कर लिया है, और डॉक्टरों ने भी जो कुछ भी संभव था, वह सब कर दिया है। अब आप यहाँ आए हैं और मुझसे भी यह कर रहे हैं कि मैं जो कर सकता हूँ वह करूँ: यानी, यह प्रार्थना करूँ कि ईश्वर उनकी मदद करें। लेकिन अपनी पत्नी की मदद सुनिश्चित करने के लिए आपने खुद क्या किया है?" "मैं क्या करूँ, गेरोंडा?" उसने हैरानी से पूछा। मैंने उससे कहा, "अगर तुम धूम्रपान छोड़ दोगे, तो तुम्हारी पत्नी ठीक हो जाएगी।" मैंने सोचा कि अगर ईश्वर को यह दिखा कि उसकी ठीक होना आध्यात्मिक रूप से उसकी पत्नी की मदद नहीं करेगा, तो धूम्रपान छोड़कर, यह आदमी कम से कम धूम्रपान से होने वाले नुकसान से तो खुद को बचा ही लेगा। एक महीना बीता, और वह बहुत प्रसन्न होकर मुझे धन्यवाद देने वापस आया। उसने मुझसे कहा, "गेरोंडा, मैंने धूम्रपान छोड़ दिया है और मेरी पत्नी ठीक हो गई है।" कुछ समय बाद, वह मुझसे मिलने फरि आया; वह बहुत परेशान था और उसने मुझे बताया कि उसने चुपचाप फरि से धूम्रपान शुरू कर दिया था और उसकी पत्नी फरि से गंभीर रूप से बीमार पड़ गई थी। मैंने उससे कहा, "खैर, अब तुम्हें इलाज पता है। धूम्रपान छोड़ दो।"

बीमारों के लिए एक प्रार्थना

— जेरोंडा, कुछ लोग आए हैं और वे आपसे एक बीमार बच्चे के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध कर रहे हैं। वे यह भी पूछ रहे हैं कि क्या वह ठीक हो जाएगा। मैं उन्हें क्या बताऊँ?

— उन्हें यह बताओ: 'वरिष्ठ प्रार्थना करेंगे। मसीह इस बच्चे से प्रेम करते हैं और जो कुछ भी उसके भले के लिए होगा, वह करेंगे। यदि वे देखेंगे कि जैसे-जैसे वह बड़ा होगा, बच्चा एक बेहतर इंसान बनेगा, तो वे वरिष्ठ की प्रार्थना सुनेंगे।' हालाँकि, यदि मसीह देखें कि वियस्क होने पर वह बच्चा अच्छी आध्यात्मिक स्थिति में नहीं रहेगा, तो वे उसे अभी अपने पास ले जाएँगे। वे ऐसा इसलिए करेंगे क्योंकि वे उससे प्रेम करते हैं।' 'माँगो,' वे कहते हैं, 'और मैं तुम्हें [जो तुम माँगोगे] दूँगा।'¹¹⁸ लेकिन ईश्वर मुझे वही देगा जो मैं माँगता हूँ, केवल तभी जब मैंने स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर दिया हो। अन्यथा, वह मुझे जीवन क्यों देता? ताकि मैं उससे मुँह मोड़ लूँ? यदि मैं किसी बीमार व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ, तो मैं तब भी प्रसन्न होता हूँ जब वह ठीक हो जाता है और जब वह मर जाता है।

— गेरोंडा, क्या हम सही कर रहे हैं जब हम अपनी सेहत के लिए प्रार्थना करते हैं?

— यह बेहतर होगा यदि हम ईश्वर से अपने जुनून से हमें मुक्त करने के लिए प्रार्थना करें। दूसरे शब्दों में, पहले हम परमेश्वर के राज्य की खोज करें और उसकी याचना करें। ईश्वर से बीमारी से ठीक होने की प्रार्थना करके हम अपनी स्वर्गीय वरिसत को बर्बाद कर देते हैं। हालाँकि, यदि हम बीमारी से होने

¹¹⁸ देखें मत्ती 7:7; मरकुस 11:24; लूका 11:10 और यूहन्ना 16:24।

वाले दुख को सहन नहीं कर सकते, तो आइए हम ईश्वर से हमें ठीक करने के लिए प्रार्थना करें, और वह हमारे लिए जो सबसे अच्छा है, उसके अनुसार कार्य करेंगे।

— जेरोंडा, अगर कोई बीमार व्यक्ति स्वयं ईश्वर से कुछ और मांग रहा हो, तो क्या हमारी प्रार्थनाएँ उस बीमार व्यक्ति की मदद करेंगी?

— यदि कोई बीमार व्यक्ति केवल स्वयं के ठीक होने की प्रार्थना करता है, और अन्य बीमार लोगों के ठीक होने के लिए प्रार्थना नहीं करता, तो वह गलत कर रहा है। आप, बहन, जब दुनिया में थीं, तो आपने एक अस्पताल में काम किया था। जब कोई मरीज यीशु की प्रार्थना नहीं कर पाता था, तो आप क्या करती थीं?

— मैंने खुद कहा, जेरोंडा।

— आपने नश्चिती रूप से सही काम किया, लेकिन मरीज को खुद भी प्रार्थना करनी चाहिए थी।

— उसने भी प्रार्थना की। वह कहता था: 'हे परमेश्वर की अतिपवित्र माता, मेरी माता, मुझे बचाओ।' लेकिन, गेरोना, क्या पीड़ा सहना प्रार्थना का एक रूप नहीं है?

— शाबाश! हाँ, जरूर, वह भी एक प्रार्थना ही है! अगर कोई आपसे उनके लिए प्रार्थना करने को कहे क्योंकि उनका किसी नश्चिती दनि ऑपरेशन होने वाला है, तो जैसे ही वे आपसे कहें, आपको प्रार्थना शुरू कर देनी चाहिए। जब उन्हें ऑपरेशन थिएटर में ले जाया जाएगा, तब प्रार्थना शुरू करने के लिए उस दनि और घंटे का इंतजार न करें। और सेवाओं के दौरान, जब पुरोहिती कहते हैं, 'जो अस्वस्थ हैं उनके लिए,' तो 'हे प्रभु, दया करें' पूरे दिल से गाएँ। यदि आप 'हे प्रभु, दया करें' को और भी सुरमय ढंग से गाने के लिए गहरी साँस लेकर पचि पाइप के साथ 'ऊ-ऊ-ऊ' गुनगुनाना शुरू करते हैं, तो आपका मन भी उसी 'ऊ-ऊ-ऊ...' और तरह-तरह की बकवास में भटक जाएगा, जबकि बेचारे बीमार लोग, जो पीड़ा और वेदना में हैं, आपकी ओर से थोड़ी सी मदद का इंतजार कर रहे होंगे! आखिरकार, बीमार दर्द से पीड़ित हैं। आप दर्द में नहीं हैं। तो उनके लिए प्रार्थना करें, ताकि उन्हें मदद मिल सके। यदि आप अस्पताल के बसिटर पर करवटें बदलते हुए दर्द से कराहते या आहें भरते नहीं हैं, तो कम से कम बीमारों के लिए प्रार्थना में एक आह भरें। यदि स्वस्थ लोग बीमारों के लिए थोड़ी भी प्रार्थना नहीं करते हैं, तो बहुत जल्द मसीह उनसे कहेंगे: 'तुम स्वस्थ थे और उन लोगों के लिए प्रार्थना नहीं की जो पीड़ित थे? मैं तुम्हें नहीं जानता...' ¹¹⁹

यदि हम बीमारों के लिए प्रार्थना नहीं करते हैं, तो बीमारी अपने प्राकृतिक क्रम में आगे बढ़ेगी। जबकि, यदि हम उनके लिए प्रार्थना करते हैं, तो यह उसके प्राकृतिक क्रम को बदल सकती है। इसलिए, हमेशा बीमारों के लिए प्रार्थना करें।

अध्याय 3.

इस तथ्य पर कशारीरकि वकिलांगता ईश्वर की एक कृपा है

शारीरकि वकिलांगता के प्रतिसिही दृष्टिकोण

— गेरोना, क्या शारीरकि वकिलांगता किसी व्यक्ति में हीन भावना विकसित कर सकती है?

— ओह, क्या बकवास!

— हालांकि, जेरोंडा, कभी-कभी वकिलांग लोगों के साथ ठीक यही होता है।

¹¹⁹ मत्ती 25:12 देखें।

— ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनकी मानसिकता गलत होती है। एक बार जब वे यह समझ जाते हैं कि शारीरिक विकलांगता ईश्वर की ओर से एक आशीर्वाद है, तो लोग सही मानसिकता अपना लेते हैं और हीन भावना से मुक्त हो जाते हैं। जब कोई बच्चा, जिससे अपनी शारीरिक विकलांगता में आनंद खोजने के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन नहीं मिला है, हीन भावना से पीड़ित होता है, तो परस्थितियाँ समझने योग्य होती हैं। हालाँकि, यदि बच्चा बड़ा हो जाता है और हीन भावना उसके साथ बनी रहती है, तो इसका मतलब है कि उसने जीवन के गहरे अर्थ को नहीं समझा है। एक नौ साल की लड़की की आँख में एक ट्यूमर हो गया, और डॉक्टरों को उसे हटाना पड़ा। स्कूल में बच्चों ने उस बेचारी लड़की का मज़ाक उड़ाया, और वह बहुत दुखी हुई। उसका पिता मेरे कलवि पर मुझसे मिलने आया और मुझे जो हुआ था वह बताया। "गेरोंडा," उसने मुझसे कहा, "मैंने सोचा कि अगर मैं उसके लिए वह सब कुछ खरीद लूँ जो वह मुझसे माँगती है, तो मैं उसकी मदद करूँगा, क्योंकि वह खुश हो जाएगी और अपनी विकलांगता से हुई तकलीफ को भूल जाएगी। मैंने इस बारे में सोचा, लेकिन मैं ऐसा कैसे करूँ? आखिरकार, मेरे पास पाँच और छोटे बच्चे हैं जो उससे ईर्ष्या करते हैं, क्योंकि वे अभी कुछ भी नहीं समझते।" मैंने जवाब दिया, "आप यह क्या कह रहे हैं? जिस आराम की आप बात कर रहे हैं, वह झूठा आराम है। इससे समस्याओं का समाधान नहीं होगा। अगर आप अब उसकी माँगी हुई हर पोशाक खरीदेंगे, तो कुछ ही सालों में वह आपसे 'मर्सडीज' खरीदने की ज़िद करेगी। आप इतने पैसे कहाँ से लाएँगे? और फिर वह सुनेगी कि रेंच पर कुछ लोगों के अपने हवाई जहाज हैं, और वह आपसे एक हवाई जहाज खरीदने की माँग करेगी। तब आप क्या करेंगे? इसके बजाय अपने बच्चे को इस तथ्य में आनंद खोजने में मदद करने का प्रयास करें कि उसकी केवल एक आँख है। उसे खुद को एक शहीद के रूप में सोचने दें। कई पवित्र शहीदों की आँखें निकाल दी गईं, उनके कान और नाक काट दिए गए, फिर भी दुनिया उन पर हँसी उड़ाती थी। हालाँकि, बीमारी और मानवीय उपहास से पीड़ित संतों ने हार नहीं मानी और अटूट धैर्य के साथ अपने कष्टों को सहन किया। यदि लड़की यह समझती है और ईश्वर की महिमा करते हुए अपनी विकलांगता को स्वीकारती है, तो ईश्वर उसे स्वीकार करने वालों (confessors) में स्थान देंगे। बस सोचिए: ईश्वर ने बच्चे की आँख इस तरह से निकलवाई कि उसे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ, और फिर वे उसे स्वीकार करने वालों में स्थान देंगे! क्या आपको लगता है कि यह कोई मामूली बात है? आखिरकार, उस लड़की का कोई पाप नहीं है जिसके लिए वह अपनी विकलांगता से कीमत चुका रही है। और इस विकलांगता से उसे एक शुद्ध इनाम मिलेगा।" उस व्याकुल पिता ने मुझे धन्यवाद दिया और प्रसन्न मन से चला गया। और उसने वास्तव में अपनी बेटी को यह समझने में मदद की कि उसकी विकलांगता ईश्वर का एक आशीर्वाद थी। उसने ईश्वर की स्तुति करने में उसकी मदद की।

तो वह लड़की बनी किसी समस्या के बड़ी हुई, विश्वविद्यालय की भाषाशास्त्र संकाय में दाखिला लिया, अपनी पढ़ाई पूरी की, और अब एक शिक्षिका के रूप में काम करती है; वह अन्य युवा महिलाओं की तुलना में अधिक खुश है — जनिके पास सब कुछ है, फिर भी वे जीवन के गहरे अर्थ को समझने में असफल होने के कारण पीड़ित हैं।

यदि लोग जीवन के गहरे अर्थ को नहीं समझ पाते, तो वे परमेश्वर द्वारा उनके उद्धार के लिए दी गई आशीर्वादों और अनुकूल अवसरों से भी दुखी होते हैं। लेकिन जिसका दृष्टिकोण सही है, वह हर चीज़ में आनंदित रहता है। क्या वह लंगड़ा है? फिर भी वह इसमें आनंदित रहता है! क्या वह बहुत होशियार नहीं है? फिर भी वह इसमें आनंदित रहता है! चर्च के चूहे जतिना गरीब? वह उसमें भी आनंदित होता है।

बेशक, मैं विकलांग लोगों को होने वाली कठिनाइयों को समझता हूँ, और मैं उनके लिए, विशेष रूप से युवा महिलाओं के लिए, दिल से प्रार्थना करता हूँ। आखिरकार, एक युवा पुरुष के लिए विकलांगता या शारीरिक अक्षमता उतनी बोझिल नहीं होती। हालाँकि, शादी करने की इच्छुक एक युवा महिला के लिए, ऐसी अक्षमता से नपिटना बहुत कठिन होता है।

और अंधे कतिने कष्ट सहते हैं! ये बेचारे लोग अपनी देखभाल नहीं कर सकते। जब वे चलते हैं, तो ठोकर खाकर गरि पड़ते हैं... मैं अपनी प्रार्थनाओं में ईश्वर से नविदन करता हूँ कि अंधों को कम से कम थोड़ी सी रोशनी दे, ताकि वे किसी न किसी तरह अपनी देखभाल कर सकें।

— मैं भी, गेरौन्डा, इस बात से परेशान हूँ कि मैं अपनी कमजोर दृष्टि के कारण सुसमाचार का एक भी अध्याय नहीं पढ़ पाता। फरि भी आपने हमें बताया कि यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन सुसमाचार का एक अध्याय पढ़ता है, तो वह पवित्र हो जाता है।

— आप इस बात पर क्यों परेशान हो रहे हैं? क्या आपको लगता है कि अगर आप एक अध्याय पढ़ने के बजाय सुसमाचार के केवल कुछ श्लोक, या उससे केवल एक शब्द पढ़ें, या बस इस पवित्र पुस्तक को श्रद्धापूर्वक चूम लें, तो आप पवित्र नहीं होंगे? लेकिन इसके अलावा, आप कल ही मसीह के पास नहीं आए हैं। तो फरि, आप आज तक जो पढ़ा और सुना है, उस पर क्यों नहीं मनन करते? मुख्य बात सही दृष्टिकोण अपनाना है। अपने आप से कहें: 'अभी, ईश्वर चाहते हैं कि मैं इस अवस्था में रहूँ। कुछ साल पहले, वह चाहते थे कि मैं एक अलग अवस्था में रहूँ।' एक धर्मपरायण वकील, बूढ़ा होने पर, अपनी दृष्टि खो बैठा। एक बार उन्होंने मुझसे कहा: 'प्रार्थना करें, हे पवित्र वृद्ध, कि मैं कम से कम थोड़ा-बहुत पढ़ सकूँ और अपने प्रियजनों को पहचान सकूँ।' 'आप अपने प्रियजनों को उनकी आवाजों से पहचान सकते हैं,' मैंने जवाब दिया, 'जहाँ तक पढ़ने की बात है... आप इतने सालों से पढ़ रहे हैं! अब यीशु की प्रार्थना का अभ्यास करो। पूरी संभावना है कि इस क्षण ईश्वर आपसे ठीक यही चाहता है।' उस बातचीत के बाद, उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति ने उस समय की तुलना में कहीं अधिक आनंद का अनुभव करना शुरू कर दिया जब वह देख पाता था।

चोट पहुँचाने के लिए दैवीय दंड

यदि हम वकिलांगता से पीड़ित होते हुए भी बर्ना शकियत के उसे सहन करते हैं, तो हमें एक बड़ा इनाम मिलता है। क्योंकि सभी वकिलांग लोग अपने लिए एक प्रकार का [आध्यात्मिक] बचत खाता बना रहे हैं। उदाहरण के लिए, स्वर्गीय बचत बैंक में, एक बर्धिर व्यक्ति के लिए उस कान के लिए खाता खोला जाता है जिससे वह सुन नहीं सकता, एक अंधे व्यक्ति के लिए अंधी आँख के लिए, और एक लंगड़े व्यक्ति के लिए लंगड़े पैर के लिए। यह एक महान बात है! यदि ये लोग अपने भावों पर काबू पाने में एक छोटा सा भी कार्य करते हैं, तो उन्हें ईश्वर से मुकुटों का पुरस्कार मिलेगा। बस देखिए—आखिरकार, युद्ध के अपंगों को विशेष पेंशन मिलती है और साथ ही, उन्हें पदक भी प्रदान किए जाते हैं।

यदि किसी व्यक्ति के पास सुंदरता, वीरता और अच्छा स्वास्थ्य है, फरि भी वह स्वयं को सुधारने या अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास नहीं करता, तो ईश्वर उससे कहेगा: "अपने सांसारिक जीवन में, तुमने उन वरदानों का आनंद लिया है जो तुम्हें प्राप्त हुए: वीरता और इसी तरह की चीजें! मैं तुम्हें और क्या देना बाकी है? कुछ भी नहीं।" लेकिन वकिलांग व्यक्ति—चाहे वह जन्मजात हो, माता-पिता से वरिसत में मिला हो, या बाद में प्राप्त हुआ हो—उसे प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि आने वाले जीवन में उसे अपना पुरस्कार मिलेगा। यह विशेष रूप से तब सच है जब उसकी वकिलांगता के लिए वह खुद दोषी न हो। उस स्थिति में, उसे बर्ना किसी 'कटौती' या 'रोकड़ोली' के एक शुद्ध पुरस्कार प्राप्त होगा। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति, अपने पूरे जीवन में, उदाहरण के लिए, अपनी टांग नहीं फैला पाता, बैठ नहीं पाता, झुक नहीं पाता, और इसी तरह की अन्य चीजें, तो यह कोई छोटी [परीक्षा] नहीं है। आखिरकार, अगर कोई व्यक्ति उदाहरण के लिए, अपने पूरे जीवन में अपनी टांग नहीं फैला सकता, बैठ नहीं सकता, झुक नहीं सकता, या इसी तरह की चीजें नहीं कर सकता, तो यह कोई छोटी [आज़माइश] नहीं है। अगले जीवन में, ईश्वर ऐसे व्यक्ति से कहेंगे: 'यहाँ आओ, मेरे बच्चे, और इस सहिसन पर हमेशा के लिए अपनी जगह लो।' इसीलिए मैं कहता हूँ कि मेरे लिए मानसिक रूप से वकिलांग, अंधा या बहरा होकर पैदा होना हजार गुना बेहतर होता, क्योंकि उस स्थिति में ईश्वर का एक इनाम मेरा इंतज़ार कर रहा होता।

यदि शारीरिक रूप से विकलांग लोग शिकायत नहीं करते, बल्कि विनिमृतापूर्वक ईश्वर की महिमा करते हैं और उनके साथ रहते हैं, तो वे स्वर्ग में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त करेंगे। ईश्वर उन्हें उन स्वीकारकर्ताओं और शहीदों के साथ रखेंगे, जिन्होंने मसीह के प्रेम के लिए अपने हाथ-पैर त्याग दिए (), और जो अब स्वर्ग में मसीह के हाथ-पैरों को श्रद्धापूर्वक चूमते हैं।

— गेराना, अगर, उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति बिहरा है और साथ ही अपनी कस्मिन्त के बारे में बड़बड़ाता और शिकायत करता है, तो क्या होगा?

— छोटे बच्चे भी शिकायत करते हैं। ईश्वर ऐसी बातों को ज्यादा महत्व नहीं देता। इस पर विचार करें: अच्छे माता-पिता, भले ही वे अपने सभी बच्चों से समान रूप से प्रेम करते हों, फिर भी वे कमजोर या विकलांग बच्चों का विशेष ध्यान रखते हैं। इसी तरह, ईश्वर, हमारे प्रेममय पिता, उन बच्चों के साथ व्यवहार करते हैं जो शारीरिक या आध्यात्मिक रूप से कमजोर हैं, बशर्ते वे उनके प्रतिसिद्धान्त रखते हों और उन्हें अपने जीवन में हस्तक्षेप करने की अनुमति दें।

बौद्धिक अक्षमताओं वाले बच्चे

मानसिक रूप से विकलांग बच्चों वाली उन बेचारी माताओं को कतिना कष्ट झेलना पड़ता होगा। ये बच्चे लगातार शोर मचाते रहते हैं और हर चीज़ को गंदा कर देते हैं... यह वाकई एक बड़ी परीक्षा है! मैं एक ऐसी माँ को जानती थी जिसका बच्चा मानसिक रूप से विकलांग था। अब वह बड़ा हो गया है, एक स्वस्थ युवक है, और वह उससे नपिट नहीं पाती क्योंकि वह सबसे अकल्पनीय हरकतें करता है! वह दीवारों, फर्नीचर और चादरों पर मल फैला देता है... उसकी माँ घर को साफ़-सुथरा करती है, सफ़ाई करती है और सब कुछ अपनी जगह पर रखती है, लेकिन वह सब कुछ उलट-पुलट कर देता है और गंदगी से लथपथ कर देता है। वह बेचारी महिला सफ़ाई के सामान को उससे छपाती है, लेकिन वह उन्हें ढूँढ़ निकालता है और पी जाता है! वह पूरी अलमारियाँ बालकनी से फेंक देता है। भगवान के कृपा से, उसने अभी तक किसी को नहीं मारा है। और यह सब बस एक-दो दिन से नहीं हो रहा है। यह सालों से चल रहा है।

— गेराना, क्या सीखने की अक्षमता वाला व्यक्ति विनिमृता और दयालुता रख सकता है?

— वह ऐसा कैसे कर सकता था! उदाहरण के लिए, उस मानसिक रूप से विकलांग छोटे लड़के को ही ले लो, जिसने उसके माता-पिता अक्सर यहाँ मठ में लाते हैं। कौन सा समझदार व्यक्ति उसके जैसी दया रखता है? जिस तरह वह प्रार्थना करता है, जिस तरह वह झुकता है! जब मुझे हरनिया की तकलीफ थी और मैं झुक नहीं पा रहा था, तो उसके माता-पिता ने उससे कहा: 'पिताजी बीमार हैं; वे झुक नहीं सकते।' — 'मैं उनके लिए झुक जाऊँगा!' — छोटे बच्चे ने कहा, और मेरी ओर से झुकने लगा! और वह पसीने में भीगकर मेरी ओर से झुकता रहा। उसमें कतिना प्रेम, कतिनी उदारता थी! एक बार, पड़ोसी के एक बच्चे ने उसे मारा, लेकिन मार के जवाब में, उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया और कहा, 'खुश रहो!' देखिए? तथाकथित 'समझदार' लोगों में से कौन ऐसा करता है, भले ही वे सुसमाचार और ढेर सारी आध्यात्मिक कतिबें पढ़ लें? कुछ दिन पहले, इस लड़के का पूरा परिवार यहाँ आया था ताकि वह मुझसे मिल सके। जब वे आए, तो वह मेरे बगल में बैठ गया, और उसकी छोटी बहन थोड़ी दूर पर बैठ गई। अपनी बहन को मुझसे कुछ दूरी पर बैठे देख, उसने उससे कहा, 'जाकर पिताजी के पास बैठ जाओ'—और उसे अपनी जगह पर बठा दिया। इस बच्चे ने मेरे दिल को छू लिया, और मैंने उसे आशीर्वाद के रूप में एक बड़ा मोती का क्रॉस दिया, जो मुझे यरूशलेम से लाया गया था। क्रॉस को अपने हाथों में लेकर, उसने कहा, 'दादी, दादी!' — और दिखाया कि वह यह क्रॉस अपनी दादी की कब्र पर कैसे रखेगा! क्या आप कल्पना कर सकते हैं! यह नन्हा बच्चा अपने लिए कुछ भी नहीं चाहता; वह सब कुछ दूसरों के लिए चाहता है! वह खुद 'बना किसी परीक्षा के' स्वर्ग जाएगा, लेकिन वह अपने माता-पिता को भी स्वर्ग में ले जाएगा।

काश मैं उसकी जगह होता! भले ही मैं कुछ भी न समझता, और भले ही मैं बोल न पाता! ईश्वर ने मुझ पर हर आशीर्वाद बरसाया है, फिर भी, इसके बावजूद, मैंने इन आशीर्वादों को कृतघ्नता से बर्बाद कर दिया

है। इस छोटे बच्चे जैसी ज़िंदगी में तो धर्मशास्त्री भी फीके पड़ जाएंगे। मुझे लगता है कि स्वर्ग में भी पवित्र धर्मशास्त्री ईश्वर को जानने के मामले में ऐसे बच्चों से बेहतर स्थिति में नहीं होंगे। और शायद धर्मी ईश्वर ऐसे बच्चों को कुछ और भी बड़ा देगा, क्योंकि अपनी सांसारिक ज़िंदगी में उन्हें बहुत कुछ से वंचित रखा गया था।

मानसिक बीमारियाँ

— जेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति उदासी में पड़ जाए, तो उसे उससे उबरने के लिए क्या करना चाहिए?

— द्रव्य सांतवना आवश्यक है।

— और यह सांतवना कैसे प्राप्त की जाती है?

— एक व्यक्ति को मसीह से 'चपिके' रहना चाहिए, और मसीह उन्हें यह सांतवना देंगे। आखिरकार, आत्म-प्रेम अक्सर स्वार्थपरता से जुड़ा होता है। अधिकांश स्कज़ोफ्रेनिया से ग्रस्त लोग अत्यंत संवेदनशील आत्मा होते हैं। एक तुच्छ घटना घट सकती है, या वे किसी कठिनाई को पार नहीं कर पाते, और वे बहुत कष्ट सहते हैं। दूसरा कोई व्यक्ति किसी को मार सकता है और ऐसा व्यवहार कर सकता है जैसे कुछ हुआ ही न हो। जबकि एक संवेदनशील व्यक्ति गलती से बिल्ली के पंजों पर पैर रख बैठने पर, पीड़ा महसूस करता है और इस तकलीफ के कारण सो नहीं पाता। खैर, अगर वह दो-तीन रातों तक नहीं सो पाता, तो बेशक वह डॉक्टर के पास दौड़ पड़ेगा।

— जेरोंडा, मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि मानसिक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को तब मदद मिलेगी जब उसके [बीमारी के] कारण को संबोधित किया जाएगा।

— हाँ, लेकिन केवल तभी जब कोई वैध कारण हो। आखिरकार, लोग कभी-कभी ऐसे विचारों में फँस जाते हैं जो उन्हें पागल कर सकते हैं, यहाँ तक कि ऐसी परिस्थितियों में भी जहाँ जो हो रहा है वह स्वाभाविक है और, अगर मैं ऐसा कह सकता हूँ, तो उचित भी है। "शायद मुझे कोई वंशानुगत मानसिक बीमारी है? शायद मैं बीमार हूँ?" — ऐसे लोग खुद को इन सवालों से सताते हैं। मैं एक ऐसे युवक को जानता था जो विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान दिनों में ग्यारह घंटे पढ़ता था। वह छात्रवृत्ति पर था और अपने परिवार की मदद करता था, क्योंकि उसके पिता बीमार थे। अपनी पढ़ाई के अंत तक, वह पूरी तरह से थक गया था, क्योंकि वह एक संवेदनशील, नाजुक स्वभाव का व्यक्ति था। उसे लगातार सरिदर होता था और उसने बड़ी मुश्किल से अपनी अंतिम परीक्षाएं पास कीं। बाद में, उसने खुद को इस विचार से सताना शुरू कर दिया कि शायद वह किसी आनुवंशिक मानसिक बीमारी से पीड़ित है। आनुवंशिकता? बकवास! अगर कोई व्यक्ति दिनों में सिर्फ ग्यारह घंटे पढ़ता भी है, तो इससे थकान हो ही जाएगी। और अगर कोई व्यक्ति पढ़ाई कर रहा हो, अपने माता-पिता की मदद कर रहा हो, और उस पर एक संवेदनशील आत्मा भी हो, तो क्या कहा जा सकता है!

— जेरोंडा, एक बच्चे को अपने पिता द्वारा आत्महत्या करने के बाद उदासी और नरिशा होने लगी। क्या यह आनुवंशिक हो सकता है?

— संभव है कि बच्चे को भावनात्मक आघात लगा हो। हम पूरी तरह से निश्चित नहीं कह सकते कि यहाँ आनुवंशिकता ही कारण है। इसके अलावा, हमें यह भी नहीं पता कि उसके पिता की मानसिक स्थिति क्या थी, या किस वजह से उन्होंने आत्महत्या की। बेशक, यदि पिता एक अलग-थलग रहने वाले व्यक्ति हैं, तो बच्चे को मदद की ज़रूरत है। आखिरकार, यदि बच्चा भी अलग-थलग रहने लगे और, साथ ही, यह सोचने लगे कि उसमें खराब आनुवंशिकी प्रवृत्ति है, तो वह बीमार पड़ सकता है।

ईश्वर हमेशा एक व्यक्ति को ऐसी परीक्षाओं से गुज़रने देता है जिन्हें वह सहन कर सकता है। लेकिन परीक्षाओं के बोझ के अलावा, लोगों का उपहास भी एक अतिरिक्त भार होता है, जिससे आत्मा इस अतिरिक्त बोझ के नीचे दब जाती है और कराहने लगती है। अपनी तानों से, लोग पागलों को और भी अधिक विकृष्ट कर देते हैं। आखिरकार, शुरुआती चरणों में, पागलपन को कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। पहले के दिनों में कोई मनोरोग अस्पताल नहीं होते थे, और अगर कोई पागल हो जाता था तो उसे लोहे के

बोल्टों वाले कमरे में बंद कर दिया जाता था। मुझे एक पागल औरत याद है; उसका नाम पेरसिटेरा था। उसे घर में बंद करके रखा जाता था। बच्चे खड़कियों पर पत्थर फेंकते और उसका मजाक उड़ाते थे। वह बेचारी गुस्से से आग-बबूला हो जाती, बोल्टों को हिलाती, चलि्लाती और हाथ लगने वाली कोई भी चीज़ घर से बाहर फेंक देती। फरि भी, अगर आप एक अलग जीवन में देखें, तो पाएँगे कि पेरसिटेरा तथाकथित 'चतुर' और 'समझदार' माने जाने वाले कई लोगों से बेहतर थी।

मुझे एक और घटना याद है। एक परिवार में सबसे बड़ी बेटी थोड़ी मानसिक रूप से अक्षम थी। लेकिन उसका दिल बहुत दयालु था। वह चालीस साल की थी, लेकिन उसका व्यवहार पाँच साल की बच्ची जैसा था। वयस्कों और बच्चों दोनों ने उसके लिए कतिनी प्रलोभनपूर्ण स्थितियाँ पैदा कीं! एक दिन, उसके माता-पिता उसे खाना पकाने के लिए छोड़कर खेतों में काम करने चले गए। लड़की का भाई खेत से लौटने वाला था, ताकि वह कुछ मक्के के दाने ला सके और तैयार दोपहर का भोजन इकट्ठा कर सके, ताकि उसके माता-पिता और मजदूर दोनों अपना भोजन कर सकें। बेचारी लड़की ने सब्जी के खेत से जुकनी, बैंगन और बीन्स तोड़ लिए थे और उन्हें पकाने की तैयारी कर रही थी, तभी उसकी छोटी बहन—जो कोई लड़की नहीं, बल्कि एक सच्ची प्रलोभन थी—ने गधे का कान पकड़ा, उसे लड़की द्वारा इकट्ठी की गई सब्जियों के पास ले गई, और गधे ने उन्हें सब खा लिया। उस गरीब लड़की ने किसी को कुछ नहीं कहा और और सब्जियाँ लेने के लिए वापस सब्जी के खेत में चली गई। जब वह उन्हें फरि से तोड़ रही थी, तो ठीक उसी समय जब वह खाना आग पर रख रही थी, उसका भाई खेत से लौट आया। उसके भाई ने गधों का सामान उतारा और यह देखकर कि खाना अभी तैयार नहीं हुआ है, उसे पीटना शुरू कर दिया! उसे दिन-प्रतिदिन कतिनी पीड़ा सहनी पड़ती थी! उसकी बेचारी माँ ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि पहले उसकी बेटी मर जाए, और फरि वह खुद, क्योंकि उसे लगता था कि उसकी बेटी की देखभाल करने वाला कोई नहीं रहेगा। और वास्तव में, पहले बेटी मरी, और फरि माँ।

लेकिन जो कुछ भी कहा जाए, बौद्धिक अक्षमताओं वाले लोग दूसरों की तुलना में बेहतर स्थिति में होते हैं। उनसे कुछ भी मांगा नहीं जा सकता, और इसलिए वे बना किसी परीक्षा का सामना किए अगले जीवन में प्रवेश कर जाते हैं।

अपने बच्चों की वकिलांगताओं के प्रति माता-पिता का सही दृष्टिकोण

ऐसी माताएँ हैं जो गर्भावस्था के दौरान यह जानकर कि उनका बच्चा वकिलांग या मानसिक रूप से अक्षम पैदा होगा, गर्भपात करा लेती हैं और अपने बच्चे की हत्या कर देती हैं। वे यह नहीं सोचती कि इस बच्चे की भी एक आत्मा है। कई पति मेरे पास आते हैं और कहते हैं: 'क्या मेरा बच्चा वकिलांग होगा? ईश्वर ऐसा क्यों करता है? मैं इसे सहन नहीं कर सकता।' ऐसा रवैया ईश्वर के प्रति कतिनी नरिलज्जता, कतिनी जदि, कतिनी स्वार्थपरता को दर्शाता है! ऐसे लोग, अगर ईश्वर उनकी मदद करे, तो और भी बुरे हो जाएंगे। एक बार, एक छात्र अपने पति के साथ मेरे कलवि में आया; वह अपने ही विचारों के कारण विकृष्ट हो गया था। इस युवक का इलेक्ट्रोशॉक थेरेपी से इलाज किया गया था। वह बेचारा घर पर काफी कठिनाइयाँ सहता था। वह अपनी धार्मिकता के लिए जाना जाता था। जब वह प्रणाम करता, तो अपना सरि ज़मीन पर पटक देता। वह कहता, 'शायद ईश्वर धरती पर दया करेगा, और मुझ पर भी, जसिने इसे मारा है।' दूसरे शब्दों में, वह सोचता था कि ईश्वर धरती पर दया करेगा—जो उसके प्रहार से आहत हुई थी—और उस पर भी दया करेगा! इस बात ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला! यह युवक खुद को अयोग्य समझता था। जब भी वह खुद को और भी बुरा महसूस करता, तो वह पवित्र पहाड़ पर आ जाता। मैं उसके विचारों को सही करता; एक-दो महीने के लिए वह कुछ-कुछ ठीक रहता, और फरि सब कुछ फरि से शुरू हो जाता। उसके पति नहीं चाहते थे कि उनके जान-पहचान वाले उनके बेटे को देखें, क्योंकि इससे उनकी शान को ठेस पहुँचती थी। वह अपनी ही स्वार्थपरता से पीड़ित था। उसने मुझसे कहा, "मेरा बेटा दूसरों की नजर में मेरी बदनामी कर रहा है।" यह सुनकर, उसके बेटे ने उससे कहा: "सुनो, तुम्हें इससे समझौता कर लेना चाहिए! मैं यहाँ हूँ—एक पागल—और मैं बस वैसा ही हूँ जैसा मैं हूँ! क्या आप मुझे शिष्टाचार की संकीर्ण सीमाओं में बांधना चाहते हैं? यह स्वीकार

करें कि आपका एक पागल बच्चा है और स्वाभाविक रूप से व्यवहार करें। क्या सरिफ़ आपका ही बच्चा पागल है?" "अरे, कभी नहीं!" मैंने सोचा। "इन दोनों में से असल में कौन पागल है?"

क्या आप देख सकते हैं कि सिवार्थीपन अक्सर कतिनी दूर तक ले जा सकता है? एक पति अपने ही बच्चे की मौत की कामना भी कर सकता है! जब मैं सांसारिक दुनिया में रहता था, तो मैं एक ऐसे बच्चे को जानता था जिसने सीखने में कठिनाई थी। उसके माता-पति, जब दोस्तों से मिलने जाते, तो उसे साथ नहीं ले जाते, ताकि उन्हें उस पर शर्म न आए! और लोग मुझ पर हँसे क्योंकि मैंने उस बच्चे से बात की थी। फरि भी उस बच्चे ने मेरे दिल में उन लोगों की तुलना में बेहतर जगह बनाई जो उस पर हँसे थे।

अध्याय 4. आध्यात्मिक नयिमों पर

आध्यात्मिक नयिम कैसे काम करते हैं

— गेरौना, जनि कानूनों को आध्यात्मिक कहा जाता है, वे क्या हैं?

— मैं समझाता हूँ। जैसे प्रकृतिक नयिम हैं, वैसे ही आध्यात्मिक जीवन में भी आध्यात्मिक नयिम हैं। मान लीजिए कोई व्यक्ति एक भारी वस्तु को ऊपर की ओर फेंकता है। जतिनी अधिक शक्तिसे वह उसे फेंकेगा, और जतिनी ऊँचाई से वह उसे फेंकेगा, उतनी ही अधिक शक्तिसे वह वस्तु गरिकर टूट जाएगी। यह एक प्राकृतिक नयिम है। और आध्यात्मिक जीवन में, कोई व्यक्ति अपने अहंकार के पंखों पर जतिना ऊँचा उठता है, उसकी आध्यात्मिक गरिवट उतनी ही भयंकर होगी, और अपने अहंकार की ऊँचाई के अनुपात में, वह [आध्यात्मिक रूप से] चकनाचूर हो जाएगा। क्योंकि अहंकारी व्यक्ति एक निश्चिती सीमा तक उठता है, और फरि गरिता है और पूरण वफिलता का सामना करता है। "जो अपना गौरव बढ़ाता है, उसे नम्र किया जाएगा।"¹²⁰ यह एक आध्यात्मिक नयिम है।

हालाँकि, प्राकृतिक और आध्यात्मिक कानूनों में एक महत्वपूर्ण अंतर है। प्राकृतिक कानून 'नरिमम' हैं, और मनुष्य उन्हें नहीं बदल सकता। दूसरी ओर, आध्यात्मिक कानून 'दयालु' हैं, और मनुष्य उन्हें बदल सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि [आध्यात्मिक कानूनों के मामले में] वह अपने सर्ष्टा और रचयिता — परम दयालु ईश्वर — के साथ व्यवहार कर रहा है। दूसरे शब्दों में, यह जल्दी से महसूस करने के बाद कि वह अपने अहंकार में कतिना 'ऊँचा' उड़ गया है, एक व्यक्ति किहेगा: 'मेरे ईश्वर, मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है, और फरि भी मैं अभिमानी हूँ? मुझे क्षमा करें!' — और तुरंत ही ईश्वर के देखभाल करने वाले हाथ इस व्यक्ति को थाम लेते हैं और उसे धीरे से वापस नीचे उतार देते हैं, ताकि उसका गरिना किसी के ध्यान में न आए। इस तरह, व्यक्ति इस गरिवट से कुचला नहीं जाता, क्योंकि इससे पहले हृदय से पश्चाताप और आंतरिक प्रायश्चिति हुआ था।

इसी प्रकार सुसमाचार के नयिम पर भी लागू होता है: 'जो कोई तलवार उठाएगा, वह तलवार से ही नष्ट होगा।'¹²¹ दूसरे शब्दों में, यदि मैं किसी पर तलवार से वार करता हूँ, तो आध्यात्मिक नयिम के अनुसार मुझे इसका मूल्य स्वयं तलवार से वार खाकर चुकाना होगा। हालाँकि, यदि मैं अपने पाप को स्वीकार करता हूँ, यदि मेरा अंतरात्मा मुझे 'तलवार से प्रहार' करता है और मैं ईश्वर से क्षमा मांगता हूँ, तो आध्यात्मिक नयिम लागू नहीं रहते, और मैं ईश्वर के प्रेम को एक उपचारात्मक मरहम के रूप में प्राप्त करता हूँ।

¹²⁰ लूका 18:14। यह भी देखें मत्ती 23:12।

¹²¹ तुलना करें मत्ती 26:52 से।

दूसरे शब्दों में, ईश्वर के नरिण्यों की गहराइयों में—और उसके नरिण्य एक गहरी खाई हैं—हम देखते हैं कि जब लोग बदलते हैं तो ईश्वर भी 'बदलता' है। यद्यपि अवज्ञाकारी बच्चा होश में आता है, पश्चात्ताप करता है और अपने अंतरमन की पीड़ा से त्रस्त होता है, तो पति प्रेमपूर्वक उसे सहलाता और सांत्वना देता है। एक व्यक्ति ईश्वर के नरिण्य को बदल सकता है! यह कोई तुच्छ बात नहीं है। क्या आप बुरा करते हैं? ईश्वर आपके सरि पर एक थप्पड़ मारता है। क्या आप कहते हैं, 'मैंने पाप किया है'? वह आप पर अपनी कृपा बरसाता है।

ईश्वर के कुलीन बच्चे

कुछ लोगों ने अपने पाप से पश्चात्ताप किया है, और ईश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है। आध्यात्मिक नियम अब लागू नहीं होते, लेकिन इसके बावजूद, लोग अपने पाप को नहीं भूलते। वे ईश्वर से वनिती करते हैं कि इस जीवन में उनके पाप के लिए उन्हें दंड दिया जाए — ताकि वे उसका प्रायश्चित्त कर सकें। और चूंकि वे इस पर ज़िद करते हैं, दयालु ईश्वर उनकी सच्ची प्रार्थनाओं को स्वीकार कर लेते हैं। हालाँकि, स्वर्ग के अपने बचत-खाते में, वह उनके लिए उस इनाम और उस पर लगने वाले आध्यात्मिक ब्याज को संजोकर रखते हैं। ऐसे लोग ईश्वर की महान संतानें हैं, उसकी सबसे सच्ची संतानें।

पुस्तक *द स्परिचुअल मेडो* (122) अब पमिन की कहानी बताती है, जो एक चरवाहा थे। एक दिन, एक आदमी उनसे मिलने आया और उसने अब से अपनी कोठरी में रात बिताने की अनुमति मांगी। चूंकि उनके पास मेहमानों के लिए कोई उचित जगह नहीं थी, अब ने आगंतुक को वहीं सुला दिया जहाँ वे स्वयं सोते थे, जबकि वे खुद रात गुज़ारने के लिए एक गुफा में चले गए। सुबह जब वह अपनी कोठरी में लौटे, तो आगंतुक ने उनसे पूछा: "अबबा, आपकी रात कैसे बीती? आपको ठंड तो नहीं लगी?" "नहीं," अबबा पमिन ने उत्तर दिया, "मेरी रात अच्छी बीती। मैं एक गुफा में गया और वहाँ एक शेर को सोते हुए देखा। मैं भी लेट गया, अपनी पीठ ओर के उसके झुंड से सटाकर। शेर की साँस ने गुफा को भट्टी की तरह गर्म कर दिया था, इसलिए मुझे ठंड नहीं लगी।" "क्या आपको डर नहीं लगा कि शेर आपको खा जाएगा?" "नहीं," अबबा ने उत्तर दिया, "मुझे डर नहीं लगा, लेकिन यह जान लो: मुझे जंगली जानवरों द्वारा खा लिया जाएगा।" "आपको यह कैसे पता चला?" "दुनिया में मैं एक चरवाहा था," अबबा ने उत्तर दिया। "एक बार, जब मैं अपने झुंड की देखभाल कर रहा था, तो मेरे कुत्तों ने एक राहगीर को चीर-फाड़ डाला था। मैं उस आदमी को बचा सकता था, लेकिन मैं उदासीन रहा। तब से, मैं लगातार ईश्वर से प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे जंगली जानवरों द्वारा खा लिया जाए। और मुझे विश्वास है कि ईश्वर मुझे यह दया देंगे।" वास्तव में, इस बाबा को जंगली जानवरों ने खा लिया था। हालाँकि, आने वाले जीवन में, ऐसे लोग सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त करेंगे।

— गेरोन्डा, मैंने चर्च के पुरखों की एक कतिब की टपिपणी में पढ़ा है कि जब कोई व्यक्ति पाप करता है, तो उसे अपने किए गए बुरे कर्म का प्रायश्चित्त करने के लिए दंडित किया जाना चाहिए।

— नहीं, ऐसा नहीं है। यदि कोई व्यक्ति पश्चात्ताप करता है, तो उसे दंडित नहीं किया जाता: मसीह उस पर दया करते हैं। चर्च फादर्स के ग्रंथों पर टीकाएँ पढ़ते समय बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि कोई विशेष 'टपिपणीकार' एक सभ्य व्यक्ति हो सकता है, लेकिन उसकी व्याख्याएँ गलत हो सकती हैं। यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि टपिपणीकार सब कुछ सही ढंग से व्याख्यायित कर रहा है, तो केवल चर्च फादर्स का मूल ग्रंथ ही पढ़ना बेहतर है। एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि येशायाह नबी को लकड़ी की आरी से दो टुकड़ों में काटा गया था,¹²³ क्योंकि उन्हें लोगों के पापों के लिए दो टुकड़ों में काटा जाना था। जबकि वास्तव में, नबी ने स्वयं लोगों के पापों के लिए ईश्वर से उन्हें दो टुकड़ों में काटने का अनुरोध किया था, और यह नबी का लोगों के प्रति यह महान प्रेम था जिसने ईश्वर को उनका अनुरोध स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। लेकिन हर बार जब आरा पैगंबर के शरीर पर चलाई गई, तो ईश्वर ने उन पर उतने ही मुकुट प्रदान किए।

¹²² धन्य जॉन मॉस्को, *द स्परिचुअल मेडो* देखें। सेरगीव पोसाद, 1915। पृ. 197।

¹²³ देखें 'रूसी में संतों के जीवन' पुस्तक में दैवीय भविष्यवक्ता यशायाह का जीवन। मई का महीना। मॉस्को, 1907। पृ. 287।

कुछ बातों को समझने के लिए, कुछ पूर्व शर्तें होनी चाहिए; किसी को कुछ जानना चाहिए। अब्बा पमैन का उदाहरण लें, जिनके बारे में मैंने पहले बात की थी: वे भवषियवक्ता यशायाह को समझ सकते थे, भले ही उनके साथ जो हुआ वह बलिकुल एक जैसा नहीं था, क्योंकि भवषियवक्ता यशायाह के मामले में लोगों के लिए एक बलदान किया गया था।

— जेरोंडा, क्या हमारे इस युग में भी ऐसे मामले घटित होते हैं?

— हाँ, बलिकुल। मुझे एक घटना याद है जो तब हुई थी जब मैं फिलिथियू मठ में रह रहा था। एक आदमी ने एक तुरक को भट्ठी में जला दिया था—वह तुरक जसिने उसके पति की हत्या की थी। बाद में उसने पश्चाताप किया, पवित्र पर्वत पर आया, भिक्षु बन गया और बड़ी लगन से मठ के कार्य करने लगा। हालाँकि, दिन-रात वह ईश्वर से प्रार्थना करता था कि उसे जलाकर मार डाला जाए। एक दिन मठ में आग लग गई। उस समय, मैं सेलर था। मैंने बाल्टियों और अन्य बर्तनों में पानी भरा, और हम सभी आग बुझाने के लिए दौड़े। और जब हमने आग बुझा दी, तो हमें यह भिक्षु जलकर मृत मिला। वह दृश्य आज भी मेरे मन में ताजा है... क्या हुआ था? उस भिक्षु की उमर उस समय पचहत्तर वर्ष थी। देखभाल एक अन्य साठ-पचास वर्ष के भिक्षु कर रहा था। उस दिन, उस बीमार भिक्षु की देखभाल करने वाले भिक्षु ने, उसके गठिया के दर्द को थोड़ा कम करने की इच्छा से, उसके पैरों पर पैराफीन मल दिया और, उसे लपेटकर, उस बूढ़े आदमी को जलते चूल्हे के पास लटिा दिया। चिता की एक जलती हुई अंगार उछलकर बाहर आई। वह लपिटे हुए भिक्षु के पैरों पर गरि गई; उनके पैरों में आग लग गई, वह जलकर मर गया, और मठ में आग लग गई। मैं हुई घटना से बहुत दुखी था और शांत नहीं हो पा रहा था! तब मेरे आध्यात्मिक पति ने मुझसे कहा: "दुखी मत हो। उसने स्वयं ईश्वर से यह मांगा था, अपने पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए। जो हुआ वह ईश्वर का एक वरदान था।"

आध्यात्मिक नियम और ईश्वर का प्रेम

— गेरोंडा, क्या आध्यात्मिक नियम हमेशा तुरंत प्रभावी होते हैं?

— यह अलग-अलग होता है। अक्सर, कोई केवल हैरान रह जाता है! जैसे ही कोई थोड़ा भी घमंडी हो जाता है, वह तुरंत ही पूरी तरह से असफल हो जाता है; दूसरे शब्दों में, आध्यात्मिक नियम पलक झपकते ही लागू हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक नन खड़कियाँ साफ कर रही है और उसके मन में एक गर्वीला विचार आता है कि वह उन्हें दूसरी बहन से बेहतर साफ कर रही है। तुरंत ही उसका ध्यान किसी चीज़ से भटक जाता है [— एक अनाड़ी हरकत] — और खड़की टूट जाती है। हालाँकि, अन्य मामलों में, आध्यात्मिक नियम तुरंत प्रभावी नहीं होते हैं।

— गेरोंडा, जब आध्यात्मिक नियम तुरंत लागू होते हैं, तो उसका क्या मतलब है?

— यह एक अच्छा संकेत है। ऐसे मामलों में, एक व्यक्तिको यह एहसास होना चाहिए कि ईश्वर का प्रेम उन पर है, क्योंकि वे [अपनी प्रत्येक गलती का प्रायश्चित्त] एक-एक करके कर रहे हैं, बजाय इसके कि बिना एक साथ सबका भुगतान करें। हालाँकि, यदि किसी व्यक्ति पर आध्यात्मिक नियम लागू नहीं होते हैं, तो यह खतरनाक है। यह दर्शाता है कि वह व्यक्ति अपने पति—ईश्वर—से भटक गया एक बच्चा है और वह उनके घर में नहीं रहता है। ऐसे लोग हैं जो लगातार घमंड से व्यवहार करते हैं, फिर भी उनके साथ कुछ नहीं होता है। इसका मतलब है कि उनका घमंड इतना बड़ा है कि वह मानवता से परे हो गया है। यह अपनी उच्चतम डिग्री तक पहुँच गया है—राक्षसी गर्व, [शैतानी] उत्कर्ष। ऐसा व्यक्ति भी गरिता है, लेकिन शिखर के दूसरी ओर से। वे सीधे नरक में गरिते हैं। वे एक लूसीफेरियन पतन का अनुभव करते हैं, लेकिन शिखर के इस ओर रहने वाले उनकी गरिवाट को नहीं देखते हैं। दूसरे शब्दों में, जिन लोगों की बात हो रही है, वे इस जीवन में आध्यात्मिक नियम के अधीन नहीं हैं, लेकिन उन पर प्रेरितों का यह वचन लागू होता है: 'परन्तु दुष्ट मनुष्य और जादूगर और भी अधिक बुरे होते जाएँगे, धोखा देते और धोखा खाते हुए।'¹²⁴

— गेरोन्डा, क्या मानव हाथों से बनी कोई रचना सरिफ इसलए बगिड़ सकती है कजिसिने उसे बनाया है वह उसकी प्रशंसा करता है?

— हाँ, क्योंकि आध्यात्मिक नियम लागू हो जाते हैं। ईश्वर उस व्यक्ति से अपनी कृपा वापस ले लेते हैं, और वह व्यक्ति फिर उस वस्तु को बर्बाद कर देता है, चाहे वह कोई कलाकृत हो या कुछ इसी तरह की कोई चीज़। ऐसा इसलए होता है ताकि वह व्यक्ति अपने हाथों के काम पर अहंकारी हो गया है, होश में आकर समझ सके।

— गेरोन्डा, तो अगर कोई किसी और द्वारा बनाई गई किसी चीज़ को बगिड़ देता है, तो क्या इसका मतलब है कि आध्यात्मिक नियम लागू हो गए हैं?

— हाँ, बलिकूल।

— लेकिन क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति सरिफ लापरवाही या कौशल की कमी के कारण किसी चीज़ को खराब कर दे?

— ऐसे मामले दुर्लभ हैं। इसलए, जहाँ तक संभव हो, वनिम्रता से जियो। याद रखो कि हम अपने कुछ भी नहीं हैं। हमारे पास जो कुछ भी है, वह सब कुछ ईश्वर ने हमें दिया है। हमारे पास जो कुछ भी है, वह सब कुछ ईश्वर का है। एकमात्र चीज़ें जो सचमुच हमारी हैं, वे हमारे पाप हैं। यदि हम स्वयं को नम्र नहीं बनाते हैं, तो आध्यात्मिक नियम हमारे जीवन में तब तक प्रभावी होते रहेंगे जब तक हमारा स्वार्थ टूट नहीं जाता। और ऐसा ही हो—ईश्वर सब कुछ इसी तरह व्यवस्थिति करे और हमें मृत्यु आ घेरे तक नम्र बनाए।

— जेरोंडा, क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति यह न समझ पाए कि उसके जीवन में आध्यात्मिक नियम लागू हो चुके हैं?

— यदि कोई व्यक्ति स्वयं पर नजर नहीं रखता, तो वह कुछ भी नहीं समझता और किसी भी चीज़ से उसे कोई मदद नहीं मिलती। कुछ भी उसके पक्ष में काम नहीं करता।

— जेरोंडा, क्या इसका मतलब यह है कि आध्यात्मिक नियम केवल तभी लागू होना बंद करते हैं जब कोई व्यक्ति स्वयं को नम्र बनाता है?

— हाँ, सामान्यतः वे वनिम्रता के कारण या जब किसी व्यक्ति से माँगने के लिए कुछ भी नहीं बचता, तब वे काम करना बंद कर देते हैं। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। एक महिला अपने पति को लगातार पीटती थी, और वह किसी से एक शब्द भी नहीं कहता था क्योंकि वह एक शिक्षक था और अपनी प्रतिष्ठा खोने से डरता था। हालाँकि, उसके मामले में, आध्यात्मिक नियम लागू हो गए। बचपन में, उसने अपने पति को खो दिया था, और उसकी वधवा माँ, अपनी मामूली पेंशन पर जीते हुए, ने उसे शिक्षक बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश की। फिर भी, आभारी होने के बजाय, वह उसे पीटता था। उस बेचारी माँ ने क्या-क्या नहीं सहा होगा! और इसलए, जब वह बड़ा हुआ और उसकी शादी हो गई, तो ईश्वर ने उसकी पत्नी को उसे पीटना शुरू करने दिया। ईश्वर ने ऐसा इसलए होने दिया ताकि वह अपने पाप का प्रायश्चित्त कर सके। लेकिन क्या आप जानते हैं कि फिर क्या हुआ? यह आदमी मर गया, और उसके बेटे ने अपनी वधवा माँ को पीटना शुरू कर दिया। इस तरह, उसने भी अपने पाप का प्रायश्चित्त कर दिया। फिर उनका बेटा भी बड़ा हुआ और उसकी शादी हो गई। जिस लड़की से उसने शादी की, वह ठीक से होश में नहीं थी। वह न केवल उसे पीटती थी, बल्कि यह भी गाती थी, 'मसीह मरे हुआँ में से जी उठे हैं, मृत्यु को मृत्यु पर विजय प्राप्त हुई है!' क्या आप देख रहे हैं कि परमेश्वर ने सब कुछ कैसे व्यवस्थिति किया ताकि इस आदमी को भी अपने पापों का दंड भुगतना पड़े? हालाँकि, यही पर आध्यात्मिक नियम लागू होना बंद हो गया, क्योंकि उसकी दुर्भाग्यपूर्ण [पागल] पत्नी से कुछ भी मांगा नहीं जा सकता था।

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति पाप में गरिता है और उसके लिए पश्चाताप करता है, तो क्या वह इस प्रकार अपने आध्यात्मिक ऋणों का निवारण कर लेता है?

— क्या वह अपना कर्तव्य [ईश्वर के प्रति] पहचानता है या वह स्वार्थी रूप से शोक मनाता है? यदि वह अपना कर्तव्य पहचानता है, तो उसे अपनी गरिबट का मूल्य चुकाना नहीं पड़ेगा। हालाँकि, यदि वह

अपना कर्तव्य नहीं पहचानता, तो ईश्वर प्रतर्पण लेने की अनुमति देगा। उदाहरण के लिए, एक ईसाई को दूसरों को दान देना चाहिए। यदि कोई कठोर हृदय वाला व्यक्ति दान नहीं देता है बल्कि धन संचयित करता है, तो चोर उस पर आ पड़ेंगे, उसे पीटेंगे, उसका धन ले लेंगे, और इस प्रकार वह अपनी गलती की कीमत चुकाता है। यदि हमारे [आध्यात्मिक] ऋण हैं और हम उन्हें इस जीवन में चुकाते नहीं हैं, तो यह एक बहुत बुरा संकेत है। इसका मतलब है कि ईश्वर ने हमें त्याग दिया है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति कोई दंड नहीं भुगतता है और केवल आशीर्वाद प्राप्त करता है, तो जाहिर है कि उसने कुछ अच्छा किया है, और उस अच्छे काम के लिए मसीह उन्हें इस जीवन में—दो गुना या तीन गुना—पुरस्कृत करते हैं। हालाँकि, ऐसा व्यक्ति अपनी गलतियों का प्रायश्चित्त नहीं करता है। और यह भी बुरा है। मान लीजिए मैंने दस प्रतर्पित तक कुछ अच्छा किया है, और मसीह मुझे इसके लिए बीस प्रतर्पित का इनाम देते हैं, और मुझे न तो कोई दुख होता है और न ही कोई कष्ट। लेकिन उस स्थिति में, मैं अपने पापों की कीमत नहीं चुका रहा हूँ।

जैसा कि सेंट आइज़ैक द सीरियन कहते हैं, इस जीवन में आने वाली वपित्तियाँ नरक की यातनाओं को कम कर देती हैं।¹²⁵ दूसरे शब्दों में, ऐसे मामले में व्यक्ति के संबंध में आध्यात्मिक नियम लागू होते हैं, और नरक की यातनाओं का एक नश्चिति हिसा गायब हो जाता है।

भाग 6. मृत्यु और परलोक

"ईश्वर ने हम मनुष्यों के लिए जो कुछ भी किया है, उसके बाद अगर हम नरक में चले गए और उसे दुख पहुँचाया, तो यह हमारी बहुत बड़ी कृतघ्नता होगी। ईश्वर न करे कि कोई भी—चाहे वह मनुष्य हो या एक छोटी सी चड़िया—नरक में जाए।"

अध्याय 1. मृत्यु के प्रतर्पित हमारा दृष्टिकोण

मृत्यु

- गेरोंना, किसी व्यक्ति को अपने जन्मदिन पर क्या सोचना चाहिए?
- उन्हें अपने भविष्य के मृत्यु के दिन के बारे में सोचना चाहिए और इस महान यात्रा के लिए तैयारी करनी चाहिए।
- गेरोंडा, यदि कब्र से अवशेष निकालने पर पता चले कि मृतक के अवशेष सड़े-गले नहीं हैं, तो क्या इसका कारण कोई ऐसा पाप है जिसका उसने प्रायश्चित्त नहीं किया था?
- नहीं, हमेशा नहीं। कारण उन दवाओं में हो सकता है जो वह ले रहा था, या कब्रस्तान की मट्टी की संरचना में। लेकिन जो भी हो, यदि जब उसके अवशेष खोदे जाएँ और मृतक सड़ने से मुक्त पाया जाए, तो वह अपने कुछ पापों का प्रायश्चित्त कर रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मृत्यु के बाद भी वह दूसरों के लिए हँसी का पात्र बन जाता है।

¹²⁵ एस. आई. सोबोलेव्सकी द्वारा रूसी अनुवाद में: 'जो अपनी लज्जा के लिए यहाँ दंडित होता है, वह अपनी ही गेहेना का स्वाद चखता है'। द होली फादर आइज़ैक द सीरियन। वर्ड्स ऑफ़ एस्कैटज्म। मॉस्को, 1993। पृ. 365.

— गेरोंडा, मृत्यु ही एक ऐसी चीज़ है जो नश्चिती रूप से हर व्यक्ती के साथ होती है। फरि हम इसके बारे में क्यों भूल जाते हैं?

— आप जानते हैं, पुराने सामुदायिक मठों में, एक भकिषु को अन्य भकिषुओं को मृत्यु की याद दलाने का दायित्व सौपा जाता था। जबकि अन्य भकिषु अपने करतव्य नभा रहे होते थे, यह भकिषु उनके पास आता और प्रत्येक से कहता: 'भाइयों, हम सभी की नयितहि कहिम मरेंगे।' हमारे जीवन नश्वर देह में लपिटे हुए हैं। यह महान रहस्य उन लोगों द्वारा आसानी से नहीं समझा जाता जो केवल देह से बने हैं और इसलए मरना नहीं चाहते, न ही मृत्यु के बारे में सुनना चाहते हैं। ऐसे लोगों के लए, मृत्यु एक दोहरी मृत्यु और दोहरा दुख बन जाती है। लेकिन, सौभाग्य से, दयालु ईश्वर ने ऐसा प्रबंध किया है कि कम से कम, वृद्ध लोग अपने नकिट आ रहे वृद्धावस्था के कुछ संकेतों से लाभान्वति हो सकें। आखिरकार, बूढ़े लोग स्वाभाविक रूप से युवाओं की तुलना में मृत्यु के करीब होते हैं। उनके बाल सफेद हो जाते हैं, उनमें पहले जैसी चपलता नहीं रहती, उनकी ताकत धीरे-धीरे उनसे दूर हो जाती है, उनके मुँह से लार टपकने लगती है, और इस तरह वे वनिम्र हो जाते हैं और इस दुनिया की कषणभंगुरता पर वचार करने के लए वविश हो जाते हैं। भले ही बुजुर्ग लोग 'हंगामा' करना चाहें, वे ऐसा नहीं कर पाते, क्योंकि उनके साथ जो कुछ भी होता है, वह उन्हें पीछे रोक देता है। या जब उन्हें पता चलता है कि उनकी उम्र का या उनसे भी छोटा कोई व्यक्ती मर गया है, तो उन्हें भी मौत की याद आ जाती है। क्या आपने देखा है कि गाँवों में, जब अंतमि संस्कार की घंटी बजती है, तो चाय की दुकान पर बैठे बुजुर्ग लोग खड़े हो जाते हैं, क्रॉस का नशान बनाते हैं और पूछते हैं कि किसकी मौत हुई है और वे कब पैदा हुए थे? वे कहते हैं, "अरे, देखो, हमारी बारी आ गई है! हम सब इस दुनिया को छोड़ देंगे!" उन्हें एहसास होता है कि उनके दनि लद गए हैं, कि उनके जीवन का धागा समाप्त होने को है और मृत्यु नजदीक आ रही है। बुजुर्ग लोग इसी तरह लगातार मृत्यु के बारे में सोचते रहते हैं। बस एक छोटे बच्चे से कहकर देखिए: 'मृत्यु के प्रतिसिचेत रहो।' वह 'ला-ला-ला' करके जवाब देगा—और फरि अपनी गेंद से खेलने के लए भाग जाएगा। क्योंकि अगर ईश्वर एक छोटे बच्चे को यह समझने में मदद करते कि वह मर जाएगा, तो बेचारा बच्चा जीवन की सारी आशा खो देगा और पूरी तरह से नरिश हो जाएगा, क्योंकि उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलए, एक अच्छे पति के रूप में ईश्वर सब कुछ इस तरह व्यवस्थित करते हैं कि बच्चा यह न समझ पाए कि मृत्यु क्या है और वह बेफकिर और खुशी से अपनी गेंद के साथ खेले। हालाँकि, जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, वह धीरे-धीरे यह समझने लगता है कि मृत्यु क्या है।

इस पर वचार करें: एक नौसखिया भकिषु, वशिषकर यदविह युवा हो, मृत्यु के प्रतिसिचेत नहीं हो सकता। वह मानता है कि उसके पास जीवन के कई वर्ष बाकी हैं, और मृत्यु का प्रश्न उसे परेशान नहीं करता। क्या आपको याद है कि प्रेरति पतरस ने कहा था: 'युवकों को बुलाओ कि वे आकर अननयिस और सप्फरि के शव उठा ले जाएँ?'¹²⁶ मठों में मृतकों को आमतौर पर युवा भकिषु ही दफनाते हैं। वृद्ध भकिषु, वचारों में खोए हुए, मृतक के शरीर पर थोड़ी मटिटी बखिरते हैं। वे श्रद्धापूर्वक केवल एक मुट्ठी मटिटी मृतक के शरीर पर ही बखिरते हैं, सरि पर कभी नहीं। एक मठ में अंतमि संस्कार में शामिल होते समय मैंने एक अप्रयि दृश्य देखा। जब मृतक को दफनाया जा रहा था और मटिटी से ढका जा रहा था, तो पुरोहित ने ये शब्द पढ़े: 'तुम धूल हो, और धूल में ही लौटोगे।' जबकि सभी भकिषु, रीति-रिवाज के अनुसार, अपने दविंगत भाई के शरीर पर बड़ी श्रद्धा और वनिम्रता से एक मुट्ठी मटिटी डाल रहे थे, एक युवा भकिषु ने अपनी चोगा उठाई, एक फावड़ा पकड़ा और, दुनिया की कोई परवाह किए बिना, जैसे ऑटोपायलट पर हो, दविंगत पर जो कुछ भी उसके फावड़े पर आ रहा था, उसे गरिने लगा: मटिटी, पत्थर, लकड़ी के टुकड़े... उसने यह दखिने के लए किया कि वह कतिना बढ़िया इंसान था! उसने अपनी ताकत और कड़ी मेहनत की क्षमता का प्रदर्शन करने के लए इसी पल को चुना था! बात कुछ और होती अगर वे मठ में पेड़ लगा रहे होते या कोई खाई भर रहे होते, और वह, दया और त्याग दखिाते हुए, कहता: 'बाकी भकिषु बूढ़े हैं। उनसे, किस तरह का काम करने की उम्मीद की जा सकती है? मुझे यह काम करने दो।' उस स्थिति में, वह खुद को थोड़ा और थका

¹²⁶ देखें प्रेरितों के काम 5:6-10।

देता, लेकिन उसने दूसरों का बोझ हल्का कर दिया होता। भले ही आप एक मरे हुए जानवर को देखें, तो भी आपको उसके लिए दुख होता है। और अगर आप अपने भाई को कब्र में पड़ा हुआ देखें तो क्या कहा जा सकता है... और फिर भी आप, एक फावड़े की तरह, उदासीनता से उसे मट्टी और पत्थरों से ढक देते हैं... यह सब दिखाता है कि इस युवा भिक्षु को मृत्यु के बारे में बिल्कुल भी कोई जागरूकता नहीं थी।

अगर तुम मरना चाहते हो, तो तुम नहीं मरते

— गेरोना, अंतमि नदिन की पुष्टि हो गई है। आपका ट्यूमर घातक है। यह कैंसर के सबसे भयानक रूपों में से एक है।

— मुझे एक रूमाल ला दो, और मैं नाचने लगूंगा! मैं 'अलविदा, हे दुखति संसार!' पर नाचूंगा। मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी नाचा नहीं, लेकिन अब मैं इस खुशी में नाचूंगा कि मौत नज़दीक आ रही है।

— जेरोंडा, डॉक्टर ने कहा कि पहले वे ट्यूमर को छोटा करने के लिए तुम्हें रेडियोथेरेपी के लिए ले जाएंगे, और फिर वे ऑपरेशन करेंगे।

— मैं समझ गया। पहले वायु सेना बमबारी करेगी, और फिर ज़मीनी सेना हमला करेगी! सुनो, मुझे तो सीधे ऊपर जाकर तुम्हें बताना चाहिए कि वहाँ क्या हो रहा है!.. कुछ लोग, यहाँ तक कि बुजुर्ग भी, परेशान हो जाते हैं अगर कोई डॉक्टर उन्हें कह दे 'आप मरने वाले हैं' या 'आपके बचने की पचास प्रतिशत संभावना है'। वे जीना चाहते हैं। लेकिन किस लिए? यह एक अजीब बात है! अगर कोई युवा जीना चाहता है, तो वह बात अलग है—उसके लिए कुछ औचित्य है। लेकिन जब कोई बुजुर्ग व्यक्ति जीवित रहने की कोशिश करता है, तो मैं उसे समझ नहीं पाता। अगर वे सिर्फ दर्द को किसी तरह सहने के लिए इलाज करवा रहे हों, तो मैं बात समझ सकता हूँ। दूसरे शब्दों में, वे अपनी उम्र लंबी नहीं करवाना चाहते, बल्कि बिस थोड़ा और दर्द सहने और मरने तक अपना ख्याल रखने में सक्षम होना चाहते हैं। इस तरह के इलाज का एक मकसद होता है।

— गेरोना, हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह आपका जीवन लंबा कर दे।

— क्यों? क्या भजन में यह नहीं कहा गया है कि सत्तर वर्ष हमारे जीवन की अवधि है?¹²⁷

— हालाँकि, भजनरचयिता आगे जोड़ता है: 'परन्तु सामर्थ्य के कारण अस्सी वर्ष'...

— हाँ, लेकिन फिर वह यह भी कहता है कि '...वह उनकी मेहनत और बीमारी बढ़ा देता है'।¹²⁸ इसलिए आने वाले जीवन में वशिष्ठ पाना बेहतर है!

— गेरोन्डा, क्या कोई व्यक्ति विनिमृता के कारण आने वाले जीवन के लिए आध्यात्मिक रूप से तैयार महसूस नहीं कर सकता और खुद को तैयार करने के लिए थोड़ा और जीना चाहता है?

— यह, बेशक, एक अच्छी बात है। लेकिन ऐसे व्यक्ति को कैसे पता चले कि शायद, अगर वे और अधिक समय तक जीवित रहें, तो वे और भी बुरे हो जाएँ?

— जेरोन्डा, कोई व्यक्ति मृत्यु को कब स्वीकार करता है, या उससे शांति बिनाता है?

— कब? यदि किसी व्यक्ति में वास करते हैं, तो मृत्यु उनके लिए एक आनंद है। हालाँकि, केवल इसलिए कि आप जीवन से थक गए हैं, मृत्यु के विचार पर प्रसन्न होना सही नहीं है। जब कोई व्यक्ति मृत्यु में प्रसन्न होता है — शब्द के सकारात्मक अर्थ में — तो मृत्यु उनसे मुंह मोड़ लेती है और किसी कायर के पास चली जाती है! यदि आप मरना चाहते हैं, तो आप नहीं मरेंगे। जो व्यक्ति बिना किसी जीवन जीता है, वह मृत्यु से डरता है, क्योंकि सांसारिक जीवन उसे आनंद देता है, और वह मरना नहीं चाहता। यदि कोई ऐसे व्यक्ति से मृत्यु के बारे में बात करता है, तो वे जवाब देते हैं: 'लकड़ी के टुकड़े पर तीन बार ठोक!' लेकिन जो पीड़ित है, जो दर्द और इसी तरह की चीजों का अनुभव करता है, वह मृत्यु को एक मुक्ति के रूप में देखता है

¹²⁷ भजन संहिता 89:10.

¹²⁸ उपरोक्त।

और कहता है: 'क्या अफ़सोस की बात है कि मृत्यु मुझे ले जाने अभी तक नहीं आई है... लगता है कि उसे रास्ते में कोई बाधा मलि गई है।'

बहुत कम लोग मृत्यु की कामना करते हैं। अधिकांश लोग इस जीवन में कुछ पूरा करने के लिए समय चाहते हैं और इसलिए मरना नहीं चाहते। हालाँकि, दिया लु ईश्वर ऐसा प्रबंध करता है कि जब कोई व्यक्ति परपिक्वता प्राप्त कर लेता है, तो वह मर जाता है, । लेकिन जो कुछ भी कहा जाए, एक आध्यात्मिक व्यक्ति चाहे वह युवा हो या वृद्ध, को इस तथ्य में भी प्रसन्न होना चाहिए कि वह जीवित है और इस तथ्य में भी कि उसकी मृत्यु नयित है। किसी को स्वयं मृत्यु की कामना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह आत्महत्या होगी।

जो व्यक्ति संसार के लिए मर चुका है और आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित हो चुका है, उसके लिए मृत्यु को लेकर कोई भी चिंता, भय या बेचैनी नहीं होती, क्योंकि वह मृत्यु का इंतजार आनंद के साथ करता है। यह इसलिए है कि वे मसीह के पास जाएंगे और उनकी उपस्थिति में आनंदित होंगे। लेकिन इस जीवन में रहते हुए भी वे आनंदित होते हैं, क्योंकि इस जीवन में भी वे मसीह के साथ जीते हैं और पृथ्वी पर रहते हुए ही स्वर्गीय आनंद का अनुभव करते हैं। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि क्या स्वर्ग में कोई ऐसा आनंद है जो पृथ्वी पर रहते हुए अनुभव किए गए आनंद से भी बड़ा हो। जिन लोगों की बात हो रही है, वे प्रेम और आत्म-बलदान के साथ प्रयास करते हैं। मृत्यु को अपनी आँखों के सामने रखकर और प्रतिदिन उस पर ध्यान लगाकर, वे इसके लिए अधिक आध्यात्मिक रूप से तैयारी करते हैं, अधिक साहस के साथ प्रयास करते हैं और सांसारिक व्यर्थता पर वज्रित प्राप्त करते हैं।

मरणासन्न

— गेरोन्डा, हमें एक ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने को कहा गया है जो कई दिनों से एक धागे पर लटका हुआ है, लेकिन जिसकी आत्मा अभी तक प्रस्थान नहीं कर पाई है।

— वह क्यों नहीं निकली? क्या वह पापस्वीकार करने गया था?

— नहीं, वह पापस्वीकार करना नहीं चाहता। तो, जेरोन्डा, क्या आत्मा के प्रस्थान के समय व्यक्ति को जो पीड़ा होती है, वह उसके पापों के कारण होती है?

— नहीं, ऐसा जरूरी नहीं है। और यह भी जरूरी नहीं है कि अगर किसी व्यक्ति की आत्मा शांति और चुपचाप प्रस्थान करती है, तो वह अच्छे अवस्था में था। भले ही लोग अपने जीवन के अंतिम क्षणों में पीड़ा और वेदना में हों, इसका यह मतलब नहीं कि उन्होंने बहुत पाप किए हैं। कुछ लोग, अत्यधिक वनिमृता के कारण, ईश्वर से वनिती करते हैं कि उन्हें एक बुरी मृत्यु प्रदान करें — ताकि मृत्यु के बाद वे अज्ञात ही रहें। या कोई व्यक्ति [आध्यात्मिक रूप से] एक छोटा सा कर्ज चुकाने के लिए बुरी मृत्यु प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति के जीवनकाल में उनकी जितनी प्रशंसा होनी चाहिए थी, उससे कहीं ज्यादा की गई, इसलिए ईश्वर ने मृत्यु के समय उन्हें कुछ अजीब व्यवहार करने दिया, ताकि वे दूसरों की नज़रों से गिर जाएँ। अन्य मामलों में, ईश्वर कुछ लोगों को मृत्यु के समय कष्ट सहने देता है ताकि उनके आस-पास के लोग समझ सकें कि यदि आत्मा यहाँ अपने मामलों को सुलझा नहीं लेती है तो नरक में उसके लिए जीवन कतिना कठिन है। खैर, अगर आपके [आध्यात्मिक] कागजात ठीक हैं (यानी, आप एक अच्छी आध्यात्मिक स्थिति में हैं), तो आप सांसारिक जीवन से शाश्वत जीवन में इस तरह से प्रवेश करते हैं कि टंगलाशकी आपके पास भी नहीं आते।

— गेरोन्डा, अगर कोई व्यक्ति मर रहा हो या गंभीर बीमारी से पीड़ित हो, तो क्या उन्हें सच बताना सही है?

— यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस तरह का व्यक्ति है। कभी-कभी कैसर से पीड़ित कोई व्यक्ति भ्रम से पूछता है: 'गेरोन्डा, आपको क्या लगता है, मैं बचूंगा या मर जाऊँगा?' अगर आप उसे कह दें कि वह मर जाएगा, तो वह वहीं, उसी क्षण, सदमे से मर जाएगा। अगर आप उसे नहीं बताते, तो वह हमिमत

जुटाता है और बनिा किसी डर के अपनी बीमारी का सामना करता है। 'परपिक्व होने पर,' बीमार व्यक्ति स्वयं अपना बोझ उठाता है और जो कुछ भी उसके बाद उसके साथ होता है, उस पर काबू पाने की ताकत पाता है। इसका मतलब है कविह कुछ और साल जी सकेगा, अपने परिवार की मदद कर सकेगा, खुद को मृत्यु के लिए तैयार कर सकेगा, और अपने प्रियजनों को भी इसके लिए तैयारी करने का अवसर दे सकेगा। बेशक, मैं ऐसे लोगों से यह नहीं कहता कवि हजार साल जिएंगे या उनकी बीमारी कोई मामूली बात है, लेकिन मैं उनसे कहता हूँ: "मानवीय दृष्टिकोण से आपकी मदद करना मुश्किल है। बेशक, ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, लेकिन अपने आध्यात्मिक घर को व्यवस्थित करने की कोशिश करें।"

— जेरोंडा, कभी-कभी गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति के रक्षितेदार उन्हें पवित्र कुम्यूनिन देने से डरते हैं, इस डर से कवि मरने के बारे में सोचने लगें।

— तो, क्या इसका मतलब यह है कि किसी व्यक्ति को पवित्र कुम्यूनिन प्राप्त किए बिना ही मर जाना चाहिए, सिर्फ इसलिए कि उसे यह एहसास न हो कि वह मर रहा है और वह दुखी न हो जाए? ऐसे व्यक्ति के प्रियजन उनसे कहें: 'पवित्र कुम्यूनिन एक औषधि है। यह आपकी मदद करेगी। आपके लिए पवित्र कुम्यूनिन ग्रहण करना अच्छा होगा।' इस तरह, वह व्यक्ति पवित्र कुम्यूनिन ग्रहण करता है, उसे मदद मिलती है, और साथ ही आने वाले जीवन के लिए तैयारी करता है।

— गेरोन्डा, क्या इस जीवन से वृद्धि ले रहे लोगों को अभिषेक संस्कार दिया जाना चाहिए?

— जो अपनी आत्मा ईश्वर को अर्पित नहीं कर पाते, उनके लिए 'आत्मा को शरीर से अलग करने का अनुष्ठान' का पाठ दिया जाता है। अभिषेक संस्कार केवल मरणासन्न लोगों को ही नहीं, बल्कि सभी रोगियों को दिया जाता है।

— गेरोना, क्या मृत्यु के समय किसी व्यक्ति द्वारा बोले गए शब्दों और उसकी आध्यात्मिक स्थिति के बीच कोई संबंध होता है?

— आइए हम जल्दबाजी में कोई नष्टिर्ष न निकालें। जिस क्षण किसी व्यक्ति की आत्मा उसके शरीर को छोड़ती है, तो उन्हें दर्द या भारीपन का अनुभव हो सकता है, और उनके चेहरे पर दर्द का भाव दिखाई दे सकता है, जिससे उनके आस-पास के लोग यह सोचते हैं कि वह आध्यात्मिक रूप से एक खराब स्थिति में है। हालाँकि, चेहरे पर दर्द का भाव गुस्से या डर के भाव से अलग होता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई व्यक्ति दर्द से पीड़ित होता है, जबकि उसके आसपास के लोग इसे इस तरह से व्याख्यायित करते हैं कि वह उन राक्षसों से लड़ रहा है जो उसकी आत्मा को लेने आए हैं।

— गेरोन्डा, क्या एक आत्मा जो इस जीवन से आध्यात्मिक रूप से सुव्यवस्थित अवस्था में वृद्धि होती है, परलोक की परीक्षाओं से गुजरती है?

— यदि किसी आध्यात्मिक रूप से अनुशासित व्यक्ति की आत्मा स्वर्ग में आरोहण करती है, तो टंगलाशकी उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकती। लेकिन यदि वह आध्यात्मिक रूप से अनुशासित नहीं है, तो टंगलाशकी उसे यातनाएँ देती है। कभी-कभी यह भी होता है: ईश्वर किसी व्यक्ति की आत्मा को शरीर छोड़ते ही यातनाओं का साक्षी बनने देता है, ताकि हम, जो अभी जीवित हैं, पुण्य का कार्य कर सकें और इस जीवन में ही अपने ऋण चुका सकें। क्या आपको धन्य थियोडोरा का जीवन याद है?¹²⁹ दूसरे शब्दों में, ईश्वर कुछ लोगों को यातनाएँ देखने देते हैं ताकि दूसरों को सहायता मिल सके और वे पश्चाताप कर सकें। पूजनीय यूफ्रोसिनिस के जीवन¹³⁰ में, हम पढ़ते हैं कि मिठ के मठाधीश, एक दर्शन के बाद, अपने हाथ में एक सेब लेकर जाग उठे, ताकि अन्य लोग इसे देख सकें और सहायता प्राप्त कर सकें।

और कभी-कभी ईश्वर किसी मरणासन्न व्यक्ति की आत्मा को किसी से बात करने की अनुमति देता है, ताकि या तो वह स्वयं पश्चाताप कर सके, या जो लोग उसे सुनते हैं, वे पश्चाताप कर सकें। देखिए: ईश्वर के पास किसी व्यक्ति को बचाने के कई तरीके हैं। कुछ मामलों में, वह फरश्तों के माध्यम से मदद करता

¹²⁹ देखें 'कफन के पास न्याय, या पूज्य थियोडोरा की कष्टकालीन घटनाएँ'। सेंट पीटर्सबर्ग, 1995.

¹³⁰ संत यूफ्रोसीनिस का पर्व दिस 11 सतिंबर को मनाया जाता है। देखें *रूसी में संतों के जीवन*। सतिंबर। मॉस्को, 1902। पृ. 257-260।

है; अन्य मामलों में, परीक्षाओं या वभिन्न संकेतों के माध्यम से। मैं एक ऐसी महिला को जानती थी जो अपने पति और सास के साथ बर्बर, अमानवीय व्यवहार करती थी। वह उन दोनों को पीटती थी। वह खुद पड़ोसियों के पास गपशप करने जाती थी, जबकि वह अपनी वृद्ध सास को खेतों में काम करने भेज देती थी। बेचारी बूढ़ी महिला हर दिन दो घंटे पैदल चलकर खेतों में जाती थी, मुश्किल से अपने पैर घसीटते हुए, और किसी से शिकायत किए बिना सुबह से रात तक खेतों में काम करती थी। और फिर एक दिन, पूरी तरह थककर घर लौटने पर, वह फर्श पर गिर पड़ी और अपनी बहू से कहा: 'मुख्य स्वर्गदूत माइकल मेरी आत्मा को लेने आए हैं। खून पोंछ दो, मेरी जान।' "कौन सा खून?" बहू ने डरते हुए पूछा, क्योंकि उसे कोई खून दिखाई नहीं दे रहा था। "लेकिन देखो, मेरी जान, खून—खून बह रहा है! इसे पोंछ दो, इसे पोंछ दो!" बहू खून को ढूँढने लगी, और उसी क्षण उस बूढ़ी महिला ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

उस घटना के बाद, बहू होश में आई और उसने अपनी ज़िंदगी पूरी तरह बदल दी। वह एक जंगली जानवर से मेमने में बदल गई। यह कि उसने अपनी सास को उन शब्दों के साथ मरते हुए देखा, और यह विश्वास किया कि महादूत माइकल, कथित तौर पर अपनी तलवार खींचे हुए, उसकी आत्मा ले रहा था, ईश्वर की व्यवस्था का हिस्सा था — ताकि वह डर जाए और पश्चाताप करे। दूसरे शब्दों में, ईश्वर ने उससे मैं उस भाषा में बात की जैसी वह समझती थी, ताकि वह होश में आ सके। सब संभावना है कि यह महिला अच्छे स्वभाव की थी।

— जेरोंडा, जब कोई मरणासन्न व्यक्ति अपने दविंगत रश्तेदारों को पुकारता है तो इसका क्या मतलब होता है?

— यह अक्सर दूसरों के लिए, मरने वाले व्यक्ति के साथ मौजूद लोगों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के लिए होता है। मैं एक अमीर महिला को जानती थी; वह एक संत स्त्री थी। उसने कभी शादी नहीं की और अपनी बहन के साथ रहती थी, जैसी उसने अपनी पूरी संपत्ति विरासत में दी थी। उसका बहनोई—यानी, उसकी बहन का पति—उसके बाद मर गया। मरते समय, वह उसे पुकारने लगा: 'यहाँ आओ, डेस्पना, हम एक-दूसरे से माफी माँग लें। मुझे माफ करो... मैंने तुम्हें कतिना सताया, मुझे माफ करो!' 'तुम्हें डेस्पना कहाँ देख रही है?' उसके आसपास के लोगों ने पूछा। 'लेकिन वह तो यही है, क्या तुम्हें वह नहीं देखिती, वहाँ!' उसने जवाब दिया, और अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

— जेरोंडा, क्या लोगों को क्षमा मलि जाती है यदि वे मरते समय किसी ऐसे व्यक्ति से क्षमा माँगें जो पहले ही मर चुका हो?

— ईश्वर ऐसा इसलिए अनुमति देता है ताकि वे कम से कम इस तरह क्षमा प्राप्त कर सकें, क्योंकि मृत्यु के समय व्यक्ति पश्चाताप करता है और जनिके साथ उसने अन्याय किया है, उनसे क्षमा माँगने की आवश्यकता महसूस करता है।

आत्महत्या

— जेरोंडा, कुछ लोग, जब अपने जीवन में कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो तुरंत ही अपनी जान लेने के बारे में सोचने लगते हैं।

— यहाँ स्वार्थभाव काम आता है। अधिकांश लोग जो अपनी जान ले लेते हैं, वे शैतान की सुन रहे होते हैं, जो उन्हें बताता है कि अगर वे अपनी जान ले लेंगे, तो उन्हें वह आंतरिक पीड़ा से राहत मलि जाएगी, जैसी वे अनुभव कर रहे हैं। स्वार्थभाव के कारण ही ऐसे लोग आत्महत्या कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति चोरी करता है, और फिर यह चोरी उजागर हो जाती है और सार्वजनिक जानकारी बन जाती है, तो चोर कहता है: 'बस, अब मैंने अपनी प्रतिष्ठा बर्बाद कर दी' — और पश्चाताप करने, स्वयं को नम्र करने और अपनी आत्मा को शाश्वत यातना से मुक्त करने के लिए पादरी के पास जाकर अपने पाप स्वीकार करने के बजाय, वह जाकर आत्महत्या कर लेता है। दूसरा अपनी ही जान ले लेता है क्योंकि उसका बच्चा लकवाग्रस्त है। ऐसा व्यक्ति कहता है, 'ऐसा कैसे हो सकता है: मैं—और मेरा बच्चा लकवाग्रस्त है?' और

वह नरिशामें डूब जाता है। लेकिन अगर उसके बच्चे के लकवाग्रस्त होने की जम्मेदारी केवल उसी की है और वह अपने दोष को स्वीकार करता है, तो उसे पश्चाताप करना चाहिए। कोई अपनी जान कैसे ले सकता है और अपने बच्चे को असहाय छोड़ सकता है? क्या उसके बाद उसका अपराधबोध और भी बड़ा नहीं हो जाएगा?

— गेरोंडा, हम अक्सर सुनते हैं कि किसी ने मानसिक रूप से बीमार होने के कारण अपनी जान ले ली।

— मानसिक बीमारी से पीड़ित जो लोग अपनी जान ले लेते हैं, उनके मामले में परस्थितियाँ कम गंभीर होती हैं, क्योंकि उनका मन सही अवस्था में नहीं होता। आकाश में बादलों के छा जाने मात्र से ही, ऐसा व्यक्ति मानसिक बोझ महसूस करने लगता है। यदि इसमें कोई अन्य विकार भी जुड़ जाए, तो ये बादल और भी घने हो जाते हैं। हालांकि, चर्च उन लोगों के लिए प्रार्थना नहीं करती जो मानसिक रूप से बीमार नहीं होते हुए भी अपनी जान ले लेते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यह मृत वधिर्मी लोगों के लिए प्रार्थना नहीं करती। चर्च ऐसे लोगों को ईश्वर के न्याय और दया पर छोड़ देती है। पुजारी प्रोस्कोमेडिया के दौरान ऐसे लोगों के नामों का स्मरण नहीं करता है और न ही उनके लिए एक कण निकालता है, क्योंकि आत्महत्या करके ऐसे लोग जीवन का त्याग करते हैं और उससे घृणा करते हैं। फिर भी जीवन ईश्वर का एक उपहार है। लेकिन आत्महत्या करके अपनी जान समाप्त करके, ऐसे लोग वास्तव में इस उपहार को ईश्वर के मुख पर फेंक रहे हैं।

लेकिन हमें उन लोगों के लिए भी दिल से प्रार्थना करनी चाहिए जो अपनी जान ले लेते हैं, ताकि दिया लु ईश्वर उनके लिए भी कुछ कर सकें। आखिरकार, हम यह नहीं जानते कि उन्होंने अपनी जान क्यों ली, और न ही हम जानते हैं कि वे अपने जीवन के अंतिम क्षण में किस मानसिक स्थिति में थे। शायद, ठीक उसी क्षण जब उनकी आत्मा उनके शरीर से निकल रही थी, उन्होंने पश्चाताप किया, ईश्वर से क्षमा याचना की, और उनका पश्चाताप स्वीकार कर लिया गया। और शायद उनकी आत्मा को प्रभु के स्वर्गदूत ने स्वीकार किया।

मैंने एक कहानी सुनी है एक छोटी लड़की के बारे में जो एक गाँव में रहती थी और अपनी छोटी बकरी को चराने के लिए बाहर ले जाया करती थी। वह बकरी को एक खेत में बाँध देती थी और पास में ही खेलती रहती थी। एक दिन, जब वह अपने खेल में मग्न थी, तो बकरी छूटकर भाग गई। लड़की उसे ढूँढ़ने लगी लेकिन उसे नहीं मल सकी, इसलिए वह बकरी के बगल घर लौट आई। उसके पति बहुत गुस्सा हो गए, उसे पीटा और घर से बाहर निकाल दिया। उन्होंने कहा, "जाओ और बकरी ढूँढ़ो! अगर तुम्हें वह नहीं मिली, तो बेहतर होगा कि तुम खुद को फाँसी लगा लो।" वह गरीब लड़की बकरी की तलाश में निकल पड़ी। रात हो गई, लेकिन वह अभी तक घर नहीं लौटी थी। उसके माता-पिता को चिंता होने लगी, वे उसे ढूँढ़ने बाहर निकले और उसे एक पेड़ से लटकी हुई पाया। उसने उस रस्सी से एक फाँसी का फंदा बना लिया था, जिस पर बकरी बंधी थी, और खुद को लटका लिया था। वह गरीब लड़की बहुत भोली थी और उसने अपने पति की बातों को सच मान लिया था। उसे कब्रिस्तान की बाड़ के बाहर दफनाया गया।

बेशक, चर्च ने सही काम किया कि उसने उसे चर्च के प्रांगण में ही दफनाया। चर्च ने यह इसलिए किया ताकि तुच्छ बातों पर अपनी जान लेने वालों को रोका जा सके। लेकिन अगर मसीह इस छोटी लड़की का स्वर्ग में स्वागत करते, तो वह भी सही काम करते।

अध्याय 2.

"उन लोगों की तरह शोक मत करो जिनके पास कोई आशा नहीं है"¹³¹

बच्चों की मृत्यु

— जेरोंडा, एक माँ ने नौ साल पहले अपना बच्चा खो दिया था। अब वह आपसे प्रार्थना करने का आग्रह कर रही है कि वह उसे कम से कम सपने में देख सके और कुछ सांतवना पा सके।

— बच्चा कतिने साल का था? क्या वह बहुत छोटा था? यह मायने रखता है। यदि बच्चा बहुत छोटा था, और यदि माँ ऐसी स्थिति में है कि वह उसके प्रकट होने पर अपना मानसिक संतुलन नहीं खोएगी, तो वह उसके सामने प्रकट होगा। बच्चे के प्रकट न होने का कारण उसके भीतर ही है।

— जेरोंडा, क्या यह संभव है कि एक बच्चा अपनी ही माँ के पास न आकर, किसी और के पास आ जाए?

— यह और कैसे हो सकता है! आखिरकार, ईश्वर हमारे लाभ के लिए ही सब कुछ व्यवस्थिति करता है। जब मुझे बताया जाता है कि कोई युवक मर गया है, तो मैं शोक मनाता हूँ, लेकिन मैं एक मानवीय तरीके से शोक मनाता हूँ। क्योंकि, यदि हम मामलों की गहराई से जाँच करें, तो हम देखेंगे कि कोई व्यक्ति जितना अधिक परिपक्व होता जाता है, उसे उतना ही अधिक संघर्ष करना पड़ता है और उतने ही अधिक पाप वह जमा कर लेता है। यह इस संसार के लोगों के लिए विशेष रूप से सच है: वे जितना अधिक समय तक जीते हैं, उतना ही अधिक—अपनी चिंताओं, अन्याय और इसी तरह की चीजों के माध्यम से—वे अपनी स्थिति को सुधारने के बजाय और खराब कर लेते हैं। इसलिए, एक व्यक्ति जिससे ईश्वर बचपन या युवावस्था में इस जीवन से ले लेते हैं, वह जो कुछ खोता है, उससे कहीं अधिक पाता है।

— जेरोंडा, ईश्वर इतने सारे युवाओं को मरने क्यों देता है?

— किसी ने भी कभी ईश्वर के साथ ऐसा अनुबंध नहीं किया है जिसमें यह लिखा हो कि उन्हें कब मरना है। ईश्वर हर व्यक्ति को उनके जीवन के सबसे उपयुक्त क्षण पर, केवल उनके लिए उपयुक्त एक विशेष तरीके से ले लेते हैं — ताकि उनकी आत्मा को बचाया जा सके। यदि ईश्वर देखते हैं कि कोई व्यक्ति एक बेहतर इंसान बनेगा, तो वह उन्हें जीने देते हैं। हालाँकि, जब वह देखता है कि कोई व्यक्ति और भी बुरा हो जाएगा, तो वह उसे बचाने के लिए अपने पास बुला लेता है। और कुछ अन्य लोगों के बारे में—जो पापी जीवन जीते हैं लेकिन अच्छा करने के इच्छुक हैं—वह उन्हें वह अच्छा काम करने का मौका दिए बिना ही अपने पास बुला लेता है। ईश्वर इस तरह से कार्य करता है, क्योंकि वह जानता है कि यदि अनुकूल अवसर मिला होता तो ये लोग अच्छा ही करते। दूसरे शब्दों में, यह ऐसा है जैसे ईश्वर उनसे कह रहे हों: 'चिंता मत करो: जो अच्छा स्वभाव तुममें पहले से ही है, वह काफी है।' और कुछ अन्य लोगों के बारे में—जो बहुत अच्छे हैं—ईश्वर उन्हें अपने पास ले लेते हैं, क्योंकि स्वर्ग को भी अपनी कली-कलियों की जरूरत होती है।

बेशक, किसी मृत बच्चे के माता-पिता और रक्षितेदारों के लिए यह सब समझना आसान नहीं है। बस सोचिए: जब कोई नन्हा बच्चा मर जाता है, तो मसीह उसे अपने पास ऐसे ले लेते हैं जैसे वह कोई छोटा सा देवदूत हो, जबकि उसके माता-पिता रोते हैं और अपना सीना पीटते हैं, जबकि उन्हें तो खुशी मनानी चाहिए। आखिर, वे कैसे जान सकते थे कि वह बड़ा होकर क्या बनता? क्या वह बच पाता? जब हम 1924 में जहाज से एशिया माइनर से निकले थे, तब मैं एक बच्चा था। जहाज शरणार्थियों से भरा था। मैं डेक पर अपनी माँ द्वारा लपेटे हुए नैपी में लेटा था। एक नाविक ने गलती से मेरे ऊपर पैर रख दिया। मेरी माँ ने सोचा कि मैं मर गया हूँ और वह रोने लगी। हमारे गाँव की एक महिला ने लपेटे हुए कपड़े खोले और देखा कि मैं ठीक था। लेकिन अगर मैं तब मर गया होता, तो मैं निश्चिंता रूप से स्वर्ग में होता। और अब जब मैं इतना बूढ़ा हो गया हूँ, और इतना कुछ झेल चुका हूँ, तो मुझे अभी भी यकीन नहीं है कि मैं वहाँ पहुँचूँगा या नहीं।

¹³¹ 1 थसिस. 4:13.

लेकनि, इसके अलावा, बच्चों की मृत्यु उनके माता-पिता की भी मदद करती है। माता-पिता को यह जानना चाहिए कि जिस क्षण उनका बच्चा मर जाता है, उन्हें स्वर्ग में एक मध्यस्थ मलि जाता है। जब माता-पिता मरते हैं, तो उनके बच्चे, अपने रक्षक स्वर्गदूतों के साथ, अपने पिता और माता की आत्माओं का स्वागत करने के लिए स्वर्ग के द्वार पर आएँगे। और यह कोई छोटी बात नहीं है! इसके अलावा, उन छोटे बच्चों से जनिहें बीमारी या वकिलांगता से पीड़ा झेलनी पड़ी है, मसीह कहेंगे: 'स्वर्ग में आओ और वहाँ सबसे अच्छी जगह चुन लो।' और बच्चे मसीह से जवाब देंगे: 'यहाँ बहुत अच्छा है, मसीह, लेकनि हम चाहते हैं कि हमारी मम्मी भी हमारे साथ यहाँ हो,' और मसीह, बच्चों की वनिती सुनकर, उनकी माँ को बचाने का कोई रास्ता खोज लेंगे।

बेशक, माताओं को दूसरे चरम पर भी नहीं जाना चाहिए। कुछ माताएँ मानती हैं कि उनका दविंगत बच्चा संत बन गया है, और इससे वे भ्रम में पड़ जाती हैं। एक ऐसी ही माँ ने मुझे अपने दविंगत बेटे की एक वस्तु— एक आशीर्वाद के रूप में— देना चाहा, क्योंकि वह मानती थी कि वह संत बन गया है। "इसे आशीर्वाद दीजिए," उसने मुझसे कहा, "ताकि मैं उसके सामान को लोगों को आशीर्वाद के रूप में दे सकूँ?" "नहीं," मैंने उससे कहा, "ऐसा न करना ही बेहतर है।" एक और ऐसी माँ ने, महाप्राशन गुरुवार को, अपने बच्चे की एक तस्वीर— जसि जर्मनों ने मार डाला था— चर्च के केंद्र में खड़े क्रूस पर लगा दी। उसने कहा: 'मेरे बेटे ने भी मसीह की तरह ही कष्ट सहे।' गुड फ्राइडे से पहले रात भर चर्च में रुकने वाली महिलाओं ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की; उन्होंने उसे चोट पहुँचाने से बचने के लिए उसे अकेला छोड़ दिया। और वे उससे क्या कह सकती थीं? आखरि कार, उसकी आत्मा आघातग्रस्त थी।

शोकसंतप्तों के लिए सांतवना

— जेरोंडा, अचानक मृत्यु से डरने से बचने के लिए लोगों को कतिनी अपार शक्त की आवश्यकता होती है!

— यदलोग जीवन के गहरे अर्थ को समझ लेते हैं, तो वे मृत्यु का सही तरीके से सामना करने की ताकत पा लेते हैं। आखरि कार, जीवन का अर्थ समझ लेने के बाद, वे मृत्यु को एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं। क्या आप जानते हैं कि भोपेड पर कतिने कशोर मारे जाते हैं! क्या आप जानते हैं कि मोटरसाइकलियों पर कतिने युवा दुर्घटनाओं में शामिल होते हैं! ये लड़के अपनी मोटरसाइकलियों को उनके पछिले पहियों पर उठा लेते हैं, और उस स्थिति में उनके लिए पलटना, टारमैक पर सरि मारना और खोपड़ी फटना बहुत आसान होता है। वे तो किसी को भी हीरो मानते हैं जो अपनी मोटरसाइकल को दूसरों से ऊँचा उठा सकता है। ऐसे कशोर शेखी बघारते हैं, 'मैंने अपनी मोटरसाइकल को उसके पछिले पहिये पर चलाया, जैसे कि वह अपने पछिले पैरों पर हो, लेकनि फिर मैं गरि पड़ा।' क्या आप देख रहे हैं कि शैतान उन्हें क्या सखा रहा है, जो चाहता है कि वे अपना सरि फोड़ लें? आखरि कार, अगर वे सामान्य रूप से, दो पहियों पर सवारी कर रहे होते, तो भले ही उन्हें कोई दुर्घटना हो जाती, तो वे अपने सरि के अलावा किसी और चीज़ से टकरा सकते थे और बच सकते थे। हालाँकि, अगर ईश्वर शैतान को बुराई करने देता है, या किसी को लापरवाह होने देता है, तो इसका मतलब है कि शैतान की बुराई या मानव की लापरवाही से कुछ अच्छा निकलेगा।

— गेरोंडा, तो फिर हमारी चर्च अचानक मृत्यु से 'बचाए जाने' के लिए क्यों प्रार्थना करती है?

— वह एक अलग मामला है। चर्च ईश्वर से प्रार्थना करती है कि मृत्यु हमें बिना तैयारी के न पकड़े।

— गेरोंडा, एक माँ यहाँ आती है और वह अत्यंत दुखी है क्योंकि उसने अपने बच्चे को एक काम से भेजा था, और उसे एक कार ने टक्कर मार दी और उसकी मौत हो गई।

— उससे कहो: 'क्या ड्राइवर ने तुम्हारे बच्चे को जानबूझकर कुचला? नहीं। क्या तुमने उसे किसी काम से इसलिए भेजा था कि उसे कार लग जाए? नहीं। तो कहो: "हे ईश्वर, तेरा ही महिमा हो," क्योंकि अगर कार उसे न लगती, तो वह गलत रास्ते पर चला जाता। लेकनि अब ईश्वर ने उसे बलिकुल सही समय पर अपने पास बुला लिया है। वह अब स्वर्ग में है, और उसे खोने का कोई खतरा नहीं है। आप क्यों रो रही हैं? क्या

आपको एहसास नहीं है कि आपका रोना आपके बच्चे को पीड़ा दे रहा है? आप क्या चाहती हैं: कि आपका बच्चा दुखी रहे, या वह खुश रहे? यह सुनिश्चित करें कि आप अपने उन अन्य बच्चों की मदद करें जो ईश्वर से दूर रह रहे हैं। आपको उनके लिए रोना चाहिए, न कि उस बच्चे के लिए जो मारा गया है।" कल ही, एक आँसुओं से भरी माँ यहाँ आई थी। "ईश्वर मेरे इकलौते बेटे को ले गए," वह रोते हुए बोली, और उसने ईश्वर को इसका दोषी ठहराया। मैंने उससे कहा, 'अगर आप सच में इस बारे में सोचें कि आपके साथ क्या हुआ है, तो आप इस नष्टिकर्ष पर पहुँचेंगी कि ईश्वर ने आपका सम्मान किया है। उन्होंने एक छोटे फरशिते को अपने पास बुला लिया है, एक ऐसे बच्चे को जसिं बपतस्मा दिया गया था, ताकि वह पाप और वासनाओं में न फँसे। ईश्वर ने एक देवदूत को अपने पास बुला लिया है, और फरि भी आप इस पर उनकी नदि कर रही हैं? बहुत जल्द आपको महसूस होगा कि आपका दविंगत पुत्र आपके लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है।" फरि उस महिला ने मुझे अपने जीवन के बारे में बताया। उसने कहा कि जब वह जवान थी, तो उसके कई बच्चे हो सकते थे, लेकिन उस समय वह उन्हें नहीं चाहती थी।

क्या आप जानते हैं कि कतिनी माताएँ प्रार्थना करती हैं और यह मांगती हैं कि उनके बच्चे ईश्वर के साथ रह सकें! "मुझे नहीं पता कि आप क्या करेंगे, मेरे ईश्वर," ये महिलाएँ कहती हैं, "लेकिन मैं चाहती हूँ कि मेरा बच्चा बच जाए, आपके साथ रहे।" हालांकि, यदि ईश्वर देखता है कि कोई बच्चा सही मार्ग से भटक रहा है, वह वनिश की ओर बढ़ रहा है और उसे बचाने का कोई अन्य उपाय नहीं है, तो वह उसे अप्रत्याशति मृत्यु के माध्यम से अपने पास ले लेता है। उदाहरण के लिए, वह एक नशे में धुत ड्राइवर को एक बच्चे को कुचलने देता है और इस तरह बच्चे को अपने पास ले जाता है। यदि बच्चे के सुधरने की कोई संभावना होती, तो ईश्वर उस दुर्घटना को होने से रोक देता। बाद में, बच्चे को कुचलने वाले व्यक्ति का नशा उतर जाता है। वह व्यक्ति होश में आता है और बाकी जीवन अपने वविक से पीड़ित रहता है। ऐसा व्यक्ति कहता है, 'मैंने एक अपराध किया है,' और लगातार ईश्वर से उसे क्षमा करने के लिए प्रार्थना करता है। इस तरह, यह व्यक्ति भी बच जाता है। और मर गए बच्चे की माँ, दिल के दर्द से पीड़ित, एक अधिक अनुशासति जीवन जीने लगती है, मृत्यु पर चिंतन करती है और आने वाले जीवन के लिए तैयारी करती है। इस तरह, वह भी बच जाती है। क्या आप देखते हैं कि कैसे, माँ की प्रार्थनाओं के माध्यम से, ईश्वर चीजों को इस तरह व्यवस्थित करते हैं कि मानव आत्माएँ बच सकें? फरि भी, अगर माताएँ यह नहीं समझतीं, तो वे ईश्वर को दोष देने लगती हैं! ईश्वर को हमसे कतिनी बातें सहनी पड़ती हैं!

यदि कोई व्यक्ति सांसारिक दृष्टिकोण से चीजों को देखना बंद कर दे, तो उसकी आत्मा को शांति मिलती है। क्योंकि कोई व्यक्ति ईश्वर और सच्चे जीवन—मृत्यु के बाद के जीवन, शाश्वत जीवन—में विश्वास नहीं करता, तो वह सच्ची सांत्वना कैसे पा सकता है? जब मैं स्टोमयिन मठ में था, तो कोनटिसा में [नजदीक] एक वधिवा रहती थी जो लगातार कबरसितान जाती और घंटों तक वहाँ बेकाबू होकर रोती रहती थी। वह अपनी कबर-पत्थर से अपना सरि टकराती और उसकी चीखें पूरे मोहल्ले को परेशान कर देतीं! वह अपना सारा दर्द कबरसितान में ही निकालती थी। लोग वहाँ आते, उसे ले जाते, लेकिन वह फरि भी लौट आती। यह सालों तक चलता रहा। इस महिला का पतजिर्मनों द्वारा मारा गया था, और उसकी बेटी, अपने पति की मृत्यु के कुछ साल बाद, उन्नीस की होते ही दिल की बीमारी से मर गई थी। इसलिए यह दुर्भाग्यपूर्ण महिला बलिकूल अकेली रह गई थी। अगर कोई बाहर से उसकी स्थितिको देखता, तो वे कहते: 'भगवान ने ऐसा क्यों होने दिया?' और वह महिला खुद भी, जो कुछ उसके साथ हुआ था उसे ठीक इसी तरह — बाहर से — देख रही थी, उसे कोई सांत्वना नहीं मिल सकती थी। एक दिन, जब मैं भी यह देखने के लिए कबरसितान गया कि क्या हो रहा है, तो उसने मुझसे कहना शुरू कर दिया: 'भगवान ने सब कुछ इस तरह क्यों बनाया? मेरा पति युद्ध में मारा गया था। मेरी एक ही बेटी थी। ईश्वर ने उसे भी मुझसे छीन लिया...' वह बोलती ही चली गई, ईश्वर को दोष देती रही। जब मैंने उसे थोड़ा मन का बोझ हल्का करने दिया, तो मैंने कहा: 'मैं भी आपको कुछ बताऊँ। मैं आपके पतिको जानता था। वह बहुत अच्छे इंसान थे। वह अपने देश के लिए युद्ध में मारे गए, अपना पवतिर कर्तव्य नभाते हुए। ईश्वर उनके साथ अन्याय नहीं करेगा। फरि, आपके पतिकी मृत्यु

के बाद, ईश्वर ने आपको कुछ वर्षों के लिए अपनी बेटी के साथ छोड़ दिया। वह आपके साथ रहती थी, और आपको उससे कुछ सांत्वना मिलती थी। हालाँकि, बाद में, यह देखकर कलिङ्की [जल्द ही] सही रास्ते से भटक सकती है, ईश्वर ने उसे उन अच्छे हालात से ले लिया जिनमें वह थी। उसने यह उसके बचाव के लिए किया।" यह वधिवा, यद्यपि उसका पत एक बहुत ही शांत स्वभाव का व्यक्ति था, स्वयं थोड़ी सांसारिक थी। बेशक, मैंने उसे यह सीधे तौर पर नहीं बताया; मैंने उससे यह नहीं कहा, 'तुम एक सांसारिक व्यक्ति थीं,' बल्कि मैंने उससे पूछा: 'तुम अभी किस बारे में सोच रही हो? क्या तुम दुनिया से प्यार करती हो?' "मैं किसी को या कुछ भी देखना नहीं चाहती," उसने जवाब दिया। "देखो," मैंने उससे कहा, "दुनिया मर चुकी है, और तुम्हारे लिए भी। तुम्हारा दुख तुम्हारी मदद कर रहा है, और दुनियावी चीजों में तुम्हारी कोई दिलचस्पी नहीं है। इस प्रकार, बहुत जल्द तुम सब जनन में एक साथ होगे। ईश्वर ने तुम्हें जो सम्मान दिया है, वह और किसको दिया है? क्या तुम इसका एहसास करती हो?" इस बातचीत के बाद, वह गरीब महिला कबरस्तान जाना बंद कर गई। जैसे ही—किसी और की मदद से—वह जीवन के गहरे अर्थ को समझ सकी, उसे तुरंत ही शांति मिल गई।

— जेरोंडा, मैंने सुना है कि अगर कोई व्यक्ति हिंसक मृत्यु मरता है, तो वह अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहा होता है, क्योंकि हित्यारा उसके पापों को अपने ऊपर ले लेता है।

— जसि व्यक्ति को मारा गया है, अगर मैं इसे इस तरह कह सकता हूँ, उसकी परस्थितियाँ हल्की हैं। वह ईश्वर से कह सकता है: 'मैं तौबा कर लेता, लेकिन उसने मुझे मार डाला।' इस प्रकार, [उसके पापों] का बोझ हत्यारे पर पड़ेगा। हालाँकि, कुछ लोग, जिनमें सामान्य ज्ञान की कमी होती है, कहते हैं: 'अगर ईश्वर होता, तो वह इतने सारे अपराधों को होने नहीं देता।' वह अपराधियों को दंडित करेगा। ऐसे लोग यह नहीं समझते कि ईश्वर अपराधियों को इसलिए जीने देता है ताकि न्याय के दिने, उनके पास पश्चाताप न करने का कोई बहाना न रहे, इस तथ्य के बावजूद कि ईश्वर ने उन्हें ऐसा करने के लिए वर्षों दिए। न ही ईश्वर उन लोगों को त्यागेगा जिन्हें अपराधी मारते हैं।

मौत — केवल कुछ वर्षों का वययोग

हमें यह समझना चाहिए कि वास्तव में कोई व्यक्ति भिरता नहीं है। मृत्यु केवल एक जीवन से दूसरे जीवन में संक्रमण है। यह एक अस्थायी अलगाव है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति एक वर्ष के लिए वदिश जाता है, तो उसका परिवार परेशान हो जाता है क्योंकि वे एक वर्ष तक अलग रहेंगे; या, यदि वे दस वर्षों के लिए दूर जाते हैं, तो वे इस दस-वर्षीय अलगाव के कारण परेशान हो जाते हैं। इसी तरह, लोगों को मृत्यु द्वारा लाए गए अपने प्रियजनों से अलगाव को देखना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई वृद्ध व्यक्ति अपने किसी प्रियजन को खो देता है, तो उसे कहना चाहिए: 'हम पंद्रह साल में फिर मिलेंगे।' यदि किसी ने अपने प्रियजन को अभी-अभी खोया है और वह जवान है, तो उसे कहना चाहिए: 'हम पचास साल में फिर मिलेंगे।' बेशक, किसी प्रियजन की मृत्यु पर दर्द होता है, लेकिन मृत्यु को एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। *क्या आपको प्रेरति पौलुस की बात याद है? 'जिनके पास कोई आशा नहीं, उनके समान शोक न करो'।*¹³² उदाहरण के लिए, अगर मेरा दविगत रश्तिदार जीवति रहता, तो मैं उसे कतिनी बार देख पाता? महीने में एक बार? तो हमें यह सोचना चाहिए कि वहाँ, अनंत जीवन में, मैं उसे लगातार देखूँगा। हमारी चिंता केवल तभी उचित है जब मृतक ने बुरा जीवन जिया हो [— ईसाई तरीके से नहीं]। उदाहरण के लिए, यदि वह एक क्रूर व्यक्ति था, तो हमें उसके लिए बहुत प्रार्थना करनी चाहिए — यदि हम वास्तव में उससे प्यार करते हैं और आने वाले जीवन में उससे मिलना चाहते हैं।

¹³² 1 थसिस. 4:13.

अध्याय 3. मृत्यु के बाद का जीवन

दंडति प्रस्थान

— जेरोंडा, जब कोई व्यक्ति मरता है, क्या उन्हें तुरंत पता चल जाता है कि वे किस अवस्था में हैं?

— हाँ, वह होश में आता है और खुद से पूछता है: 'मैंने आखिर क्या कर डाला?' लेकिन — 'faida yok'¹³³

— यानी, अब यह सवाल खुद से पूछना उसके किसी काम का नहीं है। उदाहरण के लिए, एक शराबी जिसने अपनी माँ को मार डाला है, वह हँसता है और गीत गाता है क्योंकि उसे एहसास नहीं होता कि उसने क्या किया है। लेकिन जब नशा उतर जाता है, तो वह रोने, सिसिकने और खुद से पूछने लगता है: 'मैंने यह क्या कर दिया?' पाप में जीने वालों के साथ भी यही होता है। ये लोग शराबी की तरह हैं। वे यह नहीं समझते कि वे क्या कर रहे हैं; उन्हें कोई अपराध-बोध नहीं होता। हालाँकि, जब वे मरते हैं, तो [पार्थवि] नशा उनके मन से उतर जाता है और वे होश में आ जाते हैं। उनकी आत्मा की आँखें खुल जाती हैं, और वे अपने अपराध को महसूस करते हैं, क्योंकि आत्मा, शरीर को छोड़कर, अथाह गति से सब कुछ देखती और महसूस करती है।

कुछ लोग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि दूसरी आगमना कब होगी। हालाँकि, मर रहे व्यक्ति के लिए, दूसरी आगमना, कह सकते हैं, पहले ही आ चुकी होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी व्यक्ति का न्याय उस अवस्था के अनुसार किया जाता है जिसमें मृत्यु उसे पाती है।

— गेरोना, जो लोग वर्तमान में नरक की यातनाएँ भोग रहे हैं, वे क्या अनुभव कर रहे हैं?

— ये लोग दण्डति किए गए हैं। जेल में रहते हुए, वे अपनी सांसारिक जीवन में किए गए पापों के अनुरूप यातनाएँ सहते हैं। ये लोग अंतमि न्याय — मसीह के आने वाले न्याय — की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन इनमें से कुछ को कठोर और विशेष व्यवस्थाओं में रखा गया है, और कुछ को अधिक उदार दण्ड दिया गया है।

— और संत और पश्चातापी चोर अब कहाँ हैं?¹³⁴

— संत और पश्चातापी चोर अब स्वर्ग में हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक अपनी अंतमि महिमा प्राप्त नहीं की है, ठीक वैसे ही जैसे नरक में दंडति लोगों ने अभी तक अपना अंतमि नरिणय नहीं पाया है। सदयों पहले, ईश्वर ने कहा: "पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य नकिट है।"¹³⁵ फरि भी, इसके बावजूद, वह हमें और अधिक समय देता रहता है, क्योंकि वह हमारे पश्चाताप की प्रतीक्षा कर रहा है।¹³⁶ लेकिन हम, अपनी वासनाओं और पापों में डूबे रहने से, संतों के प्रति अन्याय करते हैं, क्योंकि [हमारे कारण] वे अभी तक अंतमि महिमा प्राप्त नहीं कर सकते, जो उन्हें आने वाले अंतमि न्याय के बाद प्राप्त होगी।

स्वर्गवासियों के लिए प्रार्थनाएँ और स्मृति सिभाएँ

— गेरोन्डा, क्या मृत्युदंडति लोग दविंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना कर सकते हैं?

— वे होश में आते हैं और मदद मांगते हैं, फरि भी वे अब स्वयं की मदद नहीं कर सकते। नरक में पड़े लोग मसीह से केवल एक ही बात मांगते हैं: कि वह उन्हें पाँच मिनट का सांसारिक जीवन दे ताकि वे पश्चाताप कर सकें। हम जो पृथ्वी पर रहते हैं, हमारे पास पश्चाताप करने का समय है, जबकि दुर्भाग्यशाली दविंगत अब स्वयं अपनी स्थिति में सुधार नहीं कर सकते, बल्कि हमारी मदद का इंतज़ार करते हैं। अतः हम अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उनकी मदद करने के लिए बाध्य हैं।

¹³³ एक तुर्की अभिव्यक्ति जिसका अर्थ है 'इसका कोई मतलब नहीं है', 'बेमानी'।

¹³⁴ लूका 23:32-33 और 39-43 देखें।

¹³⁵ मत्ती 3:2.

¹³⁶ 'हमारा' कहकर, एल्डर का तात्पर्य संपूर्ण मानवता से था।

मुझे यह बात सूझती है कि दिण्डति मृतकों में से केवल दस प्रतशित ही दैवीय अवस्था में होते हैं और नरक में रहते हुए, राक्षसों की तरह ही ईश्वर का अपमान करते हैं। ये आत्माएँ न केवल मदद माँगती नहीं, बल्कि उसे स्वीकार भी नहीं करतीं। और उन्हें मदद की क्या जरूरत? ईश्वर उनके लिए क्या कर सकता है? कल्पना कीजिए एक बच्चा अपने पति का घर छोड़ देता है, अपनी सारी संपत्ति बिर्बाद कर देता है और ऊपर से अपनी अंतिम बातों में अपने पति की निंदा करता है। तो पति उसकी मदद कैसे कर सकता था? हालाँकि, नरक में अन्य शापित आत्माएँ—जिनमें थोड़ा सा भी प्रेम बचा है—अपना अपराधबोध महसूस करती हैं, पश्चाताप करती हैं और अपने पापों के लिए पीड़ित होती हैं। वे मदद के लिए पुकारते हैं और विश्वासियों की प्रार्थनाओं के माध्यम से उन्हें पर्याप्त सहायता मिलती है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर अब इन दंडित लोगों को दूसरी बार के आगमन तक मदद प्राप्त करने का एक अनुकूल अवसर प्रदान कर रहे हैं। सांसारिक जीवन में, राजा का एक मंत्री किसी दंडित व्यक्ति की मदद करने के लिए उसके पास मध्यस्थता कर सकता है। इसी तरह, यदि कोई व्यक्ति ईश्वर का 'मित्र' है, तो वह ईश्वर के समक्ष प्रार्थना के माध्यम से मध्यस्थता कर सकता है और दविंगत दोषियों की ओर से एक 'कारागार' से दूसरे — एक बेहतर — 'कोठरी' से दूसरी, अधिक आरामदायक 'कोठरी' में स्थानांतरण के लिए वनिती कर सकता है। वह उनके लिए किसी 'कोठरी' से किसी तरह के 'कमरे' या 'फ्लैट' में स्थानांतरण के लिए भी मध्यस्थता कर सकता है।

जैसे हम कैदियों से मिलने पर उन्हें ताज़गी भरे पेय और इसी तरह की चीज़ें लाते हैं, जसिसे उनका दुःख कम हो जाता है, वैसे ही हम दविंगतों के दुःख को भी उनकी आत्मा की शांति के लिए की गई प्रार्थनाओं और दान के माध्यम से कम करते हैं। जीवितों द्वारा मृतकों के लिए की जाने वाली प्रार्थनाएँ और उनकी आत्मा की शांति के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान, मृतकों के लिए ईश्वर द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता प्राप्त करने का अंतिम अवसर हैं — द्वितीय आगमन तक। अंतिम न्याय के बाद, उन्हें ऐसी सहायता प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलेगा।

ईश्वर मृतकों की सहायता करना चाहता है क्योंकि वह उनके लिए दुःखित है; फरि भी वह यह उदारता की भावना से नहीं करता। वह शैतान को यह कहने का अधिकार नहीं देना चाहता: 'आप इस पापी को कैसे बचा सकते हैं, जबकि उसने कोई प्रयास भी नहीं किया?' हालाँकि, मृतकों के लिए प्रार्थना करके हम ईश्वर को हस्तक्षेप करने का 'अधिकार' देते हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि मृतकों के लिए हमारी प्रार्थनाएँ जीवितों के लिए हमारी प्रार्थनाओं की तुलना में ईश्वर के हृदय को अधिक गहराई से स्पर्श करती हैं।

इसीलिए हमारे चर्च ने दविंगतों के लिए कोलवि का आशीर्वाद, स्मरणोत्सव सेवाओं और पनकीदास की स्थापना की है। स्मरणोत्सव सेवाएँ दविंगतों की आत्माओं के लिए सबसे उत्तम मध्यस्थ होती हैं। स्मरणोत्सव सेवाओं में इतनी शक्ति होती है कि वे किसी आत्मा को नरक से भी मुक्त कर सकती हैं। और आप, प्रत्येक दविय लटिर्जी के बाद, दविंगतों के लिए कोलवि का आशीर्वाद अवश्य कराएं। गेहूँ में एक अर्थ है: 'यह क्षय में बोया जाता है, यह अक्षय में उठाया जाता है'¹³⁷ — जैसा कि पवित्र शास्त्र कहता है। सांसारिक दुनिया में, कुछ लोग थोड़ा गेहूँ पकाने और चर्च में कशिमशि, बसिकुट और कुकीज़ लाने के लिए बहुत आलसी होते हैं ताकि पुरोहित मृतकों की आत्मा की शांति के लिए इन सभी पर एक प्रार्थना पढ़ सकें। लेकिन पवित्र पर्वत पर, हर दैवीय धर्मवर्धिका के दौरान, वर्षिष्ठ भिक्षु दविंगतों और सम्मानित किए जा रहे संत, दोनों के लिए कोलवि को पवित्र करते हैं, ताकि उनका आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

— गेरोन्डा, क्या हाल ही में मृत लोगों को प्रार्थना की अधिक आवश्यकता होती है?

— हाँ, बिल्कुल! जब कोई पहली बार जेल जाता है, तो शुरुआत में उसके लिए यह खासकर कतिना कठिन नहीं होता? हम उन दविंगतों के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने ईश्वर को प्रसन्न नहीं किया, ताकि ईश्वर किसी न किसी प्रकार उनकी भी सहायता करें। विशेष रूप से यदि हम जानते हों कि कोई व्यक्ति किठोर या क्रूर था — या यूँ कहें कि वे क्रूर प्रतीत होते थे, क्योंकि किभी-कभी हम किसी व्यक्ति को क्रूर मान लेते हैं जबकि वास्तव में वे क्रूर नहीं होते। और यदि ऐसा व्यक्ति पापी जीवन भी जिया हो, तो हमें उसके लिए पूरी लगन से

¹³⁷ 1 कुरनिथियों 15:42.

प्रार्थना करनी चाहिए, द्रव्य लटिर्जी में स्मरण के लिए उसका नाम प्रस्तुत करना चाहिए, उसे चालीस-द्विती की स्मृतिसेवा में शामिल करना चाहिए, और उसकी आत्मा की मुक्ति के लिए गरीबों को दान देना चाहिए, ताकि गरीब लोगों की यह प्रार्थना सुनकर: 'उसकी राख धन्य हो,' ईश्वर दयालु हो जाएँ और उस व्यक्तिपर तरस खाएँ। इस प्रकार, जो काम वह व्यक्तिस्वयं नहीं कर सका, हम उसकी ओर से करेंगे। लेकिन यदि किसी व्यक्ति में अच्छाई थी, भले ही उसने अच्छा जीवन न जिया हो, तो उसे एक छोटी सी प्रार्थना से भी बहुत लाभ होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसमें एक अच्छा स्वभाव था।

मैं ऐसे उदाहरण जानता हूँ जो इस बात की गवाही देते हैं कि दिवंगत आत्माएँ आध्यात्मिक लोगों की प्रार्थनाओं से लाभान्वित होती हैं। एक व्यक्ति मेरे कालीवा में आया और रोते हुए बोला: "गेरोन्डा, मैंने एक दिवंगत परिचित के लिए प्रार्थना करना बंद कर दिया था, और वह मुझे सपने में दिखाई दिया। 'तुम,' उसने कहा, 'बीस दिनों से मेरी मदद नहीं कर रहे हो।' 'तुम मुझे भूल गए हो, और मैं कष्ट झेल रहा हूँ।' और वास्तव में, मैं उसे ठीक बीस दिन पहले ही भूल गया था, अपनी अनेक चिंताओं में डूबा हुआ, और उन दिनों मैंने अपने लिए भी प्रार्थना नहीं की थी।"

— जेरोंडा, जब कोई मर जाता है और हमें उनके लिए प्रार्थना करने के लिए कहा जाता है, तो क्या यह सही है कि उनके नधिन के बाद पहले चालीस दिनों के दौरान उनकी आत्मा की शांति के लिए एक माला जपें?

— यदि आप प्रार्थना माला का उपयोग करके दिवंगतों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, तो अन्य दिवंगत आत्माओं के लिए भी प्रार्थना करें। एक ट्रेन सिर्फ एक यात्री के साथ इतनी लंबी दूरी की यात्रा क्यों करे? आखिरकार, यह दूसरों को भी सवार कर सकती है। क्या आप जानते हैं कि कितने दिवंगत आत्माओं को प्रार्थना की आवश्यकता है? ये बेचारे प्राणी मदद मांग रहे हैं, और उनके लिए प्रार्थना करने वाला कोई नहीं है! कुछ लोग अक्सर अपने किसी दिवंगत रक्षितेदार के लिए स्मृति सभा आयोजित करते हैं। लेकिन जिस व्यक्ति के लिए यह प्रार्थना की जा रही है, उसे भी इससे कोई मदद नहीं मिलती, क्योंकि ऐसी प्रार्थना ईश्वर को विशेष रूप से प्रसन्न नहीं करती। चूँकि उन्होंने इस मृतक के लिए पहले ही इतनी सारी स्मृति सभाएँ आयोजित कर ली हैं, तो उन्हें उसी समय अन्य दिवंगत आत्माओं के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए।

— गेरोन्डा, कभी-कभी मैं अपने पति की मुक्ति के बारे में चिंतित हो जाता हूँ, क्योंकि उनका चर्च से कोई संबंध नहीं था।

— आप अंतिम क्षण तक नहीं जान सकते कि ईश्वर का न्याय कैसा होगा। यह चिंता आपको कब होती है? हर शनिवार?

— मैंने ध्यान नहीं रखा है। लेकिन हर शनिवार क्यों?

— क्योंकि शनिवार दिवंगतों का दिन है; दिवंगतों का उस पर अधिकार है।

— जेरोंडा, जनिकी मृत्यु हो चुकी है और जनिके लिए प्रार्थना करने वाला कोई नहीं है, उनके बारे में क्या? क्या उन्हें उन लोगों की प्रार्थनाओं से कोई लाभ मिलता है जो सामान्य रूप से दिवंगतों के लिए प्रार्थना करते हैं—बना किसी विशेष नाम का उल्लेख किए?

— बेशक वे करते हैं। जब मैं सभी दिवंगतों के लिए प्रार्थना करता हूँ, तो मैं अपने माता-पिता को सपनों में देखता हूँ, क्योंकि वे मेरी की गई प्रार्थनाओं में आनंदित होते हैं। हर बार जब मेरी कोठरी में दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान होता है, तो मैं सभी दिवंगतों के लिए एक सामान्य स्मरणोत्सव सेवा भी करता हूँ, जिसमें मैं दिवंगत राजाओं, बशिषों आदि के लिए प्रार्थना करता हूँ। और अंत में मैं कहता हूँ, 'और जनिके नाम हमने उल्लेख नहीं किए हैं।' और अगर मैं कभी-कभी दिवंगतों के लिए प्रार्थना करना भूल जाता हूँ, तो मेरे दिवंगत परिचित मुझे दिखाई देते हैं। मेरे एक रक्षितेदार युद्ध में मारा गया था, और मैंने स्मरण सेवा में उसकी स्मृति के लिए उसका नाम नहीं लिखा, क्योंकि उसका नाम पहले ही बहादुरी से मारे गए अन्य लोगों के साथ प्रोस्कोमडिया में स्मरण के लिए दर्ज हो चुका था। और इस प्रकार मैंने इस व्यक्ति को स्मरण सभा के दौरान मेरे सामने पूरे कद में खड़ा देखा। और आपको भी प्रोस्कोमडिया में न केवल बीमारों के नाम, बल्कि

दविंगतों के नाम भी स्मरण के लिए प्रस्तुत करने चाहिए, क्योंकि दविंगतों को प्रार्थनाओं की बहुत आवश्यकता होती है।

स्वर्गीय की स्मृतिको संजोने का सर्वोत्तम तरीका

हमारे दविंगत पूर्वजों के लिए हम जो भी स्मरणोत्सव और श्रद्धांजलि सभाएँ कर सकते हैं, उनसे भी अधिक लाभदायक हमारा सचेत जीवन-यापन होगा, वह संघर्ष जो हम अपनी कमियों को दूर करने और अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए करते हैं। क्योंकि भौतिक वस्तुओं और आत्मा की कामनाओं से मुक्त होने का परिणाम केवल यह नहीं होगा कि हमें स्वयं को राहत का अनुभव होगा। हमारी संपूर्ण वंशावली के दविंगत पूर्वजों को भी राहत मिलेगी। दविंगत लोग तब आनंदित होते हैं जब उनका वंशज ईश्वर के साथ जीवन व्यतीत करता है। यदि हम अच्छी आध्यात्मिक स्थिति में नहीं हैं, तो हमारे दविंगत माता-पिता, दादा और परदादा, हमारे सभी पूर्वज, पीड़ा भोगते हैं। वे कहते हैं, 'बस देखो कि हमारा वंशज कैसे जी रहा है!' और वे दुखी होते हैं। हालाँकि, यदि हम अच्छे आध्यात्मिक अवस्था में हैं, तो वे आनंदित होते हैं, क्योंकि वे हमारे जन्म में ईश्वर के सहकरमी थे और ईश्वर, एक तरह से, उन्हें मदद करने के लिए बाध्य हैं। दूसरे शब्दों में, यदि हम प्रयास करें और अपने जीवन के माध्यम से ईश्वर को प्रसन्न करने का यत्न करें तो इससे दविंगत आत्माओं को आनंद मिलता है। ऐसा करने से, हम स्वर्ग में अपने दविंगत प्रियजनों से पुनर्मिलन करेंगे, और साथ में हम अनंत जीवन में जीवित रहेंगे।

तदनुसार, यह स्पष्ट है कि अपने पुराने स्व के विरुद्ध संघर्ष करना और लड़ाई लड़ना सार्थक है, ताकि नया स्व बनकर वह न तो स्वयं को और न ही दूसरों को हानि पहुँचाए, बल्कि स्वयं और दूसरों—चाहे वे जीवित हों या दविंगत—दोनों की सहायता कर सके।

ईश्वर के समक्ष धार्मिकों की नरिभीकता

— गेरोना, आप नवोदित भिक्षुओं को लिखे अपने पत्र में लिखते हैं: "यद्यपि सच्चे संन्यासी यह जानते हैं कि इस जीवन में उन्हें जो आनंद मिलता है वह स्वर्ग के आनंद का केवल एक अंश है, और स्वर्ग में वह और भी अधिक होगा, फिर भी वे अपने पड़ोसियों के प्रति मिहान प्रेम के कारण लोगों की प्रार्थना के माध्यम से मदद करने के लिए पृथ्वी पर थोड़ी देर और जीना चाहते हैं, ताकि ईश्वर संसार के मामलों में हस्तक्षेप कर सकें और संसार को सहायता मिल सके।"¹³⁸

— पढ़ें: 'संन्यासी पृथ्वी पर इसलिए रहना चाहते हैं ताकि वे लोगों के साथ दुख सहें और प्रार्थना के माध्यम से उनकी मदद कर सकें।'

— गेरोना, आने वाले जीवन में क्या एक सच्चा भिक्षु अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से लोगों की मदद करेगा?

— वह आने वाले जीवन में अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उनकी मदद करना जारी रखेंगे, लेकिन तब वह पीड़ा नहीं झेलेंगे, जबकि अब वह उनके दुख में भागीदार हैं। वह पृथ्वी पर 'खुश आँखों और दमकते चेहरे के साथ' गाते-नाचते हुए नहीं रहते! हालाँकि, एक भिक्षु अपने पड़ोसी के लिए जितना अधिक दुख सहता है, उसे बदले में उतना ही अधिक दिव्य सांत्वना मिलती है, और यह पुरस्कार किसी न किसी तरह से भिक्षु को यह बताता है कि उसके पड़ोसी को लाभ हुआ है। यह स्वर्गीय आनंद अपने भाई के लिए अनुभव किए गए दर्द का दिव्य पुरस्कार है।

— जेरोडा, क्या वे संत, जिनसे हम मदद मांगते हैं, हमारे दुख में सहभागी नहीं होते?

— हाँ, मेरे भाई, — आखिर वहाँ कोई पीड़ा नहीं है! वे कहाँ पीड़ित होंगे? स्वर्ग में? 'जहाँ न कोई बीमारी है, न कोई दुख, न कोई आह'।¹³⁹ क्या यही स्वर्ग के बारे में नहीं कहा जाता? इसके अलावा, संत [अनुभव से]

¹³⁸ माउंट अथोस के एल्डर पैसियोसा पत्र। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 44।

¹³⁹ अंत्येष्टिकोटोक्यिन 'संतों के साथ, उसे विश्राम प्रदान करें...' से

जानते हैं कि इस जीवन में जो लोग पीड़ा सहते हैं, उन्हें द्रव्य पुरस्कार प्रदान किया जाएगा, और यह ज्ञान उन्हें आनंद देता है। क्योंकि अन्यथा, इतने प्रेम और इतनी करुणा वाले ईश्वर स्वयं इस महान मानवीय पीड़ा को कैसे सहन कर सकते थे? वह इसे सहन करने में सक्षम हैं क्योंकि वह उन लोगों के लिए द्रव्य पुरस्कार के बारे में जानते हैं जो पीड़ा सहते हैं। दूसरे शब्दों में, यहाँ लोग जितना अधिक दुख सहते हैं, स्वर्ग में ईश्वर उनके लिए उतना ही बड़ा द्रव्य पुरस्कार आरक्षित करते हैं। लेकिन हम इनमें से कुछ भी नहीं देख सकते, और इसलिए हम उन लोगों के लिए सहानुभूति महसूस करते हैं जो दर्द में हैं। फिर भी, यदि कोई व्यक्ति थोड़ा सा भी, यह देख सके कि आने वाले जीवन में दुख सहने वालों का क्या इंतजार कर रहा है, और उन्हें मिलने वाले दैवीय पुरस्कार के बारे में जानता है, तो उनका दुख इतना बड़ा नहीं लगता।

— गेरोंडा, अगर हम उस द्रव्यगत आत्मा की मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें जैसे इस मदद की आवश्यकता ही नहीं है, तो क्या हमारी प्रार्थना व्यर्थ है?

— यह व्यर्थ कैसे हो सकता है? जब हम कहते हैं, 'अपने सेवक (अमुक) को शांति प्रदान करो', और वह व्यक्ति अब परलोक में, ईश्वर के समीप है, तो वह हमसे नाराज़ नहीं होता। इसके विपरीत: हमारी प्रार्थना उसे करुणामय बनाती है। वह कहता है, 'बस देखो, मैं जन्नत में हूँ, ईश्वर के करीब हूँ, और फिर भी वे चिंतित हैं।' इस प्रकार हमारी प्रार्थना इस व्यक्ति के मन में हमारे प्रति प्रेम जगाती है, और हमारी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करके, वह हमारी ओर भी अधिक मदद करता है। लेकिन, इसके अलावा, आपको कैसे पता चलेगा कि कोई विशेष द्रव्यगत आत्मा किस अवस्था में है? बेशक, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आपको उन लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिनके बारे में आप जानते हैं कि उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान ईश्वर को दुखी किया था। फिर आपको उनके जैसे अन्य द्रव्यगत आत्माओं के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और उसके बाद — सामान्य रूप से सभी द्रव्यगतों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

आने वाला न्याय का दिन

— जेरोंडा, आत्मा कैसे शुद्ध होती है?

— यदि कोई व्यक्ति ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और उनका अभ्यास करने का ध्यान रखता है, यदि वे अपने ऊपर काम करते हैं, यदि वे अपने भावों को शुद्ध करते हैं, तो उनका मन प्रबुद्ध हो जाता है। वे चित्त की ऊँचाइयों पर पहुँच जाते हैं, और उनकी आत्मा प्रथम मनुष्यों के पतन से पहले की मानवता की आत्मा के समान हो जाती है। यह वह अवस्था है जिसमें एक व्यक्ति भूतकों के पुनरुत्थान के बाद खुद को पाएगा। हालाँकि, वासनाओं से पूरी तरह शुद्ध हो जाने पर, एक व्यक्ति सामान्य पुनरुत्थान से पहले ही अपनी आत्मा के पुनरुत्थान का अनुभव कर सकता है। यदि ऐसा होता है, तो उसका शरीर दैवीय और अदेह होगा, और उसे भौतिक पोषण की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

— गेरोंडा, अंतिम न्याय कैसे होगा?

— अंतिम न्याय के दिन, प्रत्येक व्यक्ति की सच्ची स्थिति एक क्षण में प्रकट हो जाएगी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार स्थान पर स्वयं चला जाएगा। जैसे टेलीविजन पर, हर कोई अपनी दुष्टता और दूसरों की आध्यात्मिक स्थिति दोनों देखेगा। एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को जैसे आईने में देखेगा और, सरि झुकाकर, अपनी नियत जगह पर चला जाएगा। उदाहरण के लिए, अपने सांसारिक जीवन के दौरान, एक बहू अपनी सास के सामने पैर पसारकर बैठी थी, जबकि सास, टूटी हुई टांग के साथ, अपने बेटे—बहू के बेटे—अपने ही पोते की देखभाल कर रही थी। यदि अंतिम न्याय के दिन, यह बहू देखती है कि मसीह उसकी सास को स्वर्ग में स्थान दे रहे हैं, जबकि उसे स्वयं वहाँ प्रवेश नहीं दिया जा रहा है, तो वह आपत्ति करने या मसीह से यह पूछने की हिम्मत नहीं करेगी कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं। आखिरकार, वह सांसारिक दृश्य उसकी आँखों के सामने होगा। उसे याद आएगा कि कैसे उसकी सास, टूटी हुई टांग के साथ, अपने पोते की देखभाल करती थी, और वह स्वर्ग में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करेगी। और वह खुद जन्नत में जगह नहीं बना पाएगी। दूसरी ओर, भिक्षु उन कठिनाइयों और परीक्षाओं को देखेंगे जिन्हें आम लोगों ने सहा,

और उन्होंने उन पर कैसे काबू पाया। यद्विभिक्षुओं ने गलत जीवन जिया है, तो वे सरि झुकाकर, अपनी योग्यतानुसार स्थान पर स्वयं चले जाएँगे। जो नन ईश्वर को प्रसन्न करने में असफल रही हैं, वे अंतमि न्याय के दनि उन वीर माताओं को देखेंगी जिन्होंने संन्यास की शपथ नहीं ली थी, जिन्हें नन के पास जैसी आशीर्वाद और अनुकूल अवसर प्राप्त थे, वे नहीं मल्लि, और फरि भी, जिन्होंने सद्गुणों के महान कार्य कएि और उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की। तब, यह सब देखकर, भिक्षुणियाँ उन तुच्छ और नीच हरकतों से कैसे लज्जति होंगी, जनिमें वे लपित थीं और जनिसे वे स्वयं पीड़ति थीं! एक वचिार मुझे बताता है, 'यही वह तरीका है, जसिसे अंतमि न्याय होगा।' अर्थात्, अंतमि न्याय के दनि, मसीह यह नहीं कहेंगे: 'यहाँ आओ, तुम क्या कर रहे थे?' या 'तुम नरक में जाओगे, और तुम स्वर्ग में।' नहीं: प्रत्येक व्यक्ति, दूसरों से अपनी तुलना करते हुए, अपनी योग्यता के अनुसार स्थान पर स्वयं चला जाएगा।

आने वाली जदिगी

— गेरोना, मैंने बहनों के साथ बांटने के लिए आपके लिए कुछ मठाइयाँ लाया हूँ।

— बस देखो ये कतिनी खुश हैं! आने वाले जीवन में हम कहेंगे: 'हम कतिनी छोटी-छोटी बातों में आनंदति हुआ करते थे! वे छोटी-छोटी बातें उस समय हमें कतिना उत्साहित कयिा करती थीं!' लेकिन अब, ओह, हमारे दिलि इन छोटी-छोटी खुशियों से बस आनंद से उछल रहे हैं।

— जेरोंडा, हम अभी भी [इन खुशियों की क्षणभंगुरता] को कैसे समझ सकते हैं?

— अगर आप इसे अब समझ गए हैं, तो आने वाले जीवन में आप ऐसी बातें नहीं कहेंगे। कोई कुछ भी कहे, जो लोग स्वर्ग में रहते हैं, वे अच्छी तरह रहते हैं। क्या आप जानते हैं कि स्वर्ग में वे किस तरह की 'हस्तकला' करते हैं? वे नरितर ईश्वर की स्तुतिकरते हैं।

— गेरोन्डा, किसी मृत व्यक्तिके शरीर को 'अवशेष' क्यों कहा जाता है?

— क्योंकि शरीर वह है जो किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद पृथ्वी पर रह जाता है। सच्चा स्वरूप — आत्मा — स्वर्ग में आरोहण करती है। आने वाले न्याय में, ईश्वर किसी व्यक्ति के शरीर को भी पुनर्जीवति करेंगे, ताकि वह आत्मा के साथ न्याय के लिए प्रस्तुत हो सके, क्योंकि व्यक्ति ने उसी के साथ जीवन जयिा और पाप कएि। आने वाले जीवन में, सभी के पास एक ही शरीर होगा — एक आध्यात्मिक शरीर — और सभी एक ही ऊँचाई के होंगे: छोटे और लंबे दोनों; सभी एक ही उम्र के होंगे: युवा, बुजुर्ग और शशि समान रूप से — क्योंकि सभी लोगों के पास एक ही आत्मा होती है। दूसरे शब्दों में, आने वाले जीवन में, सभी लोग एक ही दैवीय उम्र के होंगे।

— गेरोन्डा, आने वाले जीवन में, क्या नरक में रहने वाले स्वर्ग में रहने वालों को देख सकेंगे?

— कल्पना कीजिए कि रात में एक कमरे में आग जल रही है। बाहर खड़े लोग इस उज्ज्वल रोशनी वाले कमरे के अंदर मौजूद लोगों को देख सकते हैं। इसी तरह, नरक में रहने वाले लोग स्वर्ग में रहने वालों को देख सकेंगे। और यह उनके लिए और भी बड़ा कष्ट होगा। और इसे फरि से कल्पना करें: जो लोग रात में प्रकाश में हैं, वे अंधकार में बाहर खड़े लोगों को नहीं देख सकते। इसी तरह, स्वर्ग में रहने वाले नरक में रहने वालों को नहीं देख पाएँगे। क्योंकि अगर स्वर्ग में रहने वाले पापियों को पीड़ति देख सकते, तो उन्हें दर्द होता; वे उनके दुखद भाग्य पर शोक मनाते और स्वर्ग का आनंद नहीं ले पाते। लेकिन स्वर्ग में '*कोई बीमारी नहीं है*।' स्वर्ग में रहने वाले न केवल नरक में रहने वालों को देख पाएँगे, बल्कि यदि वे लोग उनके साथ स्वर्ग में नहीं हैं, तो उन्हें यह भी याद नहीं रहेगा कि उनका कोई भाई, पति या माँ था भी या नहीं। '*उस दनि उसके सब वचिार नष्ट हो जाएँगे*,'¹⁴⁰ — भजनकार कहता है। क्योंकि यदि स्वर्ग में रहने वालों को नरक में पीड़ति अपने रशितेदारों का स्मरण रहता, तो उनके लिए वह कैसा स्वर्ग होता? और केवल इतना ही नहीं: स्वर्ग में रहने वाले यह सोचेंगे कि स्वर्ग में रहने वालों के अलावा कोई और लोग नहीं हैं। इसी तरह, वे अपने सांसारिक जीवन

¹⁴⁰ भजन संहिता 145:4.

के दौरान कएि गए पापों को याद नहीं करेंगे। यदवि अपने पापों को याद करते, तो ईश्वर के प्रतउिनका प्रेम यह सोचने को उनके लिए असहनीय बना देता कउिन्होंने ईश्वर को दुखी कयिा है।

यह भी कहना चाहएि कसिस्वरग में प्रत्येक व्यक्तीको जो आनंद प्राप्त होगा, वह समान नहीं होगा। कसी को एक अंगूठी-भर आनंद मलैगा, कसी को एक प्याला-भर, और कसी को पूरे झील-भर आनंद। हालांक, हर कोई संतुष्ट महसूस करेगा, और कोई भी यह नहीं जान पाएगा कदिसरा कतिना आनंद, कतिनी दविय आनंद का अनुभव कर रहा है। सदैव-सत्कार्य करने वाले ईश्वर ने ऐसा इसलए व्यवस्थति कयिा है कयोंकयिदकसी एक व्यक्तीको यह पता चल जाए ककोई दूसरा उससे अधिक आनंद का अनुभव कर रहा है, तो वह स्वरग, स्वरग नहीं रहेगा; कयोंकतिब स्वरग में भी पृथ्वी जैसी ईर्ष्या उत्पन्न होगी: 'वह अधिक आनंद कयों अनुभव कर रहा है, जबकमैं कम अनुभव कर रहा हूँ?' दूसरे शब्दों में, स्वरग में हर कोई अपनी आंतरकि आँखों की पवतिरता के अनुसार ईश्वर की महमिा को देखेगा। हालांक, आध्यात्मकि दृष्टि की यह तीक्ष्णता [ईश्वर की महमिा की] ईश्वर द्वारा नरिधारति नहीं की जाएगी। यह प्रत्येक व्यक्ती की पवतिरता पर नरिभर करेगी।

— लेकिन कुछ लोग हैं, गेरुन्डा, जो यह नहीं मानते कनिरक और स्वरग मौजूद हैं।

क्या वे यह नहीं मानते कएि एक नरक और एक स्वरग है? लेकिन अगर न तो स्वरग है और न ही नरक, तो मृतक अस्ततिवहीनता में कैसे मौजूद रह सकते हैं? आखरिकार, वे आत्माएँ हैं! ईश्वर स्वभावतः अमर है, जबकमिनुष्य अनुग्रह से अमर है। परिणामस्वरूप, वह नरक में भी अमर रहेगा। इसके अलावा, इस सांसारकि जीवन में भी, हमारी आत्मा स्वरग या नरक की एक झलक कुछ हद तक अनुभव करती है — यह इस बात पर नरिभर करता है कविह कसि अवस्था में है। यदकि कोई व्यक्ती अंतरात्मा की पीड़ा से त्रस्त है, यदवि भय, भ्रम, मानसकि पीड़ा, नरिशा का अनुभव करते हैं, या घृणा, ईर्ष्या और इसी तरह की भावनाओं में डूबे रहते हैं, तो वे [यहाँ इस सांसारकि जीवन में भी] नरक की यातनाओं में जी रहे हैं। लेकिन यदकिसी व्यक्ती के पास प्रेम, आनंद, शांति, कोमलता, दया और इसी तरह की भावनाएँ हैं, तो वे स्वरग में रह रहे हैं। पूरी नीव आत्मा में नहिति है। कयोंकयिह आत्मा ही है जो आनंद और पीड़ा दोनों को महसूस करती है। कसी दविंगत व्यक्ती के पास जाने का प्रयास करें और वे बातें कहें जो उन्हें सबसे अधिक प्रसन्न करें, उदाहरण के लिए: 'आपका भाई अमेरिका से आ गया है,' या कुछ इसी तरह की बातें। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आएगा। दूसरी ओर, यदआप उन पर झपटकर उनके हाथ-पैर तोड़ दें, तो उन्हें वह भी समझ नहीं आएगा। इससे यह स्पष्ट होता है कएि एक व्यक्ती के भीतर जो महसूस करता है, वह आत्मा के सविा और कुछ नहीं है। क्या यह सब उन लोगों को सोचने पर मजबूर नहीं करता जो नरक और स्वरग के अस्ततिव पर संदेह करते हैं? या मान लीजिए कआप एक प्यारा, सुखद सपना देखते हैं। आप प्रसन्न हैं, आपका दिलि मधुर धड़कता है, और आप नहीं चाहते कयिह सपना खत्म हो। आप जागते हैं, और आपको जागने का पछतावा होता है। या शायद आपको कोई बुरा सपना आता है। उदाहरण के लिए, आप सपना देखते हैं कआप गरि गए हैं और आपके पैर टूट गए हैं; अपने सपने में, आप पीड़ति होते हैं और रोते हैं। डर के मारे, आप आँखों में आँसू लएि जागते हैं, यह महसूस करते हैं कविास्तव में आपके साथ कुछ भी नहीं हुआ है, और खुशी से कहते हैं: 'भगवान का शुक्र है कयिह सरिफ एक सपना था!' दूसरे शब्दों में, आत्मा इसमें शामिल होती है। जब कोई बुरा सपना देखता है, तो वह वास्तवकिता में जतिना कष्ट सहता, उससे कहीं ज्यादा कष्ट सहता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई बीमार व्यक्ती दनि की तुलना में रात में ज्यादा कष्ट सहता है। इसी तरह, जब कोई व्यक्ती भरकर नरक की यातनाओं को भुगतने जाता है, तो यह उसके लिए [पृथ्वी पर अनुभव की गई नरकीय यातना की स्थति की तुलना में] और भी अधिक दुखद होगा। कल्पना कीजिए ककि कोई व्यक्ती एक दुस्वप्न को अनंत बार दोहरा रहा है और अनंत काल तक पीड़ति हो रहा है। आप कुछ मनिटों के लिए भी एक बुरा सपना सहन नहीं कर सकते। लेकिन कल्पना कीजिए — ईश्वर न करे! — [हमेशा के लिए] ऐसी पीड़ा में रहना। इसीलिए नरक में न जाना बेहतर है। आप इस पर क्या कहते हैं?

— जेरोंडा, हम इतनी लंबी लड़ाई लड़ रहे हैं कनिरक में न जाएँ। तो, आपकी राय में, क्या हम अंततः वहाँ ही पहुँच जाएँगे?

— अगर हम समझदार नहीं हुए, तो हम वहाँ पहुँच जाएँगे। मैं हम सबके लिए यही चाहता हूँ: अगर हम स्वर्ग जा रहे हैं, तो यह हम सभी के लिए हो; और अगर हम नरक जा रहे हैं, तो यह हम में से किसी के लिए भी न हो... क्या मैं सही हूँ या नहीं? ईश्वर ने हम इंसानों के लिए जो कुछ भी किया है, उसके बाद अगर हम नरक की यातनाओं में फँसकर उसे दुखी करें, तो यह बहुत कृतघ्नता होगी। ईश्वर न करे कनि तो कोई इंसान नरक में जाए, और न ही कोई छोटी सी चड़िया।

हे प्रभु, हमें सच्ची पश्चाताप की कृपा प्रदान करें, ताकभित्यु हमें एक अच्छी आध्यात्मिक अवस्था में पाए और हम एक बार फिर से उनके स्वर्ग के राज्य में लौट सकें। आमीन।